VOLUME -9
ISSUE-10
Oct. 2021

ISSN 2395- 5066

AU FAIT

(EXPERTISE)

A Research Journal of Innovative Teaching Techniques & Skill Development

Frequency : Monthly
Discipline :- Languages, Fine Arts

An Initiative by SRSS SKILL DEVELOPMENT CENTRE

Our Branches

Shri JJTU Skill Development Centre
(Jhunjhunu)

SPDT Skill Development Centre
(Mumbai)

Published by:
Shri Jagdhishprasad Jhabarmal Tibrewala University
Vidhyanagari,Jhunjhunu-churu Road
Chudela, Distt.-Jhunjhunu(Raj.)-333001

AU FAIT- ISSN 2395-5066

EDITOR-IN CHIEF
Dr. Vanashri Valecha

EDITORIAL BOARD
Dr. Kuldeep Sharma
Dr. Shaktidan Charan
Dr. Noopur Gupta
Dr. Ananta Shandliya

PEER REVIEW COMMITTEE
Dr. Aruna Swami
Dr. Chandralekha Sharma
Dr. Savita Sangwan
Dr. Vandana Tiwari
Dr. Satkala Bajiya
Dr. Ravinder Kumar Bhojak
Dr. Madanlal Rajyora

FROM THE CHIEF EDITOR'S DESK

"If we teach today's students, as we taught yesterday's,

We rob them of tomorrow" –John Dewey

With advent of internet and galloping technology, the role of a teacher has gone through sea change. In this knowledge society, a teacher's role is of a felicitator and not of a deliverer of content. The innovation is the ultimate to generate interest of learning for the students today. It takes lot of thought and skill to be an innovative educator.

The need of the hour is to create an innovative education system where all stakeholders think out of the box. **Jim Rohn** rightly said **"You must either modify your dreams or magnify your skills".**

Let us tread the path of improving our skills and adaptability to new realities before we perish. Talent alone cannot assure success. Innovation, skills and passion for being better in our craft on every single day will see us through.

Dr. Vanashri Valecha

Editor-in Chief, (Aufait)

INDEX

1.	**छात्रों के बीच पोषण संबंधी जागरूकता का एक सर्वेक्षण अध्ययन** **प्रतिमा वर्मा**
2.	Literature & culture studies and Literacy & Language Education Ph.D. Scholar – Archana Shrivastava
3	नरेश मेहता की आत्मकथा में परिवेशगत यथार्थ भाग्यश्री शेखावत
4	भक्तिकालीन काव्यों में सामाजिक चेतना शोधार्थी का नामः– प्रभु दयाल शर्मा
5	आधुनिक कथा साहित्य में सामाजिक चेतना। शोधार्थीः–प्रभु दयाल शर्मा
6	हिन्दी साहित्य और गाँधी दर्शन का प्रभाव एवं वर्तमान में प्रासंगिकता संगीता रोहिला
7	Effects of COVID-19 on Female Education with special reference to Degree College Students in Mumbai Maharashtra Details of 1st Author: BRISTI GOURGOPAL BISWAS (RESEARCH SCHOLAR OF JJTU)
8	Neo-humanism: A Critical Study Pranav Sudhir Mulaokar
9	हरियाणा लोकसाहित्य में चित्रित नारी का लोक सांस्कृतिक रुप शोधार्थीः ममता रानी
10	भारतीय दर्शन में मोक्ष की धारणा Monalisha Ghosh1, Dr. Saroj Sewda2
11	ROLE OF CULTURE IN MAYA ANGELOU'S "I KNOW WHY THE CAGED BIRD SINGS" AND THOMAS HARDY'S "TESS OF THE D'URBERVILLES" MONIKA BAVOURIA

12	मध्यकालीन शेखावाटी साहित्य में संस्कृति व शिक्षा प्रकाश कुमारी
13	LITERATURE AND CULTURAL STUDIES IN ANITA DESAI'S VOICES IN THE CITY,BYE-BYE BLACKBIRD, BAUMGARTNER'S BOMBAY RANJANA DIGAMBAR AMODE
14	किमलेश्वर के गद्य साहित्य मे पारिवारिक वैमनस्य एवं संवेदनशून्यता सम्बद्ध नारी–विमर्श सम्पत सिंह
15	Human Values depicted in Chokherbali (A Grain of Sand) by Rabindranath Tagore and The Guide by R K Narayan Ms. Sapna H Thakur
16	**प्राचीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्य एवं उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता** शोधार्थीः– **डॉ सुरेंद्र सिंह**
17	**Analyzing the Pros and Cons of Education in English as Globally Acclaimed Business Language as against Indian Regional Languages as perceived by Citizens** **Shripad Bapat**
18	**Innovative Techniques, Methods & Trends in English Language Teaching-Makin the shift towards distance learning** **Ms. Sadaf Afreen Shaikh**
19	**VIRGINIA WOOLF'S: A FEMINIST STUDY OF A ROOM OF ONE'S OWN** **1stMadhu S. Panse**
20	राजस्थानी संस्कृति में लोक–नृत्य हिमांशु खिड़िया

21	**Soft skills: A significant ladder for Professional students** **Berlina A. Lopes**
22	**दलित साहित्याचा सामाजिक दलित कादंबरीवर असलेला प्रभाव** **भूषण प्रदीपकुमार देशमुख (संशोधक विद्यार्थी)**
23	**दलित साहित्यात – दलित चळवळीवर प्रकाश टाकणाऱ्या कादंबरीचे महत्व** **भूषण प्रदीपकुमार देशमुख (संशोधक विद्यार्थी)**
24	राजस्थान के संत और उनका साहित्य डॉ **- श्रीमती कुलदीप गोपाल शर्मा**
25	**ROLE OF NEW EDUCATION POLICY FOR MAKING AATAMNIRBHAR BHARAT** **पूजा रानी**
26	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर याचें शैक्षणिक विचार शौधार्थी :– सतीश वागमरे

छात्रों के बीच पोषण संबंधी जागरूकता का एक सर्वेक्षण अध्ययन

प्रतिमा वर्मा
रिसर्च स्कॉलर, गृह विज्ञान विभाग
श्री जेजेटी विश्वविद्यालय

सारः—उत्तर प्रदेश के गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज फॉर बॉयज अयोध्या के छात्रों में पोषण जागरूकता पर शोधकर्ता द्वारा एक अध्ययन किया गया। लड़कों के अयोध्या,उत्तर प्रदेश के लिए सरकारी डिग्री कॉलेज के विभिन्न विभागों के 100 छात्रों का नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया था। डॉ. श्वेता द्वारा विकसित प्रश्नावली द्वारा छात्रों की पोषण जागरूकता को मापा गया। रोकथाम, भावनात्मक भलाई, व्यक्तिगत सुरक्षा, पर्यावरणीय स्वास्थ्य और सुरक्षा। वर्णनात्मक सांख्यिकी (पाई आरेख और प्रतिशत) का उपयोग उस डेटा का आकलन करने के लिए किया गया था जिसे हम पाई आरेख के माध्यम से डेटा की व्याख्या करते हैं। लड़कों के लिए सरकारी डिग्री कॉलेज के छात्रों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर। पोषण जागरूकता और स्वास्थ्य की स्थिति से संबंधित 9 चरों का अध्ययन किया। इससे पता चला कि 21**%** छात्र उत्कृष्ट श्रेणी में, 55**%** छात्र अच्छी श्रेणी में तथा 24**%** छात्र पोषण जागरूकता में आवश्यकता सुधार श्रेणी के अंतर्गत पाए गए।

मुख्य शब्द— पोषण. जागरूकता. विद्यार्थी

परिचयः—पोषण भोजन का अध्ययन है और शरीर इसका उपयोग कैसे करता है। यह न केवल खाने वाले भोजन की मात्रा और गुणवत्ता से संबंधित है, बल्कि उन प्रक्रियाओं से भी संबंधित है जिनके द्वारा शरीर में वृद्धि और नवीनीकरण के साथ—साथ शरीर के विभिन्न कार्यों के रखरखाव के लिए शरीर में भोजन प्राप्त करता है और उपयोग करता है। पोषण का अर्थ महत्वपूर्ण है। यह सिर्फ आहार की बात नहीं है। तकनीकी रूप से पोषण का अर्थ यह है कि यह एक निवेश है।

यदि आप अपने शरीर में सही चीजें डालते हैं तो यह शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देने और बीमारी को रोकने में मदद कर सकता है। अच्छा पोषण बीमारी को रोकने और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। इसे पूरा करने के लिए शरीर को छह प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज और पानी शामिल हैं। पोषण कोशिकाओं और जीवों को जीवन को सहारा देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रावधान है। एक जीव का आहार वह है जो वह खाता है, जो काफी हद तक खाद्य पदार्थों के अनुभव से निर्धारित होता है।

खराब आहार स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डाल सकता है, जिससे कमी से होने वाले रोग हो सकते हैं। पोषण वह विज्ञान है जो शरीर द्वारा भोजन और उसके उपयोग से संबंधित है। अन्य जीवित चीजों की तरह हमें भी जीने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन वह सामग्री प्रदान करता है जिसकी हमारे शरीर को अपने ऊतकों के निर्माण और मरम्मत और अपने अंगों और प्रणालियों के कार्यों को विनियमित करने के लिए आवश्यकता होती है। संतुलित आहार शरीर की कोशिकाओं, ऊतकों और अंगों के रखरखाव के लिए पोषण और ऊर्जा की आपूर्ति करने और सामान्य वृद्धि और विकास का समर्थन करने के लिए उचित प्रकार और पर्याप्त मात्रा में खाद्य पदार्थ और पेय का सेवन है। संतुलित आहार वह है जिसमें प्रत्येक पोषक तत्व की उचित मात्रा हो। भोजन में सौ पोषक तत्व होते हैं।

गुप्ता एन. और कोचर जी (2009) किशोर पोषण संबंधी समस्या पर अध्ययन पूरे देश में आम है, कुछ लोगों के पास पर्याप्त भोजन की कमी है जबकि कुछ लोगों ने सोचा कि पर्याप्त मात्रा में भोजन है, फिर भी इसके खराब विकल्प हैं। इन कारणों से, पोषण संबंधी समस्याएं न केवल उनकी वृद्धि और विकास को प्रभावित करती हैं, बल्कि भविष्य में वयस्कों के रूप में उनकी आजीविका पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। पोषण की कमी, एनीमिया, विटामिन ए की कमी, आयोडीन की कमी और अधिक वजन या मोटापा जैसी पोषण संबंधी समस्याओं की श्रृंखला भी उनमें विकसित हो सकती है।

कमला—राज (2011) ने एनीमिया पर पहाड़ी महिलाओं की पोषण स्थिति और ज्ञान पर अध्ययन किया, इस प्रकार वर्तमान अध्ययन ग्रामीण पहाड़ी महिलाओं की पोषण स्थिति का आकलन करने और पोषण संबंधी एनीमिया के बारे में पहाड़ी महिलाओं के ज्ञान का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया था। इसके अलावा, पहाड़ी महिलाओं के पोषण संबंधी एनीमिया संबंधी ज्ञान पर विभिन्न सामाजिक—आर्थिक और जनसांख्यिकीय कारकों का प्रभाव। नैनीताल जिले, उत्तराखंड के तीन गांवों में क्रॉस सेक्शनल अध्ययन किया गया था। अध्ययन 18—45 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं तक ही सीमित था। कुल 223 महिलाओं को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। उनके ज्ञान का परीक्षण किया गया और सामाजिक—जनसांख्यिकीय और पोषण संबंधी प्रोफ़ाइल दर्ज की गई। अध्ययन के परिणाम से यह देखा गया कि विषयों का औसत प्रतिशत ज्ञान स्कोर 23.28 था। कम उम्र के साथ ज्ञान के अंक बढ़ते हुए पाए गए और वे शैक्षिक स्थिति के साथ महत्वपूर्ण रूप से जुड़े हुए थे। समस्या के उपरोक्त परिचय को देखते हुए, जिस अंतर को पूरा करने की आवश्यकता है, वह है लोगों में अपने पोषण के प्रति जागरूकता, ताकि वे अपने जीवन को समृद्ध करने के लिए स्वस्थ आदतों को प्राप्त कर सकें।

अध्ययन का महत्व

1. वर्तमान अध्ययन से विद्यार्थीयो में पोषण संबंधी जागरूकता का सर्वेक्षण करने में मदद मिलेगी

2. यह अध्ययन विद्यार्थीयो को पोषण (आहार) के ज्ञान के बारे में सहायक होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

- विद्यार्थीयो में पोषण संबंधी जागरूकता का निर्धारण करना।

विधि और प्रक्रिया – इस अध्ययन के लिए सरकारी डिग्री कॉलेज फॉर बॉयज अयोध्या, उत्तर प्रदेश के विभिन्न विभागों के 100 छात्रों के लिए एकल समूह डिजाइन का उपयोग किया गया था। जो इस अध्ययन के लिए विषय के रूप में कार्य करते हैं। विषयों की आयु 18–28 वर्ष के बीच यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक द्वारा चुनी गई थी

उपकरण – व्यक्तिगत डेटा शीट छात्रों के जनसांख्यिकीय, व्यक्तिगत और प्रदर्शन प्रोफ़ाइल के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए अन्वेषक द्वारा व्यक्तिगत डेटा शीट तैयार की गई थी।

प्रश्नावली का विवरण

पोषण जागरूकता – यह प्रश्नावली 2011 सहायक में होटल प्रबंधन विभाग के प्रो. डॉ श्वेता द्वारा विकसित की गई थी। इस प्रश्नावली में 20 प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न में 5–5 अंकों के 3 विकल्प हैं। यह प्रश्नावली 5 मिनट में भरनी चाहिए। स्कोरिंग विषयों की प्रतिक्रियाओं के अनुसार किया जाता है।

0–33 प्रतिशत	सुधार की जरूरत
34–66 प्रतिशत	अच्छा
67–100 प्रतिशत	अति उत्कृष्ट

परिणाम और निष्कर्ष

संपूर्ण पोषण जागरूकता – शोधकर्ता ने विद्यार्थीयो की समग्र पोषण जागरूकता का भी अध्ययन किया। इसमें उपरोक्त चर शामिल हैं और निष्कर्षों के अनुसार सभी 100 विषयों के डेटा का विश्लेषण किया गया था। कुल मिलाकर पोषाहार जागरूकता 21**%** विद्यार्थी उत्कृष्ट श्रेणी में, 55**%** विद्यार्थी अच्छी श्रेणी में तथा 24**%** विद्यार्थी आवश्यक सुधार श्रेणी में पाए गए।

संदर्भ

1. **कमला-राज**, 2011 "**पोषण की स्थिति और एनीमिया पर पहाड़ी महिलाओं का ज्ञान**: **विभिन्न सामाजिक जनसांख्यिकीय कारकों का प्रभाव**", **श्वेता उपाध्याय**, **एआर कुमार**, **रीता सिंह रघुवंशी**, **बीबी सिंह। कॉलेज ऑफ होम साइंस**, **कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर**, **जी.बी. पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी**, **पी.ओ. पंतनगर** 263145, **उत्तराखंड**, **भारत।** 2011; 33(1):29-34.

2. **गुप्ता**, **कोचर**, 2009, "**किशोरों के बीच पोषण संबंधी जागरूकता में सुधार में पोषण शिक्षा की भूमिका**, **पोषण और कल्याण के इंटरनेट जर्नल।** 2009; 7:1.

3. **मिश्रा**, **वी.के. और रदरफोर्ड**, **आरडी** (2000) "**महिला शिक्षा भारत में बाल पोषण में सुधार कर सकती है**", **राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण बुलेटिन**, (15): 1-4**।**

4. **अग्रवाल**, **एस.पी.** (1999) "**डेवलपमेंट ऑफ एजुकेशन इन इंडिया**: **सेलेक्ट डॉक्यूमेंटेशन** 1995- 1997", **वॉल्यूम।** (5), **कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी**, **नई दिल्ली**, **पीपी**.85-87**।**

5. **सर्व शिक्षा अभियान। से ऑनलाइन उपलब्ध**: http://mhrd.gov.in/sarva-shiksha-abhiyan**।**, 08.04.2016 **को पुनः प्राप्त।**

6. **मंडल**, **पी. ग्रामीण भारत में महिला शिक्षा**: **अर्थ**, **आवश्यकता और बाधाएं।** http://www.yourarticlelibrary.com/essay/women-education-in-rural-indiameaning-need-and-barriers/34972/ **पर ऑनलाइन उपलब्ध**, 25.04.2017 **को पुनः प्राप्त।**

Literature & culture studies and Literacy & Language Education

Ph.D. Scholar – Archana Shrivastava
Guided by - Dr. Kavery Subodh Kumar Pal.
Shri JJT University

archanasri2511@gmail.com

Abstract:-The English educational plan at the phase of obligatory schooling is of the double idea of instrumentality and mankind. With regards to mankind, the assignment of English educational plan is to work on understudies' thorough humankind characteristics, one of which is to develop their comprehension of various societies. Social mindfulness is an impression of the center proficiency in English learning. The development of understudies' social mindfulness not just adds to understudies' fortifying of public personality, upgrading of social self-assurance in the conventional culture of the country, yet in addition creates a comprehensive disposition towards amazing unfamiliar societies, along these lines working on their multifaceted correspondence ability. Since the reading material are viewed as center showing materials, it is fundamental for course books to contain different diverse components to all the more likely develop students' social mindfulness. Subsequently, social substance in English reading material is an essential issue to be examined. This paper required as a guide to coordinate more social information into the explicit educating plan. The outcomes in this paper uncover that educator assume four parts in elementary school English educating as far as raising understudies' social mindfulness, in particular, the feeling inspiration, the discernment inspirator, the conduct guide and the ethical quality controller.

Key Words:-Primary school; English teaching; Cultural awareness; literature; Literacy.

Research Methodology :- Randolph (2009) suggests that the steps to conduct and report on secondary research parallel those needed for primary research. A first step in any literature review is to determine which sources are included, and the criteria generated during that determination are influenced by the review's focus, goals, and coverage. The literature reviewed in this report was collected in ways consistent with protocols for conducting systematic literature reviews (Creswell, 2013). Members of the research team considered a grid that listed criteria for including sources and then, based upon their knowledge of the field, collectively identified sources that met those criteria. Extensive electronic searches were also made in a key Australian database, "A+ Education: Australian Education Index plus Text (AEIPT)".

Criteria included:

- relationship of source to
  – evidence-based practices;
  – what classroom teachers have reported as 'working';
  – the different cohorts of students, such as those with learning disabilities, for whom English is an additional language, and first Australians;

Introductions

Necessary Instruction English Educational program Principles (2017 version) in developing understudies' social mindfulness bring up that during the time spent learning English, reaching

and understanding unfamiliar culture is gainful to the agreement and utilization of English, and furthermore to the profound arrangement and enthusiasm for Chinese customary culture of the Chinese country and to the acknowledgment of the illumination of the high level societies that have a place with all mankind. It is normally recognized that English educating includes not just the social invasion of target language yet additionally that of the first language. In any case, in the real educating, instructors are more disposed to spread unfamiliar societies to cause understudies to learn bona fide English articulations, so customary Chinese culture is regularly overlooked. It is notable that English educating ought to zero in on culture of target language as well as on that of first language , so educators ought to reinforce both the promotion of Chinese customary culture and the entrance of unfamiliar superb societies, which makes a difference understudies to develop the comprehension of Chinese culture, build up a feeling of personality and pride in the customary culture of the country, yet additionally foster a comprehensive mentality towards incredible unfamiliar societies, subsequently improving their diverse correspondence ability.This paper began with the investigation of grade school English reading material, in order to discover the current issues in the current grade school English educating, and afterward investigated the significance of developing social mindfulness in the grade school English educating, which comprised of two sections, from one viewpoint, to advocate information onChinese customary culture, then again, to infiltrate information on unfamiliar societies. Lastly, this paper required 6A Unit 8 Chinese New Year (Yilin release) as an model, to tell the best way to bring social mindfulness up in the English instructing.

Content

Building character through literacy with children's literature

Character education is described as curriculum specifically developed to teach children about the quality and traits of good character. One means in which children can learn about good character is through the pages of high-quality children's literature. In this study, the author defines the characteristics of an effective character development program for grades K-6 built around children's literature. Discussion focuses on how literature can be brought into the curriculum in helping to develop character traits in a meaningful, substantial manner.

Approaches to teaching literacy,

Form of knowledge for literary processes.

TEXT	GRAMMAR	WORD	VIRTUAL
understand thedifferent types of text structures used in all content areas	understand types of sentence structures interpret still and moving images,	develop strategies and skills for acquiring a wide range of vocabulary for each content learning area	interpret still and moving graphs+-, tables, maps, and other graphic representation
understand text cohesion and how it works through various grammatical structures	link and elaborate ideas	spell words accurately	Understand and evaluate how images and language work together in distinctive ways in different content areas to present ideas and information.
use knowledge of text structures	know how different types of words and word groups convey		Understand how visual elements create meaning.

	information		
use knowledge of text cohesion	know how different types of words and word groups represent information		

Basic skills approach, Whole language approach, Language and literacies for the twenty-first century, A balanced approach

STRATEGIES TO RAISE CULTURAL AWARENESS IN PRIMARY SCHOOL ENGLISH TEACHING

- Four Roles of Teachers in Primary School English Teaching Dai Xiaodong and Chen Guoming (2014) analyzed intercultural competence from the perspective of interculturality. After having studied the communicator's personal characteristics and the mutual interaction, Dai and Chen believed that intercultural competence should not only include knowledge, emotion and behavior, but also include moral competence in intercultural communication. Based on the theory, the roles of teachers in English teaching, as cultural coordinators, can be subdivided into four sub-roles: the emotion motivator, the cognition inspirator, the behavior guide and the morality regulator (Zhou, 2019). The four roles mentioned above can be transformed into the four important strategies for teachers to raise students' cultural awareness in primary school teaching. As an emotion motivator, teachers need to grasp students' interests and cultivate students' learning motivation at the beginning of the class. Simple and direct cultural input is likely to be difficult for students to understand or memorize, and to make them feel bored or even disgusted with learning. Therefore, teachers need to start from the contents which students are interested in. For example, through some fascinating games or cultural competitions, students can not only review the cultural knowledge that they have learned, but also expand their knowledge so as to enrich their cultural reserves. As a cognition inspirator, teachers need to pay attention to the difficulty of the questions asked in class. On the one hand, questions should not be too difficult, otherwise these questions would discourage students' enthusiasm in language learning; on the other hand, questions should not be too simple, otherwise students could use the previous knowledge to solve them easily, which will cause them to be unwilling to accept new cultural knowledge. Teachers need to strike a balance that the questions asked in class can make students proud of what they have learned in the past, and can also trigger their curiosity and eagerness to learn more. Then teachers can seize the opportunity to carry out cultural indoctrination. As a behavior guide, teachers need to arrange practical teaching activities, such as storytelling, role playing, or debating contests. Learning English is more about communication. After class, students have fewer opportunities to communicate in English, so teachers must make the best of the time in class. Through the teaching activities mentioned above, students can speak English boldly and convert the written cultural knowledge into a more vivid oral form. In addition, it is more helpful for students to switch languages quickly when they encounter some situations where students need to use English to communicate in the future. More importantly, they can proudly spread Chinese culture, instead of failure to express themselves clearly in English when they want to show the beauty and charm of Chinese traditional culture. As a morality regulator, teachers need to carry out emotional education consciously. Through discussion and other activities, teachers should make students realize the great charm of traditional Chinese culture. And at the same time, teachers

can use the method of culture contrast teaching, using the positive transfer of culture in contrast teaching, so that students can grasp Chinese culture unconsciously (Cui, 2020). In addition, teachers need to be keenly aware of students' emotional tendencies and to resolutely deny the discriminatory attitude. English teaching is not only about simple words and sentences, but more importantly, teachers should guide students tounderstand foreign cultures, tolerate diverse cultures, learn to be international in outlook and show concerns about the destiny of the whole human being (Qian, 2013). If students are found to have incorrect cultural values, teachers must correct them in time. Teachers should let students realize that different cultures have their own characteristics, and instruct students to learn to respect cultural differences.

- The Teaching Plan (Take 6A Unit 8 Chinese New Year as an Example) Because Chinese traditional festival culture is regarded as a microcosm of Chinese culture (Zhu, 2020), this paper took 6A Unit 8 Chinese New Year as an example, to show how to raise cultural awareness in actual teaching. The following is the teaching plan : [Step 1 Pre-reading] a) Free talk Teacher: Good morning, boys and girls. Look at my new coat, what color is it? Students: It is red. Teacher: What's in my hand? Students: They are red packets. Teacher: Yes. Do you want to get the red packets? We're going to play a game: Here are three video clips. Answer my questions after watching the video. If your answer is right. You can get a red packet. Clear? Come on. (Purposes: In this part, the teacher acts as an emotion motivator. It is well known that interest is the best teacher. Only by catching students' interests, can they have corresponding learning motivation. What's more, playing games is the nature of children, so the teacher designs this section to attract students' attention and stimulate their interests in class by grabbing the red packets.) b) Watch the video and answer questions Teacher: Watch the first video, and answer me: What holiday is it? Students: Christmas Day. Teacher: Who is the old man in the video? What is he doing? Students: ... Teacher: Watch the second video, and answer me: What holiday is it? Students: Mid-Autumn Festival. Teacher: What are people eating in the video? What else do people do on this day? Students: ... Teacher: Watch the third video, and answer me: What holiday is it? Students: Chinese New Year. (Purposes: In this part, the teacher acts as a cognition inspirator. Through answering questions correctly to get a red pocket, students are encouraged to keep thinking. At the same time, the teacher will ask questions step by step, and when students answer questions incorrectly, the teacher should give timely guidance, and take this opportunity to infiltrate cultural knowledge related to the festival into teaching.) [Step 2 While-reading] a) Read and answer Teacher: Our old friend Su Hai gets an email from her e-friend Anna in Hong Kong. How is Anna feeling? Students: She is very excited. (Purpose: In this part, the teacher uses the question to arouse the curiosity of the students, and make them eager to know the content of the e-mail.) b) Look and order Teacher: What is Anna going to do at Chinese New Year? Here are six pictures. Please read the e-mail again, and number the pictures. (Purpose: In this part, by reading the e-mail for the second time and completing the task, students can better grasp the main information of it, and improve their reading and critical thinking abilities.) c) Tell a story Teacher: Boys and girls, at the beginning of this lesson, we watched three videos. Do you still remember them? What will you do with your family during these festivals? Next is a small competition. Let's listen to who is the best story teller. The winner can be named the story king of our class. (Purposes: In this part, the teacher acts as a behavior guide. In English teaching, students are always the main body of the class. Through the competition to tell stories, teachers create a platform for students to

display themselves. The final result of language learning should be verbal communication, so telling stories is a good opportunity to practice students' oral English. And after students tell their stories, the teacher should make comments in time, and take this opportunity to add some cultural knowledge about festivals, so as to expand the range of students' knowledge, and let students have a deeper understanding of festivals, so that they can have something to say in the future communication about festivals.)

- [Step 3 Post-reading] Discuss Teacher: China has a long history and thus there are many traditional festivals. Which of these festivals do you like best? If exchange students from foreign countries come to our class, how will you tell them about your favorite festivals? (Purposes: In this part, the teacher acts as a morality regulator. By discussing students' favorite traditional festivals, they can feel the charm of Chinese traditional culture, increase their national pride, and love Chinese traditional festivals more. In addition, in this process, the teacher needs to guide students to establish an inclusive and equal mentality, respect the culture of different countries and understand their traditional festivals.

Conclusion:- There is boundless understanding with regards to the basic significance of proficiency, which is reflected out in the open interest in global and intra-public examinations of education levels. Australia's standing shows a decrease in education proficiencies comparative with other OECD nations, while Tasmania's general exhibition in public testing lingers behind a few different wards. The relationship of significant degrees of social hindrance and low education levels is very much archived and reveals some insight into the circumstance in Tasmania. This setting fills in as a motivator to appropriately explore education instructing in Tasmanian schools to further develop results for all youthful Tasmanians. As understandings of education have changed, so too have ways to deal with instructing proficiency. Perspectives on techniques for showing this composite expertise—once captivated—have inclined toward a center ground. In this manner, 'great practice' is presently seen as an efficient mix of strategies, bringing about a decent methodology that consolidates the most remarkable components of numerous methodologies. Considerable proof with regards to what establishes viable showing systems applies additionally to educating proficiency. Be that as it may, knowing the components of capable proficiency showing practice doesn't ensure compelling execution. A scope of elements, both inside and past schools and homerooms, influence the execution of proof-based practice, not least starting educator instruction and progressing support for instructors and their expert turn of events. A huge test for those with obligation regarding overseeing and working in the instruction framework is addressing how to apply information about compelling instructing techniques to education learning. Discovering suitable reactions to that challenge will empower all educators to become 'activators of proficiency' and guarantee that all showing rehearses are likewise successful education instructing rehearses.

Reference

- Alberta Learning, Learning and Teaching Resources Branch. (2002). Kindergarten to grade 9 health and life skills: guide to implementation. Retrieved from http://www.education.alberta.ca/media/352888/title.pdf.
- Association for Library Service to Children (2014). 2014 Notable Children's Books. Retrieved February 17, 2014, from http://www.ala.org/alsc/awardsgrants/notalists/ncb/.
- Besson-Martilotta (2013). More than just a good book: Employing U.S. Department of Education guidelines to teach character education using literature. Dissertation Liberty University.

- Bohlin, K.D., Farmer, & Ryan, K. (2001). Building character in schools resource guide. San Francisco, CA: Jossey-Bass.
- Brooks, D. (2001). Reading activities for character education: A resource guide for teachers and students. Peterborough, NH: Cobblestone Publishing.
- Bryant, J.B (2008). Character traits in Newbery Award literature 1997-2007 (Doctoral dissertation) Retrieved from ProQuest Information & Learning, 2008. AAI3291760.
- Chen, X. G. (2019). Views on the cross-cultural introduction of English teaching. Proceedings of 20199th International Conference on Education and Management (ICEM2019, pp.522-525). UK: Francis Academic Press.
- Claire, K. (2000). Language and culture. Shanghai: Shanghai Foreign Language Education Press.
- Cui, X. Z. (2020). Chinese festival culture teaching in heterogeneous culture. Proceedings of 2020 International Conference on Advanced Education, Management and Information Technology (AEMIT2020, pp.194-197).Atlantis Press.
- Dai, X. D. & Chen, G. M. (2014). Intercultural communication competence: Conceptualization and its development in cultural contexts and interactions. Cambridge Scholars Publishing.

नरेश मेहता की आत्मकथा में परिवेशगत यथार्थ

भाग्यश्री शेखावत

शोधार्थी, जे.जे.टी. विश्वविद्यालय चूङेला झुंझुनू (राजस्थान)

सारांश – नरेश मेहता ने अपनी आत्मकथा 'हम अनिकेतन' में 'स्व' को विश्लेषित करते हुए समकालीन परिवेश की गहरी पकङ के साथ आत्मकथा में आये दूसरे चरित्रों का भी तटस्थ दृष्टि व रोचकता से चित्रण किया हैं। लेखक ने इस आत्मकथा में न केवल अपने पारिवारिक जीवन, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक जीवन, अपनी अस्मिता स्थापना के संघर्षो व अपनी परिस्थितियों की विडम्बनाओं का अंकन भी किया हैं साथ ही युगीन परिवेश के प्रति जागरुक रहकर समाज के जीवन यथार्थ का अपूर्व पारदर्शिता के साथ साहित्य में राजनीति कि बढते दबदबे को भी उद्घाटित किया हैं।

मूल शब्दः– अस्मिता, पुरोगामी, बिलगा, असंगता, अनभिव्यक्त, अनवरत

आत्मकथा में लेखक अपने व्यक्तित्व की गहन जाँच रचनात्मक पृष्ठभूमि में तो करता ही हैं साथ ही अपने जीवन और समाज को केन्द्र में रखकर समुचे विचारों और आत्मगुत्थियों की भी अभिव्यक्ति करता हैं। आत्मकथाकार युगीन परिवेश के प्रति अत्यंत सचेत होता है तथा परिवेश से आंतरिक रुप से जुङा होने के कारण परिवेश की भयावह स्थितियों को पूरी ईमानदारी से उजागर करते हुए प्रायः सदैव अपनी हीनताओं, कुरुपताओं का भी चित्रण करता हैं। अपने जीवन सत्य को कहने से पीछे नहीं हटता। इसी सन्दर्भ में **डॉ. राजमणि शर्मा के अनुसार– ''वास्तव में आत्मकथा एक प्रकार का इतिहास भी हैं। जिसमें तटस्थ भाव की अपेक्षा रहती हैं। इसमें लेखक पूरे युग और परिवेश का एक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयास करता हैं।''**[1]

आत्मकथा में लेखक ने समकालीन परिवेश के चित्रण के साथ ही अपने जीवन के पचास वर्ष के अनुभवों को व्यक्त किया है। लेखक जब दो अढाई वर्ष के ही थे, तब इनकी माँ चल बसी थी व लेखक जब दस वर्ष के थे इनकी दीदी की मृत्यु हो गई थी तथा पिता सरकारी नौकरी के कारण लगभग बाहर ही रहते थे। घर में वृद्ध पितामह और उनकी वृद्धा बहन थे। ऐसे संकटपूर्ण जीवन के समय में नरेश मेहता को काका शंकरदयाल के पास बदनावन भेज दिया गया। काका विधुर होते है ऐसे मे धीरे–धीरे परिवारहीनता अकेलेपन को ही अपनी जान्मिक नियति मान लेते है– **''मैं लाख प्रयत्न करुँ संबंध का मीठा जल दूर –दूर तक मेरे लिए कहीं नहीं हैं। शायद अकेलेपन की ओस ही मेरा भाग्य थी।''**[2]

लेखक अपने संबंधो के अभाव को लेकर बहुत परेशान रहता है– **''मैं भी तो इसी प्रकार अपने जलों के साथ टूट–टूट पङ रहा हूँ। शोर भी है परन्तु इस न सुनायी पङने वाले शोर का एकमात्र श्रोता में ही होता हूँ। क्या किसी दिन मेरे जलों को फोङकर मेरा यह चीखना कोई अन्य सुन सकेगा ? शायद नहीं।''**[3] लेखक अकेलेपन से व्यथित होते हैं उनकी इच्छा होती है कि **''किसी भी बच्चे के लिए संबंध या परिवार का ऐसा उपस्थित होना जरुरी होता है जिसे वह कहीं से दौङता हुआ आये और उसे छू सके।''**[4]

माँ के न रहने पर स्वाभाविक ही है कि व्यक्ति को माँ की अनुपस्थिति खलती है लेखक भी इससे अछुता नहीं है– **''क्या संभव है कोई माँ हो , जिसके साथ घर पहुँचूँ? चूल्हा जला ''मुझे सामने बैठालकर प्याज रोटी या बेसन भात ही परसे, पर परसे तो।''**[5] लेखक अपनी माँ की गोद में सर रखकर सोने को दुनिया की सबसे बङी नियामत कहते है पर लेखक के भाग्य में ऐसा न था। यहीं नहीं न जाने कितने राग– प्रसंगो आत्मीय सन्दर्भो में व्यक्तित्व के झाङ फनूस के टूटेपन को अवश भाव से देखते हुए अकेले बङे होते जाने के लिए विवश थे। इनके एकाकीपन की झलक आत्मकथा में स्पष्ट दिखाई देती हैं– **''अब मेरे और एकांत के बीच संधि के अलावा कोई चारा नहीं था। ''**[6]

पारिवारिक चिन्ताओं से व्यक्ति का स्वत्व नहीं बन पाता जब हम चौबीसों घण्टे हम व हमारी घर की चिन्ताओं के खूँटे से बँधे रहे तो क्या खाक किसी क्षितिज तक पहुँचेगें। लेखक के पारिवारिकता के अभाव ने उन्हें निराशा के अंधकार में पहुँचा दिया था। तभी तो वो अपनी दीदी की मृत्यु को याद करते हुए कहते है–''**गोबर लिपि भूमि पर लिटायी गई दीदी और घेरकर आर्त तथा चीत्कार करती पारिवारिकता मुझे जङ बना रही थी।**''[7]

जब लेखक को अपनी बुआ के घर नरसिंहगढ पढाई करने भेज दिया जाता है तब वे पारिवारिक परिवेश का चित्रण करते हुए व्यक्त करते है– **''गत वर्षो ने मुझे यह स्पष्ट कर दिया था कि अपनी पारिवारिकता के बाहर अन्यत्र आपकी स्थिति उस दाने की सी होती है जो बाकी दाल से भिन्न होता है और एक अंगुली कैसे सटीक तरीके से आपको बिलगा जाती हैं।''**[8]

लेखक के काका के घर पर पुस्तकालय के होने से वहीं खिङकियों के नीचे किताबों के पन्ने पलटना आया और इनके माध्यम से दुनिया के भूगोल, इतिहास साहित्य सभी से आरंभिक जानकारी हुई तथा कविता कहानी उपन्यास की तरफ आकर्षित हुये।

इसके साथ लेखक उज्जैन के साहित्यिक वातावरण से भी अच्छे खासे प्रभावित थे। लेखक जब भी पुरोगामी साहित्य परिषद बैठकों में जाते तो उन्हें हमेशा लगता यहाँ साहित्य की नहीं राजनीति की चर्चा अधिक होती हैं। लेखक को कविता लिखने की प्रेरणा प्रकृति से ही मिली थी। अपने अनुभव को साझा करते हुए कहते है– **''यदि मुझे अकेलापन ना मिला होता और सामान्य जीवन तथा परिस्थितियाँ मिली होती तो मैं प्रत्येक घर के चूल्हे की गंध से परिचित न हो पाता न कितने तरह के घर परिवारो में रहना होता। जीवन का आरंभिक अकेलापन आसक्ति और असंगता दोनो हो जाएगा यह सोचा न था।''**[9] इस प्रकार लेखक ने घोर विषमताओं का सामना करते हुए अपनी शिक्षा प्राप्त की।

लेखक की लम्बी साहित्यिक यात्रा समय के कई मोडों से होकर गुजरी है और दिनोंदिन नवीन छवि को प्राप्त होती गई है। साहित्य व साहित्यिक जमात का पहला अहसास इन्हें लखनऊ में हुआ था। कभी इलाहाबाद कभी नागपुर अपने रोज–रोज के पदस्थापन से परेशान होकर लेखक ने नौकरी से त्यागपत्र देकर स्वतंत्र लेखन यात्रा शुरु की। इसी समय लेखक दिल्ली मे छः वर्ष रहे परन्तु वे साहित्य सृजन नहीं कर पाये उन्हे साहित्य सृजन के लिए दिल्ली के बजाय इलाहाबाद का परिवेश अधिक अनुकूल लगा। **''मेरी सृजनात्मक वनस्पति के लिए दिल्ली उर्वर भूमि नहीं थी।''**[10] अपने साहित्यिक संघर्ष के साथ लेखक अपने लेखकीय स्वत्व के अÜOkत्थ की भूमि तलाशते हुए लेखक ने समकालीन साहित्यकारों के साथ हुए इन खट्टे–मीठे अनुभवों को भी सच्चाई के साथ साझा किया है– **''बच्चन जी मिलिVªh भूषा मे बाहर आये। उन्हाने दो विद्यार्थीयों को देखा तो वे बङे ही उपेक्षा भाव के साथ हमारे आमंत्रण को सुना और लिया। अपने आने के बारे में उनकी शर्त थी की प्रथम श्रेणी का किराया और सौ रुपये लेंगे। हम दोनों एक दुसरे का मुँह ताकने लगे हम ज्यादा से ज्यादा किराया दे सकने की स्थिति में तो हो सकते थे परन्तु इसे अधिक कुछ नहीं। सच तो यह है कि बच्चन जी का सारा व्यवहार कविजनोचित नहीं लग रहा था और हम बेरंग वहाँ से लोटे।''**[11] इलाहाबाद के साहित्यिक वातावरण का तथा समकालीन लेखकों व कृतियो संबंधी घटनाओं का साहित्यकारो की आपसी ईर्ष्याभाव, स्पर्धा व पत्र– पत्रिकाओं की स्थिति, प्रकाशनो की स्थिति, मानसिकता व साहित्यिक राजनीति के परिवेश संबंधी अनुभवों को अभिव्यक्त किया है। **''छायावाद के बाद लेखन से ज्यादा लेखकीय और लेखन की राजनीति की प्रमुखता ने इन दोनों खेमों के सारे लेखकों का अहित किया। आये दिन पुस्तकें प्रकाशित होने को लेकर छींटाकशी भी होती। ''लोकभारती'' मे बैठकर वातावरण बनाया जाता वैयक्तिक विरोध को सैद्धान्तिक जामा पहनाया जाता।''**[12]

इन दिनो में राहुल जी हिन्दी का पक्ष लेकर राजनीति के दोमुँहेपन पर चोट कर रहे थे और इस कारण हमारे कामरेड बन्धुगण उनके भी विरुद्ध होने लगे थे। जिस व्यक्ति का कम्युनिस्ट परम सम्मान करते थे अब उसी ने हिन्दी के प्रश्न को लेकर उन लोगों से अपनी असहमति व्यक्त की तब यह सब खङगहस्त होकर उनके भी विरोध मे खङे हो गये थे।

लेखक के मन मे संगीत नाटक अकादमी की प्रतियोगिता भी मन में टीस दे जाती थी क्योंकी अकादमी ने सामाजिक नाटक के लिए प्रतियोगिता कि घोषणा की थी परन्तु निर्णय घोषित पौराणिक नाटक के पक्ष में हुआ। लेखक का नाटक राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित होने वाला था पर उन्होने मना कर दिया यहाँ साहित्यिक राजनीति जोङ तोङ काम कर गई वे लोग साफ मुकर गये कि उन्होने प्रकाशन के लिए 'हाँ' कहा था। साहित्यिक राजनीति के साथ ही लेखक ने साहित्यिक वादों में चल रही अनबन को भी अभिव्यक्त किया है –**''प्रगतिशीलों को यथावत रहना ही था क्योंकि ये लोग किसी भी विरोधी तक को सहन कर सकते है लेकिन किसी ''एक्स कम्युनिस्ट'' को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते।''**[13]

पत्र–पत्रिकाओं मे परिमल के समकालीनों ने लेखक के यहाँ आने और केवल लेखन करने को जिस प्रकार लिया उसे परिभाषित न करना ही बेहतर है। सिविल – लाइन का वह चौराहा आज तक उन्हें याद है जहाँ उनके इलाहाबाद रहने और लेखन करने का एक स्वर से उन समकालीनों ने मजाक उङाया था। कि देखें, तुम कैसे यह सब करते हो? उन दिनों अखबार और पत्रिकाएँ कविताओं के लिए कुछ भी पारिश्रमिक नहीं दिया करती थी। वह जानलेवा संघर्ष था। पूरा लखनÅ पैदल नाप कर जाना होता था। कई बार पूरे–पूरे दिन बिना खाये रह जाना पङता था तथा और भी बहुत कुछ प्रिय–अप्रिय भी करना सहना पङता था।

लेखक काशी छोङना नहीं चाहते थे परन्तु सारे देश में उस समय जिस प्रकार के भीषण दंगे, फसाद हत्याएँ, लूट–पाट तथा असुरक्षा की भावना थी उसमें वहाँ रहना दुश्वार कर दिया था अतः फिर बिना सोचे समझे निरवलंब स्थिति में ही लखनÅ bykgkckn vk;s FksA vkSj bUgha fnukssa esa jsfM;ks esa UkkSdjh izkIr djus ds fy, ys[kd dks bUVjO;w ds fy, fnYyh tkuk Fkk vkSj ys[kd dh vkfFkZd ifjfLFkfr fcx³h gqbZ Fkh dh mUgsa viuh ek¡ dh ,dek= v¡xwBh fxjoh j[kuh i³h ftls os fQj dHkh ugha Nq³ok lds FksA

ikfjokfjd iz;kstu ds dkj.k ,d ckj ys[kd dks ekyok tkuk FkkA 'kgj esa ,d ifjfpr lTTku ls dqN m/kkj ek¡xus x;s bl ij lTTku us ,d vViVk lk dke crk;k fd ****vxj dqN yksxksa dks viuh dfork,¡ lquk ldw¡ rks iSlk fey ldrk gSA vkf[kjdkj ge dqatxyh igq¡ps A fe= us**

nqdkunkj ds dku esa dqN dgk vkSj ykSVdj eq>s dfork i<us ds fy, dgkA Fkks³k vthc t#j yx jgk Fkk fd eSa oSfnd dfork,¡ xkdj lquk jgk g¡w vkSj yksx lkf³;ksa ds Ø;&foØ; esa O;Lr gSA dkO; ikB dh lekflr ij lkgwdkj us vius xYYks ls nl dk uksV fe= dks Fkek fn;kA bl izdkj rhu&pkj txg vkSj dfork,¡ i<uh i³h vkSj ekyok rd dk esjk [kpZ fudy vk;k FkkA[14]**

vkfFkZd ifjfLFkfr dh fodVrk rks ;g Fkh fd ,d ckj csVs ds chekj gksus ij Ms< lkS& nks LkkS #i;kas dh t#jr i³h vkSj rc iRuh dh lksus pwf³;k¡ cspuh i³h FkhA ys[kd dh vkfFkZd fo"kerk ;gh [kRe ugha gksrh budh csVh rhu ekg dh Fkh] rc iRuh us fcLrj id³ fy;k ys[kd ds ikl ,sykSiSFkh bykt djokuk lEHko ugha Fkk blfy, gksE;kSiSFkh gh ,dek= bykt lEHko FkkA ;g ,d fofp= la;ksx Fkk fd ys[kd dh ;g vof/k lcls vf/kd moZj Hkh Fkh vkSj thou dh lHkh izdkj dh fo"kerkvksa dh HkhA blh lanHkZ esa ys[kd dgrs gS& ****bl lkjh fo"kerkvksa esa le> esa ugha vk jgk Fkk fd pkj ik¡p o"kZ ds iq= vkSj pkj ik¡p efgukas dh csVh dh ns[kjs[k iRuh dh rhekjnkjh ds lkFk izdk'kdks dh ek¡x dks fdl izdkj iwjk d#¡ vkSj ;fn iwjk ugha djrk gw¡ rks ?kj [kpZ dgk¡ ls vkSj dSls vk;sxk**[15]**

izdk'ku ds }kj ys[kd ds lUnHkZ esa [kqys rks Fks yssfdu fu;fer vFkZ ds }kj can tSls gh FksA 'kq# esa *fgUnh xzUFk jRukdj* us dqN iSls fn;s mlds ckn iyVdj ,d iSlk Hkh ugha fn;kA yksxks us eqdnek nk;j djus dh lykg nh ij ys[kd ds ikl eqdnes ckth ds fy, Qhl vkSj [kpsZ ds fy, iSlk u FkkA Fkddj iRuh us ipgÙkj #i;ksa ij i<kus dk dke 'kq# dj fn;k FkkA

ys[kd us viuh vkRedFkk esa jpukvksa dh izsj.kkvksa ds lkFk vU; lkfgR;dkjkas eqfDrcks/k] 'ke'ksj] d`".kk lkscrh] fueZy oekZ] JhdkUr oekZ ds O;ogkj o fujkyk ds fujkysiu dk] iar ds O;fDrRo dk] egknsoh dh gksyh o vufHkO;Dr cus jgus dh dyk dk Hkh fuladksp vadu fd;k gSA lkFk gh vius lg;ksx o foifÙk ds le; lkFk nsus okys yksxks ds izfr lân;rk ls d`rKrk dk Hkko Hkh O;Dr fd;k gSA **MkWa- uxsUnz dgrs gS& **jpukdkj viuh vkRedFkk] vius laLej.kksa vkSj viuh nSufUnfu;ksa esa viuh jpukvksa dh izsj.kkvks vkSj jpuk izfd;k ds vusd jgL; mn~?kkfVr dj nsrs gSA**[16]**

fuLkansg ge dg ldrs gS fd ys[kd us vius ifjos'kxr vuqHkoksa ,oa lkFk gh mu ifjfLFkfr;ksa ls la?k"kZ dj viuh vfLerk cukus ds fy, vuojr #i ls yxs jgsaA vius blh ;FkkFkZ thou ;k=k dks ikBdks ls voxr djk;k gSA ;FkkFkZ dh enn ysdj fy[kk x;k lkfgR; lekt ds fodkl esa enn djrk gSa rFkk lekt dks ,d LoLFk thou dh izsj.kk nsrk gSA ;gk¡ ys[kd }kjk ifjfLFkfr;ksa dk fp=.k djus ds ihNs ;gha Hkkouk jgh gS fd euq"; dk O;fDrRo cuus&fcx³us esa] lq[k&nq[k esa ,slh ifjfLFkfr;ksa ls xqtjrk gSA ikBd mu ifjfLFkfr;ksa dks le>s vkSj thou esa muls dqN cks/k ys] ;gh yksd eaxy dh Hkkouk vkRedFkk esaa fufgr gksrh gSA

lUnHkZ lwph%&

1- 'kekZ] MkW- jktef.k] lkfgR; ds #i] i`"B la[;k&228
2- esgrk] ujs'k] yksdHkkjrh izdk'ku] bykgkckn] 1995] i`"B la[;k&28
3- ogha] i`"B la[;k&26
4- ogha] i`"B la[;k&25
5- ogha] i`"B la[;k&26
6- ogha] i`"B la[;k&26&27
7- ogha] i`"B la[;k&23
8- ogha] i`"B la[;k&29
9- ogha] i`"B la[;k&42

10-ogha] i`"B la[;k&75
11-ogha] i`"B la[;k&56
12-ogha] i`"B la[;k&93
13-ogha] i`"B la[;k&97
14-ogha] i`"B la[;k&58
15-ogha] i`"B la[;k&95
16-MkWaa- gjn;ky] MkW- uxsUnz] fgUnh lkfgR; dk bfrgkl] e;qj isijcSDl] uks,Mk] 2013] i`"B la[;k&856

आंबेडकरवादी कविता : एक आकलन

शोधार्थी - डॉ. सतीश वाघमारे
जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुडेला, झुंझुनू

प्रस्तावना - आंबेडकरवादी साहित्याचा विचार करताना जाणवते ते म्हणजे आंबेडकरवादी साहित्याने कविता हा वाडमय प्रकार मोठ्या प्रमाणात प्रभावीपणे मांडला आहे. कविता ही मुख्यत: भावनेची भाषा मानते. कवितेचा जन्मच मुळात भावनेमध्ये झालेला असतो. मानवी मनातील उत्कट भावना या गीत कविता मार्फत व्यक्त होताना दिसतात. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या प्रेरणेने जागृत झाल्याने आंबेडकरवादी कवितेचा मोठ्या प्रमाणात उदय झालेला दिसतो. आंबेडकरांच्या कार्याने आणि विचाराने आंबेडकरवादी कवितेची ची निर्मिती झालेली आहे. अनेक वर्ष मनात खदखदत असणारे दु:ख, विचार हे या कविते मार्फत अनेक कवींनी मांडलेले आहेत. बाबासाहेबांच्या विचारांनी अनेक कवींच्या मनातील प्रतिमांना पंख फुटले आणि त्यांनी विद्रोही कविते मार्फत आपल्या मनातील भावना व्यक्त केल्या. आंबेडकरवादी कवितेला येथील दडपलेल्या माणसांचे दु:ख दिसले. नव कविता आणि आंबेडकरवादी कविता यांच्या प्रेरणा या परस्परविरोधी आहेत. त्यांच्यातील आशय जीवनदृष्टी या गोष्टीतही टोकाचा विरोध असल्याचे जाणवते. नवकविता आणि आंबेडकरवादी कविता मराठी कवितेतील एक सांस्कृतिक संघर्ष होय असे मानले जाते.

१९५६ नंतर मराठी भाषेमध्ये आंबेडकरवादी साहित्याची निर्मिती मोठ्या प्रमाणात झालेली दिसते. याच वर्षी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे देहावसान झाले. बाबासाहेबांचा क्रांती विचार हा त्यांच्या देहावसना नंतर अधिकच प्रज्वलित झालेला दिसतो. आंबेडकरवादी वाड्मयीन चळवळ ही मराठी साहित्य विश्वामधील नव्हे तर सर्व जागतिक साहित्य विश्वामधील एक अनन्य साधारण अशी चळवळ मानली जाते. आंबेडकरवादी वाड्मय चळवळीचा तात्विक कणा हा आंबेडकरवाद हा आहे. आंबेडकरवादी कवी वामन निंबाळकर, नामदेव ढसाळ, यशवंत मनोहर, दया पवार, अण्णाभाऊ साठे, प्रकाश जाधव, लोकनाथ यशवंत, भुजंग मेश्राम, महेंद्र भवरे इत्यादी

कवींनी त्यांच्या काव्यांमधून आंबेडकरी व्यथा, वेदना व विद्रोह मांडलेला आहे. यातील काही निवडक कवींच्या कवितांच्या सहाय्याने आपण येथे आंबेडकरवादी कवितेचा थोडक्यात आढावा घेणार आहोत. आंबेडकरवादी कवी वामन निंबाळकर, नामदेव ढसाळ, यशवंत मनोहर, दया पवार, प्रकाश जाधव, लोकनाथ यशवंत, भुजंग मेश्राम, महेंद्र भवरे इत्यादी कवींनी त्यांच्या काव्यांमधून आंबेडकरी व्यथा, वेदना व विद्रोह मांडलेला आहे.

आंबेडकरवादी कवितेचा उदय :-स्वतःला आणि सामाजिक सुखदुःखाला अभिव्यक्त करण्यासाठी कवीची कविता उदयास आली. संविधानातील स्वातंत्र्य, समता, बंधुता आणि सामाजिक न्याय ही प्राण तत्वे भारतीय परिपेक्षामध्ये अनुसरल्या जावीत या भावनेने आंबेडकरवादी कवींची कविता उदयास आली आहे. सर्व प्रकारची विषमता गळून समानतेचे वातावरण निर्माण करण्याच्या उद्देशाने कविता उदयास आली. माणूस केंद्रस्थानी मानून सामाजिक दुःख, वेदना, विद्रोह, नकाराच्या मुशीतून कविता उदयास आली. करुणा, अहिंसा, मैत्री मानवी कल्याणाच्या मंगलमय भावनेतून सुद्धा कवीने आपल्या कवितेला अभिव्यक्त केले आहे.; मानवी दुःख; हाच समतेकडे घेऊन जाणारी ही कविता माणसाचेच मंगलमय गीत गाते.

आंबेडकरवादी कवितेची थोडक्यात वाटचाल :-सामाजिक उत्तरदायित्व खांद्यावर घेऊन निघालेल्या या आंबेडकरवादी कवितेची वाटचाल परिवर्तनाच्या दिशेने चालली आहे. सोबतच या कवितेचा समाजोपयोगी बनव बनविण्याचा प्रयत्न कविता सुरू आहे.; धर्मशास्त्राच्या अमानुष नोंदी; नवीन कवितासंग्रह लिहून कवी या वाटचालीत वाड्मयीन भर घालीत आहे. या वाटचालीला अधिक प्रगल्भ करण्यासाठी; गुजेबा; आणि ; वाघबेट; या कादंबऱ्या येत आहे. या कवितेच्या वाटचालीचे वाडमयीन महत्त्व पटवून देण्यासाठी आणि कवितेची उपयुक्तता समाजासमोर ठेवण्यासाठी; काव्यसमीक्षा ; विस्ताराने लिहिणे ही कवीने त्यांची नैतिक जबाबदारी स्वीकारलेली आहे. यासाठी जेष्ठ लेखकांशी संवाद, संपादक, मित्र आणि समीक्षेची अचूक दृष्टी असणाऱ्या साहित्यिकांशी कवीची सातत्याने चर्चा होत राहत असते. आंबेडकर वादी कवितांचे लेखन करणारे काही निवडक कवी व त्यांच्या कविता यांचा आपण येथे थोडक्यात परामर्श घेणार आहोत.

अण्णाभाऊ साठे :-कवी अण्णा भाऊ साठे हे मूलतः शाहीर होय. जीवनात आलेले अनुभव, माक्स आणि आंबेडकर या त्रिसूत्रीनी अण्णाभाऊंना जडवादी नैतिक मूल्यांची जोडले होते. पृथ्वी ही शेषाच्या मस्तकावर तरली नसून ती कामकरी, कष्टकरी, मजूर, श्रमिक, दलित शेतकऱ्यांच्या तळहातावर तरली आहे;. ही ताकद या नैतिक मूल्यांमधूनच उसळलेली दिसते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी सांगितलेल्या या जीवन ध्येयाला अण्णाभाऊ साठे यांनी दीपस्तंभा मानले होते.

जग बदल घालुनी घाव, सांगून गेले मला भीमराव
गुलामगिरीच्या या चिखलात, रुतून बसला का ऐरावत ;

अण्णा भाऊंच्या या अविष्कारामध्ये निर्धार आहे. एक प्रकारची मी किती त्यामध्ये दिसून येते. अण्णा भाऊंची ही कविता जग बदलण्याचे सुंदर धारदार हत्यार झाली. प्रारंभापासूनच जीवन आणि काव्य यांच्यातील एक जीव बंधतेला या कवितेने कधी दुखवले नाही. अण्णाभाऊंच्या या काव्यातून ही बाब लक्षात आल्याशिवाय राहत नाही.

वामन निंबाळकर :- कवी वामन निंबाळकर यांचे ; गावकुसाबाहेरील कविता; आणि ;महायुद्ध; हे दोन कविता संग्रह आहेत.; गावकुसाबाहेरील कविता; यामध्ये यातनांचा तपशील आहे. दुःखांची पर्वे आहेत. क्रांती करून या सर्व माणसांना दुःख मुक्त केले पाहिजे. ही तगमग त्यांच्या कवितेमागे आहे.

त्यामुळेच कवी त्यांच्या कवितेत म्हणतात,
आज होणार आहे क्रांती
आमच्यातील प्रकंद शक्तीने पेट घेतला आहे;

एवढेच नव्हे तर पुढे कवी म्हणतात,
उद्याचा इतिहास आमचा आहे
आणि इतिहास लिहिणाराही

डॉ. बाबासाहेबांच्या तत्वज्ञानाची कवीच्या लेखणी मध्ये साठवण आहे. त्यामुळे तो दुखाने कळवळू शकतो. दुःखाला उराशी कवटाळून शकतो. या कवीला आंबेडकरवादाचा प्रखर कणा आहे. आंबेडकरवादाच्या सामाजिक आदर्शाचे भान आहे. महापुरुषाने दिलेल्या संकल्पाशी इमानदार राहण्याची प्रतिज्ञा कवीने त्याच्या कवितेतून केलेली आहे.

प्रकाश जाधव :- कवी प्रकाश जाधव यांचा ; दस्तखत; हा कवितासंग्रह आंबेडकरवादी कवितेमधला एक महत्त्वाचा कवितासंग्रह आहे. आंबेडकरवाची कविता मुख्यत्वे दोन जीवनवास्तवातील तपशिलाच्या द्वारा व्यक्त होत असल्याने आंबेडकरवादी कवितेत दोन धारा निर्माण झालेल्या दिसतात. प्रकाश जाधव हे मुंबई महानगराच्या वाड्मयीन आणि सामाजिक - सांस्कृतिक पर्यावरणाचा भाग आहेत. व्याकरण या पर्यावरणाचा भाषेसहीत तपशील त्यांच्या काव्यात येतो. या महानगरीय जनसामान्यांच्या यातनांची कवीची बांधीलकी आहे. या यातना समाजसंस्थेच्या पोटी जन्माला येतात. या क्रूर समाज रचनेविषयी कवी प्रकाश जाधव लिहितात,

आकाश वेगळी झिपरी रज हुडकीत
कचऱ्याच्या ढिगाआड बुडताना
लाख उमरखय्याम जागे होता स्वप्नातून
सच्चा वास्तवापुढे होकुसायची चित्रे आखूड वाटू लागतात.

अन् विसंगत ;.

भाऊ पंचभाई : आंबेडकरवादी कवितेच्या दुसऱ्या पिढीतील पाच - सात निवडत कवीमधले एक विशेष नाव भाऊ पंचभाई यांचे आहे. त्यांचा ; हुंकार वादळांचे ; हा कवितासंग्रह आहे. आंबेडकरवादाला आपला प्राण मानणारी कविता या कवीची आहे. त्यांच्या कवितेत ते म्हणतात की,

इथल्या देवालयातील दगडांना
छिन्न विच्छिन्न करीत
ती गात असते
ती गात असते घनांच्या तालावर
ती गात असते पुरोहितांच्या छाताडावर;

अशावेळी पंचभाई यांच्या कवितेच्या गळ्यात बावीस कलमी भिमायानअसते. सौंदर्य आणि काव्यसौंदर्य असा एक छान गोफ त्यांची कविता तयार करते. उपेक्षितांचे गाणे माणुसकीच्या मारेकऱ्यांनी कैद केले होते. हे उपेक्षितांचे गाणे कवी गातो आहे. पण या कवीचे गायन गायनासाठी नाही.

महेंद्र भवरे :- हे अलीकडच्या काही निवडक कवींमधील एक महत्त्वाचे नाव होय.; चिंताक्रांत मुलखाचे रुदन; हे त्यांच्या कवितासंग्रहाचे नाव आहे. कवी महेंद्र भवरे यांच्या व्यक्तिमत्त्वामध्ये विदर्भ आणि मुंबई येथील जीवन जाणीव आणि काव्य जाणीव यांचा काहीएक मेळ घातला गेला आहे. त्यांच्या कवितेत महानगरीय जीवनाच्या अनुषंगाने संभवणारी होणारी घुसमट ही येते. त्याचप्रमाणे गावगाड्याच्या अनुषंगाने येणारी सामाजिक सांस्कृतिक घुसमट देखील त्यांची कविता व्यक्त करते.

उंदरांनी कुरतडून टाकावे
रित्या उतरंडीचे काठ
भाडखाऊ हूजरे तसे उरावर दिनरात
कोंडीव श्वासांचे सर्वदूर मुलुख
मुलखाचे चिंताक्रांत रुदन
आवंढाही गिळता येत नाही;

समारोप :- आंबेडकरवादी मराठी कविता ही मराठी कवितेच्या इतिहासातील एक गौरवशाली घटना आहे. या कवितेने मराठी कवितेला नव्या भावविश्वाची , आशयविश्वाची, नव्या अनुभवांच्या जंगलाची आणि नव्या क्रांतिकारी जीवन दर्शनाची जोड करून दिली. आंबेडकरवादी कवितेतील भावविश्व परिवर्तनाच्या प्रेरणा उरात वागणारे गतिशील भावविश्व आहे. नियती आणि अध्यात्माची इतिहासातील भूमिका बहुजनांच्या गुलामीचे संवर्धन करणारी त्यांच्या जीवनातील परिवर्तनाच्या प्रेरणाची राख करणारी होती म्हणून नियती आणि अध्यात्माच्या प्रेतावर उभे राहूनच आंबेडकरवादी कवींनी मानवी ऊर्जेची गाणी गायली असे म्हणता येईल.

संदर्भ ग्रंथ

१) बाबुराव बागुल, दलित साहित्य : आजचे क्रांती विज्ञान, बुद्धिस्ट पब्लिकेशन हाऊस, नागपूर, १९८१, पृष्ठ क्र. ११०

२) म. द. हातकणंगलेकर, साहित्यविवेक, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, १९९९७,पृष्ठ क्र. ९६

३) बाळकृष्ण कवठेकर, दलित साहित्य : एक आकलन, मेहता पब्लिकेशन, पुणे, १९९१, पृष्ठ क्र. ३१

भक्तिकालीन काव्यों में सामाजिक चेतना

शोधार्थी का नामः– प्रभु दयाल शर्मा
शोध निर्देशकः– श्री शक्तिदान चारण
रजि. न.:– 25617110

जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुडेला, झुंझुनू

सारांशः– भक्ति कालीन काव्यों का हमारे सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में बहुत महत्व है। समाज को नई दिशा दिखाने एवं पुरातन रूढियों के विरुद्ध चेतना जाग्रत करने में इन काव्यों का विशेष योगदान है। रामचरितमानस, कवितावली, विनय पत्रिका, गीतावली, सूरसागर,बीजक आदि कृतियां धार्मिक आस्था के साथ–साथ मानवीय मूल्यों का विकास करने में सहायक हैं। तुलसी का काव्य सामान्य काव्य न होकर समाज के हर वर्ग के लोक कल्याण एवं समाज सुधार पर आश्रित काव्य है। तुलसी के अनुसार जाति–पाति, वर्ग भेद से परे मानवतावाद पर आधारित काव्य ही उत्तम काव्य की श्रेणी में आता है। तुलसी के अनुसार ''कीर्ति भनिति भूति भलसोई, सुरसरि सम सब कह हित होई'' तुलसी की तरह सूरदास के काव्य में भी नीति, भक्ति एवं श्रृंगार का सुंदर समन्वय मिलता है। सूरसागर, सूर सारावली, साहित्य लहरी आदि कृष्ण भक्ति काव्य में प्रेम की सात्विकता पर विशेष जोर देकर आधुनिक युवाओं को शारीरिक प्रेम की जगह आत्मिक प्रेम को अपनाने की प्रेरणा दी गई है। सूरदास के काव्य में सामाजिक लोक–चित्रण की मनमोहक छवि दिखाई देती है। निर्गुण भक्तकवियों ने भी अपने काव्यो के माध्यम से समाज में पनप रही विसंगतियों पाखण्डों एवं बाह्य आडम्बरों के प्रति लोगों में चेतना जाग्रत की है। निर्गुण संत कवियों द्वारा समाज में आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश जताया एवं निम्न वर्ग अथवा वंचित वर्ग के कल्याण के लिए हमेशा आवाज उठाई है। इस समय हमारे समाज में धार्मिक पतन हो रहा था। धार्मिकता पाखण्डों एवं कर्मकांडो में लिप्त होती जा रही थी। कबीर जैसे निर्गुण पंथी कवि ने धार्मिक पाखंड के विरुद्ध अपने काव्य' बीजक' में आवाज उठाई

''माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर,
कर का मनका डारि कै, मन का मनका फेर''

अतः स्पष्ट है कि तत्कालीन समाज को एकता व अखंडता के सूत्र में बांधने में निर्गुण काव्य "बीजक" का विशेष योगदान है। ''बीजक'' समाज के लिए चेतना के द्वार खोल रहा है। कबीर के गुरु रामानंद जी ने सर्वप्रथम जाति प्रथा पर आक्षेप कर कई जातियों के लोगों को अपना शिष्य बनाया। गुरु रामानंद के अनुसारः–

''जाति –पाति पूछे नहीं कोई हरि को भजै सो हरि का होई''

कठिन शब्दः–वात्सल्य, सात्विकता, विसंगतियों,मनुजा, यथार्थ,क्षणभंगुर

प्रस्तावनाः– भारतीय धार्मिक पद्धति में भक्ति का रास्ता उत्तम कोटि का माना जाता है। प्रारंभिक दौर से ही हमारी संस्कृति में मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रमुख तीन मार्गों पर विशेष जोर दिया गया है कर्म, ज्ञान एवं भक्तिमार्ग। इन मार्गों में कभी कर्म अपनी मुख्य भूमिका में था तो कभी ज्ञान एवं भक्ति की विशिष्टता थी। उपनिषदों के दौर में ज्ञान एवं ब्राह्मण काल में कर्म अपने चरम पर था। भक्ति हमारी मन की वह आंतरिक अभिव्यक्ति है जो पूर्णतया ईश्वर पूजा पर आश्रित है। आचार्य शुक्ल ने भी ''धर्म की भावात्मक अनुभूति को भक्ति कहा है'' भक्ति का प्रारंभिक विवरण हमारे प्राचीन वेदों में मिलता है। वैदिक कालीन मनुष्य सूर्य, अग्नि, इंद्र आदि को अपना आराध्य देवता मानकर उनकी भक्ति करता हुआ दिखाई देता है। महाभारत युग में भी मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में भक्ति को विशेष महत्व दिया गया है। छठी शताब्दी के अंतिम दौर से प्रारंभ होकर 10 वीं शताब्दी तक हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों एवं संतों ने हमारे समाज की धार्मिक विसंगतियों को दूर करने के लिए एक विशेष आंदोलन चलाया इसे भक्ति आंदोलन की संज्ञा दी गई। यह भक्ति आंदोलन सात्विक प्रेम पर केंद्रित था। भक्ति आंदोलन चलाने वाले शिव भक्तों को नयनार एवं विष्णु भक्तों को आलवार की संज्ञा से विभूषित किया गया। इन संतों ने समाज में धार्मिक एकता व अखंडता की भावना स्थापित की। जनसामान्य में भी इस आंदोलन के प्रति उत्साह एवं आस्था जाग्रत हुई परिणामस्वरुप भक्ति आंदोलन पूरे भारत को अपनी भक्ति धारा के आगोश में ले लिया। इन्हीं आलवार संतों की भक्ति से प्रभावित होकर रामानुजाचार्य ने विशिष्टादैतवाद का दर्शन हमारे तात्कालीन समाज को दिया। आगे चलकर रामानुजाचार्य के पद चिन्हों पर चलकर रामानंद जी ने भी भक्ति आंदोलन को उत्तर भारत में फैला दिया। भक्ति आंदोलन का प्रभाव हिंदी साहित्य जगत में भी दिखाई देता है ।इस आंदोलन का प्रभाव ही था कि हमें कबीर, तुलसी, सूरदास, मीराबाई, रैदास आदि महान संत कवियों से अवगत करवाया। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में दिए गए योगदान के कारण भक्ति काल हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। भक्तिकाल के कवि अपने काव्यो के माध्यम से समाज को एकता के सूत्र में बांधते हैं। उनके काव्यों का मुख्य स्वर मानवीय संवेदना के साथ लोक कल्याण की कामना करना है। भक्तिकालीन कवि जाति , धर्म ,लिंग भेद के

भाव मिटा कर आपसी प्रेमभाव को विशेष महत्व देते हैं। भक्ति काल में तत्कालीन समाज में वर्ण व्यवस्था में बिखराव शुरू हो गया था। वर्ण व्यवस्था में जातियों पर आधारित वर्ग विभेद की नीति से समाज की एकता खंडित होने के कगार पर थी। मानवीय मूल्यों में आई गिरावट से समाज में अंधविश्वास, पाखंड फैल गया था। ऐसी विकट परिस्थितियों में भक्ति कालीन कवियों ने समाज को जोड़ने एवं आपसी प्रेमभाव को बढ़ाने की बागडोर संभाली। भक्तिकालीन कवियों ने अपने काव्यों के माध्यम से समाज में इस बिखराव को रोकने का प्रयास किया। भक्ति कालीन काव्यों में मध्यकालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भक्ति कालीन काव्यों का विभाजन सगुण भक्ति काव्य एवं निर्गुण भक्ति काव्य में हो जाता है।

सगुण भक्ति काव्यों में सामाजिक चेतनाः– ईश्वर के साक्षात रूप अवतारों में विश्वास करने वाले भक्त कवियों द्वारा रचा गया काव्य सगुण भक्ति काव्य से विभूषित होता है। सगुण भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में लोकनायक तुलसी प्रसिद्ध है। तुलसी की राम के प्रति प्रेम एवं भक्ति उन्हें राम भक्ति शाखा के अग्रणी कवियों में शामिल करती है। जातीय कवि की उपमा से सम्मानित तुलसी ने अपने काव्य ब्रज भाषा एवं अवधी में रचें हैं। तुलसी की लोकप्रियता के संबंध में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि '' भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएं, जातियां, आचार विचार और पद्धतियां प्रचलित हैं। तुलसीदास स्वयं नाना स्तरों के समाज में रह चुके थे। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है''[1] तुलसी द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रंथ 'रामचरितमानस' तत्कालीन समाज की सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक स्थिति का निष्पक्ष मूल्यांकन करता है। इस समय समाज में संस्कारों का हनन हो रहा था। बाह्य आडंबर एवं कर्मकाण्डी लोग अपने आप को ज्ञानी मानने का पाखंड कर रहे थे। घमंड से चूर असामाजिक लोग बहन– बेटियों की इज्जत के साथ भी खिलवाड़ करने से नहीं कतराते थे।

''कलिकाल विहाल किए मनुजा नहि मानत कोई अनुजा– तनुजा''[2]

तुलसी की 'रामचरितमानस' एवं उनके पात्र हमारे लिए आज भी प्रासंगिक हैं। राम को आदर्श पुत्र के रूप में ,भरत को आदर्श भाई के रूप में, सीता का सात्विक चरित्र एवं हनुमान की निष्ठा पूर्ण भक्ति हमें समाज को जोड़ने का संदेश देती है। भरत का चरित्र वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमारे लिए आदर्श है। आज भाई– भाई आपस में एक दूसरे का गला काट रहे हैं। चंद रुपयों के लिए अपने ईमान को बेच डालते हैं। उनके लिए भरत का चरित्र चेतना जागृत करता है। अपने भाई के लिए राजपाट ,ऐशो आराम, धन दौलत को ठुकरा देना एवं सारे अनर्थ की जड़ अपनी माँ की गलत बात को न मान कर अपने भाई के लिए सर्वस्व त्याग कर देना अपने आप में एक भाई का आदर्श स्थापित करता है। दुखी भाव से भरत अपनी माता से कहता है कि

''जो पे कुरूचि रही अति तोही, जनमत काहे ना मारे मोहि।
पेड़ काटि ते पालउ सींचा, मीन जिअन निति बार उलीचा''

इस प्रकार तुलसी के काव्य में लोकमंगल एवं आदर्श समाज की परिकल्पना की गई है। भक्ति कालीन काव्य 'रामचरितमानस' में रीतिकाल की तरह स्त्री को भोग की वस्तु न मानकर करूणा की प्रतिमूर्ति बताया है। सीता के संबंध में तुलसी अपनी भावना प्रकट करते हुए कहते हैं कि ''जनक सुता जग जननी जानकी अतिसय प्रिय करुणानिधान की'' भक्तिकालीन काव्यों में 'कवितावली' भी तत्कालीन समाज की व्यथा एवं पीड़ा का मार्मिक चित्रण करती है । तत्कालीन समाज गरीबी, अकाल, महामारी, बेरोजगारी से जकड़ा हुआ था। भूखमरी से लोग तड़पते हुए मर रहे थे

''कालि बारहि बार दुकाल परै। बिनु अन्न दुःखी सब लोग मरै''[3]

भक्तिकालीन कवियों के संबंध में डॉ.रामविलास शर्मा का कथन है कि "तुलसी दास की वाणी मूलतः कृषक जनता की वाणी है। यह वाणी अप्रत्यक्ष रूप से 'विनय पत्रिका' में अपनी अपार वेदना से हृदय को द्रवित कर देती है''[4] भक्ति कालीन काव्य में केशव दास द्वारा रचित 'रामचंद्रिका' भी राम के आदर्श चरित्र को आधार बनाकर समाज को जागृत करने में सफल रही है। केशव दास ने रामराज्य के प्रति सकारात्मक भावना का परिचय देते हुए मानवीय मूल्यों का विकास किया है। भक्ति कालीन कृष्ण काव्य में भी समाज को सात्विक प्रेम से अवगत कराया गया है। सूरदास जैसे वात्सल्यमयी एवं श्रृंगार प्रिय कवि ने कृष्ण की बाल लीलाओं का मनोहरी चित्रण किया है। सूर के काव्य में कृष्ण की बाल लीला में बनावटी श्रृंगार न होकर सहजता से परिपूर्ण सात्विकता के दर्शन होते हैं। सूरदास की वात्सल्यता के संबंध में मैनेजर पांडे लिखते हैं कि'' सूर की काव्य अनुभूति में वात्सल्य भाव के जो रूप हैं वे एक विशेष संदर्भ से जुड़े होने पर भी व्यापक जन जीवन में मौजूद वात्सल्य की अनुभूति के समान है इसलिए सूरदास के वात्सल्य चित्रण में साधारणीकरण की असाधारण क्षमता है''[5]

सूरसागर में राधा कृष्ण प्रेम को जिस सात्विकता से सूरदास जी ने प्रस्तुत किया है वह वर्तमान परिपेक्ष्य में एक आदर्श मूल्य की स्थापना करता है। गोपियों की विरह लीला को जिस भाव से प्रस्तुत किया है वह आज की युवा पीढ़ी जो केवल शारीरिक प्रेम को ही महत्व देती हैं उनके लिए प्रेरणास्त्रोत है। सूर के अनुसार प्रेम शरीर से नहीं बल्कि आत्मा से होता है। 'सूरसागर'

कृति संयोग प्रेम के साथ–साथ वियोग प्रेम की मार्मिकता का एहसास दिलाती है। इनका वियोग वर्णन रीतिकालीन दरबारी कवियों की तरह भोगवादी या बनावटी न होकर सात्विकता एवं पवित्रता का माध्यम है।

कृष्ण भक्त कवियों में नंद दास द्वारा रचित काव्य में भी तात्कालीन समाज को दर्शन, भक्ति, नीति का पाठ पढ़ाया गया है। जड़िया कवि के रूप में प्रसिद्ध नंददास ने 'रास पंचाध्यायी', 'सिद्धांत पंचाध्यायी','रुकमणी मंगल', 'दानलीला' आदि कृतियों के माध्यम से मानवीय संवेदना का वास्तविक अंकन किया है।

कृष्ण भक्त कवियों के साथ–साथ कवयित्री मीराबाई भी अपनी सात्विक भक्ति भावना का परिचय देती हुई समाज की नारी के प्रति कुंठित मानसिकता का खुलकर विरोध किया है। कृष्ण के प्रति अटूट भक्ति के कारण मीरा राजपरिवार की ऐशो आराम को त्याग दिया। मीरा का विरह भोगवादी न होकर यथार्थ पर आधारित है। मीरा द्वारा रचित कृतियां आधुनिक समाज को एक नई दिशा प्रदान करती है। मीरा अपने प्रेम की सात्विकता को स्पष्ट करती हुई कहती है कि ''अंसुवन जल सिचि सिचि प्रेम बेलबोई''

कृष्ण भक्त कवियों में रसखान का नाम भी सम्मान पूर्वक लिया जाता है। रसखान के काव्य में कृष्ण लीला का वर्णन सवैयो के रूप में मिलता है । 'सुजान रसखान', 'प्रेम वाटिका' एवं 'दानलीला' आदि कृतियां रसखान की कृष्ण के प्रति भक्ति की सात्विकता को प्रमाणित कर रही हैं। रसखान का काव्य हिंदू मुस्लिम एकता को बढ़ावा देकर प्रेम का संदेश दे रहा है। मुस्लिम कवि होते हुए भी कृष्ण को इतनी गहनता से परखना एवं शृंगार, भक्ति, एवं प्रेम की त्रिवेणी में अपने आप को पूर्णतः बहा देना आधुनिक समाज के लिए एक प्रेरणा है। रसखान का काव्य वर्तमान दौर में हमारे समाज मे सांप्रदायिकता के नाम पर लड़ रहे असामाजिक तत्वों के लिए एक सबक है।

निर्गुण भक्ति काव्य में सामाजिक चेतनाः– ईश्वर के निराकार रूप एवं आत्मा में ही परमात्मा का वास होता है के ध्येय पर चलने वाले कवि निर्गुण भक्ति से संबंधित माने जाते हैं। निर्गुण भक्ति के प्रतिनिधि कवि में सर्वप्रथम कबीर का नाम आता है। जब हमारे समाज में सामाजिकता एवं धार्मिकता का अनवरत ह्रास हो रहा था तो ऐसे विकट समय में कबीर का उद्भव हुआ कबीर ने तत्कालीन जीवन में जो कुछ भोगा उसे अपने दोहो का माध्यम बना दिया। कबीर का ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान न होकर जीवन का वास्तविक अनुभव है जिसकी नींव यथार्थ पर टिकी हुई है।

''मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नही हाथ''[6]

से उनके जीवन की सरलता एवं निश्चलता का बोध होता है। कबीर के शिष्य धर्मदास द्वारा रचित एकमात्र ग्रंथ ''बीजक'' तात्कालिक सामाजिक जीवन का खाका प्रस्तुत करता है। इस समय हमारा समाज सांप्रदायिकता की विसंगति में फंसा हुआ था। हिंदू मुस्लिम एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास कर रहे थे ऐसी परिस्थिति में कबीर ने समाज को आईना दिखाने का काम अपने दोहों के माध्यम से किया।

'' चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोई''[7]

'बीजक' तत्कालीन समाज में फैली बुराइयों, आडंबरो एवं कर्मकांडो का खुलकर विरोध करता है ।जिस समय हिंदू धर्म बहुदेववाद से जकड़ा हुआ था। उस समय कबीर ने सर्वप्रथम इस धारणा का विरोध कर एकेश्वरवाद को महत्व दिया।

''हमारे राम रहीम करीमा केसो अलह–राम सति सोई।

विसमिल मेटि विसंभर एकै और न दूजा कोई''[8]

निर्गुण भक्ति का प्रमुख काव्य 'बीजक' में कबीर ने हमारी धार्मिक स्थलों मंदिर, मस्जिद आदि का भी खुलकर विरोध किया है। कबीर के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति मंदिर मस्जिदों में जाने से नहीं बल्कि आंतरिक ज्ञान से ही संभव है। हिंदू मुस्लिम दोनों ही अपने अपने आराध्य को श्रेष्ठ मानते हुए लड़ रहे हैं जबकि दोनों ने ही इनका वास्तविक मर्म नहीं जाना है।

'हिंदू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहिमाना
आपस में दोऊ मरतु है मरम कोई नहीं जाना''[9]

कबीर क्रांतिकारी संत के साथ साथ समाज का उद्धारकर्ता कवि के रूप में प्रसिद्ध है । 'बीजक' के अनुसार भगवान को ढूंढने में कहीं जाने की या बाहरी दिखावे की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आत्मा में ही परमात्मा का निवास होता है। यदि मानव अपने हृदय में ही अपने ब्रह्म को सच्चाई से ढूंढने का प्रयास करें तो वह मिल सकता है, इसके लिए मंदिर–मस्जिद घूमना आवश्यक नहीं है।

''मोको कहां ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद ना काबे कैलास में''[10]

कबीर समाज में फैली जाति प्रथा, छुआछूत मूर्ति पूजा, बहुदेववाद आदि विसंगतियों का खंडन करते हैं। इनके अनुसार अच्छे कुल या वंश में जन्म लेने से व्यक्ति कतई बड़ा नहीं होता है। व्यक्ति अपने कर्मों से बड़ा होता है। किसी जाति मजहब के आधार पर बड़े छोटे का भेदभाव रखना मानवता की निशानी नहीं है। जो व्यक्ति समाज की भलाई के लिए अच्छे कर्म करता है भले ही वह किसी जाति या मजहब से हो वही व्यक्ति वास्तविक रूप से बड़ा है।

'' ऊंचे कुल का जनमिया करनी ऊँच न हो
सुबरन कलस सुरा भरा साधु नींदत सोए''[11]

'बीजक' कृति हमें माया मोह लोभ लालच रहित वास्तविक जिंदगी का अनुभव कराती है । कबीर के अनुसार व्यक्ति अपने सच्चे कर्मों से ही अपना जीवन सुखमय बना सकता है । यह जीवन स्थाई न होकर क्षणभंगुर है। अतः मनुष्य को जितना भी समय मिला है उसे अच्छे कर्मों में बिताए तो उसके लिए सही होता है।

''झीनी झीनी बीनी चदरिया
काहै के ताना काहे के भरनी
कौन तार से बीनी चदरिया''[12]

निर्गुण भक्ति काव्यों मे 'बीजक' के अलावा 'ज्ञानबोध', 'ज्ञान परोछि', 'भक्ति विवेक' (मलूक दास जी) 'असादीवार', 'सोहिला' (गुरु नानक) 'सुंदर विलास' (सुंदर दास) आदि प्रमुख हैं। जिनमें तत्कालीन समाज की हर प्रकार की बुराइयां ,धार्मिक ,सामाजिक, पाखंडी, कर्मकांडो का निर्भीकता पूर्वक खंडन किया गया है। इन संतो ने अपनी भावना ज्यादातर दोहो एवं गेयपदों के माध्यम से ही प्रकट की है। इनकी भक्ति का मूल आत्मा मे ही परमात्मा में विश्वास, गुरु की वंदना, संसार की क्षणभंगुरता पर ही आधारित है। इन निर्गुण काव्य में एकेश्वरवाद के साथ– साथ सहज भक्ति पर विशेष जोर दिया गया है।

संदर्भः–

1. हिन्दी साहित्य की भूमिका,डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ.स.–101
2. श्रीरामचरितमानस सप्तम सोपान, उत्तरकांड (स.) योगेन्द्र प्रताप सिंह पद संख्या–102, पृ. स.–161
3. वही, पद सख्यां 101,पृ.सं.–129
4. डॉ.रामविलास शर्मा.आचार्य रामचन्द्र और हिन्दी आलोचना,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पहला संस्करण,1993,पृ.सं. –93–94
5. मेनेजर पाण्डेय,भक्ति आंदोलन और सूरदास काव्य,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली प्रथम संस्करण,पृ.सं.–181
6. कबीरःहजारी प्रसाद द्विवेदी,राजकमल प्रकाशन,पृ.सं.–18
7. वही,पृ.स.–265
8. वही, पृ.सं.–145
9. वही, पृ.सं.–147
10. वही, पृ.सं.–179
11. कबीर ग्रंथावली,श्यामसुंदर दास,इण्डियन प्रेस लि.,पृ.सं.–207
12. कबीरःहजारी प्रसाद द्विवेदी,पृ.स.–255

आधुनिक कथा साहित्य में सामाजिक चेतना।

शोधार्थीः—प्रभु दयाल शर्मा
शोध निर्देशकः— श्री शक्तिदान चारण
रजि. नं.—25617110
जे.जे.टी. विश्वविद्यालयल,चूड़ैला (झुन्झुनू)

सारांशः— मनुष्य एक सभ्य समाज का आधारस्तम्भ माना जाता है। समाज में रहकर ही वह अपनें विभिन्न क्रियाकलापों को पूर्णता के साथ सम्पन्न करता है। समाज को आगे बढ़ाने में तत्कालिन साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज की विसंगतियों,रूढ़ियों पर आक्षेप करना ही हमारे साहित्यकारों का मूल उद्देष्य रहा है। आदिकाल से ही हमारे प्राचीन साहित्यकारों,कवियों ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से समाज में फैले बुराइयों व विसंगतियों के विरूद्ध समाज को जाग्रत करने का प्रयास किया है। हिन्दी गद्य में कथा साहित्य एक प्राचीनतन विधा है जिसमें सामाजिक जीवन की वास्तविकता का समग्र अंकन मिलता है। भारतीय समाज में विविधता और व्यापकता का समावेष मिलता है। यह विविधता न केवल सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक,धार्मिक क्षैत्र में फैले हुई है बल्कि भारतीय समाज हर वर्ग का प्रभावित करता है। समाज में आदिकाल से जब—जब परिवर्तन आया है अथवा चेतना जाग्रत हुई है तब से ही समाज में साहित्य की भूमिका सर्वोपरी रही है। कबीर,तुलसीदास,सूरदास,रैदास,मीराबाई आदि महान संतो के दौहे आज भी हमारे समाज को जाग्रत कर रहे है। सामाजिक चेतना जागरूक सभ्य समाज की पहचान होती है। चेतना सदैव परिर्वतन चाहती है। जिस समाज में सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक चेतना जाग्रत हो जाती है वह समाज पुरातनता को छोड़कर नवीनता के विकसित मार्ग में ढ़ल जाता है। समय—समय पर हमारे आधुनिक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से परिवार,व्यक्ति प्रतिष्ठा,नर—नारी सबंध,नारी षिक्षा,दलित उत्थान,लोकमंगल आदि की विवेचना की है।डॉ. डी.पी. बरनवाल के अनुसार ''[1]साहित्यकार युग दृष्टा और सृष्टा होता है। वह समाज की समस्याओं को देखता सुनता व समझता है, उसी तरह साहित्य की सृष्टि करता है। वह समाज की नब्ज को पकड़कर उसके दुख दर्द को समझ कर उसी प्रकार की साहित्यौषधि प्रदान करता है, जिससे समाज स्वस्थ व सुखी हो। जब समाज में अन्याय और अत्याचार के बादल छा जाते हैं तो साहित्यकार क्रांति की बिगुल बजाता है और जब अशांति का साम्राज्य होता है तो वह अपनी रचनाओं द्वारा शांति का पाठ कराता है। वह समाज की महत्वपूर्ण इकाई होने के नाते समाज की समस्याओं एवं गतिविधियों को समझते हुए उनका समाधान करने की चेष्टा करता है"[1]

प्रस्तावनाः—आधुनिक कथाकारो में उपेंद्रनाथ अश्क ने अपनी कृतियों के माध्यम से समाज में व्याप्त रूढ़िवाद बाह्यआडंम्बर, अंधविश्वास पर कुठाराघात करते हुए समाज को एक नई दिशा प्रदान करने का साहसिक प्रयास किया है। "गिरती दीवारों" के संबंध में बच्चन सिंह का कथन है कि "यह उपन्यास निम्न मध्यम वर्ग के उन अनेक परिवेषों का चित्रण है जिसकी रूढ़ियों वैषम्य और शोषण के कारण इस वर्ग को अपने आदर्शों, आशा और आकांक्षाओं तथा सुनहले सपनों को दफना देना पड़ता है"

अमरकांत भी अपनी कहानियों में निम्न वर्ग की पीड़ा को उठाने का प्रयास किया है। "दोपहर का भोजन" शीर्षक कहानी में भी एक ऐसे निम्न वर्गीय परिवार का संघर्ष प्रस्तुत किया है जो दो वक्त की रोटी के लिए भी समाज के उच्च वर्ग से शोषित हो रहा है। "डिप्टी कलेक्टर" आधुनिक समय की एक ऐसी कहानी का प्रतिनिधित्व कर रही है जिसमें स्वतंत्रता के बाद एक सामान्य परिवार की इच्छा पारस्परिक विरोध के मध्य द्वंद्व का चित्रण हुआ है। कहानी का पात्र राकलदीप बाबू अपने पुत्र को उच्च पद दिलवाने के लिए आध्यात्मिकता का सहारा लेता है।

एक साहित्यकार के लिए सबसे बड़ी समस्या तब आती है जब वह अपनी लेखनी के माध्यम से एक ज्वलंत सामाजिक मुद्दा उठाने के लिए प्रयास करता है, क्योंकि इस प्रकार के कार्य से उन्हें समाज के कई गुटों के प्रतिरोध का सामना भी करना पड़ता है। लेकिन रविंद्र कालिया ने ऐसे प्रतिरोधों को ठुकरा कर समाज के वास्तविक सत्य को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। "मैं" शीर्षक कहानी में दाम्पत्य जीवन में सात्विक प्रेम की महत्ता को दर्शाया है और स्त्री चेतना को जागृत करने का शानदार प्रयास किया है। कालिया ने नारी के प्रति पुरातनपन्थी सोच रखने वाले समाज के ठेकेदारों पर आक्षेप करते हुए कहा है कि अब नारी अबला का पर्याय नहीं है बल्कि अपने समाज के लिए कर्मठता के साथ कार्य करने वाली वीरांगना है। उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्ग की संवेदना को अपनी लेखनी से वाणी प्रदान की है । रविन्द्र कालिया ने समाज के मानवीय जीवन की स्वार्थपरकता, आत्म केंद्रितता और खोखले जीवन का मार्मिक वर्णन किया है। "दफ्तर" कहानी के पात्र वास्तविक जीवन से जुड़े हुए हैं जो कि अपने परिवार का पालन पोषण कठिन परिस्थितियों में करते हैं। कालिया जी द्वारा रचित कहानी "सबसे छोटी तस्वीर" में मध्यम वर्गीय आधुनिक छद्म प्रेम व बाहरी दिखावे की संस्कृति पर आक्षेप किया गया है। कहानी में दो युवा पात्रों के माध्यम से मांसल प्रेम को आत्मिक प्रेम से जोड़ने का सशक्त प्रयास किया गया है। "नया कुरता" कहानी का प्रमुख पात्र साहिल गरीबी और बेकारी से संघर्ष करता दिखाया गया है। कहानी विपरीत परिस्थितियों में मानव समाज की संवेदन शून्यता को उजागर कर रही है। समाज की वास्तविकता का अंकन करते हुए लेखक कालिया ने समाज की अमानवीयता व हृदयहीनता को उजागर किया है।

भारतीय समाज के उत्थान में मध्यम वर्ग की अहम भूमिका है। नाना प्रकार के आंदोलनों के माध्यम से समाज के लिए यह वर्ग सदैव संघर्षरत रहा है। स्वतंत्र्योतर युग के बाद सामाजिक व्यवस्था में मध्यम वर्ग आधुनिक कथाकारो का प्रिय विषय रहा है। इन कथाकारो को मध्यम वर्ग से विशेष सहानुभूति है क्योंकि यह वर्ग उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के मध्य का वर्ग है जो सदैव समाज के हाशिए पर ही रहा है। रवींद्र कालिया ने इस तथाकथित विषय पर अपनी लेखनी चलाई "सिर्फ एक दिन" शीर्षक कहानी भी एक ऐसे मध्यम वर्ग के युवा की कहानी है जो बेरोजगारी व बेकारी से दुखी व कुंठित है। वह नवयुवक अपनी बेकारी का सारा दोष तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था को मानता है। रवींद्र कालिया ने ऐसे सामाजिक मध्यम वर्ग की संवेदना को उकेरने का प्रयास किया है। डॉ. कृष्ण मोहन का कथन है कि [2]"इस दौर की कहानियों में रवींद्र कालिया ने पिछड़ी हुई संवेदना से पीछा छुड़ाने में कामयाबी पाई है"[2]।

हमारे समाज की तात्कालिक समस्या में वेश्यावृत्ति भी प्रमुख है। इस विषय पर भी आधुनिक कथाकारो का ध्यान गया है। स्त्री को करुणा की प्रतिमूर्ति कहा जाता है,स्त्री सदैव से ही अपनी ममता, सेवा, त्याग की भावना से अपने परिवार, समाज को आगे बढ़ाती रही है। हमारे समाज में कुछ स्त्रियां आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण एक नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य हो रही हैं। ऐसी स्त्रियां मजबूरी में अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर पाती हैं अर्थात वेश्यावृत्ति में लिप्त हो जाती हैं। आधुनिक कथाकारो ने अपनी कृतियों के माध्यम से नारी चेतना जागृत करते हुए ऐसी स्त्रियों को स्वावलंबी बनाने व उनके अस्तित्व को बचाने का आह्वान किया है। आधुनिक कथाकारों ने समाज की तात्कालिक परिस्थितियों को समझते हुए समाज के प्रत्येक प्राणी में चेतना जागृत करने का प्रयास किया है क्योंकि मानवीय चेतना ही सामाजिक बदलाव का आधार है। जब मानव अपने अधिकारों के प्रति सजग हो जाएगा तो वह समाज की मुख्यधारा से जुड़ जाएगा। डॉ. रत्नाकर पांडे का कथन है कि [3]"सामाजिक चेतना भावात्मक या नकारात्मक नहीं होती, व्यक्तिमात्र में चैतन्य मूर्त है परंतु रूढि, अशिक्षा और अभावो के कारण यह दुष्प्रभावित या कुंठित हो जाती है। इस दुष्प्रभाव से मुक्त रहना और कुंठा को अपनी अन्तवृति से तिरोहित बनाए रखना ही सामाजिक चेतना है"[3]

धर्मवीर भारती की कहानियां भी मध्यमवर्गीय चेतना को उजागर कर रही है "मुर्दों का गांव" शीर्षक कहानी में एक जुलाहे की व्यथा पीड़ा व गरीबी का मार्मिक अंकन किया गया है। एक जुलाहे द्वारा समाज के परिवेश वातावरण व परिस्थितियों से संघर्ष करके समाज के सामने एक व्यक्ति चेतना का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक कथा साहित्यकारों में ममता कालिया भी अपना अग्रणी स्थान रखती हैं। उनका भाषा ज्ञान अत्यंत उच्च कोटि का है साधारण शब्दों में भी अपने प्रयोग से जादुई प्रभाव उत्पन्न कर देती है। ममता कालिया द्वारा रचित "दूसरा देवदास" शीर्षक कहानी हर की पौड़ी हरिद्वार के परिवेश को केंद्र में रखकर युवा मन की संवेदना, भावना और विचारगत की उथल–पुथल को आकर्षक भाषा शैली में प्रस्तुत करती है। यह कहानी युवा ह्रदय में पहली आकस्मिक मुलाकात की हलचल कल्पना और रूमानियत का उदाहरण है। संभव और पारो का प्रथम आकर्षण और परिस्थितियों का गुम्फन ही उनके प्रेम को मजबूती प्रदान करता है। समकालीन कहानी लेखन के क्षेत्र में संजीव का प्रमुख नाम है। उनकी कहानियां अधिकतर हंस पत्रिका में प्रकाशित हुई है। "आरोहण" कहानी पहाड़ी क्षेत्रों के मेहनतकश लोगों की जिंदगी को रेखांकित करती है। पहाड़ी लोगों की सरलता निश्चलता को बड़े ही मार्मिक शब्दों में चित्रित किया है।

साहित्य एक भावात्मक अनुभूति का नाम है। यह भावात्मक अनुभूति तात्कालिक समाज की वास्तविकता का अंकन करती है। साहित्यकार समाज के जिस परिवेश में रहता है उस परिवेश अथवा परिस्थितियो को अपनी लेखनी का माध्यम बना लेता है। डॉ. नगेंद्र के अनुसार [4]"साहित्यकार एक विशेष परिवेश में रहकर उसी से अनुभव ग्रहण करता हुआ साहित्य की रचना करता है। अतः अनिवार्यतः उसकी रचनाओं में अपने चारों ओर के वातावरण का प्रत्यंकन हो जाता है।"[4] आधुनिक कथाकारो ने अपने रचना लेखन में समाज को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने समाज की वास्तविक स्थिति का अंकन करने व समाज में रहने वाले मानव की बदतर स्थिति को सुधारने, समाज में व्याप्त रुढिगत प्रवृत्ति, ईष्या, द्वेष की भावना को जड़ से मिटाने का सार्थक प्रयास अपनी लेखनी से किया है। आधुनिक कथा साहित्य में प्रायः सभी वर्गों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। साहित्य कभी किसी भी वर्ग के साथ भेदभाव की नीति नहीं अपनाता है। आधुनिक साहित्यकारों ने भी निष्पक्षता पूर्वक समाज के उच्च वर्गों की दमनकारी नीतियों का भी खुलकर विरोध किया है। एक तरफ आदिकालीन कथाकारो ने अपनी खुशामदी का परिचय देते हुए प्रायः उच्च वर्गों अथवा अपने आश्रयदाताओं के विरुद्ध लेखन कार्य से सदैव बचते रहे हैं, परंतु आधुनिक कथा साहित्य में इन पूंजीपतियों अथवा उच्च वर्गों के शोषण, दमन, उत्पीड़न व अत्याचारों का वास्तविक चित्रण संवेदना के साथ किया है। आधुनिक कथा साहित्य कोरी कल्पना पर आश्रित न होकर समाज को चेतनता के द्वार पर लाने का एक सशक्त माध्यम है।

"गर्म राख" काव्य कृति के माध्यम से उपेंद्र नाथ 'अश्क' जी लाहौर के एक ऐसे मध्यम वर्गीय परिवार का मार्मिक अंकन करते हैं जो समाज के आपसी संबंधों और पुरातन रीतियों में उलझ कर आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। "बड़ी बड़ी आंखें'' उपेंद्र नाथ अश्क जी द्वारा रचित एक ऐसा उपन्यास है जो पूर्णतः मध्यम वर्गीय समाज पर आधारित है तात्कालिक समाज में किसानों, गरीबों की लाचारी भयावह है। जमीदार वर्ग किसानों, गरीबों का खून चूसते हैं, इन अभिजात्य वर्ग के विरुद्ध लोगों

को जागृत करने का आह्वान अशक जी ने अपने कथा साहित्य में किया है। एक समाज में रामराज्य तभी आ सकता है जब समाज मे हर वर्ग हर प्रकार से खुशहाल होगा।

आधुनिक कथा साहित्य के क्षेत्र में ग्रामीण समाज में चेतना जागृत करने का सफल प्रयास फणीश्वर नाथ रेणु ने भी किया है। रेणु जी समाज के शोषित वर्ग के प्रति अपनी विशेष सहानुभूति रखते हैं। "मैला आंचल" उपन्यास में ग्रामीण परिवेश के लोक जीवन की यथार्थता की सुंदर विवेचना की गई है। मेरीगंज गांव के शोषित किसानों की लाचारी व बदहवासी का संवेदना युक्त अंकन करने के साथ–साथ पूंजीपति व जमीदार वर्गों की आर्थिक शोषण की नीति पर आक्षेप किया है। अतः रेणु की कहानियो और उपन्यासो में आंचलिकता के साथ सामाजिक चेतना भी दृष्टिगोचर होती है। भगवती चरण वर्मा भी समाज की समस्या उठाने वाले रचनाकार माने जाते हैं। प्रेमचंद के सामाजिक बदलाव की विचारधारा के पद चिन्हों पर चलने का सार्थक प्रयास वर्मा जी ने किया है। व्यक्ति स्वतंत्र के आदर्श की स्थापना भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों का मूल उद्देश्य है।

साठोतरी युग और सामाजिक चेतनाः–हिंदी कथा साहित्य में 1960 के बाद का युग में सामाजिक चेतना के लिए उत्कर्ष का युग था। नई पीढ़ी के कथाकार नई सोच व नए विषयों के साथ साहित्य सृजन करने में रूचि दिखाई। साहित्यकारों का बौद्धिक चिंतन समाज के यथार्थ के साथ जुड़ा था। इन साहित्यकारों ने भाग्यवादी संकीर्ण विचारधारा पर आक्षेप कर स्वावलंबन और कर्मठता को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। डॉ. विजय द्विवेदी के अनुसार [5]''साठोत्तरी कहानी मनुष्य के भीतर दबे हुए सूक्ष्म से सूक्ष्म धरातलों को संघर्ष के स्वर पर अभिव्यक्ति देती है। नियति और भाग्यवादी स्थिति अब नहीं रही, स्थिति से समझौता नहीं जूझने की प्रक्रिया जारी है, साथ ही संबंधों का विघटन भी तेजी से होता जा रहा है। राजनेताओं के सारे आश्वासन खोखले और झूठे साबित हो रहे हैं जिस पुलिस पर रक्षा का भार है वही भक्षक बन रही है, इन सारी विसंगतियों का चित्रण साठोत्तरी कहानी में हुआ है।''[5] इस प्रकार साठोत्तरी युग में समाज के उज्ज्वल पक्ष के नए दृष्टिकोण को आरेखित करने का प्रयास किया गया है। आधुनिक युग के कथाकार समाज के अत्याचारों के विरुद्ध चुप बैठना कायरता मानते हैं। उनका मानना है कि हमें अपने हक के लिए न्याय पूर्वक संघर्षरत रहना चाहिए। कहानीकार कमलेश्वर का कथन है कि "आज का कहानीकार देख रहा है कि राजनीति ने सामान्य आदमी को मात्र एक मोहरा बना दिया है ऐसी स्थिति में सामान्य की यातनाएं अधिक समृद्ध और मारक हुई है। आज का लेखन मनुष्य की यादों का मूक और तटस्थ साक्षी नहीं अपितु उसका सहभोक्ता और सहयात्री भी है।"

निष्कर्षः–उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते है कि आधुनिक कथाकारों ने समसामयिक परिस्थितियों का अंकन करते हुये समाज का यर्थाथ का वास्तविक चित्रण किया है। मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं व विसंगतियों को भावुकता के साथ प्रस्तुत किया है। चेतना जाग्रती का ही प्रतिक है। इतिहास गवाह जब–जब समाज में चेतना जाग्रत हुई तब–तब अभिजात्य वर्ग के सिंहासन डोल गये, और समाज में एक नया बदलाव का दौर शुरू हुआ। व्यक्तियों का वह समूह जो व्यापकता लिए हुए हो और आपसी संबंधों पर आश्रित हो समाज कहलाता है। व्यक्ति व समाज एक दूसरे के पूरक हैं। बिना व्यक्ति के समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। व्यक्ति सच्चे अर्थों में सामाजिक है जो एक निश्चित सीमा में समाज में रहकर समान रूप से अपने मानवीय मूल्यों का आदान–प्रदान करता है। आधुनिक कथा साहित्य में जीवन की यथार्थता का बोध होता है। इस विधा में समकालीन भारतीय ग्रामीण समाज की विभिन्न समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है । जब–जब समाज अपने मूल उद्देश्य से भटकाव की तरफ अग्रसर होता है तब–तब हमारे कथा साहित्यकारों ने समाज को एक नई दिशा दिखाई है मानव समाज को पतन के गर्त से निकालकर उत्थान के रास्ते के लिए प्रेरित करना ही कथा साहित्यकारों का मुख्य कर्म है।

सन्दर्भः–

1. छायावादी काव्य में चेतना–डॉ. डी.पी. बरनवाल (पृ.सं.–52)
2. रविन्द्र कालिया की कहानियां– कृष्ण मोहन, (आवरण पृष्ठ)
3. हिन्दी साहित्यः सामाजिक चेतना –डॉ. रत्नाकर पांडे (पृ.सं.–160)
4. साहित्य का समाज शास्त्र–डॉ. नगेन्द्र (पृ.सं.–02)
5. साठ के बाद की कहानीःसमय बोध के निष्कर्ष पर–डॉ. नामेष्वर सिंह

हिन्दी साहित्य और गाँधी दर्शन का प्रभाव एवं वर्तमान में प्रासंगिकता

संगीता रोहिला
शोधार्थी–हिन्दी विभाग
श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चूड़ेला (झुंझुनूं)

सारः–आचार्य शुक्ल के अनुसार साहित्य समाज का दर्पण है, समाज में जिस विचारधारा, व्यक्ति या घटना की प्रधानता होती है साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब साफ–साफ दिखाई पड़ता है। या फिर यह कहा जा सकता है कि किसी भी विचारधारा एवं व्यक्तित्व का साहित्य पर प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य पड़ता है। इसी संदर्भ में अगर हम गाँधीजी के विचारों की बात करें तो महात्मा गाँधी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक युग के रूप में जाने जाते है। उनका व्यक्तित्व इतना महान था कि उनके जीवन का प्रभाव भारतीय जीवन दृष्टि, विचारधारा, संवेदना, समाज और व्यक्ति पर पड़ा। गाँधीजी के जीवन से भारतीय जन–जीवन और साहित्य प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। गाँधीवादी विचारों का प्रभाव लगभग सभी साहित्यकारों पर देखने को मिलता है। हिन्दी कथा साहित्य पर अगर हम गाँधी दर्शन का प्रभाव देखते हैं तो उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के उपन्यासों को देख सकते हैं। उनके उपन्यास प्रेमाश्रम, गोदान, रंगभूमि, कर्मभूमि आदि उपन्यासों पर गाँधीवादी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द– हिन्दी साहित्य; गाँधी दर्शन; नैतिकता

परिचयः–प्रेमचन्द आदर्शात्मक यथार्थवादी थे और समाज में एक व्यापक व्यवस्था के पक्षधर थे। उनके उपन्यासों में पात्रों के माध्यम से गाँधीवादी विचारों को देखा जा सकता है। जिस प्रकार गाँधी जी ने अपने आंदोलनों की शुरूआत में किसानों की समस्या का समाधान खोजने का प्रयास किया तथा उनको समस्या से छुटकारा दिलाया जो चंपारण किसान आंदोलन के नाम से जाना जाता है उसी से प्रभावित होकर प्रेमचन्द ने प्रेमाश्रम नामक उपन्यास की रचना की। इसी से जुड़ा हुआ प्रेमचन्द का एक अन्य रंगभूमि है, जिसमें सूरदास को उन्होंने गाँधी वादी पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है जो त्याग का प्रतीक है। जो पूंजीपति को अपनी जमीन नहीं देता हैं तथा सच्चाई की लड़ाई लड़ता है। गाँधी जी नारी स्वावलम्बन और नारी मुक्ति के पक्षधर थे जो साहित्य में भी देखने को मिलता है। प्रेमचन्द ने भी अपने कथा साहित्य में नारी मुक्ति और नारी स्वावलम्बन से संबंधित विचार व्यक्त किये हैं। उन्होंने अपनी रचना निर्मला, प्रतिज्ञा, सेवासदन आदि रचनाओं के माध्यम से नारी समस्या को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

गाँधी दर्शन– गाँधीजी की धर्म और दर्शन के प्रति गहरी आस्था थी और वे देश के उत्थान के लिये आध्यात्मिकता और नैतिकता को आवश्यक समझते थे। धर्म के बारे में गाँधीजी का मानना है कि प्रत्येक धर्म का मूल मन्तव्य सभी की भलाई एवं समाज को आदर्श बनाना होता है। गाँधीजी के इन्हीं विचारों को अज्ञेय की कहानी **'शरणदाता'** में देख सकते है। इसमें रफीकुद्दीन अपने मित्र देविन्दरलाल को उस समय शरण देते हैं जब दंगे भड़के हुए थे और मुसलमान हिन्दुओं को मारने पर उतारू थे। उस समय रफीकुद्दीन ने अपने मित्र की रक्षा करना परम् कर्त्तव्य माना। प्रेमचन्द के साथ ही जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में भी गाँधीवाद गाँधी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रसाद की रचनाओं में देश प्रेम और राष्ट्र गौरव की भावना की झलक देखने को मिलती है। प्रसाद की ध्रुवस्वामिनी में जहां नारी मुक्ति और नारी समस्या को इंगित किया गया है वहीं स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त रचनाओं में भारतीय गौरवशाली परम्परा को व्यक्त किया है। प्रसाद गाँधी जी के स्वदेश प्रेम के विचार से प्रभावित होकर चन्द्रगुप्त नाटक में कार्नेलिया के माध्यम से भारत देश की संस्कृति, गौरवशाली परम्परा और प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन करते हैं। जयशंकर प्रसाद और प्रेमचन्द की तरह ही जैनेन्द्र पर भी गाँधीजी के विचारों का प्रभाव पड़ा। जैनेन्द्र एक मनोवैज्ञानिक रचनाकार है तथा उनकी रचना परख, सुनीता, सुखदा, त्यागपत्र आदि में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान गाँधावादी दृष्टिकोण से खोजने का प्रयास किया हैं।

अमृतलाल नागर की **'एटम बम** कहानी भी गाँधीवादी विचारों पर आधारित है जिसमें परमाणु युद्ध की विभीषिका से दुखी कोबायाशी ने कहा कि ''हमारा क्या कसूर था जो हमें यह सजा मिली। ''गाँधीजी शांति के पक्षधर थे तथा युद्ध व हिंसा को देश के लिये अहितकर मानते हैं उसी प्रकार के विचार अमृतलाल नागर की इस कहानी में व्यक्त हुए है। हिन्दी की कहानी **'हार की जीत'** के रचनाकार सुदर्शन भी गाँधी दर्शन से प्रभावित है। **'हार की जीत'** में डाकू खड़गसिंह का व्यवहार परिवर्तन दिखाया है जिसके कारण वह बाबा भारती को घोड़ा वापस लौटा देता है। जो गाँधी के विचारों का ही प्रभाव था।

इसी प्रकार कथा साहित्य में जहां प्रेमचन्द सुदर्शन फणीश्वरनाथ रेणु, जैनेन्द्र, अज्ञेय विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर आदि की रचनाओं में गाँधी वादी विचार, उनके आदर्शों को देखते है वहीं कविता भी गाँधी के प्रभाव से मुक्त नहीं रह सकी। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचना भारत–भारती में गाँधी जी के आदर्शों को प्रस्तुत किया। वही राष्ट्र कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी कविता **निःशस्त्र सेनानी** मे महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व का वर्णन किया है इसमें गाँधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा अहिंसा के भावों की अभिव्यक्ति हुई है। सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं में भी गाँधीजी के दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। साम्प्रदायिक सौहार्द व सद्भाव की झाँकी उनकी कविताओं में गाँधी दर्शन का ही प्रभाव है। उनकी कविता **'प्रभु तुम मेरे मन की जानो'** में गांधी वादी विचारधारा का प्रभाव है जहां एक अछूत ईश्वर से प्रार्थना करती है–

तुम सबके भगवान, कहो मंदिर में भेदभाव कैसा,
हे मेरे पाषाण पसीजो, बोलो क्यों होता ऐसा।

इस कविता के माध्यम से सुभद्राकुमारी चौहान ने समाज में व्याप्त छुआछूत की भावना का विरोध किया है जो गाँधी वादी विचारधारा पर आधारित है तथा जिसका वर्णन गाँधी जी ने स्वयं अपनी आत्म कथा **'सत्य के साथ मेरे प्रयोग'** में किया है। इसके साथ ही बालकृष्ण शर्मा, भवानी प्रसाद मिश्र, सोहन लाल द्विवेदी के काव्य में गाँधी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है।

भारतीय दर्शन के अनुसार अहिंसा के कई रूप है जिसमें क्षमा भी एक रूप है। साहित्य में भी गाँधी जी के इस विचार का प्रयोग देखने को मिलता है। दिनकर जी ने **'कुरूक्षेत्र'** में लिखा है–

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।

निष्कर्ष – इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हिन्दी साहित्य में गाँधी वादी विचार का प्रभाव हर जगह है। साहित्य समाज में परिवर्तन ला सकता है। इसलिए साहित्यकारों ने माना है कि देश का भविष्य आज के युवाओं के हाथ में हैं। उन्होंने युवाओं को ही देश का उद्धारक माना तथा युवाओं को स्वावलम्बी बनाने तथा उनका रचनात्मक सहयोग पाने का प्रयास किया।

अतः हम कह सकते हैं कि आज भी गाँधी दर्शन उतना ही महत्व रखता है जितना उस समय में था। आज मनुष्य–मनुष्य में विश्वास नहीं रहा सामाजिक मूल्य भी निरन्तर कमजोर होते जा रहें हैं तथा राजनीति में भी भ्रष्टाचार, बेईमानी और सत्ता का मोह इतना अधिक हो गया है कि आज गाँधी जी का सत्य अहिंसा त्याग का दर्शन प्रासंगिक सा लगता है। आज का मनुष्य एक–दूसरे को शक की नजर से देखता है क्योंकि उसकी आत्मा और उसके व्यवहार में दोगलापन नजर आ रहा है। मनुष्य छल कपट की मानसिकता के साथ विकृत जीवन जी रहा है। अतः आज की स्थिति को देखकर हम कह सकते है कि हमे अगर आज रामराज्य की स्थापना करनी है या एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना है तो गाँधी दर्शन ही एक सही विकल्प है। अतः गाँधी दर्शन आज के समाज की जरूरत बन गया है।

संदर्भ गंथ –

1. प्रेमाश्रम,
2. गोदान,
3. कर्मभूमि,
4. शरणदाता,
5. अज्ञेय,
6. स्कन्दगुप्त।

गांधी जी के आत्मकथा के अंश –

अन्नाहार के प्रति श्रद्धावान, शांतिनिकेतन, खादी के जनक, बलवान के साथ भिड़न्त।

Effects of COVID-19 on Female Education with special reference to Degree College Students in Mumbai Maharashtra

Details of 1st Author:

BRISTI GOURGOPAL BISWAS (RESEARCH SCHOLAR OF JJTU)
Registration no: 221219027 (Economics)
Contact no: 7219489555
Email id: bristibiswas50@gmail.com
Details of 2nd Author:
Dr. SHIV KUMAR (RESEARCH GUIDE (JJTU)
Registration no: JJT/2K9/CMG/970
Designation: Assistant professor
Contact no: 9461506746
Email id: shivkumar1121@gmail.com

ABSTRACT: - COVID-19 pandemic had hit India at the end of January 2020. It resulted in the immediate shutdown of the educational sector where schools, colleges, and universities came into immediate action and restricted their functioning on an immediate basis in order to control the spreading of the disease, resulting in the postponement of examinations or cancellation of the examinations. The students were promoted on the basis of their earlier grades. the impact of COVID-19 was seen throughout the country and the educational sector faced similar challenges, in order to provide proper educational guidance to the students without compromising with the framed syllabus the educational sector started implementing and introducing new ways of technologies where the students did not need to come out of the house and come in contact with the outside world but they can continue their education without any disturbance with the help of online teaching. It is usually seen that if any unfortunate circumstances in an economy take place it is the poor income class people who are most affected. India, being one of the developing countries, faces a similar issue where the low-income group is affected most and during the pandemic, it makes the condition more miserable for them. the pandemic has resulted in a situation where families who are financially weaker restrict their girl child do get a proper education or in order to avoid the expenses of the girl child they are forced to early marriages, or a choice between educating the male child and female child had to be made by the families where the preference would be given to the male child for providing education since it is considered that in India. The girl child would get married and would serve to the other family and the boy is considered to be the one who would take care of the parents in their old age hence the preference for providing education would be given to the boy over the girl child this represents the gender discrimination which is still observed in several parts of the country. The paper highlights the impact of COVID-19 on female education amongst the degree college female students and the challenges faced due to the closedown of the institutions, hence the paper analyses the scenario of female students and overviews the experience of online education provided during the pandemic. It will focus on the current situation of the female students due to the effect of COVID-19.

Keyword:- COVID-19, Female, Education, Online education.

Introduction:-The COVID-19 has resulted in the closing of the educational institution overall which has resulted in many students being out of their classroom and daily routine, this has resulted in a dramatic change in the education system where e-learning is adapted for the

teaching process and it has given a boom to the educational digital platforms which is expected that could last for a longer. This change in the educational system and the effects are observed worldwide where the educational system has impacted so does the students are facing the similar challenges of coping with the e-learning process. The sudden shift of the classroom teaching with the adoption of the online teaching and learning process is suggested to be continued post-pandemic and the impact of this change in the education system has resulted on the students as well. Many online learning platforms have started functioning after the arrival of COVID-19 worldwide who are providing online tutoring and has resulted in two introductions of learning apps that are easily available. This has increased the participation of students' interest through online learning. In India, as the arrival of COVID-19, was seen, the educational institutions such as schools, colleges, and universities were closed on an immediate basis in order to control the spread of the disease, this resulted in the immediate cancellation of examinations and at some places, the examinations were halted.The learning online system is considered as one of the effective ways of learning but if rightly used and for those who have the access to technology for such students the online learning becomes effective many students show more interest in online learning than the traditional classrooms because the technology supports the option of re-reading, recording and learning the same things again which usually is not seen in the traditional classrooms but the online learning can vary amongst the age groups, it can be difficult for the younger ones to concentrate on online learning since they easily get distracted. The COVID-19 has impacted the education system in such a way that it has resulted in questioning the efficiency of the students who are learning through the online platform and how effective this learning can be for success in the future. Other than this the biggest is how many students can take the privilege of learning through the online platform since some can lack the basic requirement for Online learning. India has been a developing country has most of the rural areas where the lack of infrastructure is still observed hence technology cannot be provided in such areas for online education due to which many families and students had to bear the consequences where they could not avail the facility of learning online this has resulted in adverse effect in most of the poor families where the female child who is already considered as a burden in the Indian poor families had to compromise with their studies, many girls started working as domestic helpers, somewhere forced to get married since the burden of the female child would be reduced. Many such consequences are observed in poor Indian families where the female children are seen compromising with their studies. Either they are working on a part-time or full-time basis to support their families or had to give up on their education in order to provide the education two their siblings due to the lack of technology.

Review of Literature

Amrita Verma Pargaien, et al (2020) Paper highlights the effect on the education system due to the pandemic, another alternative that helps to aid the process of learning. Parameters are set on the basis of the age group and the various initiatives that are launched by the government for smooth functioning of online learning are proposed through the paper where the primary focus on education is soon during the peak period of a pandemic. The shift from classroom learning to online learning was the biggest step taken by educational institutions. The paper also highlights the psychological impact which individual has gone through on the basis of the category of age groups and the impact on the examination which was observed due to COVID-19 and how the situation is overcome is discussed in the paper by highlighting the issues of cyber security and the privacy and the impact on environment and market is attributed in the paper.

Mukesh Rawal (2021) COVID-19 has impacted the education system not only in India but throughout other countries. The teachers have also been affected and the students are facing the same consequences. The Indian education system after the arrival of COVID-19 is highlighted in the paper and how the students are learning through the online classes at their home is discussed in the paper. There were no immediate solutions found after the closing of the educational institution. Later there was a shift observed in online education where the education system focused on the student's perspective and continued with the online learning. The impact on teachers was that they were not well aware of the technical Support. Many times, teachers faced technical issues but even after various difficulties, there were some positive impacts on the education system as well as a few negative impacts. Certain recommendations are suggested through the paper and various measures are to be provided to continue with the teaching-learning process successfully.

Priyanka Pandita Kaul, et al (2020) the spread of COVID-19 was very quick and fast which resulted in teaching from the traditional classroom two online teachings or learning. due to this pandemic, the exams were impacted hence the education sector was massively affected students had to remain in their homes for a longer period of time and they had the facility of online learning provided by the universities hence this paper identifies the challenges and the measures to deal with the COVID-19 without any adverse effect on the learning. The government of India has Played an efficient role to provide e-learning for the students so that they do not face any consequences of the pandemic. The learning style has changed for the students which are considered as one of the challenges and the teachers who were not technically all there are given the training facilities to overcome the challenges. The paper identifies the opportunities given in the education system and the impact that the teachers and students are dealing with due to COVID-19 in India is mainly focused on, and the positive effect and the negative effect of COVID- 19 are shown through the paper.

Objectives

The overall objective of this study is to analyse the Effects of COVID-19 on Degree college female students:

1. To analyse the effects of COVID-19 on female students of Degree college students.
2. To examine the effectiveness of online learning due to COVID-19.
3. To study the negative effects faced by female degree college students due to the pandemic.

Methodology:-The data and information presented in the study are collected from the primary investigation from undergraduate and postgraduate female degree college students in Mumbai. Articles and reports related to the impact of COVID-19 on education are also referred to for the study purpose.

Purpose of the study:-The main purpose of the study is to analyse the effects of COVID-19 on female students. It covers the effects of COVID-19 on degree college students in Mumbai. The study will focus on the positive and negative effects on female students due to the pandemic and will highlight the mode of learning and their preferences.

Results and Discussion (Effects of COVID-19 based on the Investigation):-COVID-19 arrived in India at the end of January 2020 which led the government to come into action and the lockdown was imposed throughout the country leading to shut down of schools, colleges, and Universities. The educational sector was the first to impose the closure to curb the spread of the diseases that impacted in various ways the life of the students, not only in terms of their education but also psychologically they were affected. The investigation was done on the age group above 18 years which included undergraduate and postgraduate students of Degree

College from Mumbai. The study is examined on the basis of responses collected by 156 female respondents of Degree College. Around 28.2% of female respondents were belonging to postgraduate courses and 71.8% of female respondents were undergraduates belonging to Arts, Commerce, and Science. The mode of transportation for this female distance was railways, roadways that consisted of 20.5% female students who went to the college walking, 37.8% students went college either by bus, auto-rickshaw or by bikes and Scooter. This was possible only for the students residing nearby the colleges and around 41.7% of students travelled by train to reach their colleges during this pandemic it would have been the biggest question that traveling at a distance would have been safer for such students who do not reside nearby the colleges hence shutting down off the educational institution was a wise decision and supported by 67.3% of female respondents after the arrival of COVID-19. The arrival of COVID-19 was such that the learning mode got shifted from traditional classrooms to online teaching where around 94.2% female respondents were Attending the online class through mobile phones and 5.8% female respondents were attending the class on the desktop, Mumbai Is the capital of Maharashtra which is said to be one of the developed cities hence development and technology both are observed in the city. But even after attending the online classes, 84% of respondents believed that their studies were affected due to the arrival of the pandemic, and 16 % of students' studies were not affected. This was due to the sudden change in the learning pattern of the students.

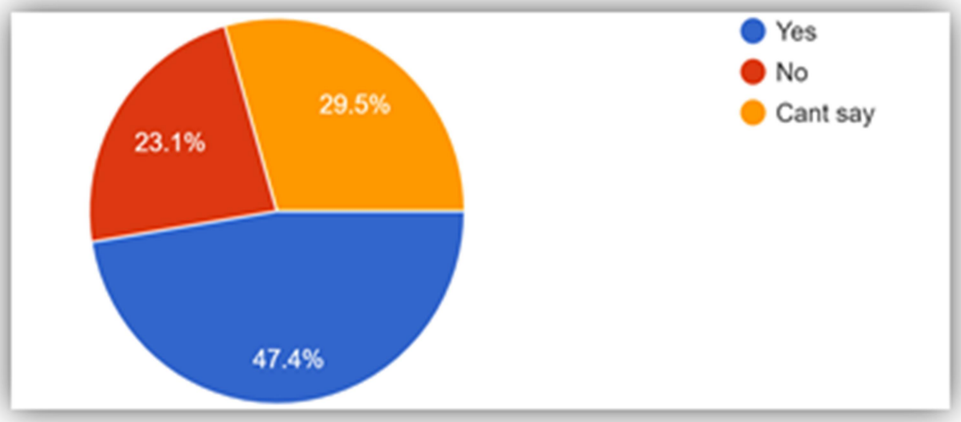

Figure 1.1: Showing the percentage if the syllabus was imparted accurately through online classes.

Figure 1.1 shows that 47% of female students responded that the syllabus was imparted accurately online, 29.5% of students cannot decide if the lecture was delivered with proper guidance or not, and 23.1% of students responded that the syllabus was not imparted with proper guidance.

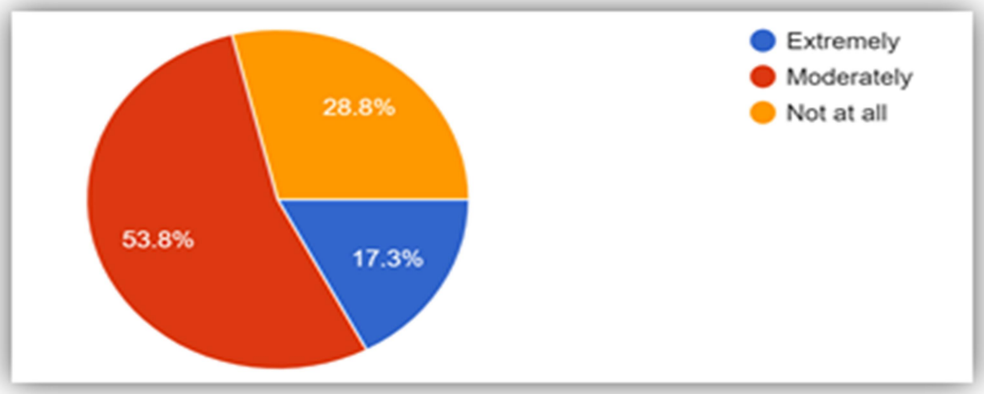

Figure 1.2: Showing the percentage of female respondents satisfied with online teaching.

Figure 1.2: This shows that 53.8% are fairly satisfied with online learning, 28.8% of respondents are not satisfied at all due to various issues, and 17.3% of female respondents are satisfied with online learning which is the least of all the responses.

Looking at the situation around 35.3% of students preferred attending the offline lectures by going to colleges and 64.7 percent students preferred staying at home and attending their online classes but this resulted in a situation where 84% of students consider that offline teaching is more effective than online teaching and 16% respondents believe online teaching is more effective as compared to the traditional learning. 51.9% of students responded that they did not get any concession or instalment facility for paying their fees during the pandemic which is one of the negative effects during the pandemic due to financial crisis since there was a high rate of unemployment seen during this, and 48.1% Respondents were given the concession for their college fees.

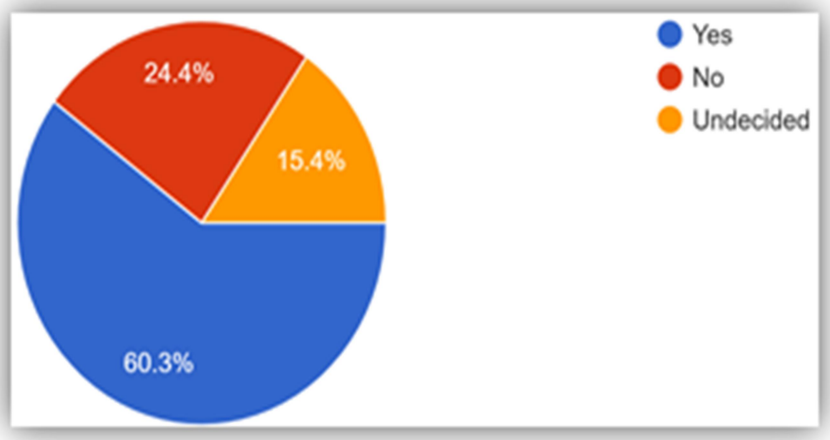

Figure 1.3: Showing the percentage of female students' difficulty in paying fees during the pandemic.

Figure 1.3 shows that female students faced several difficulties during the pandemic around 60.3% of students faced difficulty for paying their fees 24.4% of respondents did not face any difficulty for paying the fees and 15.4% of students could not make out if there was any difficulty for paying the fees during the pandemic since the fees were paid by their parents.

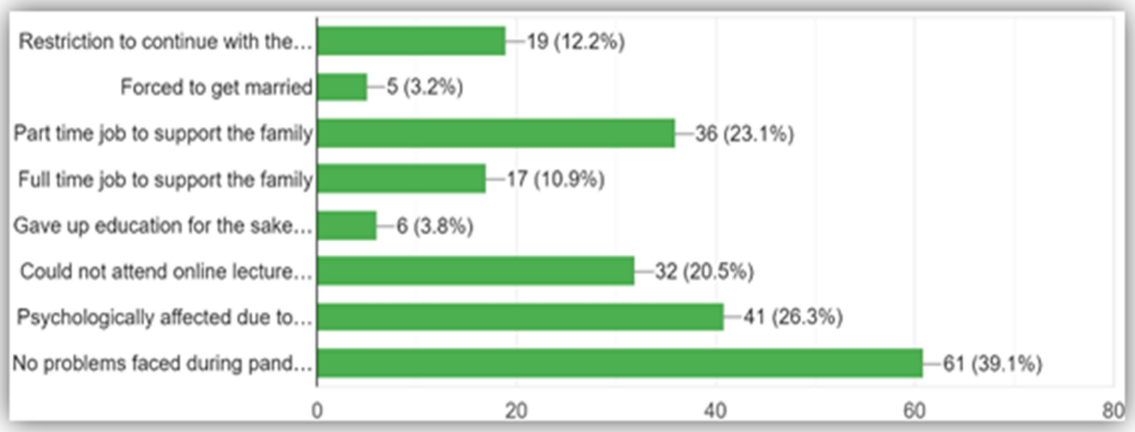

Figure 1.4: Showing the percentage of effects on female students of Degree college due to COVID-19.

Figure 1.4 shows 39.1% of female students did not face any problems during the pandemic whereas 26.3% of students were psychologically affected looking at the situation two of the world, many female students took up jobs in order to support their families 23.1% of students took a part-time job and 10.9 %students word doing full-time jobs. Around 3.8% of students gave up their education in order to provide education to their siblings and 12.2% of students discontinued their studies due to personal reasons whereas 3.2% of female students ended up getting married.

Conclusion:-COVID-19 has affected the education system throughout the world. The students of the degree college in Mumbai have not faced any major difficulties to attend online lectures, due to the advancement of technology as most of the students have their own mobile phones. But definitely, there are some negative effects of the pandemic on the student's life and it has resulted adversely and psychologically affected them. The students are expected to overcomes the negative externalities faced due to COVID-19 and as the educational institutions are reopened safely students should take proper precautions and begin with a positive mindset in order to achieve the agenda for Sustainable development.

Reference:

1. Amrita Verma Pargaien, Saurabh Pargaien, Neetika Tripathi, Sonika Upadhaya, Gauri Joshi, Sapna Joshi, Manisha S. Kedar, 2020, IMPACT OF COVID-19 ON INDIAN EDUCATION, International Journal of Management (IJM), Volume 11, Issue 10, ISSN Print: 0976-6502, pp. 441-448.
2. Mukesh Rawal (2021) An analysis of COVID-19 Impacts on Indian Education System, Educational Resurgence Journal Volum2, Issue 5, Jan.2021, ISSN 2581-9100, PP-35-40.
3. Priyanka Pandita Koul, Omkar Jagdish Bapat (2020) Impact of COVID-19 on Education sector in India, Journal of critical Reviews, VOL 7, ISSUE 11, ISSN- 2394-5125, PP-3919-3930.

Neo-humanism: A Critical Study

Pranav Sudhir Mulaokar
Research Scholar of English Literature
From JJT University, Rajasthan
Guide: Dr. Sudipta Roy Chowdhury
Email: pranavmulaokar@gmail.com

Abstract:-Neo-humanism is the philosophical theory developed by Indian mystic and social activist Prabhat Ranjan Sarkar in 20th century. It redefines the humanism. So to understand neo-humanism, we must explore the theory of humanism.Humanism as a literary theory bloomed during Renaissance period in England. Gradually it spread in whole Europe. Humanist like Socrates, Mahatma Gandhi and Rabindranath Tagore believed that man's ultimate concern is man himself. Mahatma Gandhi and Tagore saw God in man and claimed that worship of God lays in service of mankind. During colonisation period, the humanism was restricted to the rights of humanity and humanitarians started dominating other religions of the world.But neo-humanism developed as the reaction to such thinking. It demands inclusiveness to humans, plants, animals and non-living beings. They all are connected in terms of the notions they stand for in our mind. We have responsibility towards them. They influence and affect our lives directly or indirectly. Neo-humanist like Paul Elmer More and Irving Babbitt aimed for analysis of good ancient cultures and religions but rejected "transcendental deity." Some neo-humanist turned back and looked for moral and spiritual base of human life.

Keywords:-Humanism, Neo-humanism, Philosophy, Theory, Literature.

Introduction:-Neo-humanism is a reaction against the literary movement "Humanism". It further redefines humanism. So to understand Neo-humanism we have to get acquaint with Humanism. Humanism is a philosophy centred on man and his happiness. This gives value and significance to human beings. Humanist like Socrates, Mahatma Gandhi and Rabindranath Tagore believed that man's ultimate concern is man himself. Mahatma Gandhi and Tagore saw God in man and claimed that worship of God lays in service of mankind. Humanism begun with Greek philosopher Pythagoras in 5th century B.C. Pythagoras' dictum "man is measure of all things" is very famous. It bloomed as a literary movement in 15th century Renaissance in England and Europe. In 17th century, Erasmus' philosophy of Christ turned to the problems of moral and religious life. He claimed for balance of religion and science in life.It was the time when Church slowly started to expand their power by spreading Christianity through wars in medieval period. There were series of Crusade war. Pope called all the Christians to Europe and told to fight against Muslims to proclaim the Holy Land in the East. This series of war led to lots of bloodshed and disbelieve in Church. But when Crusaders returned from East, they brought with them the manuscripts and text of Ancient Mediterranean Societies which included the works of ancient Greek and Roman philosophy, scientist, astronomers and mathematicians. People started reading these texts on their own without the supervision of Church. These texts glorified human life. The characters of the text even fought with God for humanity. Whereas the church was of the view that humans are sinners by birth and punishment is only the salvation for them. So the quality of questioning developed during this period. There were humanistic ideologies in these texts. These texts taught to enjoy the human life and live happily. This led to the humanistic movement in England. Before the regime of King Henry the VIII, the Church was

the ruling power of England as king also accepted the decisions given by Church in any field of administration. But when King Henry the VIII came on throne, he went against Church. He wanted to have a male child but his first wife Catherine Queen of Argon gave him daughter marry. In his desire to have a son, he married six times. This was totally against Church. To dominate the Church, he passed the Act of Supremacy in the Parliament. This act stated that King is the supreme to the Church of England. To marry with the second wife Queen Anne Bowline, he disinherited Marry which was the child from first wife. Catholic Church never accepted the marriage of King Henry VIII with the Protestant Queen Ann Bowline. So Elizabeth was considered illegitimate child. When her step sister Marry became queen, she accused Elizabeth for treason and considered her as protestant rebel. Later she imprisoned in Tower of London. This led to rebellions in England.Another reason for the rise of Humanism in London is the black plague. Up to 60% of population died due to this plague. People started questioning the power of Church and God while watching their relatives and loved ones dying in front of them. Clergies and priests started giving pardons in terms of money, which angered people. Church become wealthier and people become poorer. The corruption of Church got exposed to all.The Renaissance Humanism stressed that humans are responsible for the progress of other humans individually and socially. But as science developed, humanism typically became non-religious movement and worked with secularism. Humanism talked about the dignity and moral education of humans. Later it rejected all the supernatural powers like Gods and angels and became a natural philosophy. It focused on solving problems of humanity. But eventually it dominated other religions of the world in the name of Western Human Rights and humanitarians.Neo-humanism was not a reaction against humanism but redefines it. Neo-humanism as a theory was developed by Indian philosopher, social activist and a mystic Prabhat Ranjan Sarkar in 1982. He shifted human-centric view to universalism. Universalism tells us that all animate and inanimate things in universe are connected. He stressed existential importance of humans. This theory talks about inner and outer world of human. He founded Ananda Marga organization in Bucharest, Romania.In Neo-humanism; we turn back to the ancient classical literature to get the answers for contemporary problems of humanity. Humanism gave importance to humanity above all even nature, animals, environment, etc. We lost the connection with nature. While progressing in scientific field, we made grave damages to nature. As a result we are facing draughts, floods, earthquakes, climate changes, global warming, and etc. Neo-humanism is a practise of love for all. The origin of this concept can be researched in ancient yogic perception that we all are interconnected. Where it may be animate or inanimate beings in the whole universe, they all are influences by the presence of each other. It is a more holistic approach to humanity. It is a strong critic of nationalism, sexism, specism, capitalism and racism. It is a kind of spiritual practise which claims that we have a belonging to universe.It demands change in us to promote change in world. It says that as humans we need to explore ourselves and accordingly decide our way of living. It disagrees with the notion of competing with others in limited resources. It has a direct impact on one's individual and collective journey through out the life. Morality comes into picture when one has to prepare one's mind to think without bias and heart to love all. Neo-humanism has impacted various fields of human life like philosophy, literature, literary criticism and theory, education, translational studies, medical field, digitalization, management, etc. Let us see in short its impact on literature.Neo-humanist like Paul Elmer More and Irving Babbitt aimed for analysis of good ancient cultures and religions but rejected "transcendental deity." Other neo-humanist turned back and looked for moral and spiritual base of human life. Spirituality accepts the transcendental deity as present in all living and non-living creation in the universe.

William Faulkner once said: "Humanist and novelist are associated intimately and this association is not accidental." Like humanist, novelist depicted corruption in society and gave importance to rationalism, scientific attitude and critical thinking of Humanism. In 20th century, D.H. Lawrence proclaimed that novel is at the centre of humanistic culture because of its expression of human experience. Even Henry James explains that "his central concern is with human beings". Major post-war novelist Kingsley Amis, Pearl S. Buck, William Golding and Doris Lessing talked about human values. They enlightened humanity and fought against modern despair.Let us critically analyse the novel "Cry, the Beloved Country" written by Alan Paton. In the novel, there is depiction of condition of humanity during Apartheid movement in Africa. It is the novel written by Alan Paton in order to support blacks against the Apartheid movement. In this movement the native Africans were thrown out of their home, to live in slums and to work for lower wages; without any valid reason. They were forced to migrate to infertile places in country-side. As a result natives became poor and the younger generation has to go for work in cities where they got the risky and low wedge jobs like working in mines, coal factories, newspaper sale, and etc. Living in slum and inhuman condition, they were diseased with T.B., diarrhoea, malnutrition, etc. Whites even rejected to give rights to vote, travel, and marriage along with whites to the blacks. This injustice leads to gambling, crimes, alcoholism, murders, prostitution etc in society. They started fighting for their rights. Such situations are depicted in the novel and best part of the novel is that it ends with both whites and blacks work hand in hand for upliftment of black community.It is our social responsibility to work for the truly oppressed people by society. There are visionary people who work for humanity in the novel. Individuals should be conscious with the collective responsibility. Such individual is Stephen Kumalo who loves all irrespective of their colour. The violent leaders like Dubula, John and Tomlinson hate whites. They believe in strikes for higher standard of living. Dubula boycott buses to get bus fare reduction. John stirs rebellion and demands share from newly found gold.Absalom and his companions break into Arthur Jarvis' house for burglary. In fear, Absalom shoots Arthur who was working for blacks. Young men like Absalom, Matthew and Pafari are uprooted and aimless blacks who turned into criminals. Absalom confess his crime and his lawyer Mr. Carmichael, defends him. But the white Judge declared Absalom to be hanged to death. His companions Pafari and Matthew flew to avoid punishment. Here, the writer Palton asks a question: "can such capital punishment would stop the crime?" this is answered by the character Mr. James Jarvis, father of Arthur Jarvis who was killed.

Mr. James Jarvis represents Christian brotherhood. After his son's death, he came across the different remedies and the essays on the problems faced by the Africans written by his visionary son Arthur. Kumalo and James Jarvis work for black community. Remedies like equal education, agricultural development are talked about in the novel. Msimangu who is a black with Vincent and Arthur Jarvis, who are whites, worked for South Africa. Also with few whites like Arthur and Mr. James Jarvis along with African humanist like Kumalo work together for upliftment of humanity. James Jarvis and Kumalo even go for spiritual adventures and thus turning to neo-humanist perspective.

The central philosophy of the novel is giving importance to higher values like love, charity, compassion, repentance, forgiveness against hatred, anger, selfishness, indifference and revenge. It spread truth and goodness in society. If man acted as a brother to man, there would be no conflict between races. In the third book of the series, Paton depicts Stephen Kumalo, James

Jarvis, Arthur Jarvis and his son on spiritual level. Man can enjoy life if he conquered fear by love. This love is universal love, based on Christian idea of 'brotherhood of man'.

Conclusion:-Neo-humanism is not just a reaction but also re-definition of humanism. We have to understand humanism for learning neo-humanism. It is a gift given by Indian mystic Prabhat Sarkar to the world in 20th century. It has affected all walks of life today. It emphasises universalism and inter-connectedness of living being, non-living being and environment.

Bibliography:

- M. King (2014), "Renaissance Humanism: An Anthology of Sources", Hackett Publishing Company.
- B. Bhambar (2012), "Alan Paton's Cry, the Beloved Country: A Study in Humanism", The Criterion: An International Journal in English, Volume III, Issue IV, Page no. 2-6.
- J. Kraye (1996), "The Cambridge Companion to Renaissance", Cambridge University Press.
- P. Sarkar (1982), "Neo-humanism: The Liberation of Intellect"

हरियाणा लोकसाहित्य में चित्रित नारी का लोक सांस्कृतिक रुप

शोधार्थीः ममता रानी
पंजीकरण संख्या : 25819095
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी,
झुंझुनूं–राजस्थान 333001

शोध आलेख सार –'लोक संस्कृति' शब्द के साथ अर्थ की परिभाषा देना बहुत आवश्यक है। लोक संस्कृति शब्द की परिभाषा देने के लिए विभिन्न दार्शनिक, समाजशास्त्रीय और बुद्धिजीवियों ने अपने मत और विचार प्रस्तुत किए हैं। लोक संस्कृति को जीवन का सार बताया गया है। लोक संस्कृति के बिना इंसान परिपूर्ण नहीं है इसके बिना वह पशु पक्षियों के बराबर जीवन निर्वाह करेगा। लोक संस्कृति को समझने के लिए स्थापत्य कलाओं तथा साहित्य को जानने के साथ–साथ जन–मानस के आचार–विचार, भक्ति–नीति, रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, आस्थाअनास्था, विश्वास, संस्कार, भाग्य–कर्म, कर्म–काण्ड, नीति–अनीति, आवागमन के साधन, सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक स्थिति, उत्सव, त्यौहार, मेले, व्रत, कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य, पाप–पुण्य, दर्शन, धर्म–अधर्म आदि पहलुओं को भी जानना आवश्यक है। लोक संस्कृति में 'लोक' शब्द अन्य अर्थ ध्वनित करता है। लोक संस्कृति में लोक ग्रामीणों, देहाती, जनमानस को कहा जाता है। लोक संस्कृति की विशेषताएं इस प्रकार है। लोक संस्कृति आडम्बरहीन संस्कृति हैं। सभ्य–असभ्य का ध्यान किए बिना ही लोक संस्कृति का प्रवाह बिना परिवर्तन के चलता रहता है। लोक संस्कृति के विशेष गुणों–त्याग, सेवा, परोपकार, दया, प्रेम, भाईचारा, सहानुभूति, सहयोग आदि को लोक मानस नहीं त्यागता। जीवन की नश्वरता, भाग्यवाद कर्मवाद, पुनर्जन्म आदि भावनाओं को लोक संस्कृति में ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। लोक संस्कृति में संकीर्णता होती है क्योंकि अन्य विदेशी लोक संस्कृतियों का प्रभाव इस पर नहीं पड़ता।

मूल शब्दः–लोकसाहित्य,बुद्धिजीवियों, सुभाषित, संस्कार, परिगणन शैलियों

आदि मानव की लोक संस्कृति के कुछ पहलुओं को आज तक लोक–मानस संभाल कर रखे हुए है। परम्परा का अविच्छिन्न प्रवाह लोक संस्कृति में चलता रहता है। अंध विश्वास या लोक विश्वासों को सर्वाधिक महत्त्व लोक संस्कृति में दिया जाता है। रहन–सहन एवम् खान–पान में सादापन होता है। जीवन की नश्वरता, भाग्यवाद कर्मवाद, पुनर्जन्म आदि भावनाओं को लोक संस्कृति में ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। लोक संस्कृति में संकीर्णता होती है क्योंकि अन्य विदेशी लोक संस्कृतियों का प्रभाव इस पर नहीं पड़ता। आदि मानव की लोक संस्कृति के कुछ पहलुओं को आज तक लोक–मानस संभाल कर रखे हुए है। परम्परा का अविच्छिन्न प्रवाह लोक संस्कृति में चलता रहता है। अंध विश्वास या लोक विश्वासों को सर्वाधिक महत्त्व लोक संस्कृति में दिया जाता है। रहन–सहन एवम् खान–पान में सादापन होता है।

डॉ. अग्रवाल ने लोक संस्कृति के बारे में व्याख्या भी की है। लोक संस्कृति हवा में भले ही ना दिखाई दे, लेकिन प्रकृति का प्रभाव लोक संस्कृति पर आवश्य पड़ता है। तीनों काल में लोक संस्कृति का रूप अलग होता है। भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल में एक जैसी लोक संस्कृति होना संभव नहीं है। लेकिन भूतकाल, वर्तमान काल की लोक संस्कृति का प्रभाव भविष्य काल पर असर जरूर डालता है। अतः लोक संस्कृति समाज में व्याप्त रहती है। डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार ''लोक संस्कृति मानव की विभिन्न साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है।''[1] आचार्य नरेंद्र देव लोक संस्कृति को मन के धरातल पर चित्रित करते हैं। "लोक संस्कृति चित्रभूमि की खेती है। अंतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जिस का चित सुभाषित है, उसकी वाणी और उसके शरीर चेष्टा भी सुसंस्कृत होगी। जिस प्रकार की हमारी दृष्टि होगी, उसी प्रकार का क्रियाकलाप होगा। विकास क्रम से यह दृष्टि व्यापक होती है और जब विश्व की एकता के साधन एक एकत्रित हो जाते हैं, तब यह एकता कार्य में परिणत होने के लिए प्रयत्नशील हो जाती है।"[2] लोक संस्कृति जीवन में मनुष्य को बहुत कुछ सिखाती है। मनुष्य समाज का हिस्सा है, जो समाज में रहकर ही साहित्य की रचना करता है। साहित्य और समाज एक दूसरे पर निर्भर हैं, जबकि धर्म लोगों की आस्था और भावना का विषय है। हरियाणवी साहित्य में धर्म कर्म पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है। लोक कवि सहज रूप से गा उठते हैंः–

''धर्म कताई धर्म बुनाई धर्म धुलाई लोढी,मनै बेअक्ले कपड़े तार धरे और धर्म की चादर ओढी
बण मुश्ताख फिरूं दुनिया में ले पोस्त कैसी डोडी।" [3]

उत्सव, तीज–त्यौहार तथा मेलों के आयोजन की व्यवस्था लोक संस्कृति में अधिक होती है। मनोरंजन के साधन भी अपनी लोक संस्कृति से जुटाए जाते हैं।"[4] हरियाणा की लोक संस्कृति को किसी लोक कवि ने बहुत ही सहज रूप से उभारा है।

'रहणा भाईयां का चाहे बैर क्यूं न हो। चालणा राह (माग) का चाहे फेर क्यूं न हो।
खाणा घर का चाहे जहर क्यूं न हो। भजणा हरि का चाहे देर क्यू न हो।
खाणा देसी फल का चाहे बेर क्यूं न हो।''[5]

डॉ.राधाकृष्णन के अनुसार "लोक संस्कृति विवेक बुद्धि का जीवन भली प्रकार मान लेने का नाम है।"[6] राधाकृष्णन ने लोक संस्कृति के एक पहलू को ही चित्रित किया है। रामधारी सिंह दिनकर के मतानुसार ''लोक संस्कृति जिंदगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते हैं।''[7] डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार ''लोक संस्कृति मनुष्य के भूत, वर्तमान, भविष्य का संर्वांगणपूर्ण प्रकार है। हमारे जीवन का ढंग हमारी लोक संस्कृ ति है। लोक संस्कृति हवा में नहीं तैरती बल्कि उसका मूर्तिमान रूप होता है। जीवन में नाना विविध रूपों का समुदाय ही लोक संस्कृति है।''[8]

हरियाणा के लोग किसी प्रकार के आडंबरों में विश्वास नहीं करते। यह परंपरागत ढंग से अपने रीति रिवाजों को मनाते हैं। कुछ शाहरी और पाश्चात्य प्रभाव के कारण हमारी परंपरा का सही ढंग से निर्वहन नहीं हो रहा, लेकिन विपरीत परिस्थितियों में सब गांव के लोग एक दूसरे की मदद करते हैं, चाहे वह खेत का काम हो या विवाह का काम। सब लोग मिलजुलकर काम को पूरा करते हैं। सांस्कृतिक रूप से इसका विश्लेषण आगे किया जाएगा।

हरियाणा के मनुष्य बहुत ही सीधे–साधे हैं। वह लोग अपने जीवन शैली में किसी तरह का कोई आडंबर नहीं रचते। इसी तरह उनका खान–पान भी बहुत ही सरल होता है। भगवान और अहिंसा में आस्था रखने के कारण हरियाणा के लोग मांस–मीट आदि का सेवन भी नहीं करते। यहां के लोग बहुत ही सीधे–सादे ढंग से ही अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। हरियाणा में होने वाले लोकनाट्य में सरलता से जीवन व्यतीत करने के ढंग और खान–पान का सजीव आंकलन किया जाता है। सेठ 'ताराचंद' नामक सांग में लोगों के रहन–सहन के ढंग को और घर बनाने की कला को उदाहरण के द्वारा प्रकट किया गया है–

''खुशी हो या देख के नया चूबारा,
भीतर फिरै सालियां का लारा,
मनैं प्रेम चाहिए थारा
मैं भूखा ना धन का।
झलक लागै गोरे गातां मैं, न्यू के पेट भरै बातां मैं
दे दिया तेरे हाथ मैं संतरा नए सन का।''[9]

'चाप सिंह' नामक सांग में सारी स्त्रियां नव विवाहित लड़की को डोली में से उतारते समय उसको जीवन को सरल रूप से जीने के ढंग की शिक्षा देती है। आपस में प्रेम के बिना हमारा जीवन कुछ भी नहीं है–

"जोड़ी सजती कोन्या दो बिन, बात बणै ना आपस के मोह बिन।
जोबन के रंग राग, बाग, लाग, जिगर मैं, घर मैं लुगाइयां का रोला से।''[10]

सांग में सांगी सरल तरीके से जीवन जीने की भावनाओं को प्रकट करता है

'विराट पर्व' नामक सांग में सुदेषणा के रूप में जब कीचक द्रोपती की तरफ मोहित हो जाता है तब उसे द्रोपदी के प्रति वासनात्मक प्रेम को दर्शाते हुए शिक्षा दी है–

'तू प्रेम के जल का सतसंग करले ना ज्यान मुफ्त मैं जागी।
प्रेम के जल नै पति समझले जगह बचण की पागी।''[11]

लोगों की भावनाओं के अनुसार ही सांगी गृहस्थी कैसे चलाई जाती है,यह शिक्षा भी देते हैं, कहते हैं कि जब बेटी जवान हो जाती है तो उसको घर में ना रख कर उसकी शादी कर देनी चाहिए नहीं तो पाप लगता है, सांग 'नल दंपति, में कवि ने जिंदगी को निर्वाह करने के लिए शादी को जरूरी माना है।'

चाहिए ज्यान तै प्यारी रखणी, निगाह धर्म की सारी रखणी।
सयानी बेटी कंवारी रखणी, दिन–दिन धर्म की हानि होगी
दमयन्ती कुंद रहण लाग गी, बोलण नैं बन्द बाणी होगी।"[12]

जो नारी पतिव्रत धर्म का पालन करती है उसके लिए उसका पति की सर्वश्रेष्ठ होता है, हमारी संस्कृति में नारी के लिए उसके पति की सच्चे मन से सेवा करना ही नारी का सबसे बड़ा धर्म बताया है। इस सांग मैं पतिव्रता धर्म को अपनाकर जीवन–जीने की शिक्षा कवि के माध्यम से दी गई है।

''लख्मी चंद प्रेम घणा जागै, तूं मनै राम बराबर लागै।
पतिव्रता नहीं पति नै त्यागै, भूखे थके हारे नै।"[13]

इसी तरह 'लकड़हारा' नामक सांग में भी कवि ने मानव–स्त्री के आपसी प्रेम को सुनहरे भविष्य के लिए जरूरी माना है, जब बीना की शादी एक लकड़हारे से कर दी जाती है तो वह अपने पति में ही सारे सुखों का अनुभव करती है, उसके रहन–सहन को एक उदाहरण के द्वारा देखते हैं।–

''भीड़ पड़ी मै नार मरद की खास दवाई हो सै ,प्यार मै टोटा के हो सै।
पतिव्रता नित स्वर्ग झूला दे, दुख–विपदा की फांस खुला दे।
भूला दे दरी पलंग निवार, तकिया–सोड–रजाई किनारी गोटा के हो सै।"[14]

'नौटंकी' नामक सांग में जीवन–भावना के लिए जरूरी आपसी भाई–चारा के प्रेम को दर्शाते हैं, फूल सिंह का छोटा भाई उसको आपसी प्रेम के बारे दुहाई देकर विनती करता है

'लक्षमण की ज्यूं बणा फिरूं था भाई का हितकारी। भाई कैसी चीज जगत मैं और नहीं सै प्यारी।
राम, लक्षमण, भरत, शत्रुघ्न नै जाणै दुनिया सारी। राजतिलक की गेंद बणा के भरत नै ठोकर मारी।"?[15]

विवाह के अवसर पर सब लोग सजते हैं, 'मीराबाई' सांग में दिखाया गया हे की जब अपने माँ के साथ मीराबाई मन्दिर जाती हे तो वह पर वारातियों और दूल्हे की सुंदरता का वर्णन करके कवि लिखता है–

'तेरी सूरत पै कुरबान, नारंगी सेहरे वाले ,सखी गावैं, बाजा बाजै, सिर पै सोने का छत्र बिराजै
सिर साजै ध्वजा निशान, हो हुशियार बछेरे वाले।"[16]

पदमावत की सुंदरता का वर्णन भी कवि के दवारा बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। अपने मित्र चंद्रदत्त से रणबीर पद्मावती के गहनों के बारे में बताता है–

''मुर्गाई की चाल चलै, पायलों की झंकार ,सीने ऊपर चोली खिंचे, गलै मैं फूलों का हार
माथे ऊपर बिन्दी टिक्की, रोली भी देती बहार।"[17]

अब रणबीर के द्वारा पद्मावत के वस्त्र और सुंदरता का सभी ने वर्णन करते हुए लिखा है–

'परी इन्द्र राजा के घर की, तसल्ली छैल छबीले नर की ,कुल पन्द्रह सेर की बोझ मैं, –
सूधां लहंगा और चीर चाहे कोए देख लो ठाके।"[18]

प्रकृति और मानव का आपस में गहरा संबंध रहता है, हमारे रहन–सहन के ढंग में प्रकृति माध्यम बने बिना रह नहीं सकती। प्रकृति के बिना हम जीवन–भावना की कल्पना भी नहीं कर सकते। 'ज्यानी चोर' नामक सांग में हरियाणा में रहने वाले लोगों के खान–पान व रहन–सहन के बारे में बताया गया है, जब गोधू अपनी मौसी के बाद में जाकर अलग–अलग प्रकार की सब्जियों को देखता है तो प्रकृति का वर्णन किस प्रकार करता है,

'लहसुन और प्याज देखे, अजवायन की क्यारी भरी। धनियां, जीरा, लौंग, इलायची, सौंफ खड़ी हरी भरी।
दाल मूंग, मोठ, उदड़, मिसरी और अरहर निरी। गाजर, मूली और शलगम शकरकंदी पै चाला कट्या।
आलू और रेतीली अरबी, कचालू का भाव पट्या।''[19]?

'नौटंकी' नामक सांग में कवि ने खाने–पीने की वस्तुओं के बारे में बताया है, जब फूल सिंह बाग में जाता है तो मालिक फल लगे हुए पेड़–पौधों की सुंदरता को बिगाड़ने पर उसे झिडकती है–

'बिना हुकम गया बाग मैं बड़, तनै तोडी केले की छड। दी छेड बेल अंगूर की है, फिर गया तरहैं लंगूर की है।
तोड़ी छाल खजूर की रै, छोड्या तनै ना एक आम रे।[20]

हरियाणा में शर्बत को मुख्य पेय पदार्थ माना जाता है, इसलिए कवियों ने शर्बत का अपने शब्दों में विशेष जिक्र किया है, 'विराट पर्व' नामक सांग में कीचक द्रोपदी को भैंस और खुद को हरा–भरा खेत बता कर खुद को द्रोपदी के आगे समर्पित कर देना चाहता है, द्रोपदी की मीठी शर्बत जैसी वाणी से वह मंत्रमुग्ध हो जाता है

'तूं द्रोपदी शरबत सा घोल, ज्यों–ज्यों कीचक के बीच लठौलै।
तूं मैंस बिराणी खांड्या होके डौलै, तनै सारा खेत चराणा सै।''[21]

खाने–पीने की वस्तुओं के द्वारा भी प्रेम–सौंदर्य का जिक्र कभी के द्वारा किया गया है। 'पूरणमल' नामक सांग में कवि ने नूणादे के शरीर के सौंदर्य का वर्णन खाने–पीने की वस्तुओं से किया है। कवि ने बताया है कि नूणादे के होंठ किशमिश की तरह मीठे है

'तेरी शान नै देख–देख मेरा जी भटकै सै। रूत पै मेवा पाक रही या नीचे ने लटकै सै।
सेव–संतरे, अंगूर, दाख क्यूं ना बणके सुआ खाता।''[22]

हरियाणा में एक कहावत बहुत प्रसिद्ध है–''जहां पर दूध दही का खाना, वह मेरा देश हरियाणा''। हरियाणा में रहने वाले लोग सादा खाना खाकर सारा दिन मेहनत करते हैं। यहां के लोग शराब का सेवन नहीं करते। उनके जीवन का आधार हरी–हरी सब्जियां और फल–फूल होते हैं, लेकिन अगर कोई गरीब है तो वह केवल चटनी रोटी खाकर ही संतुष्ट हो जाता है। सांगो में हरियाणा के खान–पान का कई जगह वर्णन किया हैः क्योंकि चाहे कोई भी कवि हो वह अपनी संस्कृति को अपने साहित्य में अवश्य दर्शाता है।

परिगणन शैलियों में हरियाणा के खान–पान का विशेष वर्णन किया है, हरियाणा में पान कम खाया जाता है, लेकिन यहां के लोग कहते हैं कि पान खाने से होठ सुंदर बन जाते हैं। जैसे–

''तेरे होठां पै लाली रच ज्यागी, खाल्ये देसी पान करके।
रंग भर्‌या केले कैसी गोभ मैं, जणू दास भरी तोब मैं ।''[23]

'विराट पर्व' नामक सांग के अनुसार दुशासन ने द्रोपदी के बालों को पकड़कर दही की तरह मथा और घसीटने लगा। उसने इतना अन्याय किया कि जो अंगूर धर्म रूपी थे उनको भी पूरी निचोड़ डाला।

मेवे हरियाणा के लोगों का मुख्य खाने पीने की वस्तुओं में शामिल है इस खानपान में नारंगी संतरे मुख्य रूप से शामिल है, सांग में खान–पान की वस्तुओं का सौंदर्य निरूपण किया गया है, ऐसे ही एक सांग 'लीलो चमन' के अनुसार धनपत सिंह ने खाने–पीने की वस्तुओं का वर्णन किया है।

'मेरी सुणती जाइए बात, ईश्क बीमारी नै घेरा गात, मनै लाम्बा कर दिया हाथ, नब्ज टटोलती जाइए।
तेरी शान देख के आज आगी मनै अंधेरी ,पड़ी हुश्न मेवा की ढ़ेरी, इसने तोलती जाइए।
आज हुई बात बणैगी' ,बण ज्यागा मैं सतसंगी खाणे की नारंगी इसनै छोलती जाइए।''[24]

'पद्मावत' नामक सांग में हरियाणवी खाने–पीने का परीक्षा अपने इस कथन के द्वारा दिया है–

'सोवै सै के, बैठी हो लिए रै ,मांडे पोए, दाल मूंग की बीच गेर दी डोडी लूंग की
भरी आंख ऊंघ की, तूं धो लिए रै।''[25]

इसी तरह सांग 'हीरामल जमाल' मैं हरियाणवी खान पान के बारे में बताते हुए सेठानी हीरामल को बोलती है–
'करी मनै राम रसोई त्यार, हो पिया बैठ के खाले। मनै साग बणा दिए सारे, परामठे चतराई तँ तारे

खा तै नीबूं का अचार, ना तै घी बूरा तै ला ले।''[26]

'ज्यानी चोर' नामक सांग में कवि लख्मीचंद ने हरियाणवी फल और सब्जियों का जो चित्रण किया है वह ऐसे प्रतीत होता है जैसे सजीव है–

''छोटे बड़े आम, जामुन, नींबू
बडबेर, चकोतरा, अनार, आड़ू, अमरूदां के लागे ढेर,
अरंडी, केला, नारंगी, संतरे, सेबां का फेर, नासपति, कली गैंदा, बसंती गुलाब खिला,
कनेर और चमेली सूरजमुखी पर ध्यान चला, बादाम छवारे और गोले अंगूरां पै नूर ढला,
बोझ तलै झुक रहा मेवा का डाला री, समय पै फल आण झड़ा।''[27]

पं मांगेराम ने सांग और लोक नाटकों में कुछ वेशभूषा के बारे में बताया है जो सांग के प्रस्तुतीकरण में प्रयोग की जाती है वेशभूषा में तो बदलाव होता रहा है लेकिन सांग की परंपरा ज्यों की त्यों बनी हुई है। उदाहरण है– 'हरदेवा दुलीचन्द चतरू भरतु एक बाजे नाई।

घाघरी तो उसने भी पहरी आंगी छुटवाई।

तीन काफिए छोड़ के कहरी रागनी गाई।

उन तै पाछै लखमीचंद नै डोली बरसाई।''[28]

कहा जा सकता है कि लोकसंस्कृति के अंदर जो सांग है वह समाज का सच्चा दर्पण है क्योंकि इसमें समाज की रहन–सहन, खान–पान की जो झांकी प्रस्तुत की जाती है वह सजीव दिखाई देती है। सांग को देखकर हरियाणवी जन–मानस का सजीव चित्रण किया जा सकता है।

निष्कर्षः–जिस प्रकार शरीर और आत्मा का संबंध होता है उसी प्रकार हरियाणवी रीति–रिवाज लोक साहित्य में व्याप्त होता है। इनका मूल्यांकन कथा के अनुसार वस्तु की दृष्टि से किया जा सकता है। बहुत प्रकार के रीति–रिवाजों और संस्कृतियों का प्रस्तुतीकरण इनमें किया गया है। हमारी संस्कृति की एक बहुत बड़ी महानता रही है चाहे हमें कितना भी बड़ा त्याग करना पड़े लेकिन कोई गलत और अनैतिक कार्य हमारे द्वारा नहीं होना चाहिए। हम कह सकते हैं कि कर्मवाद, सेवा, प्रेम,

अहिंसा, भाग्यवान, सत्य, पुत्रमोह, त्याग, कर्तव्यपरायणता, अतिथि संस्कार आदि से हमारी संस्कृति के मुख्य गुण और मूलाधार है इन गुणों का हरियाणवी सांग में बार–बार वर्णन किया गया है।

संदर्भ सूची

1अशोक के फूल डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 64
2 संस्कृति विषय पर आलेखकृ आचार्य नरेंद्र देव
3 सांग 'सेठ ताराचंद' पं. लख्मीचंद, पृष्ठ 222
4 डॉ0 शिवचरण शर्मा से साक्षात्कार के दौरान साभार दिनांक , 18.12.1998
5 गांव देवसर में पं. राजकुमार शर्मा से सुना गया, दिनांक 25.8.2021
6 स्वतंत्रता और संस्कृति कृ डॉ0 एस. राधाकृष्णन, पृष्ठ 53
7 संस्कृति के चार अध्याय कृ डॉ0 रामधारी सिंह दिनकर, पृष्ठ 9
8 कला और संस्कृति पर एक लेख कृ डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल
9 सांग सेठ ताराचन्द'–पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 203
10 सांग 'चाप सिंह–पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 273
11 सांग विराट पर्व – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 314
12 सांग नल दमयन्ती' – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 201
13 सांग नल दमयन्ती' – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 237
14 सांग 'शाही लकड़हारा – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 208
15 सांग 'नौटंकी' – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 70
16 सांग 'मीराबाई – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 06
17 सांग 'पदमावत' – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 136
18 सांग 'पदमावत' – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 13
19 सांग 'जानीचोर पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 39
20 सांग 'नौटंकी' – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 77
21 सांग 'विराट पर्व – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 125
22 सांग 'भगत पूर्णमल' – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 29
23 सांग लीलोचमन – धनपत सिंह, पृष्ठ 20
24 सांग लीलोचमन – धनपत सिंह, पृष्ठ 28
25 सांग 'पदमावत' – पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 139
26 सांग 'हीरमल जमाल' पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 166
27 सांग 'जानी चोर पं. लखमीचन्द, पृष्ठ 212
28 हरियाणा साहित्य और संस्कृति – डॉ० पूर्णचन्द शर्मा, पृष्ठ 3

भारतीय दर्शन में मोक्ष की धारणा

Monalisha Ghosh[1], Dr. Saroj Sewda[2]

[1]Research Scholar, Department of Sanskrit, Shri JJT University, Jhunjhunu, Rajasthan-333001
[1]Email id: monalisha.anjasha23@gmail.com
[2]Professor, Department of Sanskrit, Shri JJT University, Jhunjhunu, Rajasthan-333001
[2]Email id: sarojsewda0079@gmail.com

सारांश :-चार्वाक के अलावा सभी भारतीय दर्शन में 'मोक्ष' या 'मुक्ति' को 'परम–पुरुषार्थ' के रूप में स्वीकार किया है। जीवन का इस परमार्थ को मोक्षवादीयों ने भिन्न नाम से अभिहित किया– 'मोक्ष', 'अपवर्गा', 'मुक्ति', 'निर्वाण', आदि। 'जन्म–मृत्यु' चक्रो में आवर्तित होना भव का वंधन हैं। 'जन्म–मृत्यु' का चक्रो अनादि काल से चला आ रहा है – जन्म के बाद मृत्यु, मृत्यु के बाद पुनर्जन्म– इस तरहा चक्र के रूप में आवर्तित हो रहा है। इसे 'भवचक्र', या 'संसारचक्र' कहा जाता है। जीव साधना के द्वारा 'जन्म–मृत्यु' चक्रो को रोध कर सकते है। 'भवचक्र' का रोध करना ही 'मोक्ष' या 'मुक्ति'। मोक्ष प्राप्त हो जाने के बाद,चार्वाक के अलावा सभी भारतीय दर्शन में 'मोक्ष' या 'मुक्ति' को 'परम–पुरुषार्थ' के रूप में स्वीकार किया है। जीवन का इस परमार्थ को मोक्षवादीयों ने भिन्न नाम से अभिहित किया– 'मोक्ष', 'अपवर्गा', 'मुक्ति', 'निर्वाण', आदि। 'जन्म–मृत्यु' चक्रो में आवर्तित होना भव का वंधन हैं। 'जन्म–मृत्यु' का चक्रो अनादि काल से चला आ रहा है – जन्म के बाद मृत्यु , मृत्यु के बाद पुनर्जन्म– इस तरहा चक्र के रूप मं आवर्तित हो रहा है। इसे 'भवचक्र', या 'संसारचक्र'कहां जाता है। जीव साधना के द्वारा 'जन्म–मृत्यु' चक्रो को रोध कर सकते है। 'भवचक्र' का रोध करना ही 'मोक्ष' या 'मुक्ति'। मोक्ष प्राप्त हो जाने के बादजीव को फिर से जन्म लेने की आवश्यकता नहीं होती है और उसे जन्म पीड़ा नहीं भोगनी पड़ती है। मोक्ष ही आत्यन्तिक दुःखमुक्ति है। यद्यपि मोक्षवादी दार्शनिकों ने मोक्ष को 'आत्यन्तिक दुःख निवृत्ति' कहा हैं, लेकिन उनके बीच मोक्ष के बारे में असहमत है। जैन दर्शन के अनुसार, मोक्षप्राप्त जीव में अनन्तचतुष्टय की उत्पत्ति तुरन्त हो जाती है। अनन्तज्ञान, अनन्तवीर्य, अनन्तश्रद्धा तथा अनन्तशांति का सागर उसके भीतर लहराने लगता है। बौद्ध दार्शन के अनुसार मोक्ष प्राप्त होने के बाद, आत्मा की कामना – वासना निबृत हो जाती हैं और वासना पूर्ण कोई दुःख नहीं होती है। न्याय–वैशेषिक के अनुसार, पुनर्जन्म का, आत्यन्तिक या ऐकान्तिक अभाव ही मोक्ष है। सांख्य–योग दर्शन के अनुसार, मोक्ष प्राप्त होने के बाद चौतन्यअपने रूप में अवस्थान करते है। अद्वैत वेदांत के अनुसार, मोक्ष एक अनाबिल आनन्दपूर्ण अवस्था है। विशिष्टा द्वैतवादी रामानुज ने पांचवां मुक्ति का उल्लेख किया है– सामीप्य, सालोक्य, सारूप्य, साष्टि और सायुज्य।

संकेतशब्द :-मोक्ष, भवचक्र, आत्मा, दुःख, अविद्या

प्रस्तावना:-जीवन का परम् काम्य वस्तु क्या है, मृत्यु के बाद मनुष्य का परिणति क्या है, आत्मा– परमात्मा क्या है – इसके बारे में हजारों मुनि, दार्शनिक, कवि, विद्वान प्राचीन काल से सोचते आ रहे हैं । उनके जवाब में 'मोक्ष' का मुद्दा सामने आया है। पश्चिमी और भारतीय दर्शन में मोक्ष की विभिन्न धारणाएं और व्याख्याएं दी गई है। मोक्ष के वारे में विभिन्न सिद्धान्तों और भाष्यों लिखा गया है। अतः भारतीय दर्शन में मोक्ष के विचार को अतिसंखिप्त परिसर में पदं पंक्तियों से मिटाना लगभग नामुमकिन है। अन्य सभी दर्शनों के साथ विचार करने के बावजूत बौद्ध धर्म /दर्शन के अनुसार 'मोक्ष' की धारणा वास्तविक और मानवीय है। व्यक्ति के साथ समूह के मुक्ति/मोक्ष के निर्देश इस दर्शन में हैं।

चार्वाक मत: 'नास्तिकशिरोमणि' चार्वाक दर्शन 'मोक्ष' को स्वीकार नहीं करता है। इनके अनुसार शरीर का अंत होना ही मोक्ष है। चार्वाक लोग कहते है -

भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ? [1]

जैन मत:- जैन दार्शनिकों ने ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते। इस दर्शन में भूत सामान्य के लिए पुद्गल शब्द व्यवहृत होता है। अर्थात् जो प्रचय रूप से शरीर का निष्पादन करते हैं तथा उस प्रचय के विनाश हो जाने पर जो स्वत:विनष्ट हो जाते है उसे पुद्गल कहते है। कामना– वासना के लिए आत्मा में पुद्गल आकृष्ट होता है और आत्मा एक शरीर का आकार प्राप्त होते है। इस प्रकार शरीर का आकार धारण ही आत्मा का वंधन दशा। इसी दशा में आत्मा का स्वरुप रहते हैं। इस प्रकार पुद्गल से वियुक्त हो जाना ही मोक्ष है। जीव के कर्मबंधनों और उनके कारणों का रोकना ही 'संवर' है। संचित कर्मों को नष्ट कर देना ही 'निर्जरा' तत्त्व है। इसी। निर्जरा के फल स्वरुप जीव 'मोक्ष' प्राप्त होते है। मोक्षप्राप्त जीव

में अनंतज्ञान, अनंतवीर्य, अनंतश्रद्धा और अनंतशांति– इस अनंत चतुष्टय की उत्पत्ति होती है। 'मोक्ष' उस परमानन्द का परिनाम है, जिसका कभी अंत नहीं होता है। जैन दर्शन के अनुसार, सम्यक् दर्शन, सम्यक्ज्ञान और **सम्यक्**चरित्र– इस त्रिरत्न के अभ्यास से आत्मा की मोक्ष प्राप्ति होती है- सम्यक् दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः (तत्त्वार्थसूत्र –1- 1)। मोक्षावस्था में कोई दु:ख नहीं होता, आत्मा शास्वत ज्ञान, शक्ति और आनंद का आश्रय है। जैन लोग जीवन्मुक्ति मानते है। उनके अनुसार जीवित अबस्था में ही मोक्षलाभ संभव है। जीवित काल में जो सिद्ध पुरुष है उसे ही तीर्थंकर या ईश्वर कंहा जाता है। तीर्थंकर जीवित दशा में ही मोक्ष या सर्बज्ञता लाभ करते हैं।

बौद्ध मत: बौद्ध दर्शन में मोक्ष या मुक्ति को निर्वाण कहते हैं। निर्वाण मानव जीवन का परम लक्ष्य है। बुद्ध के चार आर्यसत्यों में तीसरा आर्य सत्य दु:ख निरोध या निर्वाण है। चार आर्य सत्य **है -**

(1)दु:ख (सर्वंदुखम्)
(2)दु:ख समुदय: (दु:ख का कारण)
(3)दु:ख निरोध या निर्वाण
(4)दु:ख निरोध मार्ग (दु:ख निरोध का उपाय)

दु:खसमुदयनिरोधमार्गाश्चत्वार: आर्यबुद्धस्वाभिमतानि तत्त्वानि। [2]

दु:खो का मूल कारण 'अविद्या' या अज्ञान हे। बौद्ध दर्शन के अनुसार संसार की सारी वस्तु कार्य–कारण नियम पर ही आश्रित रहते हैं। कार्य–कारण भाव को बौद्ध दर्शन में 'प्रतीत्यसमुत्पाद' कहते हैं। बौद्ध दर्शन में कार्य–कारण परंपरा को द्वादश निदान में विभक्त किया गया हैं। बुद्ध ने द्वादश निदान को दु:ख का कारण बताया है। द्वादश निदान का मूल अविद्या या अज्ञान है। द्वादश निदान को 'भवचक्र' या 'संसारचक्र' कहां जाता है, क्योंकि वे एक चक्र के रूप में घूमते हैं। निर्वाण तभी संभव है जब कोई 'भवचक्र' के घूर्णन को रोक सके। डॉ राधाकृष्णान ने निर्वाण का अर्थ 'नष्ट हो जाना' लिखा है। इस तरह दु:खों का नाश होना ही 'निर्वाण' का अर्थ है। इस दु:खों का मूल कारण अबिद्या है। जैसे–

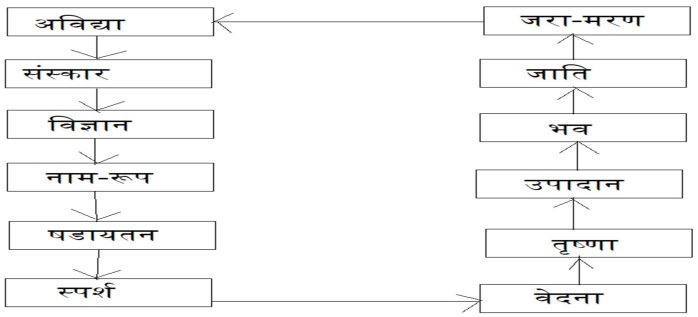

चित्र: भवचक्र

अर्थात् विद्या का द्वारा अविद्या रोध कर देने पर दु:खनिरोध हो जाता है, वही निर्वाण है। निर्वाण मानव जीवन का परम लक्ष है। जिसने भी निर्वाण प्राप्त कर लिया है, उसके भूतकाल के सभी कर्मों का खय हो जाता है और अव किए गए कर्मों में वह लिप्त नहीं होता क्योंकि उसका 'मैं' और उसके कर्तव्य का भ्रम दूर हो गया है।
निर्वाण का स्वरुप के वारे में बौद्धदर्शन में चार मतवाद है –

(1)निर्वाण तृष्णा का विलोप,
(2)निर्वाण भव का निरोध,
(3)निर्वाण अनिर्वचनीय अवस्था,
(4)निर्वाण परम् सुख है – निर्वाण परमम्सुखम्
पहले तीन क्षेत्र में निर्वाण का नकारात्मक वर्णन, चौथे क्षेत्र में निर्वाण का सकारात्मक वर्णन है। इस मत के अंतर के बावजूद, सभी इस बात से सहमत हैं कि निर्वाण पुनर्जन्म का रोध और आत्यन्तिक दु:खमुक्ति है।बुद्ध के अनुसार निर्वाण अस्तित्व का विनाश नहीं है, उसे इस जीवन में प्राप्त किया जा सकता है। मुक्त व्यक्ति को बौद्धशब्दावली में अर्हत् कहा जाता है। बौद्धधर्म में प्रज्ञा, शील और समाधि – इस 'त्रिरत्न' के अभ्यास से व्यक्ति अपने जीवनकाल में अर्हत् की स्थिति प्राप्त कर सकता है।

सांख्य –योगमत :सांख्य–योग दर्शन के अनुसार, पुरुष या आत्मा नित्य मुक्त है।'बंधन' जीव का होता है, शुद्ध पुरुष का नहीं। आत्मा का बंधन और मुक्ति की धारणा भ्रमात्मक है। अविवेक के कारण आत्मा अपने स्वभाव को भूल जाए तो वह स्थिति 'बंधन' है। बंधन का मूल है अविवेक या अज्ञान। विवेक ज्ञान के अभाव में ही आत्मा अपने–आपको **कर्त्ता**, भोक्ता और परिणामी समझने लगता है। आत्मा आपने को शरीर मानकर आध्यात्मिक, अधिभौतिक,अधिदैविक – ये तीन प्रकार दु:ख भोगती है। लेकिन आत्मा का रूप विशुद्ध चौतन्य है। वह नित्य आनंदस्वरूप है।

जीवित काल में ही मुक्तिलाभ संभव है। सांख्य–योग दर्शन के अनुसार मुक्ति दो तरह की होती है –'जीवनमुक्ति'और 'विदेहमुक्ति'। जीवनमुक्ति में देह रहने के बावजूद देह के साथ आत्मा का कोई कर्म का बंधन नहीं रहते।

'तिष्ठति संस्कारवशाच्चक्रभ्रमिवत् धृतशरिर:'[3]

जीव के कृतकर्मों का फल शरीर भोगता रहता, आत्मा नही। जीवनमुक्त प्राणी का शरीर पूर्वकृत कर्मों के कारण चलता ही रहता है। मृत्यु के बाद उसे 'विदेहमुक्ति' मिल जाती है। विदेहमुक्ति के बाद जीवको फिरसे जन्म लेने की आवश्यकता नहीं होती है। इसीलिए विदेहमुक्ति ही यथार्थ मुक्ति या आत्यंतिक मुक्ति या निर्माण है।

प्राप्ते शरीरभेदे चरितर्थत्वात् प्रधानविनिवृत्तौ।

ऐकान्तिक मात्यन्तिक मुभयम् कौवल्यमाप्नोति।। [4]

न्याय–वैशेषिक मत : न्याय–वैशेषिक दर्शन में मोक्ष को'अपवर्ग' या'नि:श्रेयस'कहां गया है। न्याय–वैशेषिक के अनुसार आत्मा निर्गुण और निष्क्रिय है। चौतन्य आत्मा का नित्य और स्वाभाविक गुण नहीं, अनित्य और जागतीक गुण है। आत्मा जब मन के साथ, मन इंद्रियों के साथ और इंद्रियों विषय के साथ संपर्क युक्त होती है, तभी आत्मा में**चैतन्य** का आविर्भाव होते है। अविद्या के कारण आत्मा अपने– आपको शरीर, मन और इंद्रियों के समान होने की कल्पना करती है, और उसके परिणाम स्वरूप अंतहीन दु:ख भोगना पड़ता है। अविद्या या अज्ञान ही दु:ख का मूल कारण है। तत्त्व ज्ञान के द्वारा मुक्तिलाभ संभव है। न्याय–वैशेषिक के अनुसार जीवनमुक्ति नहीं होती है, मुक्ति का अर्थ है शरीर से मुक्ति या विदेहमुक्ति।

मीमांसक मत: प्राचीन मीमांसकों ने त्रिवर्ग पुरुषार्थ का उल्लेख करते हैं, 'मोक्ष' की परम् पुरुषार्थ नहीं बोलते। उनके अनुसार, स्वर्गलाभ करना ही परम् पुरुषार्थ है। वेद विहित याग–यज्ञ के द्वारा स्वर्ग लाभ होते है –'स्वर्गकामो यजेत'[5], लेकिन सकाम कर्म का फल चिरस्थायी नहीं होते है। वेदविहित कर्मानुष्ठानों से स्वर्गसुख प्राप्त किया जा साकता है, लेकिन यह अनंत काल के लिए नहीं हो सकता। काम्य कर्म का फल अनित्य है। इसीलिए उत्तरमीमांसकों ने स्वर्गलाभ को परम् पुरुषार्थ नहीं वोलते उन्होंने त्रिवर्ग के स्थान पर चतुर्वर्ग का उल्लेख करते हुए मोक्ष को परम् पुरुषार्थ स्वीकार किया। नव्य मीमांसकों के अनुसार 'विदेहमुक्ति' ही यथार्थ मुक्ति है।

अद्वैत वेदांत:- अद्वैतवेदांती शंकराचार्य के अनुसार, जीव ही ब्रह्म है, जीवात्मा ही परमात्मा है –

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवोब्रह्मैव नापर:[2]

जीवात्मा को परमात्मा के रूप में उपलब्ध करना ही मोक्ष है।'अहं ब्रह्मास्मि'[6]'स अहम'– इस प्रकार जीवात्मा और परमात्मा का अभेद ज्ञान को मोक्ष कहते हैं। ब्रह्म सच्चिदानंद स्वरूप, जीव भी **सत्,** चित् और आनंद स्वरूप है। अविद्या के कारण जीव अपने–आपको अनात्म मन, शरीर और इंद्रियों के साथ अभिन्न सोच कर दु:ख भोगती है। इसी अवस्था को 'बंधनदशा' कहा गया है। आत्मा का बंधन और मुक्ति नहीं होती। मुक्ति और बंधन भ्रम है। आत्मा नित्य मुक्त है। अविद्या या अज्ञान ही भ्रम का कारण है।अविद्या का रोध करना ही मुक्ति है। विशुद्ध ज्ञान से मुक्ति होती है। शंकराचार्य ने आत्मा का अपने यथार्थ रूप में अवस्थान को मोक्ष कहा है—

स्वात्मन्यवस्थानं मोक्ष:[7]

उन्होंने दो मुक्ति का उल्लेख किया है – जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति।

विशिष्टाद्वैत वेदांत: विशिष्टाद्वैतवादी रामानुज ने जीवात्मा और परमात्मा ईश्वर को अभिन्न स्वीकार नहीं करता। जीवात्मा और परमात्मा के बीच का संबंध अंश और संपूर्ण के बीच के संबंध के समान है। भेदाभेद संबंध, तादात्म संबंध नहीं है। जीवात्मा

अनु–परिमाण, परमात्मा विभु–परिमाण। जीवात्मा अल्पज्ञ, परमात्मा या ईश्वर सर्वज्ञ। ईश्वर स्रष्टा है और जीव सृष्टि। ईश्वर के गुणों का न तो संकोच होता और न विकास होता; पर जीवात्मा के गुण संकोच और विकासशील हैं। अज्ञान या अविद्या के कारण जीव स्वयं को ईश्वर से दूर, पृथक और स्वतंत्र समझता है, इसे बंधन कहते हैं। पूर्ण ज्ञान की अवस्था ही मोक्षावस्था है। इस अवस्था में ज्ञानी आत्मा को ईश्वर के साथ एकरसता की अनुभूति होती है। अखंड आनंद का बोध होता है। मोक्ष ईश्वर के लिए एकनिष्ठ प्रेम है। मोक्ष जीवात्मा का विलुप्ति नहीं है। जीवात्मा कालक्रम से ईश्वरोपासना से मुक्तिलाभ करते है। मोक्ष की स्थिति में जीव का जीवन अक्षुन्न रहते है और जीव को ईश्वर की शरण में जाने पर अपार आनंद की अनुभूति होती है। रामानुज के अनुसार मुक्ति पांच प्रकार की है। यथा –

(1)समीप्य अर्थात् सान्निध्य, जीवात्मा की ईस्वर के समीप उपस्थिति।
(2)सालोक्य अर्थात् स्वर्ग में ईस्वर के साथ निवास करना।
(3)सारूप्य अर्थात् ईस्वर का रूप प्राप्त करना।
(4)साष्टि अर्थात् ईस्वर का न्याय ऐस्वर्यवान होना।
(5)सयुय्य अर्थात् जीवात्मा का परमात्मा के रूप में तल्लीन हो जाना।

अत: रामानुज मोक्ष प्राप्ति के लिए चार साधन बतलाये गये हैं – कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग और प्रपत्ति; लेकिन रामानुज ने भक्तियुक्त ज्ञान को श्रेष्ठ कहा है। रामानुज ने जीवनमुक्ति को स्वीकार नहीं करते है। उनके अनुसार शरीर का विनाश न होने पर मुक्तिलाभ संभव नहीं है।

निष्कर्ष:-सभी भारतीय दर्शन में 'मोक्ष' की ब्यक्ति विशेष का आध्यात्मिक उन्नति कहा गया है। जीवित काल में मोक्ष लाभ करना संभव नहीं है। लेकिन बौद्ध के अनुसार, सभी धर्म, वर्ण और जाति का सकल ब्यक्ति इस मोक्ष के लाभ कर सकते है। यहां मोक्ष केवल आध्यात्मिक उन्नति नहीं, यह एक जीवनब्यापी प्रक्रिया है। मानवकल्याण, मानवसेवा और मानवतावाद मोक्ष में निहित है। इसीलिए राहुल सांकृत्यायन, आम्बेदकर, रवीन्द्रनाथ, विवेकानन्द, प्रमुख मनीषीयों ने बुद्ध की आदर्श या धर्म को इतना प्राधान्य दिया है और उनके प्रति असीम श्रद्धा प्रदर्शन किया है।

सन्दर्भ:

[1]जगदीशचन्द्र मिश्र, भारतीय दर्शन, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पृ 176 –177
[2]माधवाचार्य, सर्वदर्शनसंग्रह, चौखम्बा विद्याभवन
[3]राहुल सांकृत्यायन, बौद्धदर्शन, किताब महल, नई दिल्ली, पृ 32
[4]ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका, कारिका–67
[5]ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका, कारिका–68
[6]बृहदारण्यक उपनिषद्–1.4.10
[7]तैत्तिरीयोपनिषद, शंकर भाष्य– 1.11

ROLE OF CULTURE IN MAYA ANGELOU'S "I KNOW WHY THE CAGED BIRD SINGS" AND THOMAS HARDY'S "TESS OF THE D'URBERVILLES"

MONIKA BAVOURIA

(monikabavouria123@gmail.com)

Research Scholar, JJT University

Abstract:-Books are written by individuals, but they're also influenced by that individual's society. Therefore, it's important to contemplate a work's cultural context. Culture can ask the beliefs, customs, values, and activities of a specific group of individuals at a specific time. This paper aims to look at Maya Angelou's "I Know Why the Caged Bird Sings" and Thomas Hardy's "Tess of the d'Urbervilles" which are about identity and culture. Thomas Hardy's cultural criticism is depicted fully in "Tess of the d'Urbervilles". The novel could be a scathing condemnation of capitalism, Victorian beliefs about women, doctrine, the shortcomings of the academic and judicial systems, and also the destructive forces that industrialization and mechanization wake the flora and fauna in rural Agrarian England. Maya's poem "I Know Why the Caged Bird Sings" is about the repression of the African American race which illustrates how racism and trauma is overcome by a powerful character and a love of literature. Maya Angelou discusses the stereotypical challenges of society faced by black people in terms of their culture and identity. Maya highlighted the African Americans as marginalized in terms of favoritism, ideological prejudices, and cultural stereotypes.

Key Words:-Culture and Literature, Maya Angelou, Thomas Hardy, Afro-American Culture, Agrarian England Culture

Literature and Culture:-Literature is that the communication of thoughts, ideas, and feelings through written words. It's a transaction of a really personal message between one individual, the writer, and also the number of readers. Literary giants, who shape the way we expect, write and live today. The straightforward meaning of literature is the manifestation of society. The sorts of literature mirror the important episodes of the writers, the person, and sometimes the full community. Theobjective of literature is to represent society and its culture because it is. Literature is an efficient medium to understand the culture, traditions, practices, conventions, customs, feelings, thoughts, and beliefs worldwide. Literature preaches us the particular meaning and sublimity of life. In every part of the planet, literature has been more or less a mirror of society, it reflects what's seen, felt, and wished by the author during his time.In the wordsofPhilip Tew,

"Novels both rationalize

and engage dialectically with our historical presence,

playing their part, however provisionally at times, in our understanding of

and reflection upon

our lives" (1)

Culture may be a contested phenomenon that's understood to mean various things by different groups. it's the integrated pattern of human knowledge, beliefs, and behavior. Culture embodies language, ideas, beliefs, customs, taboos, codes, institutions, tools, techniques, and works of art, and so on. Culture consists of shared values, beliefs, knowledge, skills, and practices that underpin behavior by members of a grouping at a selected point in time. It's creative expression, skills, cognitive content, and resources. It is generally accepted that culture embodies the way humans swallow and treat others and the way they develop or react to changes in their environments. That is to mention, culture could be a broad concept that embraces all aspects of human life. It includes everything humans do or learn to try to as members of society and it shapes our thoughts and actions.

Relation between Culture and Literature:-literature stands as a voice that expresses values and beliefs, and shows how people live as individuals or a group with this angle and so the way their cultural life was and also the way their culture and traditions accustomed be; literature becomes the correct tool to signify the learners the English-speaking world and to steer them to hunt out English culture. It gives an outstanding opportunity for the learners to extend their world knowledge as they are going to possess access to a ramification of contexts and, which is un doubt associated with the target culture. By developing a literary knowledge of the national language, learners will understand and interact effectively with country people. They acquire effective linguistic and cultural competencies because the study of the target language is absolute to its literature and fine arts. Literature and culture are deeply interrelated and both have a robust relationship with one another because for years and from the oldest of a while, literature embodied culture. The phenomena of language and culture are deeply related in some ways. Language, surely, is prepared by culture, and culture, despite everything being ready by language in any case, is often supported by the replicators that created both. Generally, we can claim that language and culture are related to the way they affect one another, that's to mention, language and culture are two different sides of the identical coin which they both embody one another.

Maya Angelou:-Maya Angelou is one altogether the illustrious autobiographical poets, historians, lyrist, playwrights, dancers, stage and screen producers, directors, performers, singers, and civil rights activists. She is to be known for her autobiographical poems. The themes which are used by Maya Angelou are racism, identity, family, and travel. Angelou is best known for her autobiographical poems. Angelou's autobiographical poetry occupies a singular position in her development as a poet. Angelou proved the formation own cultural identity throughout her narratives. Angelou presented herself as a task model for African-American women by reconstructing the Black woman's image throughout her autobiographies and has used her many roles, incarnations, and identities to connect the layers of oppression along with her personal history. Angelou's themes of the individual's strength and skill to beat appeared throughout Angelou's autobiographies yet. Angelou's original goal was to place in writing about the lives of Black women in America, but her goal evolved in her later volumes to document the ups and downs of her own life. Her poetry portrays the themes of survival, development, and self-discovery of African Americans. Knowing the destructive effects, the hegemonic culture—White Anglo-Saxon Protestant (WASP) culture has exerted on African Americans, Angelou deeply feels the necessity to undermine the binary opposition of the dominant and subaltern cultures and reconstruct the cultural order. Angelou encourages African Americans to receive their African cultural heritage and sustain their black identity. Her work manages to awaken African

Americans' self-consciousness by encouraging them to preserve and celebrate their black culture.

Role of Culture in I Know Why the Caged Bird Sings:-In I Know Why the Caged Bird Sings, Maya Angelou describes her coming old as a precocious but insecure black girl within the American South during the 1930s and subsequently in California during the 1940s. Maya's parent's divorce when she is barely three years old and ship Maya and her older brother, Bailey, to measure with their paternal grandmother, Annie Henderson, in rural Stamps, Arkansas. Annie, whom they call Momma, runs the sole store within the black section of Stamps and becomes the central moral figure in Maya's childhood. As young children, Maya and Bailey struggle with the pain of getting been rejected and abandoned by their parents. Maya also finds herself laid low with the idea that she is an unpleasant child who will never qualify to genteel, white girls. She doesn't feel adequate to other black children. On Christian holy day, Maya is unable to complete reciting a poem in church and self-consciously feeling ridiculed and a failure, Maya races from the church crying, laughing, and wetting herself. Bailey sticks up for Maya when people actually poke fun of her to her face, wielding his charisma to place others in their place. Angelou came up in an exceedingly time that was marked by racial tension, oppression, and devastating circumstances for blacks throughout the country. The daughter of a vivacious, courageous, and outspoken mother, it's no wonder that Angelou would become the powerhouse known throughout the planet today. It seems the poem is about the slavery of Afro-Americans. But if we provide a close reading to the poem, we are going to find that this poem is expounded to any or all persons who are subordinated, who have lost their selves because of any reason either it's slavery or patriarchy. Blacks both male and feminine were enslaved by Whites but the Black female is that the double colonized, one due to slavery and also the other due to her husband. Black males felt that so as to be total and free and independent and powerful, that they had to be like white men to their women. So, there was a terrible time when black men told their women that if you actually love me, you need to walk three steps behind me. Thus, even after getting freedom from slavery, the condition of Black women was very bad. Just like a bird in a cage who wants to fly in freedom but her feet are tied:

"But a bird that stalks down his narrow cage

can seldom see through his bars of rage

his wings are clipped and his feet are

tied so he opens his throat to sing." (5-8).

Self-esteem is so primary an issue in writings by black women that it deserves special attention. Many heroines suffer from a loss of pride and personal worth. In most cases it is difficult to know the origin of this loss, that is to say whether it resulted first from her forming destructive relationships or whether it caused her to form such relationship. But once these two lethal forces are linked, the heroine becomes entangled in an ever-worsening situation.

Thomas Hardy:-Thomas Hardy was among those rare writers whodedicated his novels to the overlooked miserable lives ofthe poorly treated classes and individuals who hadsuffered so much under the sugar-coated words of theauthoritarian authorities.local, and national past.He single-handedly holds the flag of deliverance fromthe suppressive conventionalities which tear apart

thefoundations of his Christian society.Hardy has always been accused of being an atheist;though with a more profound look at his works, his hiddenmorality reveals itself. He deplores the biased interpretationof Christianity which gives meaning and authority tothe biased and dominant power holders who view theirreign as a God-given offering. Indeed, Hardy is a truedisciple of the unbiased Christianity which allows the twogenders enjoy the earth of God without the woman beingsuppressed by the authoritarian man. His novels endtragically; however, this should not be interpreted as hissense of pessimism and agnosticism. He only asserts theidea that through the excessive pressure and anxietiesdominating the society, people suffer and turn intohelpless puppets in the claws of an ominous dark destinypainted by the politically tricky masterminds. He neverlets his characters or readers forget that humanhappiness rarely lives long. His tragic novels bring forthan understanding in his readers to look at the society withsympathy and question unfair norms through a realisticscope.Hardy is one of those novelists who deal with therealities of the day through a caring and thoroughattitude. His prolific activities in both verse and prosehave marked his name as one of the major figures ofEnglish Literature.

Role of Culture in Tess of The D'Urbervilles:-This work contains complex and detailedinterrogations of many Victorian values and of the capitalist culture of his time. Thisnovel is a fierce condemnation of the social, ethical, moral, religious, and political valuesheld by the majority of Hardy's cultural elite contemporaries in England. The typical Hardy plot places a female protagonist in an exceedingly love triangle with two male protagonists who are portrayed as opposites,It's Tess with Angel Clare and Alec D'Urberville. The male protagonists here are quite polar opposites of every other. Hardy's female characters are repeatedly depicted because of the center of their novel's fictional world. It should seem that Hardy was a sexist and had little regard for the importance of ladies, while surely, just the alternative is true. When writing about women, Hardy took a keener interest and created beloved, tender characters, like Tess Durbeyfield and Eustacia Vye. Hardy's society is that the next point of consideration.In Tess of the D'Urbervilles, Hardy depicts comprehensively an old country custom that young people are allowed to have a special interaction once they get straightforwardly secured. In depicting this custom, he also paints the unmistakable contrast between the natural lower classes and anurbanizing regular worker: Tess, who has encountered youth in the open nation, isn't at all shocked that this custom exists, but Clare, who is brought into the world in the working people, is at first dazed to think about it. Another model is the way that there are people in Wessex who really put confidence within the sight of ghosts and witches; these people in like manner join an exceptional importance to old sayings and have an essentially fatalistic look at life. Exactly when Tess and Clare leave the dairy on the evening of their wedding, the chicken crows, and people acknowledge that this suggests a setback will happen to them. Here idea combines with the passivist stance of the close by people: a couple of youngsters on the depleting farm acknowledge that they will not at any point have the choice to equal Tess in her greatness, which is something they haplessly and indiscreetly recognize.Hardy to some degree is against the standard customs and acknowledged acts of standard society. He acknowledges that the moral judgment of a woman can't be established only on what she did, yet should in like manner be established on her uniqueness and her psychological point of view, so in this perspective he holds Tess to be pure, an examination moderately revolutionary.

Conclusion:-Realizing the devastating impact the dominant culture exerts on the event of marginal groups, Angelou devotes herself to advocating a healthier cultural context. In her poetry, she retreats back to the oppressive memories that generations of African Americans have ever had. For African Americans, maintaining their African culture enables them to survive in an alien world. To recover her people's self-consciousness and restore their identity, Angelou makes great efforts to redefine blackness. By assimilating themselves with their ancestor's culture, they're ready to renew themselves and truly know themselves. In doing so, she keeps alive ethnic culture and leads African Americans out of the margin. Therefore, Maya Angelou could be a cultural poet who fulfills the task of transmitting cultures.It concludes that her work manages to awaken African American's self-consciousness byencouraging them to preserve and celebrate their black culture.In Tess of the d'Urberville, Hardy addressed multiple issues in English culture, particularly the social pyramid and feminism. Hardy took more a humanistic point of view versus traditional writers of his time, and with his view Tess strayed away from the traditional roles of women in society and created her own independency, yet with her struggles Tess found herself obeying the status quo and submitted to men who had power over her. The novel could be a scathing condemnation of capitalism, Victorian beliefs about women, doctrine, the shortcomings of the academic and judicial systems, and also the destructive forces that industrialization and mechanization wake the flora and fauna in rural Agrarian England.

References:

- Black American Literature Forum, summer, 1990, Mary Jane Lupton, "Singing the Black Mother: Maya Angelou and Autobiographical Continuity," pp. 257-276.
- Braxton, Joanne M., editor, Maya Angelou's I Know Why the Caged Bird Sings:
- Cecil, David (1967). Hardy - The Novelist. Lyall Book Depot. P- 41
- E, Colon (2001). Introduction to Hardy's Works. Oxford University Press. Oxford. UK. P-233
- Geoffrey Harvey, Thomas Hardy: The Complete Critical Guide to Thomas Hardy. New York: Routledge, 2003, p.108
- Hardy, Thomas. The Mayor of Casterbridge. Oxford: Oxford UP, 1998. Print.
- Hardy, Thomas. Jude the Obscure. Oxford: Oxford UPs, 2002. Print.
- Hardy, Thomas. Return of the Native. San Diego: ICON Group International, Inc, 2005. Print.
- Hardy, Thomas. Tess of the D'Urbervilles. Oxford: Oxford UP, 2005. Print.
- Harvey, David. The Condition of Postmodernity: An Enquiry into the Origins of Cultural Change. Oxford: Blackwell, 1989. Print.
- Litwin, Holly Rose, "Cultural Criticisms Within Thomas Hardy's Tess of the D'Urbervilles" (2016). ETD Archive. 870.
- Phillip Tew 2007. "The Contemporary British Novel". p 07.London/New York: Continuum. (1)
- Williams, Merryn. Thomas Hardy and Rural England. London: The Macmillan, 1972. Print

****

मध्यकालीन शेखावाटी साहित्य में संस्कृति व शिक्षा

प्रकाश कुमारी
शोध छात्रा
शोध निर्देशक : डॉ. शक्तिदान चारण
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी झुंझुनूं
म.उंपसरू. ईींसवजीपं8084 / हउंपसण्बवउ

सारांश :–

शेखावाटी संस्कृति और समाज का भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अंग होते हुए भी अपने आप में विशिष्ठता लिए हुए है। शेखावाटी की संस्कृति में शौर्य, सौन्दर्य और मानवीय मूल्यों का समावेश है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत शेखावाटी के साहित्य, कला, जन–जीवन, इतिहास और यहाँ के खेत खलिहानों में जीवित है। मध्यकाल में शेखावाटी की सांस्कृति चेतना पर शिक्षा, कलां, संगीत, रीति परम्परा, पर्यटन, साहित्य दर्शन आदि के क्षेत्र में नयी–नयी प्रवृत्तियों का जन्म एवं विकास, दृष्टिगोचर होता है।

कुट शब्द :– योग, शिक्षा, कलां, रीति परम्परा, संस्कृति आदि।

प्रस्तावना :–

योग व शिक्षाः– शेखावाटी का संत काव्य योग–साधना से पूर्णतया प्रभावित है। संतों द्वारा प्रतिपादित **जीवन–दर्शन** आनंद और शांति से संयुक्त शुद्ध **अतःकरण** की वह स्वाभाविक शक्ति है जहाँ कृत्रिमता स्वतः विलीन हो जाती है। सहज साधना और योग का मार्ग अभिनव और क्रांतिकारी है। शेखावाटी के संत सुन्दरदास जी योग साधनाओं के ज्ञान में विशेष रूप से पारंगत थे। इन्होंने सामान्य जनता के लिए सहज–साधना का विधान किया तथा विशिष्ट साधकों को **कुण्डलिनी** की साधना के मार्ग पर अग्रसर होने का उपदेश भी दिया है।शेखावाटी के संत कवियों ने अपनी सुशिक्षा द्वारा विस्तृत–दृष्टि प्राप्त होने से लोक–धर्म की प्रतिष्ठा की तथा पतिव्रत–पालन करने वाली स्त्रियों, रणक्षेत्र में कठिन कर्तव्य का पालन करने वाले शूरवीरों आदि के प्रति इनके विशाल हृदय में सम्मान था।मध्यकालीन शेखावाटी साहित्य में जीवन मूल्यों की अनिवार्यता के सम्बन्ध में भी वेद ब्राह्मण उपनिषदों तथा जैन – बौद्ध साहित्यों में भी योग प्रक्रिया का प्रचुर मात्रा में वर्णन किया हुआ है।योग संबंधी संस्कृति एवं शिक्षा का मूल्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वर्तमान में भी कोरोना महामारी से जुझने की शक्ति योग संबंधी शिक्षा के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।मध्यकाल में शेखावाटी में भी शिक्षा एवं शैक्षिक व्यवस्था में तालमेल अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण था।जीवन के सभी लक्ष्यों की प्राप्ति के सर्वोत्तम साधनों में से एक साधन जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है वो शिक्षा ही है।शैक्षिक मूल्य से तात्पर्य जीवन के **आधारभूत** दिशा निर्देशात्मक तत्वों से है जिनका उपयोग मनुष्य अपने जीवन में विभिन्न कार्यों के सन्दर्भ में निर्णय लेने के लिए करता है। शेखावाटी संस्कृति में जीवन मूल्यों को चार **पुरूषार्थों** से जोड़कर के देखा जाता है। सत्य, शिव, सुन्दरम् जीवन के शाश्वत मूल्य हैं।

संस्कृति व परम्परागत रीतिः–शेखावाटी के लोग अपनी संस्कृति और परम्परा पर गर्व महसूस करते हैं उनका दृष्टिकोण परम्परागत है यहाँ सालभर में पर्व–त्यौहारों का तांता लगा रहता हैं। शेखावाटी के मेले और पर्व त्यौहार रंगारंग और दर्शनीय होते हैं।शेखावाटी लोक संस्कृति का स्वरूप वृहत है यह स्वरूप ग्रामीण अंचल से लेकर नगरों के सभ्य समाज तक विस्तारित है। शेखावाटी का इतिहास यहाँ की लोक संस्कृति की कीर्ति कथाओं का बखान करता है मनुष्य के जन्म से लेकर मनुष्य की मृत्यु तक के संस्कार लोक संस्कृति में समाहित है। यहाँ के तीज त्योहार और विवाह के अवसर पर महिलाओं का श्रृंगार लोक संस्कृति को उजागर करता है। लोक संस्कृति में आदर्श और नैतिक मूल्य और परम्पराओं का संपुट है जो नई पीढ़ी को शिक्षा देता है कि लोक संस्कृति का स्वरूप लोकगीत और लोक गाथाओं, लोकनाट्य में सदियों की विरासत को समेटे हुए हैं। शेखावाटी अंचल की सांस्कृतिक परम्पराएं लोक गीत, लोक कथाएं, लोक कहावतें, लोक देवी देवताओं की धरोहर को समाज ने आज भी संजोए रखा है साहित्य में लोक साहित्य अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है लोक गीतों के माध्यम से यहाँ त्योहारों और पर्वों से जुड़ी कथाओं की अभिव्यक्ति होती है।शेखावाटी में रंग–बिरंगी हवेलियों का समूह कलात्मक परम्परा में **अद्भुत** लगता है। यहाँ की हवेलियाँ अपनी विशालता और भित्ति चित्रकारी के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। इन्हें देखने के लिए सालभर देशी–विदेशी पर्यटकों का तांता लगा रहता है।शेखावाटी काव्य का मध्यकाल एक ओर भक्ति रस से परिपूर्ण है तो दूसरी और नीति विषयक चर्चा में भक्तिकाव्य में राम भक्ति और कृष्ण भक्ति की जो लहर एक छोर से दूसरे छोर तक फैलती दिखाई देती है, वही लहर रीतिकाल में आकर श्रृंगार और नीति के रूप में परिणत हो जाती है। यह कार्य बिना किसी कारण के ही सम्पन्न होता है। अध्यात्म जब चरम शिखर पर पहुँच जाता है तो एक विपरीत क्रिया स्वतः ही घटित होने लगती है। भक्ति काव्य में **अध्यात्म** का चरमोत्कर्ष दिखाई देता है और यो कहे कि जीवन के प्रति नैतिक

दृष्टिकोण लेकर अग्रसर होता है। भक्तिभाव का मूलाधार भक्ति है तथा रीतिकाव्य का मूलाधार श्रृंगार के साथ ही नीति संबंधित काव्य धारा भी अनवरत बही। यह एक सहज स्वाभाविक प्रक्रिया है कि कोई भी प्रवृत्ति एक दम समाप्त नहीं होती है। वह धीरे–धीरे समाप्त होती हुई किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं जीवित बनी रहती है। भक्ति काव्य और रीतिकाव्य में क्रमशः भक्ति और श्रृंगार के बावजूद भी नीतिगत विचारों का कुछ अंश स्पष्ट दिखाई देता है तथा रीतिकाल में नीतिकाल विचारों का प्रभाव हुए ज्यादा रहा है। संपूर्ण हिन्दी साहित्य इनका प्रमाण है।शेखावाटी के कवियों से भक्ति कवियों की संख्या अधिक है और नीति कवि **नगण्य** है। नीति–कवियों की भक्ति परक उक्तियाँ न तो किसी संप्रदाय से जुड़ती है और नही किसी वाद विशेष से कुछ सुंदरदास और जैन जैसे शेखावाटी कवि नीति के साथ सम्प्रदायों से भी जुड़े हुए हैं।पश्चिमी राजस्थान के महान संत जाम्भोजी ज्ञान के बारे में कहते है कि ज्ञानी वह व्यक्ति है जो अपने ज्ञान के सदुपयोग से अपने आप को वाद–विवाद से बचाता है।

"जाकै हदै माहि ज्ञान प्रकाशत, ताकौ सुभाव रहै नहिं छानौ।
नैन मै बैन मै सैन में जानिये, उठत बैठत है अलमानौ।।"

मीमांसा–दर्शन में कहां गया है कि यथार्थ ज्ञान वह है जो नवीन–विषय की जानकारी दे, जो अन्य प्रमाणों से पुष्ट हो और जिसके मूल में कोई दोष न हो। अज्ञानी केवल सत्य की लीला को ही सत्य मानता है। ज्ञान के बिना नैतिक– नियमों का पालन संभव नहीं है। ज्ञान मनुष्य को सत्य की ओर ले जाता है।

निष्कर्षः–मध्यकालीन शेखावाटी साहित्य के संत विद्वानों द्वारा – भक्ति, नीति व योग के द्वारा जनता को जाग्रत कर शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया गया था। इन संतो ने आध्यात्मिक व दर्शन के माध्यम से शिक्षा व शैक्षिक व्यवस्था को अनिवार्य माना था। वर्तमान स्थिति में भी योग द्वारा कोरोना जैसे महामारी पर भी काबु पाया जा सकता है। कवियों का जीवन–दर्शन गुरू की प्रतिष्ठा, सृष्टि क्रम, आत्मा, जीव, **शून्यवाद** इत्यादि व्यापक विषयों का प्रतिपादन लौकिक स्तर पर करता है। तंत्र–मंत्रों की बजाय योग–क्रियाओं तथा सात्विक विचारों से जीवन–व्यतीत करने की सीख संत कवियों ने प्रदान की। संत कवियों के वैचारिक–दर्शन का आधार दार्शनिक व सांस्कृतिक धरातल है। इनके आदर्श साधनात्मक एवं भावनात्मक है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1.डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थान का पिंगल साहित्य
2.डॉ. शक्तिदान कविया – राजस्थानी काव्य में सांस्कृतिक गौरव
3.डॉ. एच.एस. आर्य – शेखावाटी का राजनीतिक एवम् सांस्कृतिक इतिहास
4.माली बनवारी लाल – राजस्थानी साहित्य का इतिहास
5.कल्ला नंदलाल – राजस्थानी लोक–साहित्य एवं संस्कृति
6.चोखानी रामदेव – राजस्थानी साहित्य का महत्व

LITERATURE AND CULTURAL STUDIES IN ANITA DESAI'S VOICES IN THE CITY,BYE-BYE BLACKBIRD, BAUMGARTNER'S BOMBAY

RANJANA DIGAMBAR AMODE
REG. NO. 23820070
DEPARTMENT OF ENGLISH

SHRI JAGDISHPRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY

JHUNJHUNU, CHURU ROAD, VIDYANAGARI, CHURELA, RAJASTHAN-333001

Abstract:

Literature broadly is any collection of written work, but it is also used more narrowly for writings specifically considered to be an art form, especially prose fiction, drama, and poetry. Literature is a method of recording, preserving, and transmitting knowledge and entertainment, and can also have a social, psychological, spiritual, or political role.

Literature, as an art form, can also include works in various non-fiction genres, such as biography, diaries, memoir, letters, and the essay. Within its broad definition, literature includes non-fictional books, articles or other printed information on a particular subject.

Cultural Studies is an academic subject that studies cultural phenomena in many civilizations by combining political economics, communication, sociology, social theory, literary theory, media theory, cinema studies, cultural anthropology, philosophy, art history, and other disciplines.
Cultural studies frequently examine how a phenomenon links to ideologies, country, race, socioeconomic class, and gender. Cultural Studies is the study of the various influences that shape how people conduct their lives.Cultural studies theory is impressive, especially when considering the components of our society that it puts into perspective.This multidisciplinary field of study aids in comprehending the connections between cultural texts and social forms by placing social analyses globally.All writings are produced by diverse cultural factors – political, artistic, economic, technical, and ideological. At the same time, we utilize such books to invent, challenge, and rebuild our civilizations daily. It is a phenomenon which is generally experienced by the migrants whether they migrate for jobs, studies or in case of women, after marriage. Anita Desai has dealt with Cultural Shock in her novels along with other major themes.The paper will also deal with the resultant themes of alienation, depression, nostalgia and agony experienced by thecharacters once they migrate from eastern cultures to western culture. The article also delves deep into the cross-cultural connections and hybridity produced once the twocultures meet and mingle in an individual's personal life.

INTRODUCTION TO THE NOVELIST:-Anita Desai is one of the most eminent novelists in Indian English Literature. She was born in Mussoorie in 1937. She was a first child of Bengali father and German Mother that shaped her life and her mother's and her own experiences became source of her writing. She has presented the world from feminist points of views and presented cultural differences. Her novels are the best example of cultural studies. Anita Desai has given valuable literature to the world and has touched social, political, feminist, cultural, racial and postcolonial issues in her writing. The characters she portrays in her novels undergo a transition from one culture to another wherein they receive this cultural shock because the new culture appears to them completely alien and contradictory to their opinions.

WORKS OF ANITA DESAI:-The following novels and short stories she contributed in the field of literature, The Artist of Disappearance (2011), The Zigzag Way (2004), Diamond Dust and Other Stories (2000), Fasting-Feasting (1999), Journey to Ithaca (1995), Baumgartner's Bombay (1988), In Custody (1984), The Village by the Sea (1982), Clear Light of Day (1980), Games at Twilight (1978), Fire on the Mountain (1977), Cat on a Houseboat (1976), Where Shall We Go This Summer? (1975), The Peacock Garden (1974), Bye-Bye Blackbird (1971), Voices in the City (1965), Cry, The Peacock (1963). Many of her novels comes from the experience of her day today life.Anita Desai is most famous to write the east west encounters in her fiction but at the same time her contemporaries Ruth PrawarJhabwala, Nayantara Sehgal and Bharati Mukherjee writes about east west encounters in their fictions. Anita Desai's works Bye-Bye Black Bird(1971), Baumgartner's Bombay(1988) and Voices in the City(1965) are the novels based on the theme of East West encounter. The east west encounter makes many concepts clear in relation with religion and social life.

VOICES IN THE CITY:-Anita Desai's novel Voices in the City published in 1965 is the story of three siblings Amla, Nirode and Monisha.In this novel Anita Desai has tried to present the experiences that she had in Calcutta 1960. This is post independent era when the Indian youth were accepting the western ways of life. This drastic changes in life caused quest for identity this is another themenarrated in her fiction. Amla, Nirode and Monisha were not happy they were in search of happiness in life. Ania Desai has presented Calcutta city as most crowded,messy, frenzied and stressful city life.Monisha the eldest daughter who is very sensitive, anxious and habituate to thinks excessively. She is an obedient, dutiful wife. Monisha eagerly wanted to conceive but unable to do so she blames herself that being a woman she can't give birth to child. She fights to create own identity due to failure in this struggle became the main reason to set fire for oneself. Her diary plays an important role to understand the real life of hers to others because she didn't find best listener. Another main character in this novel is Nirode, who easily get adjusted with lifestyle of Calcutta. Nirode feels strange when his skill of self-expression in newspaper agency is denied or cut down. For several times he tried to create own identity but failed in that. Such circumstances in his life made him to think that goddesses of the city Calcutta Ma Kali not allowing him to have his identity. One more main character in this novel is Amla, younger to Monisha and Nirode, who understands the words of painter. She transforms her life after her sister's death. She translates Panchatantra and got purpose of life.Arun is another character who is the sufferer of the western dilemma, he gets more influenced with the American girls and marries with her. Arun's decision to get married with western girls destroys his life and he failed tobe a good husband he failed to understand wife's expectation, failed to be dutiful son. In this novel Anita Desai has presented the broken life, broken relation with cultural differences.

BYE-BYE BLACKBIRD: - Bye-Bye Blackbird (1971) is one of the best examples of east west encounters. It is postcolonial literatures that represent diasporic literature and east west encounter. This novel is the best example of diasporic communities who are unhappy with foreign culture. Migration is the most burning issue that has been highlighted in this novel. Anita Desai has pointed out the treatment to Indians in the England. The novels can be studies from thesethreepoints ofview - Arrival, discovery, recognition and departure. Major character in this novel Adit a Bengali man attracted with the lifestyle of England and marries to western girl and get settled there. The fascinating lifestyle of England captured his attention and diverted his attention towards the returning to home country. The term 'black bird' represents the Asian who migrated to England. Adit's close friend is Dev who came England to get education and till the end of the novel is shown searching for job. His struggle to get job shows how the Indians were

not hired for the job, if hired weren't given good treatment. With these two characters Anita Desai talked on burning issue that Indian faces in other countries. Using these two characters she tried to present east west psyche of migrants who tries to get adjust with western countries/atmosphere. At the end of the novel having clear discussion with Dev and his taunt and outbreak of Indo-Pak war helped Adit to feel alienated,aroused the feeling of longingness for own country. Hisfeeling, dilemma of the identity and belongingness towards nation depicted him as a representative of east west encounters. Adit who merged with English culture and lifestyle decides to leave the country and plans to go back. Adit used to do discussion with his wife Sarah and switched to hometown. Sarah plays major role in transforming his mindset and her love for India and Indian helped her to take decision to get married with Indian-Adit.Sarah being an English lady finds that she is not liked by her own people for having marriage with Indian. Adit and Dev are the two major characters who are opposite to each other.Even Adit and Sarah both faces the crisis for identity. Adit who settled in England and Sarah who married with Indian both choices and liking has wide differences but they love each other though their language and culture continually to differ.

Dev very easily accepts the reality of England lifestyle. He revolts against injustice, humiliation from these people and answers them right on time. This attitude of these westerns reminds us their inhabitant quality of imperialism. Anita Desai's this novel Bye-Bye Blackbird (1971) is the fine example of east west encounters which highlights the behaviour of all the characters- Adit, Sarah, Dev. Anita Desai's this novel depicts the plight of the Indian immigrants in London. The title itself indicates England's offering goodbye to Indian"Blackbird". Novelist has fairly tried to present the conflict between immigrants and the countrymen. In novel we can see immigrants tried to be rooted deeply with their own culture in this effort they failed and remained alienated. The novel presents the social isolation problem and prospects of establishing intimate and meaningful relationship between two racial and cultural groups.

BAUMGARTNER'S BOMBAY:-Anita Desai's one more novel Baumgartner's Bombay written in 1980 is another perfect example of east west encounter which consists of seven chapters, which takes us to the past and again to present situation. It is a story of Hugo Baumgartner and Lady Lotte which goes together. In this story we can see the struggle to find one's own identity in which they failed to gain identity. Hugo stays in Bombay with his cat when he looks back in his past, he finds nothing, or any good memories for him in his own country Germany because he lost his father(killed by Nazi) in a war whichbroke between Jew and Nazi so he switched to India and unable to set his own business.

Reference:

1.Baljit Kaur Dhaliwal, Cultural Encounters in Anita Desai's Bye-Bye Blackbird, Smart Moves Journal IJELLH Feb. 2013 ISSN no.0976-8165, pg.no.pg.no. 01-05.

Encyclopedia.com

2.Prakash Eknath Navgire, East West Encounter in Anita Desai's Novel INFOKARA Research, Nov. 2019 ISSN no. 1021-9056 pg. no. 1643-1650.

3.V. Manimozhi, East West Encounter in Anita Desai's Bye-Bye Blackbird by Anita Desai, Malaya Journal of Matematik Dec. 2020, ISSN no. 2411-2412.

किमलेश्वर के गद्य साहित्य मे पारिवारिक वैमनस्य एवं संवेदनशून्यता सम्बद्ध नारी–विमर्श

शोधार्थीः सम्पत सिंह (पंजीकरण संख्या : 221219014)
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी, >qa>quwa

शोध आलेख का सार–कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना ने स्वीकार किया है कि उनकी घरेलु हालात अच्छी नहीं थीं। जीवन के अनेक उतार–चढ़ाव इन्होंने देखे। युद्धों की भी जण स्थिति और आर्थिक तंगी, विदेशियों के आक्रमण राजनीतिक आपाधामी का स्पष्ट प्रभाव इनके साहित्य पर पड़ा। जीवन के इस उतार–चढ़ाव का प्रभाव इनके साहित्य में लक्षित हुआ। उन्होंने स्वयं स्वीकार करते हुए लिखा हैं "एक अमीर कहे जाने वाले परिवार में गरीब की तरह रहना, खाना खाकर भी भूखा उठना, अकुलाहट और दुःखों के बीच हंसना, बच्चा होते हुए भी व्सस्कों की तरह निर्णय ले सकना, यह मेरी आदत नहीं मेरी मजबूरी थी।"कमलेश्वर जी ने ग्यारह उपन्यासों की रचना की। जो एक नई सोच दे रहे है। कमलेश्वर के उपन्यासों को पढ़ने से ऐसा लगता नहीं है। वर्षो पहले लिखा गया था। गहराई में इसकी जितनी ज्यादा है। उसकी चाह पाना मुश्किल है। एक उपन्यास में नजदीक से जिंदगी, वहाँ लोगों के दुख, दर्द, आशाए निराशा, क्या नहीं है। देश को स्वतंत्र कराने के लिए कितने नहीं मध्य और निम्न वर्ग आजादी की लड़ाई लड़ी थी। स्वतन्त्र मिलन के बाद उन्होंने अपनी आखों को टुटते–मिटते देखा था। शहर व कस्बे की स्थितियाँ और परिस्थितियाँ की रचना का बखूबी से वर्णन किया है। कोमल व कठोर भावों का वर्णन इस उपन्यास में पमाणित कुशलता से वर्णन किया है। एक स्थान पर लेखक अपने नायक सरनाम सिंह से कहलवाता है–"यहाँ सब जीने के लिए मर रहे हैं, मालिक और मजदूर, वकील और मुहर्रिर, दुकानदार और नौकर सभी एक नाव में हैं, और उस नाव के चारों ओर एक तरह का तूफान उड़ रहा है।"

मूल शब्दः मुहर्रिर, सजावन, मारकाट, समुद्र मे खोया, वैयकितक

प्रस्तावना–'जंददियां' उपन्यास के पात्र सरनाम सिंह और रंगीले, शिवराज और बाजा मास्टर, बंसरी और कमला, इस सूत्र में बंधे रखे है। प्रथम कोटि का उपन्यास एक सड़क सजावन गलियाँ, भाषा की दृष्टि से है। कमलेश्वर का दुसरा उपयास 'लौटे हुए मुसाफिर है देश के विभाजन के समय मारकाट शुरू हो गई थी–"इस उपन्यास की एक और विशेषता यह भी कि यह केवल किन्हीं दो या चार पात्रों की दुःखभरी कहानी मात्र नहीं रह जाती, अपितु एक पूरे समूह या समुदाय की परिस्थितिजन्य यातनाओं को प्रस्तुत करने वाली रचना के रूप में सामने आता है।"[प]

'डाक बगंला' उपन्यास में कमलेश्वर जी ने जीवन के चित्र को प्रस्तुत किया है। इसके माध्यम से नारी जीवन असहाय और दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। उसको भी जीने का संघर्ष है। जीवन में उतार–चढ़ाव वाली 'स्त्रियों' को माना जाता है। इरा की व्यथा का संवेग बहुत गहरा है।

'समुद्र मे खोया हुआ आदमी' कमलेश्वर जी ने निम्न मध्यवर्गीय परिवार के विघटन की कथा है। समाज समुद्र से गहरा और खतरनाक है। श्यामलाल स्वय निरीह और असहाय का अनुभव करने लगे है।–"कल मनीआर्डर तो गया है न, इसलिए उछल रही हो। आठ दिन बाद घर का खर्चा कहां से चलेगा? समीरा की फीस कहां से आएगी....."

कमलेश्वर जी ने 'काली आंधी, उपन्यास पर व्यक्तिगत और सामाजिक दो स्तरों का वर्णन करता है। असफल दांपत्य जीवन की करूण कहानी है। समाज में भ्रष्टाचार और कपट। कमलेश्वर जी ने मध्यवर्ग व उच्चवर्ग के राजनीतिक, सामाजिक एंव वैयकितक जीवन यथार्थ चित्रण किया। राजनीतिक के बारे में वोट के वक्त जिस प्रकार वायदे किए जाते है। सामाजिक जीवन में मालती और जग्गी बाबू के संबधों का वर्णन है। 'आगामी अतीत' का नायक कमल बोस आर्थिक विपन्नता पूजीवादी शक्तियों से समझौता नहीं करता। अपने वर्ग को भूल जाता हैं।

जीवन की कहानी 'वही बात' कमलेश्वर का उपन्यास है। नए समझौता की तरफ संकेत करता है। सभी को जीने का अधिकार है फिर चाहे मध्यवर्गीय या निम्न वर्गीय। अंतर्राष्ट्रीय एकता का विखडन, साप्रंदायिक झगड़े, राजनीति का यथार्थ चित्रण देश–विभाजन की त्रासदी, पाकिस्तान इन सब विषयों का चित्रण किया गया है। 'लेखक अपने शब्दों में स्वंय लिखते है।–"यही और कुछ कुछ 'उन' बहुत कुछ वालों से इनको अलग सिर्फ अलग नहीं, एकदम अलग खड़ा कर देता है।"

कमलेश्वर ने आधुनिक उपन्यासों और कहानियों को एक नया मोड़ दिया। मानवीय पक्ष की रचना करते थे। चिंतन दार्शेनिकता से बोझिल नहीं रहता। सिनेमा के परदे पर कमलेश्वरका नाम बहुत तेजी के साथ उभरा। हिन्दी फिल्मों में लेखक 'मुंशी, का एक पर्याय रहे थे। फिल्म उद्योग में एक नया मूल्य एंव नई प्रतिष्ठा दी। हिन्दी फिल्मों में कमलेश्वर एक अपरिहार्य एंव निश्चित शक्ति है।

जो 'बहुजन मुखास बहुजन हियात' के सिहदाँत को साकार करती है। भारतीय दुरदर्शन में कमलेश्वर शख्सियत रहे। झुग्गी–झोपड़ियों वाले तथा अनपढ़, प्रोफेसर उसके कार्यक्रम को सराहते थे। जब लोग डगमगाती सुरक्षा में जुटे थे। वहाँ साहित्यकार कमलेश्वर साहित्य में लिख रहे। नए लेखकों की कतार खड़ी की। डा. जॉनसन ने अग्रेजी के लिए कार्य किया। वही कमलेश्वर ने हिन्दी साहित्य के उत्थान के लिए किया। कमलेश्वर एक साहित्यकार, फिल्मकार, सपादक के रूप में कार्य किया। संकेत इंगित, नई कहानियाँ, पत्र–पत्रिकाओं, का कार्य किया। कमलेश्वर किसी भी स्वभाव के रहस्य को मन अपने सामने प्रकट करवा लेते थे। व्यक्ति और व्यक्ति के बीच रूकावटें दुर करने में कुशल थे। मृत्यु के बाद हिन्दी साहित्य जगत ने एक महान् साहित्यकार खो दिया। आर्य समाज, ब्रहा समाज, बोल–चाल व्यक्तियों का समूह कहा जाता है। समाज समूह सबंधों का ताना–बाना है।"मनुष्यों में जो चलन है, जो कार्यविधियां हैं, आपकी सहायता की जो प्रवृत्ति है, शासन की जो भावना है, जो अनेक समूह व विभाग विद्यमान हैं, मानव–व्यवहार के संबंध से जो स्वतंत्रताएं व मर्यादाएं हैं, उनकी व्यवस्था को ही समाज कतहे हैं। यह व्यवस्था बहुत जटिल है और निरंतर विद्यमान है और परिवर्तित होती रहती है।"

उन्मुक्ता के कारण पुरूष ने दो–तीन सबंध बनाए। स्त्री पुरूषों से मौज–मेला कर रही। प्राचीन समय पुरूष अपने काम की सतुंष्टि करने के लिए अवैध सबंध बनाता। विवाह एक धार्मिक दृष्टि न होकर स्त्री–पुरूष की अनिवार्य साधन हैं। भोग की वस्तु बना दियां। "आज प्रेम न रहस्य और न नियति। यह तो केवल आवरण मूलक रह गया है। जिसका अर्थ संभोग जिसकी पूर्ति के बाद काकर्षण तो स्थाई रखना अर्थात् उसका निर्वाह करना रोमांच मात्र है।"

'अधूरी कहानी, में कमलेश्वर ने प्रेम में भोगवान की संज्ञा ली है। विमल तथा सुधा एक–दूसरे से प्रेम करते है। मित्रता की सीमा पार एक–दूसरे में अपने को समर्पित कर चुके है। इसका स्पष्टीकरण सुधा ने करवाया है "विमल और मेरी शादी की चर्चा तुम क्यों करते हो? मेरे पास किसी को देने के लिए अब शेष ही क्या है।? शादी यदि शरीर का व्यापार मात्र है तो उस संबंध में मैं कुछ नहीं कहना चाहतीं। किंतु इसका संबंध यदि हदय, प्रेम, स्नेह और सहयोग की भावना से भी है तो तुम इतना क्यों नहीं समझते कि अब किसी अन्य पुरूष को ये सब देने की स्थिति में नहीं हूं।"

प्रेम को भुलाना स्त्री–पुरूष के लिए मुश्किल हो जाता है। जिससे विवाह से पहले करती है। 'अधूरी कहानी, में सुधा विवाह के बाद दुखी होकर कहती है "आखिर तुम्हें हो क्या गया हैं? मैं तो किसी परिवर्तन का अनुभव नहीं करती.....तुम जैसा कहोगे, मैं वही करूगीं.....लेकिन तुम खुश तो रहो।"

कुछ नारियां तो अपनी अर्थिक मजबूरी तथा दिलचस्य के कारण पुरूष के साथ संबध बनाती है। कमलेश्वर की कहानी 'अजनबी लोग, मे मिलता है। "दो गर्व था कि औरों की तरह उसने आदमी नही बदला। इधर की औरतों की तरह आदमी बदलते रहना या मेठ–ठकेदार से आशनाई करने में उसकी दिलचस्पी नही थी।"

काम वासना की तृप्ति के कारण व्यक्ति अँधा हो जाता है। वह अपने परिवार, ओहदेख समाज, को अपसंस्कृत कर रहा है। यही नंही बहकाने के विभिन्न प्रकार के लालच भी देता है–"ओई पातरा साब तो नई होता जो मेरे को दीवार के पीछू करा था.....तेरे को छोड़ने को बोला था.....पगार बढ़ाने को बोला था.....।"[पप]

स्त्री–पुरूष आधुनिक समय में विवाह जैसे पवित्र रिश्ते को नष्ट करते जा हहे है। विवाह केवल यौन पूर्ति का माध्यम समझा जा रहा है। कमलेश्वर की कहानी 'तीन दिन पहले की रात, का उदाहरण देखने को मिलता है। "दुनिया जहान से उदासीन, विचारों और मानन से दूर वह एक ऐसा पुरूष था, जिसे केवल औरत चाहिए थी। ऐसी पत्नी जो उसकी शामों को रंगीन बना सके, रातों को महका सके और सुबह उससे अलग हट जाए।"

कुंती के विषय में चन्द्रनाथ कहते है। कि स्त्री भी पुरूष से कम नहीं है। विवाहित स्त्रियाँ आधुनिक समय मे अन्य से संबंध बनाने में पीछे नंही है। 'एक सड़क सजावन गलियाँ' उपन्यास में बंसिरी सरनाम कहती है। "डाका मारता है? सरनाम सिंह हंसकर बोला "अब तेरे पास रह क्या गया? और उसने बड़ी गहरी नजरों से बंसिरी को ताका था। "तेरे लायक सब कुछ हैं। है दम? 'हया–शरम खोकर औरत बनी है अब।"

चंन्द्रनाथ बड़ी हिकारत के साथ कहता है 'एक अश्लील कहानी, में स्त्रियाँ श्रृंगार करती है। "एक अश्लील कहानी" में औरतों के श्रृंगार तक को इसी भूख का परिणाम कहा है अर्थात् स्त्रियाँ इसीलिए श्रृंगार करती है।

"यह कसूर उनका नही, तुम लोगों की आखों का भी है।"

जब पुरूष अन्य संबंधों को स्थापित करता है तो सभी सीमाओं को तोड़ देता है। नैतिकता आत्म संयम जैसी भावनाओं से रहित रह जाता है। कमलेश्वर की कहानी 'कुछ नंही, कोई नहीं, जब सूरज के पिता के अवैध संबधों के बारे में पता चलता है। तो वह कहता हैं "निकल आ! मैं कह रहा हूं निकल आ, इसी में तेरी खैर है। घर कहता हैं, रात पहरे की ड्यूटी है और यहां नाबदान में पड़ा हैं।"भोगवादी प्रवृत्ति 'डाक बगंला' उपन्यास में देखने को मिलती है। नायिका इरा के साथ काम वासना की पूर्ति के लिए सबंध बनाता है। "और बतरा के हाथ मेरी कमर पर आ गए थे.....उफ कितनी एकता थी स्पर्श में और बतरा ने मुझे नजदीक लेते हुए बड़ी गहराई से चूम लिया था।.....बतरा मेरा अपना हो गया था। मैं विवाहित जीवन तो व्यतीत कर रही थी, पर उसकी सामाजिक सनद न मैंने ली थी और न ही बतरा न लेने की सोचती थी।"

प्यार करने वाले स्त्री–पुरूष मान–मर्यादा को भुल जाते है। चाहे विवाहित स्त्री क्यों न हो बंदरी ने सुना जोर देखकर बोला "साई वह रूह नहीं, हाड–मास की सलमा थी। मैंने अपनी आंखों से देखा है, इन्हीं आँखों से। सलमा और सतार जरूर यह मौका पाकर उस मकान में गए होंगे।"

प्राचीन समय में प्रेम को पवित्र समझा जाता था। लेकिन अब के समय काम वासना की पूर्ति बनकर रह गया 'मेरी प्रेमिका' कहानी में शांत सुप्रकाश के प्रेम में बहकर सब कुछ समर्पित कर देती है। "मैं उसके पास गई और फिर रंगीन बादलों और चांदनी में रातें नहा गई। वहीं समर्पण के क्षणों में मैंने उससे कहा था, हम सामाजिक रूप से एक हो जाएं क्यों?"

भोगवादी प्रवृत्ति के कारण स्त्री–पुरूष के बारे में कमलेश्वर कहता तु हारा शरीर मुझे पाप के लिए पुकारता है मकसूद प्रमिला को कहता है "प्रमिला! मैं कहने से खुद को रोक नहीं पा रहा हूं.....वह यह कि तु हारा शरीर मुझे पाप के लिए पुकारता है।.....यह जुमला तो क्यों पेट्रा ने भी अपनी जिंदगी में नहीं सुना होगा.....और अपने शरीर का वह ताजमहल तुमने मकसूद को सौंप दिया।"

शारीरिक यौन–व्यापार के कारण रिश्तों में पवित्रता नहीं रही है। स्त्री–पुरूष में भोगवादी प्रवृत्ति दिखाई देती है। नारी की रचना स्वंय ईश्वर ने की। ऋग्वेद में नारी को मैना कहा गया है। "क्योंकि पुरूष उसे स मान देते है।"

जयशंकर प्रसाद जी नारी के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रकट किया हैं। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" कहकर नारी के स्थान को निर्धारित किया गया है। लज्जा होने के कारण वह स्त्री कहलाती है। जब नारी स्वयं को पुरूष के प्रति समर्पित कर देती हैं, तब योशा नाम की वह अधिकारिणी हो जाती है।"

समाज में नारी को पुरूष का शोषण बना दिया जाता। पुरूष प्रधान होने के कारण नारी शोषित हो रही है। आज समाज में अनेक नारियाँ अपने पैरों पर खड़ी होने के बावजूद भी शोषण का शिकार हैं।

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजन–नग–पग तल पर।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल पर।"

शारीरिक और मानसिक रूप आधुनिक समाज में शोषण का शिकार बनती जा रही। राज धन लूटने के साथ रानी को अन्य वस्तु का उपहार समझा जाता है। "यह धन लूट लो, उन्हें लूट लो, जो मिले उसे लूट लो। यही है अपने सेनापति आवाजी सोमदेव का आदेश। पर मीना जी की दृष्टि खजाने पर नहीं, यौवन से भरे खजाने गैहरबान पर थी.....।"

सारी दुनिया सांप्रदायिकता का जहर बना दिया। जाति नाम पर लूट–खसोट हो रही। 'एक सड़क सजावन गलियां, उपन्यास में सरनाम बंसिरी के घर डाका डालता। "मुँह में बंडूक डाल दो,.....नंगा कर दो हरामजादी को" सरदार चीखा था।"

सरदार ने कड़क कर कहा था "आग लगा कर इसकी टांगे भून दो, जब तक चाबियां न दे, मनने मत दो ससुरी को।"

शारीरिक शोषण के कारण स्त्री अंत्यत घिनौना होता किसी की बहन, बेटी, पत्नी, भी शोषण होती जा रही। "गिरधारी लौंडिया की तरफ लपका था और उसकी छातियों पर हाथ डालकर वहशी तृप्ति का अनुभव करता हुआ अपने को कार्यरत प्रकट कर रहा था– इस लौंडिया को सताओ, तब यह कबूलेगी।"[पपप]

स्त्री–पुरूष एक दूसरे का सहारा समझा जाता है। इसके बिना पहिए चल पाना असंभव होता है। इसका उदाहरण एक उपन्यास इन पक्तियों में मिलता है। "पिछली औरत की तरह उसका भी हाल यही करेगा। ताडी पी–पीकर पीटेगा और किसी दिन ये भी पेट में बच्चा लिए जहर खाकर या फांसी लगाकर जान दे देगी....."

इस संसार में कोई भी कितना ही आगे निकल जाए। लेकिन नारी को हीन भावना की दृष्टि से देखा जाता है। यह बात कमलेश्वर की 'अधूरी कहानी' में स्पष्ट है। "नारी पराधीन तो होती हैं, चाहे जहां बैठा दी जाए, बैठना ही पडेगा। विमल ठीक ही तो कहते हैं, चाहे खुशी से, चाहे अनिच्छा से समाज की मर्यादा को तो स्वीकार करना ही होगा।"

आधुनिक समय में नारी का शोषण खरीदने बेचने तक किया है। कामना वासना के धंधे में कुछ रूपयों की खातिर उसका जीवन बर्बाद कर दिया जाता है। "इस साधु ने हमें तीन सौ में खरीद कर आठ सौ रूपये में बच दिया है अरे हम हजार देते हैं।" उस बेहूदे व्यापारी से कहा और सिपाही की गालियां सुनता हुआ डिब्बे में आ बैठा।"

'मांस का दरिया' कहानी में नारी का शोषण बताया गया है। मजबूरी में रूपया उधार लेने पर बड़ा गंदा मजाक किया जाता है। "सूद में एक रात..... ठीक है न....."

पुरूष प्रधान समाज में आगामी अतीत' में बच्ची के साथ शौषण किया जाता है। "बाबू तुमने अपनी बच्ची कहकर मुझे क्यों पुकारा था.....? तु हैं नहीं मालूम बच्ची बनाकर मुझ पर क्यों जुल्म तोड़ा गया था.....।"

आधुनिक नारी सुशिक्षित होने के कारण भी बदनाम होती है। 'आसक्ति' कहानी में आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर नौकरी करती है। "वह मुझे भी बदनाम कर देगा और एक दिन मुझे यह नौकरी छोड़ना पड़ जाएगी।....."

आधुनिक समय पुरूष के द्वारा नारी का मानसिक शोषण किया जा रहा है। बाहर जाना मुश्किल है। कमलेश्वर की कहानी 'ब्रांच लाइन का सफर' नारी की मानसिक शोषण का शिकार बनती है। "साथ वाले व्यापारी को कंधा मारकर ठेलते हुए उसने उस लड़की की ओर इशारा किया और सी–सी करके भूखी निगाहों से उसे ताकने लगा।"

पुरूष के द्वारा नारी को छेड़छाड़ करने पर कमलेश्वर लिखते हैं "डा. कटरनी जा रही है। वैद्य की लड़की डॉ. कटरनी। लोग उसे डॉ. कटरनी कह कर चिढ़ाने लगे थे।"

निष्कर्ष – आधुनिक समय में निम्न वर्ग हो चाहे उच्च वर्ग शोषण में पीछे नहीं है। गिलगमेश के समय वियजय यात्राा में शहरत्रों कन्याओं ने बताया कि शील भंग किया था। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में यह परिलक्षित होता है कि अशिक्षित व निम्न वर्ग के लोग ही नारी का शोषण नहीं बल्कि उच्च वर्ग भी इसमें पीछे नहीं थे। गिलगमेश के विषय में संदेशी ने बताया कि अपनी वियजय यात्रा में उसने शहस्त्रों कन्याओं का शील भंग किया। पराजित योद्धाओं की पत्नियों और स्त्रियों को उसने अंकशयिनी बनाया..... ।"

लड़ाई दगे वह जाति–पाति के भेदभाव के नाम पर नारी का शोषण होता है। "ओह बिलकीस। लेकिन एक हिंदुस्तानी औरत की जिंदगी इतनी कीमती नहीं हैं कि उसके बारे में मुझसे जवाब मांगा जाए। खुद तु हारे मुल्क में दंगों में कितनी बिलकीस रोज मरती हैं..... उनके साथ जिना किया जाता है.....

तब तुम खामोश रहते हो.....अपने लोगों से तुम जवाब नहीं मांगते।"

कमलेश्वर के उपन्यास में ऐसे विभिन्न उदाहरण मिलते है। समाज का कहना कि नारी अबंला तथा शक्ति हीन है। इसी के आधार पर इसका शोषण है। पुरूषों के बराबर काम कर रही लेकिन फिर भी नारी का शोषण हो रहा है। पहले समय में मानव इतना नहीं सोचता लेकिन अब आसमान को छू रहा है। पहले नारी चूल्हा–चौकी, घर की चारदीवारी तक सीमित थी। वह अब अधिकारों के प्रति सचेत है। आज वह मूक होकर अपमान को सहन नही करती। 'अधुरी कहानी' में सुधा की शादी प्रेमी से न होकर अन्य युवक के साथ होती है। उसके गुणों के कारण विमल उसके विषय में कहता हैं "सुधा असाधारण हि मत और बुद्धि वाली लड़की है। वह कोई मासूम बच्ची नहीं, वह चतुर एंव व्यावहारिक है। वह कोरी कल्पना नहीं, यथार्थ के बल पर भी चलना जानती है।"

संदर्भ सूची

1 मधुकर सिंह (सं.) कमलेश्वरड. पृष्ठ 89

2 मधुकर सिंह (सं.) कमलेश्वरड. पृष्ठ 68

3 कमलेश्वरः कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 4 (भूमिका से)

4 सत्यकेतु विद्यालंकारः समाजशास्त्रः पृष्ठ 86

5 गजाजन शर्माः प्राचीन भारतीय साहित्य में नारीः पृष्ठ 96

6 कमलेश्वरः समग्र कहानियांः पृष्ठ 105

7 कमलेश्वरः समग्र कहानियांः पृष्ठ 111

8 कमलेश्वरः समग्र कहानियांः पृष्ठ 119

9 कमलेश्वरः समग्र कहानियांः पृष्ठ 216

10 कमलेश्वरः समग्र कहानियांः पृष्ठ 221

11 कमलेश्वरः समग्र कहानियांः पृष्ठ 229

12 कमलेश्वरः समग्र कहानियां पृष्ठ 28

13 कमलेश्वरः समग्र कहानियां पृष्ठ 65

14 कमलेश्वरः समग्र कहानियां पृष्ठ 69

15 कमलेश्वरः समग्र कहानियां पृष्ठ 89

16 कमलेश्वरः समग्र कहानियां पृष्ठ 116

17 कमलेश्वरः समग्र कहानियां पृष्ठ 125

18 कमलेश्वरः समग्र कहानियां पृष्ठ 126

19 वामन शिवरामे आप्टेः संस्कृति हिंदीकोशः पृष्ठ 167

20 जयशंकर प्रसादः कामायनीः (जल्लासर्ग) पृष्ठ 198

21 कमलेश्वरः कहानी संग्रह (कर्तव्य) पृष्ठ 86

Human Values depicted in *Chokherbali (A Grain of Sand)* by Rabindranath Tagore and *The Guide* by R K Narayan

Ms. Sapna H Thakur
Research Scholar of Shri J.J.T. University
Dr Vaibhav Sabnis
Faculty in English Research Guide, D B Am College of Law
Dr. D Y Patil Pratishthan's Dhule
Y B Patil Polytechnic, Akurdi Pune

Abstract-Literature is already an advantage in the field of value learning, as literature demonstrates or emphasizes the essential dignity, nobility and value of individual human beings. Therefore Literature can be used as an effective tool to teach and inculcate human values not only in students but also in the society at large.To imbibe values related to the human rights, such as: freedom, equality, justice, solidarity, tolerance, responsibility, honesty, goodness, simplicity, tolerance for other race and religion, respect for people, environment and things, responsibility, solidarity, universal brotherhood. All these are universal values that are crucial to the harmonious existence and wellbeing for all living entities.This value stand at the core of progress, development and evolution of the human race.This paper deals with the human values that can be inculcated through the work of Rabindranath Tagore and R K Naryan.

Introduction-Some ninety years ago ***Matthew Arnold*** predicted a new role for literature: He said ***"more and more mankind will discover that we have to turn to poetry to interpret life for us,to console us to sustainus…most of what passes with us for religion and philosophy will be replaced the Poetry"***. If we take Poetry to mean imaginative literature in general.that prophecy has proved remarkably accurate; literature is looked on as the supreme means of insight into human existence.

If we human being want to create a world mentioned by Rabindranath Tagore in Gitanjali:

Where the mind is without fear and the head is held high;
Where knowledge is free;
Where the world has not been broken up into fragments
by narrow domestic walls…….. Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake **(5).**

weas a race ,need to imbibe the human values that are the essential essence of human existence as humanbeing. These values have undeniable significance in whatever we want to do or create

in life. They are indispensible in all the walks of life whether in material life, spiritual life, or professional life**.** Human wellbeing is impossible without the humans who have these strong values as a backbone of their action.

Human values in Rabindranath Tagore's "Chokherbali" or A Grain of Sand

Nobel Lauret Rabindranath Tagore's entire literary work ,poetry ,drama, music, prose, essays etc the focal point is human values and spiritual upliftment through these values.. His body of work clearly shows that he is a Humanist at core. In my personal opinion, Gitanjali has many similarities to ShriBhagawadGeeta for it too shows path of liberation through simple human-value-oriented Karma.

His novel "Chokherbali"/Binodini", highlights and bring forth many social and human problems and struggles. Because of contemporary social panorama, Binodini is denied a basic a right of education inspite of being smart and sharp minded. Later on she was married off to a much elderly man, who dies soon after her wedding, forcing her into the long grieving life of a widow. Hence, being a widow, her fundamental rights and needs as woman and humanbeing are all forcibly denied. In the course of the story we realize that Binodini does many unaccepatable things some as revenge and some as just to assert her rights and human needs.

We as a teacher can make our students understand that had Binodini been allowed education, or married at the right time or to the right person or her human rights would have been protected; her story would have been different. Many pitfalls would have been avoided.Here, we can emphasize that if human values are not equally observed in society, rebels and revenge will prevail, causing havoc.What Binodini was asking for was : equal opportunity;inspite of being woman and widow, empathy and not pity, freedom from the lable of widowhood, love, protection, education, justice, and all these are basic human needs for the individual to flourish and progress.

Binodini"s courage, servitude, tolerance towards others, honesty is distinctly evident on many occasion. Similarly her bout of jealousy towards Ashalata pushes her in to the ditch of downfall. However at the end, her and Bihari's selfless love towards each other wins our heart, for she says no to his marriage proposal to protect his social status and leaves for Kashi with Annapurna after Rajlakshmi's death. Thus Chokherbali highlights some significant human values.

Human values in R K Narayns The Guide T

The Guide by R.K.Narayn delineates a tale of love, sacrifice, passion and identity.At same time it also depicts in the concealed manner the consequences of lack of integrity and loyalty, faithfulness, compassion for others also the corrupt and exploitative attitude towards the weaker or fairer sex.

R.K Narayan, the prestigious SahityaAkademyand Padma Bhusanawardee (1958) very well known for his Malgudi Days and The Guide. Novel The Guide was also converted into a film. His novels depict the Indinanness in the most authentic and in the simplest form. RK was invited by Rockfeller foundation from USA to visit Berkley and write a novel. In his book My Dateless Diary, an American journey, the novelist praises a smart witty guide in America. Raju's character reminds of that guide. In his another book My Days the novelist comments that he was musing about enforced sainthood. The novel The Guide seems loosely based or inspired by this, but of course in the completely in the Indian style.

The storyline of the novel The Guide goes like this; Railway Raju is a tourist guide who falls in love with Rosie, who is a dancer. Rosie's husband, archaeologist Marco,is totally indifferent towards her. Marco has no regard for her passion for dancing. Raju seems to take disadvantage of this attitude of Marco. He encourages her to chase her passion for dancing and this fetches money for him too.Raju becomes Rosie's manger and soon the real corrupt nature takes him over and he indulges in some fraudulent acts. Rosie leaves him and decides to devote her life to dance. The novel ends with Raju being mistaken as the spiritual guru by the innocent villagers.

As a teacher we can bring forth the instances in the novel where the human values are asserted and the instances where these values are marginalized for self-benefits.

However, Rosie"spercepective to dance was of devotion, *sadhana* and a vocation symbolizing her independent attitude and being nearer to God; which is very different than that of Raju's outlook. For Raju, dance is a cultural commodity which can be exploited for money and fame. If Raju had not been self-centered, exploitative and corrupt, the lifecourse of Rosie as dancer, as woman would have gone in different direction.

Marco In spite of his reformed progressive mind, he was narrow minded,controlling, and dominating about the women's liberation. That is the real reason he never gave any approval and appreciation to Rosie's dancing talent. He was always heedless and careless towards Rosie as wife .Marco's indifference towards his wife ,her needs and her passion towards dance plays

important role in Rosie's pull towards by Raju, who is keenly interested in her dancing talent (though for commercial purpose).

Towards the end of the novel, the Railway Raju or Tour Guide gets transformed (unintentionally) into a Spiritual Guide and finds himself in the village Mongal.Rajuchose to stay in Mongal so that he can get food without any labor. He accepted and performed the role of forced sainthood for that reason. However apart from that Raju made significant changes in the life of villagers of Mongal..He started a night school so that the village people might work in day and learn at night. He made them understand that its important to be logical and rational in their behavior and action. He advised them to rely on personal conscience by recollecting and reflecting. By doing this ,in a way he indirectly converted them to be their own guide.He could have easily exploited these poor people, however he choose to make them wiser without any spiritual preaching or practice.Besides, the novelist also presented the kindness and generosityof the people of Mongal, though out of faith or superstition for that matter. In spite of poverty, these poor villagers offered various food to Raju because they had this blind faith that he is saint who can bring rain.Thus we can say that The Guide shows that lack of basic human values in one or two person can affect the life many.

Conclusion- Anne Waldmon once said that ***"we will have total chaos, without books, literature and library'.*** It means we humans need books, literature to keep us sane and sensible and for the smooth development of human race.

Literature, in any language can be effectively utilised to disperse the human values and ethical values.In the words of Oscar Wilde: ***"Literature always anticipates life.".*** And guides us to carry ourselves in the best possible ways to achieve common good and wellbeing for mankind.

References-

1. Tagore, Rabindranath. A Grain of Sand: ChokherBali.Translated by SreejataGuha.Penguin,2003.
2. Nath, Bhupendra. Rabindranath Tagore: His Mystico-Religious Philosophy, New Delhi: Crown Publications, 1985.
3. Narayan.R.K "The Guide" (Mysore: Indian Thought Publications,1958)
4. Narasimhaiah, C.D. 2005. "The Guide" R. K Narayan "An Anthology of Recent criticism" Ed. Srinath. Delhi, Pencraf.
5. https://www.nobelprize.org/prizes/literature/1913/tagore/article/

प्राचीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्य एवं उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता

शोधार्थी:– डॉ सुरेंद्र सिंह

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी, >qa>quwa

सार–शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का माध्यम होता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य इस संसार में अपना एक निश्चित स्थान बना सकता है।शिक्षा शब्द के अर्थ को व्यापक एवं सीमित दोनों अर्थों में लिया जा सकता है। व्यापक स्तर में शिक्षा, मनुष्य के आध्यात्मिक विकास कि वह गति है जो उसके जन्म से लेकर अनुकरण, श्रवण, अध्ययन, मनन, के द्वारा जीवन के अंत तक चलती रहती है। यदि व्यक्ति चाहे तो वह जीवन के अंतिम समय तक विद्यार्थी रह सकता है। सीमित अर्थों में शिक्षा का तात्पर्य जीवन की उस अवस्था विशेष से है जिस अवधि में कोई व्यक्ति अपने गुरु के समीप अथवा शिक्षा संस्था में रहकर अपनी प्रगति हेतु अपेक्षित उद्देश्य प्राप्त करता है। शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र भी कहा गया है। शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है, जो मनुष्य के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उसका मार्गदर्शन करता हैं। मनुष्य के जीवन में ज्ञान अथवा विद्या का बहुत महत्व है। मनुष्य की प्रतिभा और बुद्धि शिक्षा पर निर्भर करती है।

मुख्य शब्द:- प्राचीन भारतीय शिक्षा, गुरुकुल, सच्चरित्रता और सामाजिक विकास

शिक्षा के बिना मनुष्य का व्यक्तित्व संकुचित और जीवन बोझिल होता है। अज्ञानता अंधकार के समानहोती है। पूर्व वैदिक युग सेही शिक्षा का बहुत अधिक महत्व था। उस समय तक शिक्षा का समुचित महत्व स्थापित हो चुका था। ऋग्वेद में विद्या अथवा शिक्षा को मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया है। महाभारत में भी मनुष्य के पांच स्वाभाविक मित्र बताए गए हैं:- विद्या, शौर्य, दाक्ष्य,बल और धैर्य। **(१)** शिक्षा सेमनुष्य का जीवन समृद्धि बनाती है। मनुष्य किसी मनुष्य बड़ा उसी स्थिति में होता है जब उसकी बुद्धि और मस्तिष्क शिक्षा द्वारा तीव्र और उच्च हो। इसलिए विद्याहीन मनुष्य को पशुवत कहा गया है। इस प्रकार शिक्षा का आदर्शात्मक विनियोग मनुष्य को क्रियाशील सन्नद्ध बनाना है, जिससे वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके है। आपने ज्ञान के साथ-साथ जगत का ज्ञान भी उसके लिए अपेक्षित माना गया है। शिक्षा पर ब्राह्मणों की जीविका निर्भर थी। अज्ञानी ब्राह्मण श्रेष्ठ और ज्येष्ठ माना गया है। शास्त्रों का पंडित भी मूर्ख है यदि उसने कर्मशील व्यक्ति के रूप में निपुणता प्राप्त नहीं की है। **(२)** शिक्षा की सार्थकता इसी में थी कि वह मनुष्य को श्रेष्ठ जीवन प्रदान करें।संसार की प्रत्येक वस्तु विचार तथा कार्य से लाभदायक परिणामोंको तभी प्राप्त किया जा सकता है, जबकि उसके अपने निश्चित उद्देश्य हो। यही तत्व शिक्षा के क्षेत्र में भी लागू होता है। शिक्षा के उद्देश्य के संबंध में कहा गया है कि उद्देश्य के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जिसे अपने लक्ष्य यामंजिल का ज्ञान

नहीं है, और विद्यार्थी उस पतवार के विहीन नौका की भांति है जो समुद्र की लहरों के थपेड़े खाती हुई तट की ओर बहती जा रही है।

व्यक्ति शिशु के रूप में कुछ पाशविक प्रवृत्तियां लेकर असहाय और दीनावस्था अवस्था में इस व्यापक विश्व में प्रवेश करता है। वह शिक्षा ही है जिसके द्वारा वह अपनी पाशविक प्रवृत्तियों का शोधन और मार्गान्तीकरण करते हुए अपने को मानव एवं सामाजिक प्राणी बनाने का सौभाग्य प्राप्त करता है। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने शिक्षा को जीवन का आवश्यक अंग माना है। शिक्षा से मनुष्य का जीवन ही परिष्कृत और समुन्नत नहीं होता बल्कि समाज भी सन्मार्ग पर चलकर विकसित होता है। मनुष्य का जीवन शिक्षा और ज्ञान से ही धर्म प्रवण, नैतिक मूल्यों से युक्त होता है। विद्यार्जन से व्यक्ति आत्मनिर्भरता तो प्राप्त करता ही है, साथ ही परिवार और समाज के निर्माण में भी योगदान करता है। मनुष्य की धार्मिक वृत्तियों का उत्थान, उसके चरित्र का निर्माण, व्यक्तित्व का विकास उसके सामाजिक उत्तरदायित्वों का निष्पादन और उसके सांस्कृतिक जीवन का उत्थान, प्राचीन शिक्षा के प्रधान उद्देश्य हैं। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपने इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति में लगा रहता है। अथर्ववेद में विद्या के उद्देश्य और उसके परिणाम का उल्लेख किया गया है। जिनमें श्रद्धा, मेघा, ज्ञान, धन, आयु तथाअमरत्व को सन्निहित किया गया है।**(३)** किसी भी प्राचीन ग्रंथ में शिक्षा के उद्देश्य का आधुनिक शिक्षा सिद्धांत के अनुसार वर्णन प्राप्त नहीं होता है। तथापि विभिन्न ग्रंथों में इससे संबंधित जो उल्लेख मिलते हैं उनके आधार पर हम प्राचीन शिक्षा के उद्देश्यों और आदर्शों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

व्यक्ति का चारित्रिक उत्थान- व्यक्ति का चारित्रिक उत्थान करना प्राचीन भारतीय शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य था। इसके अंतर्गत ब्रह्मचारी नैतिक क्रियाएं संपन्न करता हुआ सन्मार्ग का अनुसरण करता था। चरित्र और आचरण का इतना बड़ा महत्व था कि समस्त वेदों का ज्ञाता विद्वान सच्चरित्रता के अभाव में माननीय नहीं था किंतु केवल गायत्री मंत्र का ज्ञाता पंडित अपनी सच्चरित्रता के कारण माननीय और पूजनीय था। (४) सदाचारी और दृढ़चरित्र का व्यक्ति अभिनंदनीय होता है किंतु सदाचार से रहित व्यक्ति, चरित्रहीन और निन्दनीय था। मनुष्य अपने कर्मों से ही चरित्र का उत्थान कर सकता था। सहिष्णुता और सौहार्द सत्यनिष्ठा और नैतिकता तथा सदाचरण और आदर्श मनुष्य के चरित्रोत्थान के प्रधान कारण भूत तत्व थे। अतः धर्म और चरित्र का जिसमें वर्धन था वही पंडित था। मनुष्य में तीन प्रकार की प्रवृतियां होती हैं:- सात्विक, राजस और तामस। शिक्षा के माध्यम से वह अपनी तामसी और पाशविक प्रवत्तियों पर नियंत्रण रख सात्विक प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख होता है।

जब मनुष्य को सत्य का पूर्ण ज्ञान हो जाता है और अपने चरित्र और आचरण को वह तदनुकूल बना लेता है, तब उसके चरित्र का उत्थान प्रारंभ होता है। विद्यार्थी काल में ही शिक्षा की

यथोचित प्राप्ति होती थी तथा चरित्र को अनुकूल करने का अवसर मिलता था, इसलिए चरित्र के विकास और भावी जीवन के विस्तार का यह सर्वोत्तम काल था। अपने इस काल में विद्यार्थी विभिन्न नियमों और निर्देशों का पालन सुगमतापूर्वक कर सकता था। व्यवहार, सदाचार और शील का अर्थ समझ सकता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में छात्र के लिए ब्रह्मचारी रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना अनिवार्य था। ब्रह्मचारी का जीवन तप और नियम का जीवन था। इसलिए कहा गया था कि ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाला ही तेजोमय को धारण करता था और उनमें समस्त देवता अधिवास करते थे। समिधा और मेखला द्वारा अपने व्रतों का पालन करते हुए ब्रह्मचारी श्रम और तप के प्रभाव से लोकों को समुन्नत करता था। ब्रह्मचारी का तप और आचरण इतना शक्तिमान था कि सभी उसके सम्मुख नत होते थे। यह माना गया था कि ब्रह्मचर्य के तप से ही राजा राष्ट्र की रक्षा में समर्थ होता था। **(५)** ब्रह्मचर्य द्वारा ही आचार्य शिष्यों को यथोचित रूप से शिक्षित करने की योग्यता अपने में संपादित कर पाता था। उत्तरवैदिक साहित्य में भी छात्र के ब्रह्मचर्य पालन तथा उसके द्वारा चरित्र निर्माण की महिमा का वर्णन मिलता है।

चरित्र और आचरण को समुन्नत बनाने के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन अनिवार्य था। छात्र को ब्राह्चर्य वृत्ती कहा गया था। शिक्षा को प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य के माध्यम से इंद्रियों को निग्रह करना और नियमों का पालन करना अनिवार्य कर दिया था। वस्तुतः चरित्र के उत्थान में ब्रह्मचर्य का अर्थ वेद अथवा दूसरे शब्दों में ज्ञान को प्राप्त करना था। विद्यार्थी के लिए शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की गई थी कि प्रारंभ से ही उसे सच्चरित्र होने की प्रेरणा मिलती थी वह तदनुसार अपने को विकसित करता था। वह गुरुकुल में आचार्य के सान्निध्य में रहता था। आचार्य न केवल बौद्धिक प्रगति का ध्यान रखता था बल्कि अपितु उसके नैतिक आचरण की भी निगरानी करता था। **(६)** वह इस बात का ध्यान रखता था कि विद्यार्थी दिन प्रतिदिन के जीवन में शिष्टाचार और सदाचार के नियमों का पालन करें। इसमें बड़ों, अपने समान व छोटे के प्रति आचरण सम्मिलित थे। प्राचीन भारत में विद्यार्थी शिक्षा संस्था में इन सब का पालन करता था। इस तरह से प्राचीन शिक्षा पद्धति को विद्यार्थी के चरित्र निर्माण के लक्ष्य को पूरा करने में सफलता मिली।

मनुष्य के जीवन में धार्मिक प्रवृत्तियों का विकास करना भी प्राचीन शिक्षा का एक अन्य मुख्य उद्देश्य था। प्राचीन भारत में धर्म की परिधि इतनी व्यापक थी कि प्राय सभी मानवीय क्रियाकलाप धर्म के अंतर्गत आते थे। **(७)** प्राचीन शिक्षाविदों ने शिक्षा की पृष्ठभूमि में आध्यात्मिक भावनाओं को निहित किया था। मनुष्य के जीवन में धार्मिक प्रवृत्तियों का गरिमामय स्थान था। जिससे मनुष्य का जीवन भक्ति प्रवण और धर्म प्रवण होता था। विद्यार्थी के जीवन में भक्ति और धर्म की भावना का आरोपण शिक्षा के माध्यम से होता था। ब्रह्मचारी द्वारा

जो नित्यकर्म, संध्या- उपासना, व्रत पालन, धार्मिक संस्कार उत्सव आदिसंपन्न किए जाते हैं। वह उसी ईश्वर भक्ति और धार्मिक आस्थाओं को उन्नत करने में सहायक होते हैं। **(८)** इससे उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होकर मानसिक एवं आध्यात्मिक बल की वृद्धि होती है। गुरुकुल अथवा गुरु के सानिध्य में रहने वाला ब्रह्मचारी निष्ठापूर्वक धार्मिक निर्देशों का पालन करता था। अगर उसे किसी बात की शंका होती थी तो उसका निवारण करता था। सामान्यत: विद्यार्थियों के लिए संध्या वंदना, पूजा-पाठ स्नान, सच्चरित्रता आदि धर्म के अंतर्गत किए गए थे। शिक्षार्थी के विभिन्न नियम धर्ममूलक प्रवृत्तियों के विकास में सहायक होते थे। इन्हीं नियमों के आधार पर विद्यार्थी लौकिक और पारलौकिक जीवन को समझ पाने में और विभिन्न उत्तरदायित्वों को संपन्न करने में सक्षम होता था। वह आध्यात्मिक जगत के विषय में जानने का प्रयास करता था और उसके निमित्त सात्विक जीवन को और तपशील करता था। अतः मनुष्य के जीवन में तप, दान और सरलता, अहिंसा,सत्यवचन जैसे तत्व अनिवार्य माने गए, क्योंकि धर्ममूलकप्रवृत्तियाँ इन्हीं तत्वों से प्रेरित होती थी तथा व्यक्ति इन पर आचरण करता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में ईश्वर-भक्ति, उपासना और धार्मिक वृत्ति के उद्बोधन का वातावरण होने पर भी उसका उद्देश्य यह नहीं था कि छात्र को संसार से विरक्त करके सन्यासी बना दिया जाए। स्नातक होने पर छात्र से यह आशा की जाती थी कि वह विवाह करके धर्मनिष्ठ गृहस्थ जीवन व्यतीत करें। वह देश और समाज और परिवार के लिए परम उपयोगी होकर सम्मानित नागरिक बने। **(९)**

प्राचीन शिक्षा पद्धति द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करना एक अन्य मुख्य उद्देश्य था। व्यक्तित्व की दृढ़ता और स्वच्छता के बिना मानव जीवन व्यर्थ था। विभिन्न प्रकार के संयमों और नियमों से मनुष्य का जीवन सुव्यवस्थित होता था, जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास होता था। शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य व्यक्तिगत और सामाजिक कर्तव्यों का पालन करने में समर्थ होता था। इससे उसके अंदर आत्मसंयम, आत्मचिंतन, आत्मविश्वास, आत्मविश्लेषण, विवेक- भावना, न्याय प्रतिऔर आध्यात्मिक वृत्ति का उदय होता था। अथर्ववेद में उल्लेखित है कि यदि एक योद्धा रणक्षेत्र में विजयी होता है और यदि एक राजा एक सफल प्रशासक बनता है तो वह केवल अच्छी शिक्षा औरसंपूर्ण प्रयासों से ही संभव है। आत्मविश्वास की भावना से ही व्यक्तित्व का विकास समुचित रूप से होता है। प्राचीन काल में यह माना गया कि विद्यार्थी में आत्मविश्वास का होना उसके सर्वांगीण विकास का कारण था।उपनयन संस्कार के समय बालक का आत्मविश्वास जगाया जाता था तथा अग्नि से प्रार्थना की जाती थी कि छात्र परवह अपनी दया दृष्टि रखें और उसकी बुद्धि,मेघा और शक्ति में वृद्धि करें।**(१०)** ब्रह्मचारी से आत्मसंयम की अपेक्षा की जाती थी आत्म संयम का अभिप्राय आत्मनियंत्रण से था। अपने कर्तव्यों का पालन करने की दृष्टि से इंद्रियों और मन की उच्छड़ल प्रवृत्तियों को नियंत्रित और व्यवस्थित रखना आत्म संयम था। भारतीय चिंतकों ने विद्यार्थियों की प्रवृत्तियों एवं भावनाओं को अनावश्यक दबाने

का प्रयास नहीं किया बल्कि आत्मनियंत्रण और आत्मानुशासन से उस से उनका तात्पर्य उचित और आवश्यक आहार-विहार आदि से था, जिससे विद्यार्थी प्रेम एवं सद्भावना द्वारा सन्मार्ग की ओर उन्मुख हो। **(११)** इससे विवेक-भावना और न्याय प्रवृत्ति का उदय होता था, जिससे आध्यात्मिकता और धार्मिकता की अभिवृद्धि होती थी। अतः व्यक्तित्व के उत्थान में इन सभी तथ्यों का सक्रिय योग रहा है।

प्राचीन भारतीय पद्धति का एक अन्य उद्देश्य व्यक्ति को नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का बोध करा कर उसे सुयोग्य नागरिक बनाना था। शिक्षित और ज्ञान होने के कारण व्यक्ति अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को निष्ठा पूर्वक संपन्न करता था। अध्ययन की समाप्ति पर समावर्तन संस्कार का आयोजन किया जाता था, **(१२)** जिसमें आचार्य विद्यार्थी के समक्ष उसके भावी कर्तव्यों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता था। समाज में अनेक वर्ण एवं जातियां थी, जिनके अपने पृथक पृथक कर्म थे, जिनकोसम्पन्न कराना उनका परम धर्म था। सबके अपने अपने व्यवसाय एवं कर्तव्य थे, जिनके अनुसार वे अपने दायित्वों का निर्वहन करते थे। शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था, अपने पारिवारिक दायित्वों को निष्पन्न करता था तथा अपने उद्देश्यों को पूरा करता था। **(१३)** कार्य विभाजन के अनुसार सभी वर्ण एवं जातियों के अपने निश्चित कर्म थे जिसका पालन करना सभी लोगों का कर्तव्य था।**(१४)**

उद्देश्य- प्राचीन भारतीय शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य सामाजिक सुख और कौशल की वृद्धि थी। केवल सांस्कृतिक अथवा मानसिकता और बौद्धिक शक्तियों को विकसित करने के लिए ही शिक्षा नहीं दी जाती थी, अपितु उसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न उद्योगों, व्यवसायों आदि में लोगों को दक्ष बना था। **(१५)** भारतीय समाज में श्रम विभाजन का सिद्धांत स्वीकार किया गया था। कार्य प्रायःवंशानुगत होते थे किंतु कभी-कभी ऐसे अपवाद भी सामने आए जब ब्राह्मणों और वैश्यों ने राजकाज और रणक्षेत्र में कार्य किया, क्षत्रिय एवं शूद्र महान दार्शनिक एवं विचारक बने। इस प्रकारकह सकते हैं, कि व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार किसी भी कर्म से जुड़ सकता था। शिक्षा संस्कृति के परिरक्षण तथा परिवर्धन का प्रमुख माध्यम था। शिक्षा के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन काउत्कर्ष होता था। अपनी संस्कृति और राष्ट्रीय धरोहर का विकास एवं संरक्षण ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। शिक्षा ही सामाजिक सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने का प्रमुख माध्यम है। शिक्षा अपने उद्देश्य में तभी सफल हो सकती है जब प्राचीन संस्कृति, नैतिक मूल्य और आदर्श नवीन सभ्यता को हस्तांतरित हो सके। विभिन्न वर्णों के लोगों का कर्तव्य था कि वह अपनी संतति को अपने वर्णसे संबंधित सभी प्रकार के शिल्पों एवं प्रगति के विषय में प्रारंभ से ही शिक्षित कर दें।**(१६)**

निष्कर्ष-प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के उद्देश्य अत्यंत उच्च कोटि के थे। शिक्षा संबंधी प्राचीन भारतीयों का दृष्टिकोण मात्र आदर्शवादी ही नहीं अपितु अधिकांश अंशों में व्यवहारिक भी था। यह व्यक्ति को सांसारिक जीवन की कठिनाइयों एवं समस्याओं के समाधान के लिए सर्वथा उपयुक्त बनाती थी। शिक्षा समाज सुधार का सर्वोत्तम माध्यम है। कोई भी देश और समाज अपनी प्राचीन परंपराओं और इतिहास से अलग जीवित नहीं रह सकता। वर्तमान युग की आवश्यकताओं को अपनी प्राचीन परंपराओं से संयुक्त करने तथा उनको आवश्यकता के अनुरूप ढालने में ही व्यक्ति और समाज की उन्नति और गौरव निहित है। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी अपनी शिक्षा संस्था के छात्रावासों में गुरुजनों के सान्निध्य और निरीक्षण में रहता हुआ विद्या अध्ययन करता था और अपने व्यक्तित्व का निर्माण करताथा। वर्तमान समय में भी ऐसे विश्वविद्यालय संस्थान हैं, जहां शिक्षा के उद्देश्योंसुदृढ़ चरित्र का निर्माण, छात्रों को स्वावलंबी बनाना, आत्मविश्वास में वृद्धि करना, प्राचीन शिक्षा और संस्कृति का ज्ञान कराना, छात्रों को विषय-विशेष में विशेषज्ञता आदि पर जोर दिया जाता है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन शिक्षा के उद्देश्य एवं आदर्शों को प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

सन्दर्भ:-

१- स्मिथ,वी०ए०,(1955),कल्चर एंड एजुकेशन इन एशिएण्ट इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ऑक्सफोर्ड, पृ० 52

२- पांडे,राजबली,(1966),हिन्दु संस्कार,चौखम्बा प्रकाशन,वाराणसी, पृ० 194-95

३- नेहरू,जवाहरलाल,(1946), द डिस्कवरी ऑफ इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड, पृ० 61-62

४- पांडे,राजबली, वही०पृ० 205

५- पांडे,राजबली, वही०पृ० 207

६- अल्तेकर, ए० एस०,(1975),एजुकेशन इन एशियण्ट इंडिया,इशा बुक्स प्रकाशन नईदिल्ली, पृ०328

७- मिश्र, जे०एस०,(1986),भारत का सामाजिक इतिहास,बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ० 223-25

८- बाशम,ए०एल०,(1975), ए कल्चर्लहिस्ट्री ऑफ इंडिया, ऑक्फोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड, पृ० 175

९- मुखर्जी, आर० के०, (1988), एन्शियण्ट एंड इंडियन एजुकेशन, मोतीलाल बनारसीदास प्रेस, दिल्ली, पृ० 468-69

१०- पांडे,राजबली, वहीं०पृ० 243

११- पार्जिटर,एफ०ई०,(1978),एन्शियण्ट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडीशन, मोतीलाल बनारसीदास प्रेस, दिल्ली, पृ० 50-51

१२- पांडे,राजबली, वही०पृ० 254

१३- वेदालंकार,चंद्रगुप्त,(1939),वृहत्तर भारत, गुरुकुल कांगड़ी प्रकाशन गुरुकुल कांगड़ी, पृ० 268

१४- उपाध्याय,रामजी,(1966), प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, भारत प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ०212-14

१५- स्मिथ,वी०ए०,वही०,पृ० 65

१६- अल्तेकर, ए० एस०, वही०, पृ०405

Analyzing the Pros and Cons of Education in English as Globally Acclaimed Business Language as against Indian Regional Languages as perceived by Citizens

Shripad Bapat
Email Id:- bapatsk@gmail.com
Research Scholar – Shri J.J. T. University, Rajasthan

Abstract:-.The globally accepted Business language of today's world is English in most of the Colonial countries like India where British rule was predominant. The impact of this foreign rule on our Nation has highly influenced the citizens and their education. The younger generations are observed to prefer getting kids admitted to English Medium Schools where English is used as language of instruction and assessment. The youth educated in vernacular medium when steps in professional career fields often are found to struggle with professional excellence as today's businesses require fluency in English language. Yet on other side we find supporters of our Indian culture claiming that rapidly developed nations have never compromised on their local regional languages and still have prospered well. This thus brings to surface the debatable topic whether the education should support English as medium of instruction from childhood or should prefer local regional languages for imparting knowledge. The research paper titled "Analyzing the Pros and Cons of Education in English as Globally Acclaimed Business Language as against Indian Regional Languages as perceived by Citizens" is aimed at understanding the perception of citizens about the language of education to be used along with its advantages and challenges.

Keywords: - Language, Education, Medium, Regional, Business

1.1 Introduction: - Language is a medium of verbal communication and its major objective is to transmit a clearly understandable message which could be easily understood, interpreted and responded. A country like India has hundreds of spoken languages out of which 22 regional languages are recognized by the constitution including Sanskrit the mother of all modern languages. A man is considered to be wise if he has mastered several languages.With the globalization and Multi National Companies culture that has thrived in past decade in the field of Business, English has emerged out as Business language. Many countries globally have recognized English as the common interfacing language for their business deals.Colonial countries like India too have accepted it as a major language not just in business domain but also as a medium for academic instruction in several places. Urbanization is adding to the wide

acceptance of this language by citizens and youth seem to prefer English for education for their children with a belief that it helps the career growth and provides comfort in interacting.

Despite its positive aspects the language still is considered as a foreign language and the majority of rural Indians seem much more comfortable with their own regional languages. This thus calls for a research that tries to analyze the pros and cons of these languages being used in field of education as perceived by citizens.

1.2 Statement of Problem under Study:- The core objective of education is transferring the knowledge and synthesizing the gained knowledge in professional career. This requires an appropriate medium of instruction being used for education that supports not just the understanding of knowledge but also the application of this gained knowledge at a later stage in life for success in career. Today Businesses those have crossed the local boundaries of our Nation far back, claim excellence in communication skills by their employees particularly in Business language which is English. Thus it is always challenging to decide whether education should use English as instruction medium with a futuristic view oriented to careers or be based upon the regional languages of citizens providing them comfort and better grasping as earlier childhood stage. This research paper titled "Analyzing the Pros and Cons of Education in English as Globally Acclaimed Business Language as against Indian Regional Languages as perceived by Citizens" thus is focused on analyzing the positive and negative aspects of languages comparing English with the regional languages used for education.

1.3 Review of Literature:-

Hoveida, R. et al (2014) have rightly pointed out the advantages of language learning and its correlation with the employability skills in individuals. Authors have very appropriately mentioned that fluency in English provides a better confidence to employees dealing on international platforms and this also adds value and efficiency to their jobs pertaining to education, service, social life, commercial and career fields.

Emrije Agai-Lochi, (2015), have studied the impact of English in education being pushed against the minority regional language usage as instructing medium being used. Author rightly has pointed out that primarily the objective of education is making students learn effective communication and enabling them to interact on global platforms.

Yang Miao et al (2019) have suggested in their research article that though English is being adapted for education by countries having various other regional languages prevailing in their

nations there are several challenges in it including inadequacy of teaching tools and material, misappropriate teaching, insufficient teacher student interactions and failure in delivery of core concepts pertaining to subject matter. Authors suggested that to rule out these issues both teachers and students need to make use of varied techniques and support from other languages.

Nunuy Nurjanah et al (2019) have described the significant role of education in human life. Authors have emphasized on the fact that though regional languages help enhance the cultural values in students, education needs to be integrated with technology as it has become an inevitable dimension of today's world.

Y. Sreekanth (2021) has rightly opined that the competitive age today in the field of global employment opportunities are grabbed by the individuals who have mastered the English language skills at early stage. The avenues of knowledge go on enhancing as one acquires skills of mother tongue langue as well as the internationally recognized languages like English.

1.4 Objectives:-

1. To identify the perception of citizens towards Education based on English as against the use of Indian Regional Languages as medium of instruction.
2. To analyze the positive and negative aspects about Education based on English versus that of the Regional Languages as perceived by citizens.

1.5 Research Methodology:-Any research tries to explore the available knowledge and develop insight in a field of study. This research too makes use of available secondary information along with primary data being collected, analyzed and interpreted to propose conclusions derived from it. The research was primarily focused on understanding the opinion of citizens about the medium of instruction used in Education and analyzing the citizen's perception about its pros and cons while making choice from English as against Indian Regional Languages. Thus citizens from different demographic backgrounds were surveyed to register their opinions. The sample size selected was 52 citizens. The structured questionnaire used for survey was split in three major sections pertaining to firstly citizen's profile – 10 questions, secondly understanding preference towards English as medium of Education – 8 opinion seeking statements and finally - 8 opinion seeking statements studying preference towards Indian Regional Languages as a medium of Education.Secondary data was collected from research papers and articles presented in conferences, magazines etc. which were relevant to the topic.

A simple percentage method was used to analyze the collected data.

The major limitations of research include limited sample size as compared to the explicitly large population and the use of preliminary analysis techniques for analyzing the collected data.

1.6 Primary Data Analysis:-

A) Citizen Profile:

a) Gender-wise Classification:

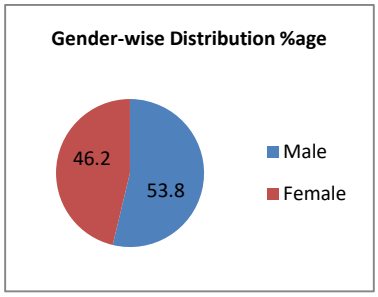

b) Educational Profile:

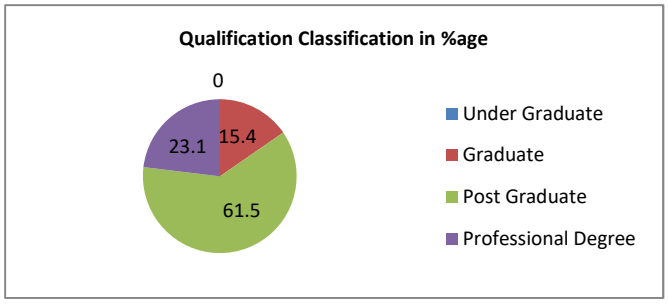

Maximum (53.8%) were Male respondents & Majority (61.5%) respondents were Post Graduate

c) Age Profile:

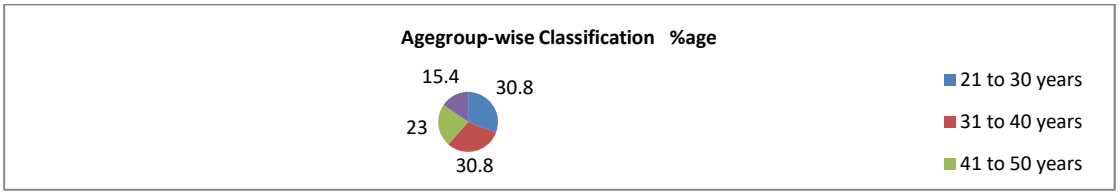

Maximum (30.8% each) respondents belonged to age groups 31 to 40 years and 41 to 50 years.

d) Occupation Profile:

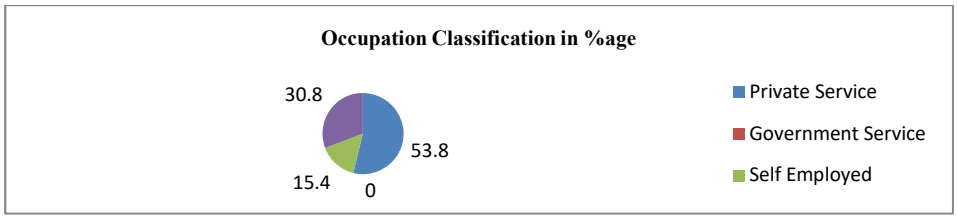

Maximum (53.8%) respondents were from Private Service sector.

e) School Education Medium:

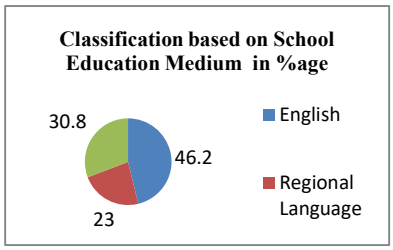

f) College Education Medium

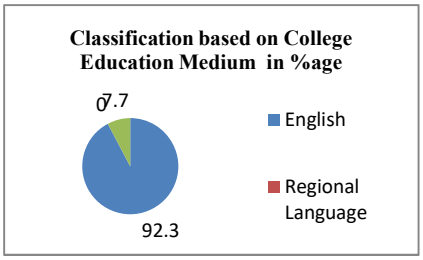

Majority (46.2%) studied in English. Majority (92.3%) studied in English.

g) Communication language with Peers at Work Place:

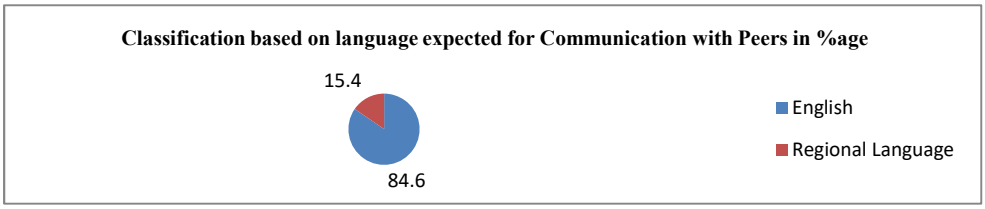

Maximum (84.6%) respondents have to use English as Communication language with peers.

h) Communication language with Customers at Work Place:

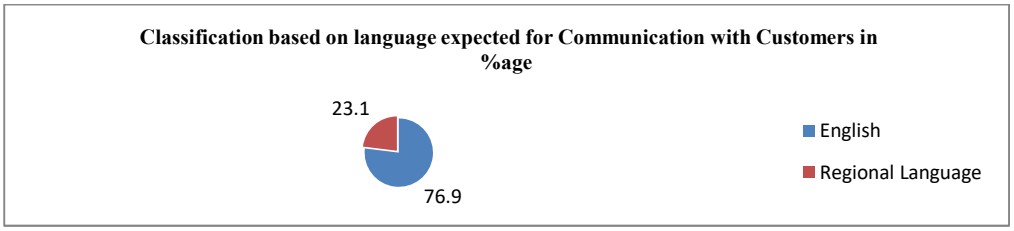

Maximum (76.8%) respondents have to use English as Communication language with customers.

i) Communication language for documentation at Work Place:

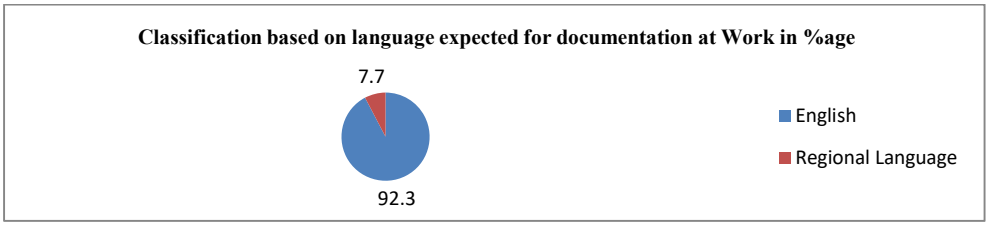

Maximum (92.3%) respondents have to use English as documentation language at work.

B) Perception about English Language: Key Interpretations:

B1. Maximum (30.7%) respondents Agreed that Education in English since childhood develops confidence in personality.
B2. Surprisingly 23% respondents each, Strongly Agreed, Strongly Disagreed and Stayed Neutral about Education in English helping to overcome the public speaking fear.
B3. Majority (53.80%) respondents Agreed to fact that Education in English since childhood helps fluency in communication at workplace.
B4. Maximum (30.7%) each Agreed and Stayed Neutral on Education in English since childhood making it easier to understand job related aspects and expectations.
B5. Maximum respondents (38.40%) Agreed that Education in English since childhood develops comfort in interacting with cosmopolitan colleagues at workplace.
B6. Maximum respondents (38.40%) Disagreed that Education in English since childhood dilutes our culture.

B7. Maximum respondents (38.40%) Agreed that Education in English since childhood provides difficulty in grasping knowledge at earlier stage.
B8. Maximum respondents (46.10%) Disagreed that Education in English since childhood creates a social barrier with other citizens.

C) Perception about Regional Languages: Key Interpretations:

C1. 38.40% respondents stayed Neutral followed by 30.7% each Agreed and Strongly Agreed that Education in regional language provides better understanding of subjects.
C2. Majority respondents (53.80%) Agreed that Education in regional language provides comfort in studies.
C3. Highest 53.80% respondents stayed Neutral, followed by 23% respondents Agreed that Education in regional language ensures better academic grades & performance.
C4. Maximum (53.80%) respondents Agreed that Education in regional language ensures bonding with our own culture.
C5. Highest (38.40%) stayed Neutral while 30.7% Disagreed to Education in regional language induces fear and discomfort in public speaking at workplace.
C6. Highest (46.10%) stayed Neutral while 30.7% Agreed to Education in regional language at times generates inferiority complex.
C7. Highest (53.80%) stayed Neutral while 23% Disagreed to Education in regional language at times makes defeating competition in open world difficult.
C8. Highest (46.10%) stayed Neutral while 23% Disagreed to Education in regional language creates challenging situations interacting with other community members at workplace.

1.7 Conclusion:- With the widespread popularity of English as a well recognized Business Language it was significantly important to understand whether people still prefer studying in regional languages. The research has highlighted that along with English, even education in Regional Languages have their own advantages and Academicians and Governments need to consider this while educating pupils based upon their objective of knowledge delivery being simple and easier to grasp at early age also ensuring our cultural values are being protected.

Bibliography:-

- Hoveida, R. , Moghtadaie, L., Mirheidary, A, (2014), The relationship between Language Learning Benefits and Empowerment of Employees (Case Study: Isfahan Customs), International Journal of Education and Research, Vol. 2 No. 4 April 2014, ISSN: 2201-6333 (Print) ISSN: 2201-6740 (Online)
- Emrije Agai-Lochi, (2015), English as medium of instruction in university education, Published by Elsevier Ltd., Procedia - Social and Behavioral Sciences 199 (2015) 340 – 347, GlobELT: An International Conference on Teaching and Learning English as an Additional Language, Antalya – Turkey

- Miao Yang, Patricia S. O'Sullivan, David M. Irby, Zexin Chen, Chun Lin and Changmin Lin, (2019), Challenges and Adaptations in Implementing an English-medium Medical Program A Case Study in China, BMC Medical Education.
- Nunuy Nurjanah, Yusuf Tri Herlambang, B. Hendrawan, Gilar Gandana (2019), Regional Language Education in the Era of the Industrial Revolution Era 4.0: An Idea about Education in the Techno-Pedagogy Perspective, IOP Publishing, Journal of Physics: Conference Series 1477 (2020) 042068, doi:10.1088/1742-6596/1477/4/042068
- Sreekanth, Yagnamurthy (2021), English as medium of instruction at school level in India: Opportunities and dilemmas, 'Paper presented in 8th Annual International Conference on Humanities & Arts in a Global World', Athens Institute for Education and Research, Athens, Greece.

Innovative Techniques, Methods & Trends in English Language Teaching- Makin the shift towards distance learning

Ms. Sadaf Afreen Shaikh

Research Scholar-JJT University

Abstract:-New generation is tech-savvy, worldly and quick to making headway. Our increasingly online world is on the increase in each sphere of life. Meanwhile undoubtedly English has become a necessary a component of this current era. Being a world language, English is that the common language understood by everyone all round the world. Within the past few years the important factors have combined to affect current point of view on the teaching of English. New trends in West Germanic Teaching (ELT) have recently been gaining importance in education systems everywhere the globe. The theories and methods are constantly evolving within the sector of ELT also. The ELT trends that were very well-accepted within the past are struggling today due to technological advancement. Several factors have contributed to support new trends in ELT. Computers and pedagogy are walked hand at hand for an extended time and worked as teaching tools within the classroom. Computers and technology have brought new variety in teaching methodology employed by teachers everywhere within the world together with the foremost recent advancement like websites, blogs, wikis, pedagogy amplicons etc. This Research paper presents the famous trends within the ELT that are used practically in recent times within the whole world with specific reference to the trends prevalent during the previous decades.

Keywords:-New technology, Innovations, English language, New trends, Language Learning.

Introduction:-Trends in Language Pedagogy and Technology checks out the different patterns and advancements that have arisen as of late in the field of English Language Teaching. It gives an outline of the impact of a quick change in the utilization of innovation in the English language study hall which affects the learning, obtaining, and upgrade of different language abilities. It is an altered volume of twelve sections managing a scope of issues identified with the current advancements and patterns in English Language Teaching. Segment I has six sections, managing language instructional method and a different range of papers talking about the utilization of innovation in ELT. Segment II involves six ELT contextual investigations.Change is that the law of nature. Everything is perishable except change according to Heraclites, the pre Aristotelian Greek philosopher. A trend is that the general tendency or direction towards change. With variety of educational options available before this generation learners, the newer trends seem to possess emerged in the field of education that have entirely changed the aspect of traditional system of education.Traditional syllabus, class planning and old teaching methods help students to learn grammar and vocabulary for ages. One cannot deny the fact that sometimes old methods of teaching makes learners run down of memorising verbs, answering worksheets, and concentrating on repeating all the time. Though traditional methods such as uses the of audio - lingual and direct methods still offer useful results, yet they are clearly outdated in modern classroom.English language teaching has experienced enormoustranspose over the years, especially the last one decade. Students are weigh downed with studying, learning and grasping the materials, and of course, lectures with the subscribed curriculum and prescribed texts. Many career alternatives once regarded worthless are capturing importance at present such as communication skills, soft skills, technical skills, interpersonal skills, ICT literacy etc.

The Indian framework:-There had been much of changes seen in the attitude of people as to what they become cognizant of to be a language. When the Indians were educated by British masters, they were exposed to native language in every sense of the word. The methods of teaching adopted were also similar to that of what was practiced in English speaking countries. After the retirement of British masters, the glory, richness, depth, originality, essence and vastness of the language started growing dimmer in India little by little and it has come to a stage wherein educationalists and language experts strive hard to choose the best out of the numerous existing language teaching methodologies. The predominant trends of teaching English, especially in India, lacked both in quantity and quality or may fail to obtain a universal appeal. Cast iron curriculums and vast syllabi continue to threaten students who speak regional dialect but love to excel in English.

THE PRESENT TREND:-All over the globe, the student centred English language trainers seem to have realized that gone are the days when teachers dominated their class with all domination where the students remained as passive. There is reconsideration regarding the growing interest of implementing the basic educational goals. Having realized the need of the hour and importance; the English trainers convoke different types of conferences, workshops and seminars to create a platform and to get to know the upcoming ideologies in the ELT and also to advance themselves professionally. Larsen Freeman (2007) asserts that it is the fifth skill of language that allow the competence to use grammatical structures with accuracy. Academic qualification alone may not help teachers to flourish professionally, on the other hand, they need to be furnished themselves with the ongoing practices. The teaching materials that are being used in our country are almost made available all over the world. There had been so many methodologies of teaching English language. One method is adopted as a development of the other. Still, no method has been a nostrum for the solution of the ELT problems. At present, the era of method is over and the ELT as of the current scenario is in post method thinking.

E – Learning:-E – Learning is also known as Web-based Learning or technology based learning. It is a contemporary way of learning from distance, this online education is also based on the four skills (listening, speaking, writing, and reading) but they can be on the web. Students prefer e – learning and can interact through using e-mails, blogs or chats because they are easy to learn, easy to use and well – designed and well structured. This new trend in teaching is good if it is just to support the main lecture but it cannot be a replace of the traditional lectures. It is important to ensure that the e – learning is used correctly otherwise may create many problems. Use of technology in a number of fields has been so successful and beneficial for teachers to reach some specific goals particularly in education and training for those who are learning a foreign language. Technology is being used these days in every step of our lives and with technology barriers are reduced. E- learning can include web, emails, internet, mobile devices, iPhone, iPad, live series lectures, corner book club, podcast, blogs, mobile phones and others.

ENGLISH TEACHING AND THE ICT (Information and Communication Technology):-In language teaching, ICTs play an important role in facilitating teaching and learning. They need transformed classroom communication methods and modified instruction strategies. Also, ICTs have made teaching and learning more interactive and more collaborative rather than the normal teacher- is talking and students listening approach. The utilization of ICT increases the scope of teaching. It provides advance learning materials and creating autonomy of learning. Together with academic excellence students must possess English communicative skills for his or her

prosperous future and career. Syllabus should be design which includes technological aids along with the traditional methods of teaching and learning, both should go hand in hand.

Online LEARNING: -An online adapting additionally called innovation based learning/distance learning/on line schooling/e-learning is one of the quickest creating regions. It gives freedoms to make very much planned, student focused, reasonable, intuitive, administer, adaptable e-learning climate (khan, 2005). There are great many English electronic classes that offer trainings for an assortment of fundamental language abilities like Learning, Speaking, Reading also, Writing and are made intelligent in an assortment of ways. A portion of the normal advances accessible for advancement of training are as per the following:

Email:-The understudies can relate with local speakers of the objective language utilizing email by making an individual email account (g-mail, hurray, hotmail, and so on) which is free. The understudies can mail their home work to the educators concerned and get it remedied thus. The educator can likewise give modifications, criticism, ideas for the improvement of each work and send them back.

Websites: -A blog is an individual or expert diary often refreshed for public utilization. The sites empower transferring and connecting the documents which is especially fit to fill in as on line individual diaries for understudies. Pinkman (2005) shows writing for a blog becomes open and intelligent when members expect to be different jobs in the creative cycle, as pursuers/analysts who react to other writers‟ posts, and as essayists pursuers who, getting back to their own posts, respond to analysis of their own posts. The pursuers thusly can remark on what they peruse, in spite of the fact that sites can be put in got conditions also.

Skype:-Each web access has sound capacities, and mechanical instruments like PCs with cameras. The understudies could speak with their instructors and companions who are far away. Similarly, they could speak with the speakers of local language and have their articulation looked at in order to improve their communication.

Cell Phone:-Students can look for new words utilizing word reference choice in the cell phones and improve their jargon. They might confirm the spelling, articulation and use of the particular word they looked for. Additionally, they can utilize Short Message Service (SMS) to send inquiries to their teachers and get their questions cleared.

Ipods:-Ipods, one of the sight and sound gadgets, improve the clients to create, convey, trade texts, picture, sound also, video scripts according to the necessity. The instructors send instant messages and the understudies can peruse and reply to them. Furthermore, the understudies can record and pay attention to their talks, sonnets, news, brief tales and so forth Consequently, ipods allow an opportunity to the students of English to work on their tuning in, articulation, jargon, punctuation and likewise composing.

TEACHERS AS LIFELONG LEARNERS:-The present professions look not at all as they did 20 or even only 10 years prior. Like innovation, the field of instruction advances so quick that procedures, abilities and advances become old inside five to 10 years. That is the reason being a long lasting student assumes a significant part in the instructive cycle. It assists teachers with joining new apparatuses and methodologies into the learning system to support their understudies' learning improvement. At the point when instructors take courses outside of expert

turn of events and team up, they find imaginative educating strategies. Instructors who set out to really focus to think of creative plans to use in educating accomplish preferable understudy results over obsolete educating techniques. Instructors who take part in long lasting learning set a model for their understudies since they practice what they educate. This, thus, urges their understudies to form into deep rooted students. Viable instructors achieve this by sharing encounters of working through the learning system.Showing English as an auxiliary language is a major test. It doesn't make any difference what your experience and experience level is. Like showing different subjects, you will understand that each understudy adapts in an unexpected way. However, with some work, you will actually want to acquire abilities that will be needed in educating ESL. Most importantly, we should know what a pattern is? A pattern is an overall inclination or bearing towards change over the course of the years particularly.

1. Change the Goal of Teaching English:-We need to zero in on English as a method for correspondence as opposed to turning into a local speaker of English. Thus, we need to work essentially on content learning. Like, science and math. We need to cause understudies to learn both substance and English. This will help in showing ESL as a subsequent language.

2. Solid beginning in teaching English:-We should begin showing English in prior grades like K.G. Since, in prior grades, understudies can catch on quickly. For instance, beginning around 2011, Vietnam and Saudi Arabia have begun educating from grade 4.In Dubai English is presented from K.G.Japan has additionally presented English in the essential stage. This energizes showing ESL as a subsequent language.

3. Change in Teaching Culture:-Showing Culture Interview Questionnaire — Teaching Culture.There is less spotlight on showing the way of life of English. Both the nearby or global culture overwhelms in showing English classes.

4. Changing View of English Teacher:-It has been seen that their instructing and semantics decide educators' adequacy as opposed to being a local speaker of English.

5. Change in Teaching Content and Text Design:-Instructors utilize a scope of enlightening texts in the homerooms. The utilization of the English language, just as the utilization of different accents in texts or listening exercises, supports English learning.

6. E-Learning:-Digital books ought to be presented for learning since this is a computerized time. Everybody is having a cell phone and a tablet. Along these lines, if E-Books are presented, it will be of incredible assistance. Admittance to information as far as adaptability has changed.EBooks additionally assist with showing ESL as an optional language.

7. Vital Teaching and Learning :-Educating in English language classes centres around language content, results, and learning exercises. There ought to be huge understudy instructors' associations outside and inside the study halls.Making and Sharing Content. The Importance of Sharing Content on outsider Platforms - Wild Web... Is there currently a great deal of online substance accessible for youthful students to learn and investigate? Then again, some applications permit students to make their substance. Some famous destinations like Qu zizz and Socrative permit the two educators and understudies to make internet games shared by clients around the world. Sites like Canva permit instructors and youthful students to communicate their innovativeness through images, standards, and online media. Then, at that point, there are

moviemaking locales, altering sites, comic-strip creation. One step at a time is one course for youthful a student that makes active undertakings as they learn.

Conclusion:-The customary technique lays more accentuation on an educator himself and is instructor focused. Dull practice, mechanical drills and retention are the signs of the customary techniques. Wilkins (1976,2) calls an engineered in which various pieces of the language are instructed independently and bit by bit so securing is a course of slow aggregation of parts until the entire construction of language has been developed. The totalitarian or the definitive job of the educator which relates to the since a long time ago appreciated conventional idea that educational standards rely upon how articulately an instructor educates. Comprehend the current patterns and evaluative techniques for the ELT. The hypotheses and techniques are continually developing in the ELT. The educators of the ELT know about the prescribed procedures in instructing and learning English and how they can be made advantageous to the understudies. It is feasible for each youngster to learn English in the most agreeable way in case it is provided with the right sort of materials and instructional method delivered by one's own local insight. A lovely mix of workmanship and science, with a tweak of whatever number devices as would be prudent to the collection can help an ELT to dominate in his/her field.

References:

[1]. Trends in English Language Teaching Today by Adrian Under hill, A 2004, April.Trends in English Language Teaching Today. MED Magazine, issue 18 retrieved September 15, 2007.
[2]. Trends in English Language Teaching Today by YogeshRamani.
[3]. Trends in the Education of English Language Learners by Mary Ann Zehr March 10, 2008.
[4]. 8 Current Trends in Teaching and Learning EFC / ESL by Deena Boraie Dec13, 2013.
[5]. Current Trends in ELT by Yong Kim Journal of English Teaching.A Triannual Publication on the Study of English Language Teaching Vol.1 Feb2011.
[6]. Nagaraj, Geetha.English Language Teaching Approaches, Methods, Techniques IIedition. Orient Black Swan Hyderabad 1996 Print.
[7]. Patil, Z.N. Innovations in English Language Teaching - Voices From the Indian Classroom Orient Black Swan. Hyderabad2012. Print.
[8]. The Hindu" The Education plus," 7th July 2014.

VIRGINIA WOOLF'S: A FEMINIST STUDY OF A ROOM OF ONE'S OWN

1st Madhu S. Panse
PhD Research Scholar
Department of English
JJTU, Rajasthan, India
2nd Dr.Aruna Swami
Emeritus Professor & PhD Research Guide
Department of English
JJTU, Rajasthan, India
3rd Dr.D.N.Ganjewar
Associate Professor & PhD Research Co-guide
Head of the Department of English
Arts, Commerce & Science College, Kille Dharur Dist. Beed (MS)

ABSTRACT

This paper is planned to feature the pearls and risks of women's activist thinking and to explain Virginia Woolf's perspectives on sex equity. Woolf's introduction novel, A Room of One's Own, and her later work, Orlando, are original works of women's activist way of thinking. All through my examination, I'll endeavor to zero in on the book A Room of One's Own, which has been broadly viewed as Virginia Woolf's most critical work. For the duration of her life, Virginia Woolf distributed many books and articles on sex politically-sanctioned racial segregation. She zeroed in especially on correspondence. Woolf conveyed many talks on ladies and writing. Woolf distributed Orlando in 1928 and A Room of One's Own in 1929, her first work on woman's rights. She focused on ladies and writing specifically in this work; moreover, she featured the difficulties they confronted. In Orlando, she talks about the contention between the genders.

Keywords: Virginia Woolf, Man, Woman, Feminism.

- **INTRODUCTION**

Women's liberation is a social and monetary way of thinking established on the key correspondence of lady and man. Similarly, as with each pattern, woman's right has both positive

and negative perspectives. Notwithstanding, woman's rights ought not to be viewed as an occasion that compromised the social request. Similarly, as with each development, woman's right has a positive, negative, and incredible perspective.As is notable, when lady is examined, she is viewed as a product of diversion and took advantage of as such all through the verifiable cycle, which is presently progressing in some structure. Accordingly, would we be able to allude to this interaction as one of ladies' freedom? I accept that people who are truly women's activist are against the commoditization of ladies.These days, numerous women's activist scholars accept that women's liberation isn't to support ladies, yet has been shrouded in a gigantic trickery intended to take advantage of ladies. For example, Christian Delphy agrees that lady is an industrialist toy. As indicated by Christina Hoff Sommers, woman's rights is a ladies' development that is unequipped for seeing reality. Obviously, there have been times from the beginning of time when people didn't have equivalent privileges. They have some of the time battled significantly to practice their freedoms, which ought to be respected with deference. Various women's activist creators battled for the assurance of ladies' privileges and the capacity to build up a general public dependent on principled correspondence. One basic contention they make is that ladies can't have an equivalent workplace and freedoms. 'The facts really confirm that the quantity of working ladies is diminishing; in any case, this isn't because of men's control. This depends on the physical and mental contrasts between the genders.' (David Convay: 2000).

Virginia Woolf is a huge author in the space of women's liberation, having distributed her book A Room of One's Own in 1929. This book is broadly viewed as a fundamental text for women's activist evaluate. Virginia Woolf, who is notable for her books, gathered gigantic consideration with this analysis piece. In certain regards, Virginia Woolf's scholarly excursion and the association among ladies and invented letters are tended to in the book, which was created because of a discourse interest on ladies and anecdotal letters.The writer separates this relationship into three interrelated measurements: ladies and what they resemble, ladies and the writing they uncover, and ladies and works about them; furthermore, she starts the book by expressing her explanations behind expounding on woman's rights, and she keeps on clarifying them all through the book by tending to the connection among ladies and anecdotal writing, a lady's longing to compose professionally, and having a family.

- **A WOMAN SHOULD BE HERSELF**

The book's essential models delineate the negative parts of the privileges that ladies needed however men had during the finish of the nineteenth and start of the 20th hundreds of years. Our author saw a maddened and astounded beadle while walking insightfully on the grass at Oxbridge, since strolling on the grass was denied for female understudies and teachers. They may simply walk around the rock way. Toward the finish of this course, the official flagged her to get back with his hands since little ladies might get to the library with the backup of an understudy or a reference letter.A Room of One's Own, published in 1929, was a seminal work of feminism. The women's movement (feminism) is inextricably linked to the book A Room of One's Own, which may be the simplest Virginia Woolf novel to read. The topic is too specific: "Woman and Literature." There is an endless and overwhelming question that males persistently ask women. Given everything you've said, why couldn't you have a Shakespearean genius?" (1945, Wolf, Virginia) That is why Virginia Woolf provided a dramatic response to this vexing issue after delving into historical relationships and taking a cursory glance at the library's volumes. And advised women to "earn money, get their own space, and carve out time for yourself." And write without regard for what folks say!" (Ibid) Following that, it is acknowledged that Virginia Woolf's Flush contains a dog's viewpoint.In the novel, the suppers gave at Fernham College, which looks like Woolf's auntie's all-female Newham College, where the author is booked to convey a talk, are truly humiliating in contrast with those served to guys at Oxbridge. Woolf accepts that in case somebody can't have a nutritious supper, the person in question would not be able to cherish or rest appropriately. At the end of the day, "the lovely parts of life should stand by." Woolf felt that cash was spent on religion, however it was then moved to the college's premise when age or reason interceded. Essentially on the grounds that there are scarcely any people who support ladies' schooling, universities have turned into men's establishments. Nonetheless, if by some stroke of good luck mothers could bring fortunes, the subject of information and astuteness would be educated there and in other ladies' establishments. Lamentably, in addition to the fact that it is hard for ladies to bring in cash, yet they are additionally not allowed to have it (the cash).The book investigates sexual orientation generalizations through the focal point of ladies and writing. Men's abundance and ladies' destitution propels Woolf to analyze the essential conditions behind the formation of a workmanship piece. "On the off chance that an individual can't eat accurately, the individual in question can't think as expected," this expression toward the start of the book clarifies that an

individual might be a craftsman not by unadulterated creative mind, concentration, and imagination, but rather through creating and satisfying these capacities in the right conditions. As shown by the occurrences at the book's decision, wonderful virtuoso grew generally among the rich. That is the reason she stresses the worth of cash and having one's own space. Virginia Woolf is an intrinsically and knowledgeable essayist from her childhood. Her dad is one of the world's most prominent creators, yet she declines any foundation offers, grants, and titles since she has the right to bear the honor that is uncorrupted by maqam and seat.The book affirms that it is hard to track down an answer for the issue of why ladies are devastated on the British Museum's racks since the whole works distributed with regards to ladies by guys consistently accord. Mussolini scorned ladies, while Goethe commended them. On the opposite side, one more speaker pointed out the ladies' knowledge, soul, and actual slightness. Also, the creator declares that the common view, the dominating outlook, shows that it is delivered by such scholastics and the irate feeling. Virginia Woolf asked ladies to battle against the Victorian time's optimal British lady, and the writer notes in that book that the expression "saved sexual orientation" should be dropped, just as the way that if sitters would be workers, they would be everything. Notwithstanding, it ought not to be failed to remember that mothering isn't in any capacity mediocre compared to battling. Neglecting mothering is certifiably not a powerful strategy to pass on this message to men and mensmind culture. Also, safeguarding virginity inside the limits of sexuality doesn't infer that it is passable for guys however taboo for ladies. Breaking restrictions ought not to be viewed as freeing ladies. Tolerating moral conduct is suitable. The women's activist development, driven by Woolf, may request their own space and a consistent pay at the risk of defiling their general public and new age, while likewise leaving Victorian points of view on ladies and mothering and overstating hostile to natality opinions. Consequently, the book expressing that the impressions of a lady's virtuoso couldn't be found in the recorded words was composed to break down the enmity between ladies writers, and A Room of One's Own additional that conquering financial hardships is deficient. Man's West Literature's lines supported the possibility that ladies are second rate. As a result, it is discouraging for ladies; tolerating or endeavor to demonstrate the opposite thought disillusioned ladies. All in all, the mind and soul should be clear and in amicability to exhibit the imaginative exertion and should forgo guarding or substantiating herself. Around then, examples of this negative undertaking and the insight and soul's absence of lucidity were given as aristocrats who

had the chance to compose anything. During the eighteenth-century, working-class ladies started to compose and brought in cash as authors.The nineteenth century might be portrayed as the new time of working-class ladies. The book clarifies why: "The artistic instruction that ladies got zeroed in on character examination and feeling assessment. They were constantly joined by direct relations. They did not have their own space and for the most part contemplated in the lounge room, at the danger of being upset. Accordingly, they wrote books. It very well might be essentially on the grounds that it had not yet been made and was additionally an original sort of composing. Ladies creators started their own practice in this period because of the absence of a customary model. By the by, the women composed without respect for scorn, dread, resistance, or lecturing.They revoked their entitlement to modify their worth decisions to adjust to the others.Toward the conclusion of the book, the author discusses reading a work by a male author, stating that it was "very satisfying to read what a male author has written again. After reading a number of books written by female writers, this one was very direct and explicit." He exemplified a high degree of thought independence, personal liberty, and self-confidence. The reader felt secure in the presence of this well-nourished, well-educated, and never-opposed individual, but at the same time, he/she respected his/her right to go anywhere he/she pleased from the day he/she was born. However, it was simple to sense the author's ego behind the book, and the emotions were unable to convey any more thoughts.All of the inferences drawn from this statement are that considering the author's gender is deadly. The critical point is that both genders should collaborate. There should be no distinctions in their minds, as there should be in their bodies. Prior to the art of writing, we observe that men and females should cooperate, and for females, the path to this collaboration begins with the money she has and her room. Additionally, we observe that she should develop the practise of writing thoughts verbatim.Virginia Wolf's most renowned book, A Room of One's Own, is about two things: womanhood and literature. These two keywords are not as straightforward as they seem. When you consider them really, you realise that they are far more significant than that. The book's major themes include the social gender issue, the existence of a patriarchal society, educational disparities, the fact that women cannot appear in history, and the paucity of women appearing in history. Women need their own space to be intellectually innovative. Two critical issues arise in this paradigm: Why is the world of writing more difficult for women than it is for men, and what does Woolf's response to these difficulties, having a room, mean? To begin, Woolf informs us at

the opening of the novel that she was unable to study at Oxbridge simply because she was a woman. At this point, it's worth noting that the term Oxbridge is a mashup of the terms Oxford and Cambridge. This evidence indicates that at the time, ladies were not permitted to attend adjunct colleges. Then Woolf poses the classic question: What if Shakespeare had a talented sister called Judith?

Making some forecasts regarding it is not difficult. While Shakespeare finishes his studies and develops into a significant figure in theatre and literature, Judith is unable to attend school. When her family forces her to marry, she uses her abilities to flee. When she applies to a theatre in order to pursue her ambitions, she is confronted with the reality that women are not permitted to join. Finally, she gets pregnant as a result of a manager's concern for her. She is unable to bear her poet spirit, which is imprisoned inside her body, and so commits suicide. Judith commits herself only because she is unable of being powerful in the intellectual, professional, social, and political worlds simply because she is a woman. This fictitious sibling demonstrates the probable fate of a talented woman.Then Woolf discusses the problems women experience as a result of their societal circumstances. It's self-evident that the most challenging ones are the familial constraints. The sphere of home/family confines and isolates the woman. Perhaps the most critical in this regard is the maternal problem.Because the majority of the time, when the spouse lives on the outside, the woman is responsible for her kid. Woolf draws parallels between the act of creating a book (a metaphor for giving birth) and biological motherhood. However, most of the time, women are not in control of this choice. For a woman who lacks both rights and resources, it's hard to imagine a life other than marrying a nice guy and being confined to the home. In the home, women are responsible for a plethora of tasks, including food preparation, cleaning, and child rearing. And when women are engaged in these activities, it is difficult for them to be creative.A Room of One's Own is based on Woolf's 1928 lectures at Newnham and Girton Universities. However, this knowledge should not lead us to believe that the novel is based on fact. Quite the contrary, the book is entirely fictional. Woolf states at the opening of the book, "I believe I do not need to say what I am going to say, Oxbridge, and "I" is not real." Some falsehoods will flow from my lips, yet among these lies may be some truth. I leave it up to the reader to locate and extract this truth, as well as to determine if it contains a chapter worth concealing.One of the most intriguing aspects, similar to this one, is that the book does not have

a single narrator. "You may call me Mary Beton, Mary Seton, Mary Carmichael, or any other names you choose." she adds. It is irrelevant."

One possible explanation for this deliberate decision is the effort to undermine the narrator's authority in the storey. If we go further into this problem, we may conclude that Woolf was attempting to sever the author-author relationship and to weaken the authority-male relationship via literary methods. As a result of the reasons discussed before, Woolf has forged an exceptional connection with her readers. And maybe it is for this reason that reading A Room of One's Own makes the reader feel as if they are conversing with Virginia Woolf about her real identity and life beyond time. Woolf begins by explaining why being a woman author is more difficult than it is for males. We may include what she stated in this order:

“The challenges women face in obtaining an education and the constraints imposed by family life.”

At the outset of the book, Woolf reveals that she is not permitted to attend Oxbridge just because she is a woman. It is critical to note at this point that the term Oxbridge is derived from the names of the Oxford and Cambridge institutions. This evidence demonstrates the difficulty of a female obtaining a university degree during that time period. Then Woolf poses the illustrious question: "What would have occurred if Shakespeare had a marvellously talented sister named Judith?"

It is not difficult to see the following scenario: Judith is not sent to school while Shakespeare continues his studies and carves out a place for himself in theatre and writing. When her family attempts to marry her, she flees to pursue her skill. When she seeks for a position at a theatre with the intention of following in Shakespeare's footsteps, she is met with the response that no woman can be an actor. She is eventually pregnant by a manager who feels sorry for her. She is unable to maintain her poet's soul imprisoned in a female body and commits suicide! What other motive might there be for Judith's suicide except her inability to achieve influence in intellectual, professional, social, and political areas just because she was a woman? (1985, Susan M. Squier) This fictitious sister exemplifies the conclusion of a brilliant woman's life.Then Woolf discusses inequality and some of the problems that women face as a result of their social circumstances. It has been shown that these socioeconomic factors mostly affect family life. Domestic/family life separates women from the public realm. In this context, the most pressing problem is undoubtedly parenting. For the simple reason that a woman is expected to care for her kid at

home, while her husband spends the majority of his time outdoors. In reference to the metaphor of giving birth to a work, Woolf views writing/production processes as biologic motherhood. (Elizabeth Abel: 1993) However, this option is mostly beyond women's control. It is difficult to want any choice than marrying a really good guy and relegating oneself to domestic life for a woman who lacks sufficient financial resources and rights. And the woman assumes the household duties assigned to them, such as cooking, cleaning, and child care. After all, the woman's ability to be creative is ruled out by these household responsibilities. Additionally, Virginia Woolf states the following in her book, A Room of One's Own:

"…For all the dinners are cooked; the plates and cups washed; the children sent to school and gone out into the world. Nothing remains of it all.All has vanished" (Woolf, V.:1945).Taking into account all of the above-mentioned injustices and obstacles, Woolf concludes that women have only one chance to overcome them all and create something new that transcends emptiness. A room of her own, first and foremost, refers to a space and time in which a woman may perform intellectual studies without interruption, free of problems and obligations, which is directly related to economic liberty. However, more importantly, Woolf advises women to first be free in their minds before writing. "Writing, according to Virginia Woolf, is a necessary component of feminism's transition from the private to the public realm." (Anna Snaith: 2003) As a result, Woolf offers critical counsel to women at that time. To compose. Write without giving up, without considering the present circumstances, without contemplating if your writings will be successful, and without considering what other people think about your writings! As she states on one of the last pages of A Room of One's Own, "as long as you write what you want to write, that is all that counts; and whether it matters for centuries or just for hours, nobody knows." However, to sacrifice a hair of the head of your vision, a shade of its colour, in deference to some Headmaster holding a silver pot or to some professor holding a measuring-rod, is the most abject treachery, and the sacrifice of wealth and chastity, which was once considered the greatest of human disasters, is a mere flea-bite in comparison." (Ibid).Virginia Woolf, in a nutshell, wants women to be free in every area. She asserts that the rights granted to males about equal compensation for equal labour, fair salaries or equal pay, equal access to education, and sex equality should be extended to women as well.

- **CONCLUSION**

I feature in this examination the commitments of woman's rights to ladies' lives and the activities that ladyought to do to accomplish uniformity. As I said at the start of my examination, it is desirable over talk about both the positive and negative parts of women's liberation while surveying it. Obviously, there are sure people and associations that use woman's rights to get benefits, just as creators who are real in their assertions about women's liberation. I pick A Room of One's Own as a source of perspective in my examination since it is a vital work among Virginia Woolf's works of art as a famous women's activist author. On the off chance that a lady is truly prepared to put she out there and battle for the idea that ladies ought to have similar privileges as men, she would without a doubt make and distribute her works. While the facts confirm that ladies linger behind guys in specific regions, it is vital for them to enhance in the scholarly domain instead of fault the other sex for this problem. Thus, I can say that I concur with Woolf on various focuses, most quiet training, business possibilities, and the issue of acquiring a similar regard in the general public. Also, as Woolf attests, ladies and men ought to work together to make something. A woman and a person are like two aspects of a similar face. It appears to be farfetched that a lady could prevail by excluding him, or that a man could prevail by alienating her in the twenty-first century.

- **REFERENCES**

[1]. Abel, Elizabeth (1993). Virginia Woolf and the Fictions ofPsychoanalysis, Chicago: University of Chicago Press.

[2]. Convay, David. (2000), Free Market Feminism, Liberty Press.

[3]. Snaith, Anna. (2003) Virginia Woolf: Public and PivateNegotations New York: Palgrave Macmillan.

[4]. Squier, Susan M. (1985) Virginia Woolf and London: The Sexual Politics of the City Chapel Hill Universityof North Carolina Press.

[5]. Urgan, Mina. (2004) Virginia Woolf: İnceleme. İstanbul: Yapı Kredi Press.

[6]. Woolf, Virginia. (1945) A Room of one’s Own, London: Penguin Books.

[7]. Woolf, Virginia. (1992) Kendine Ait Bir Oda. İstanbul: Afa Press

Rhythm in *Songs of Soul and Soil* by S. R. Patil

Dr.Hemantkumar. D. Patil
Research Co-Guide
Ph.D(English)
JJT UNIVERSITY
JJT/2K9/SSH/1695

Roshan Subhash Patil
Research Scholar
Ph.D(English)
JJT UNIVERSITY
221219036

Abstract:-*Songs of Soul and Soil* is a collection of poems by Mr.S. R. Patil. It contains 204 poems including prologue and epilogue. Mr. Patil's poetry is an innovative in themes and style. Nowadays, there is a fashion of free verse. Traditional poetry has become rare but Mr. Patil has dared to make poems metrically successfully. The poems carry the themes local to global. The collection is appreciated by many scholars and critics in various seminars and conferences. The poet has been awarded Honarary D. Litt by The University of South America.

Key Words:-Poem, Innnovative, Rhyme scheme, Alliteration, Couplet.

The collection *Songs of Soul and Soil* is a beautiful treasure trove of various themes on this planet. In this age of free-verse, traditional poetry is rare but pleasant one, reading or studying traditional poetry gives one aesthetic pleasure, one's mind and head both are soothed.

Readers of poetry are soothed after many years to have such a collection of poems. Majority poems in *Songs of Soul and Soil* are in couplet form, a stanza making of two lines. e.g: the first piece is called "*Prologue"* is in twenty three couplets. It's better to give here one couplet or two. It's as under -

"Earler I was thinking of writing a novel

But poetry wriggled in my mercy bowel"

This is the first stanza of the Prologue. One can read the last stanza also. It's as the following-

"In life whatever I feel in personally pain

My heart heavily hums n poems I pen." (*Songs of Soul and Soil*. Page no: XVII)

The poems could be categorized as in couplets, triplets, quartets, quintuples and sestets.The rhyme scheme is like aa, bb, cc etc. So the poem becomes readable and the readers got poetic pleasure.

The second category of the poem is triplets. The triplets form the poem as under. The name of the poem is "*Dajiba's Death"*. The first stanza read as-

"Dajiba wiry n wily, very mischievous

His walk and talk everything unctious

Earned n spent sufficient never anxious."(*Songs of Soul and Soil*. Page no:71)

This poem is made of eight stanzas. Each stanza has 3 lines rhyming with each other. First stanza rhyming scheme is AAA. Rhyming scheme for the second stanza is BBB. All stanzas have various rhyming schemes.

The third category is of quatrains- that is a stanza of four lines. Here one example could be given of the same. The title of the poem is "*Death"*.

The first stanza is as-

"Old age! The death rings bell

Health may be a bad or well

The Death will definitely nail

Who worries of heaven n hell!". (*Songs of Soul and Soil*. Page no:75)

The rhyme scheme of the present stanza is AAAA. For the second stanza the scheme is BBBB. The rhyme scheme varies stanza wise. The poem becomes rhythemic and melodious.

Another format is the quintuple- a stanz made of five lines. The example of the type could be given here. The name of the poem is "*Creative Coition"*. Its each stanza is made of five lines which rhyme with each other. e.g: The first stanza of the poem-

"Male and female in coition

Oh! The best combination

Both flare while in motion

A jolly act for regeneration

The jingle of necklace n nose-ring!". (*Songs of Soul and Soil*. Page no:68)

The rhyme scheme of this stanza is like AAAAB. It varies stanza wise. The poem has seven stanzas which are rhythemic and melodious.

The next group of the poems is in the stanzas called sestets. There are less poems of this type. One can read and study the poem having made of sustets. The title of the poem is "*I shall Never fight"*. It's made of ten stanzas having six lines each for example, the first stanza-

"May be

Liar! Loafer n lord

Corrupt n fraud

“Sycophant n bard

With their height

I shall fight!”. (*Songs of Soul and Soil*. Page no:115)

The rhyme sceme of the stanza is like ABBBCC and it varies stanza-wise.

There is another kind of poems called Elegy. There is the poem titled “*Bhrugu Bhat”,* which is an elegy on the death of a priest. This poem is made of 3 couplets. Each couplet has a different rhyme scheme for example the first stanza-

“ Bhrugu has a regular rut

Shiva Shiva in his mut.”

There is the last stanza-

“Oh!Bhrugu died village cried

And sadly said the death is wild”. (*Songs of Soul and Soil*. Page no:45)

The rhyme scheme of the first stanza is AA and of the last stanza is JJ.

Now here is another genre of poem and it’s lyric. There are many lyrics in this collection. One sample could be cited here. The name of the poem is “*A Lovely Girl”* of it’s a beautiful lyric. Each made of six quatrains each line rhyme with one another for example

“Rama n Ramy made the best couple

So in their life was not any trouble”

“From the morning worked hard.

Parijat was flowering in their yard”. (*Songs of Soul and Soil*. Page no:15)

The rhyme scheme in the above stanza is AA and BB it varies as per stanzas. Really after reading the collection *Songs of Soul and Soil* one is reminded of old and melodious poetry.

The poet has made miracle in the poem titled “*Mistakes of Mind”*. This poem is full of alliteration from beginning to the end. It has ten couplets. Each line is alliterative. For example-

“A mind makes many mistakes
Shattered soul severly shakes

Wild n wayward as a wavering wind
Craves crassly cannot be cute n kind

Mind mingles per minute minutely
Serves n shares Shameful, silently

I try to tighten its tether tightly
Naughty but noted, nets nightly

Hampers heavily harboured habits
Day by day develop dogged debits

The talent tries to teach the tot
Roars rakishly, 'rights'run n rot

Moral mistakes murky mistakes
Crush, crunch n cremate Sheikh

Jaundicely jeopardizes genius
Causes complexities curious

A marvelous, mercilessly mows
Rights n wrongs rumble in rows

Undo an umbrella of the known
Soul shall shine sincerely and soon".(*Songs of Soul and Soil*. Page no:137)

The second part of the collection has native generes of poetry in English language but in their original form and technique.There are constructions like *abhang*(Devotional song),*lavni* (erotic song), *bharud* (mystic song) *kalagi tura*(songs in question answer format) *powada* (ballad), *phatka* (advisory song) and there are also two urdu language songs called *qawwali and gazal* in English but in their original form and technique. All those songs are rhythemic and metrical constructions which are sweet and melodious. Due to space limitation it's not possible to give the example of above mentioned native generes of poetry.

The poems have various figures of speech used by the poet. The lines have varieties of meters. It's not possible to scan them. The poems are rich with ornamental language.

References:

- Boulton Marjorie. *The Anatomy of Poetry*. Kalyani Publishers,1953. Print
- Mahale V. Panchshiela. *Critical Appreciation of Songs of Soul and Soil*. Himalaya Publishing House, 2020. Print.
- Patil S. R. *Songs of Soul and Soil* Self Published, India, 2014. Print.
- Satish Kumar. *A Survey of Indian English Poetry*. Aastha Printers, Meerut, 2001. Print.

राजस्थानी संस्कृति में लोक–नृत्य

हिमांशु खिड़िया, शोधार्थी
श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ेला,
झुंझुनूं (राजस्थान)

सारांश – राजस्थान की संस्कृति अपने ऐतिहासिक अतीत की तरह अद्वितीय और रंगीन है। राजस्थानी संस्कृति राज्य के रंगीन इतिहास को दर्शाती है। लोग अपने लोक नृत्यों, पारंपरिक व्यंजनों, राजस्थान के लोगों और अपने रोजमर्रा के जीवन में संस्कृति का सार पा सकते हैं। एक रियासत होने के नाते, राजस्थान अपनी शाही भव्यता और रॉयल्टी के लिए जाना जाता है। राजस्थान अपनी खूबसूरत परंपराओं, संस्कृति, लोगों, इतिहास और स्मारकों के माध्यम से पूरी दुनिया के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

परिचय : राजस्थानी लोक–संगीत

राजस्थानी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा लोक संगीत है। राजस्थान का लोक संगीत अपने सुंदर संगीत और शब्दों से किसी को भी मोहित कर सकता है।यहां का लोक संगीत ऐसा है कि यह बेजान से मरुस्थल में भी जान डाल देता है। वे बेहद सम्मोहक होते हैं और प्रायः विशेष अवसरों और त्योहारों के अवसर पर गाए जाते हैं। राजस्थान का लोक संगीत यहां के लोगों की भावनाओं, कहानियों और दैनिक गतिविधियों से पैदा हुआ। इन लोक गीतों को अलग–अलग कहानियां सुनाते हुए गाया जाता हैं।राजस्थानी लोक संगीत में गीतों के माध्यम से नृत्य और कहानी दोनों चीजें साथ–साथ चलती है। राजस्थानी लोक संगीत में पनिहारी, पाबूजी की फड़ और मांड सर्वश्रेष्ठ हैं। मांड राजस्थान के लोक संगीत की सबसे परिष्कृत शैली है और इसे केवल राजपूत शासकों के शाही दरबार में गाया जाता था। राजस्थानी लोक संगीत न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनियां में प्रसिद्ध है।राजस्थानी संगीत ने न केवल भारत से बल्कि पूरे विश्व के लोगों को आकर्षित किया है। राजस्थान के हर हिस्से में अलग–अलग तरह के संगीत हैं। प्रत्येक क्षेत्र का अपना लोक मनोरंजन है, गाने की तरह नृत्य शैली भी बदलती है। दिलचस्प रूप से प्रत्येक क्षेत्र में संगीत के वाद्ययंत्र भी भिन्न–भिन्न होते हैं। सबसे प्रसिद्ध राजस्थानी मांड गायकों में से एक बीकानेर घराने की अल्लाह जिलई बाई है।

साहित्य समीक्षा–

- डॉ. सोहनदान चारण के अनुसार लोकसाहित्य पर उपलब्ध प्रमुख राजस्थानी लोकगाथाएँ – (क) पौराणिक लोकगाथाएँ– स्यावकरण घोड़ौ, काला गोरा रौ भारत, रामदला री पड़ आदि। (ख) भक्तिपरक लोकगाथाएँ– गोपीचन्दा–भरथरी, रूपांदे, बगड़ावत, रामदेवजी, तेजाजी, गोगा गाथा, पाबूजी री फड़ आदि। (ग) प्रेमप्रधान लोकगाथाएँ–ढोला–मारू, मूमल–महेन्द्रा, नागजी–नागवन्ती, जसमा–ओडण, रामू–चनणा आदि। (घ) वीरता प्रधान लोकगाथाएँ– बगड़ावत, रामदेवजी, तेजाजी, गोगा गाथा, पाबूजी री फड़ आदि।
- नानूराम : ''राजस्थानी लोक साहित्य'' यह ग्रंथ राजस्थान प्रदेश के विभिन्न अंचलों में निर्मित उस साहित्य निधि का उद्‌बोधन कराता है जो इस प्रदेश की कला संस्कृति, लोकगाथा, लोककथा, लोकवार्ता, लोकगीत तथा लोकसम्बंद्ध परम्पराओं से संबंधित है। 'राजस्थानी लोक साहित्य' में निश्चय ही उस अगाध और विशाल महासमुद्र की भाँति अनंत मणिरत्नों से देदीप्यमान है, जिसका विवेचन और विश्लेषण करने के उद्देश्य से ही इस ग्रंथ का प्रणयन हुआ है।
- राजस्थान : संस्कृति, कला एवं साहित्य, डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुरराजस्थान में कला, साहित्य, संगीत और लोककला की एक अक्षुण्ण परम्परा रही है जो इसे दूसरे राज्यों से अलग करती है। यहां की संग्रहालय सम्पदा, लघुचित्रों एवं आधुनिक चित्रों की थाती, मूर्तिकला, भित्ति चित्रकला, रंग–बिरंगे त्यौहार, साहित्य एवं

लोक साहित्य, लोक संगीत तथा विविध आकर्षक लोकनृत्य, लोक आस्था केन्द्रों पर जुटने वाले मेले, उत्सव और समारोह सब कुछ हमें यहां की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा से जोड़ते हैं। राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा से परिचय हमें न केवल यहां के इतिहास एवं जनजीवन से जोड़ता है अपितु सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के मानव सुलभ कर्त्तव्य से भी हमारा रिश्ता बनाता है।

- **समस्या का विवरण–**'' राजस्थानी संस्कृति में लोक–नृत्य''
- **अनुसंधान पद्धति–**

  प्रस्तुत शोध आलेख में राजस्थानी लोकनृत्य विषय के संदर्भ में जानकारी को संकलित करने के लिए विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों को माध्यम बनाया जाएगा। प्रस्तुत शोध आलेख कार्य को सम्पन करने हेतु शोधार्थी द्वारा प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से सूचनाओं व तथ्यों को संकलित व एकत्रित किया गया है।

राजस्थानी लोक नृत्य –ग्रामीणों द्वारा सामूहिक रूप से पूरे उत्साह औरलय के साथ अंगों का तीव्र गति से संचालन करते हएकिया जाने वाला नाच को "देशी नाच" या "लोक नृत्य" कहा जाता है।राजस्थानी लोक नृत्यों में विशेषकर घूमर, कठपुतली और कालबेलिया नृत्य पर्यटकों और शैलानियों को बहुत आकर्षित करते हैं। राजस्थानी लोक नृत्य विभिन्न जनजातियों से उत्पन्न हुए थे और मुख्य रूप से राजाओं के मनोरंजन के लिए उपयोग किए जाते थे। लोक गीत प्रायः गाथागीत होते हैं जो वीरों और प्रेम कहानियों के रूप में तथा धार्मिक और भक्ति गीतों को भजन और बानियों के रूप में सुना जाता है। राजस्थान में कोई भी समारोह क्षेत्रीय कलाकारों के लोक नृत्य के बिना अधूरा होता है। इसमें लोक कलाकार पोशाक, अभिव्यक्ति, चाल और ताल का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। राजस्थान के कुछ पारंपरिक नृत्य रूप बहुत अलग होते हैं क्योंकि केवल गिने–चुने या कुशल लोग ही ऐसा नृत्य कर सकते हैं। राजस्थान में लोक नृत्यों के बहुत से रूप मिलते हैं, जो कि बेहद आकर्षक और मजेदार हैं। इन लोक नृत्यों का आनंद किसी भी आयु वर्ग के लोग ले सकते हैं। राजस्थान के लोक नृत्य पूरी दुनिया में लोकप्रिय हैं। राजस्थान के कुछ लोकप्रिय नृत्यों में उदयपुर के "घूमर"जो कि राजपूत महिलाओं द्वारा किया जाता हैऔर जैसलमेर के"कालबेलिया" नृत्य जो कि कालबेलिया समुदाय की महिलाओं द्वारा किया जाता है, इनको अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त है। कठपुतली, भोपा, चांग, तेराताली, घिंदड़, कच्छीघोड़ी, तेजाजी आदि नृत्य पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति के अन्य उदाहरण हैं।

अग्नि नृत्य –बीकानेर के कतरियासर ग्राम में जसनाथी सप्रंदाय के पुरूषों द्वारा रात्रि जागरण के समय धड़कते अंगारों के ढेर (धूणा)पर फतेह–फतेह उद्घोष के साथ किया जाने वाला नृत्य है। इसमें नगाड़े वाद्ययंत्र की धुन पर जसनाथी सिद्ध एक रात्रि में तीन–चार बार अंगारों से मतीरा फोड़ना, हल जोतना, अंगारों को दांतो से पकड़ना, आदि क्रियाएं इतने सुंदर ढंग से करते हैं, जैसे होली पर फाग खेल रहे हों। धधकती आग के साथ राग और फाग का ऐसा अनोखा खेल नृत्य जसनाथियों के अलावा अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।नृत्य के दौरान विभिन्न करतब करते हैं। बीकानेर का कतरियासर गाँव इस नृत्य का मुख्य केन्द्र हैं। बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने इसके कलाकारों को सरंक्षण प्रदान किया था। आग में मतिरे फोड़ने का सम्बन्ध अग्नि नृत्य से हैं।

आंगी–बांगी गैर नृत्य –यह चैत्र बदी तीज को रेगिस्तानी क्षेत्र में लाखेटा गांव में किया जाता है। धोती कमीज के साथ लम्बी आंगी पहनी जाती है, इसलिए आंगी गैर भी कहते हैं।

इण्डोणी नृत्य –कालबेलिया जाति के स्त्री–पुरुषों द्वारा गोलाकार रूप से पुंगी व खंजरी पर किया जाने वाला नृत्य हैं। नर्तक युगल कामुकता का प्रदर्शन करने वाले कपड़े पहनते हैं। इसमें औरतों की पोशाक एवं मणियों की सजावट कलात्मक होती

है।यह गोलाकार रूप में किया जाने वाला मिश्रित कालबेलिया नृत्य है। इसका प्रमुख वाद्ययंत्र पूंगी व खंजरी है।इसमे औरतों की पोशाके बड़ी कलात्मक होती है तथा इनके बदन पर मणियो की सजावट रहती है।

इन्दरपरी नृत्य –सहरिया जनजाति के लोग इन्द्रपुरी के समान अलग अलग मुखौटे लगा कर नृत्य करते हैं। मुखौटे बंदर, शेर, राक्षस, हिरण आदि के मिट्टी कुट्टी के बने होते हैं।

कच्छी घोड़ी नृत्य –कच्छी घोड़ी नृत्य –यह राजस्थान का एक बहुत लोकप्रिय वीर नृत्य है। शेखावाटी क्षैत्र में पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य जो वर्तमान में एक व्यावसायिक नृत्य बन चुका हैं। इसमें पुरूष पीठ पर काठ की बनी घोड़ी बांधकर नृत्य करते हैं। इस नृत्य में चार–चार लोगों की दो पक्तिंयाँ बनती हैं। जिसमें पक्तिंयों के बनते और बिगड़ते समय फूल की पंखुड़ियों के खिलने का आभास होता हैं।इसमे घोड़ी के समान दिखने वाले आकृति में पुरूष द्वारा अलग अलग कलाएं की जाती है।यह पेशेवर जातियों द्वारा शुभ अवसरों पर अपनी कमर पर बांस की घोड़ी बांधकर किया जाने वाला नृत्य है। यह शेखावाटी क्षेत्र,कुचामन, डीडवाना और परबतसर क्षेत्रों में विवाह आदि अवसरों पर एक व्यावसायिक मनोरंजन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें ढोल, झांझ, बांकिया और थाली बजाए जाते हैं। सरगड़ा, कुम्हार, ढोली और भाम्भी जातियाँ इस नृत्य में पारंगत होती हैं। यह नृत्य कमल के फूल के पैटर्न बनाने की कला के लिए प्रसिद्ध है। चार–चार व्यक्तियों की पंक्तियाँ आमने–सामने होती हैं, नृत्य के समय आगे बढ़ने तथा पीछे की ओर हटने की क्रियाएँ द्रुतगति से इस प्रकार की जाती हैं कि आठों व्यक्ति एक ही पंक्ति में आ जाते हैं। इस पंक्ति का बार–बार बनना, बिगड़ना, कली के फूल की तरह है जो पंखुड़ियों के रूप में खुलता है। इसमें लसकारिया, बींद, रसाला और रंगमारिया आदि गीत गाए जाते हैं।

कालबेलिया नृत्य –सपेरा अर्थात् कालबेलिया जाति का यह प्रसिद्ध नृत्य है। इस नृत्य में शरीर की लोच और लय, ताल पर गति का मंत्रमुग्ध कर देने वाला संगम देखने को मिलता है। अधिकतर इसमें दो बालाएं अथवा महिलाएं बड़े घेरे वाला घाघरा और घुंघरू पहन कर नृत्य प्रस्तुति देती है। नृत्यांगना काले रंग की कशीदाकारी की गई नई पोशाक पहनती है, जिस पर कांच, मोती, कौड़िया, कपड़े की रंगीन झालर आदि लगे होते हैं। नृत्य में पुरुषों द्वारा पुंगी और चंग बजाई जाती है। दूसरी महिलाएं गीत गाकर संगीत देती है। मारवाड़ अंचल में यह नृत्य काफी लोकप्रिय हैं। कालबेलिया नृत्य को 2010 में यूनेस्को द्वारा अमूर्त विरासत सूची में शामिल किया गया है।

कूद नृत्य –यह नृत्य बिना वाद्ययंत्र के साथ किया जाता है। तालियों की थाप पर यह नृत्य किया जाता है। इसमें भी महिला व पुरूषों के दो वृत बन जाते हैं।

खारी नृत्य –यह वैवाहिक नृत्य है। यह दुल्हन की विदाई के अवसर पर अलवर (मेवात) में दुल्हन की सखियों द्वारा अपने सिर पर खारियाँ रखकर किया जाता है।

गरबा नृत्य –यह नृत्य राजस्थान के बांसवाड़ा व डूंगरपुर क्षेत्र में अधिक लोकप्रिय हैं। यह नृत्य स्त्रियों द्वारा तीन भागों में प्रस्तुत किया जाता है। प्रथम, शक्ति की आराधना व अर्चना, द्वितीय, राधा कृष्ण का प्रेम चित्रण और तृतीय, लोक जीवन के सौंदर्य की प्रस्तुति। नवरात्रि की समाप्ति के बाद गरबा नृत्य समाप्त हो जाता है। इस नृत्य को रास, गबरी, व डांडिया आदि रूपों में भी व्यक्त किया जाता है।

गवरी (राई) नृत्य –यह नृत्य (माँ पार्वती)गोरी पूजा से संबधित होने के कारण गवरी कहलाता है। इसके प्रमुख पात्र भगवान शिव जी होते हैं। शिव को पूरिया कहा जाता है। इनके चारों ओर समस्त नृत्यकार मांदल व थाली की ताल पर नृत्य करते हैं।भीलों द्वारा भाद्रपद माह के प्रारंभ से आश्विन शुक्ला एकादशमी तक गवरी उत्सव में किया जाने वाला यह नृत्य नाट्य है। यह डूंगरपुर–बांसवाड़ा, उदयपुर, भीलवाड़ा, एवं सिरोही आदि क्षेत्रों अथार्थ मेवाड़ अंचल में अधिक प्रचलित है। गवरी लोकनाट्य का मुख्य आधार शिव कथा भस्मासुर की कथा है।इसमें नृतक नाटयकलाकारों की भांति अपनी साज–सज्जा करते

है। राखी के दूसरे दिन से इनका प्रदर्शन सभा माह (40 दिन) चलता है। यह राजस्थान का सबसे प्राचीन लोकनाट्य है जिसे लोकनाट्य का मेरुनाट्य कहा जाता है।गवरी समाप्ति से 2 दिन पहले जवारे बोए जाते हैं और 1 दिन पहले कुम्हार के यहां से मिट्टी का हाथी लाया जाता है। हाथी लाने के बाद का भोपे का भाव बंद हो जाता है। जवारा और हाथी के साथ गवरी विसर्जन प्रक्रिया होती है। जिसे किसी जलाशय में विसर्जित करते हैं।

गवरी की घाई भील नृत्य –यह नृत्य भील प्रदेशों में किया जाता है। यह विभिन्न प्रसंगों को एक प्रमुख प्रंसग से जोड़ने वाला सामूहिक नृत्य है।

गींदड़ नृत्य–शेखावटी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय एवं बहुत प्रचलित नृत्य है यह नृत्य होली के पूर्व से प्रारंभ होकर होली के बाद तक किया जाता है।यह केवल पुरुषों के द्वारा किया जाता है। इसका मुख्य वाद्ययंत्र नगाड़ा होता है। नृत्य प्रारंभ करने के लिए सर्वप्रथम मंडप के बीच में नगाड़ची पहुंचकर प्रार्थना करता है और उसके बाद नृत्य आरंभ होता है। इसमें पुरूष हाथों में डंडे लेकर गोल घेरे में आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं।इसमें जो पुरूष महिलाओं के कपड़े पहनकर नाचते हैं। उनको गणगौर कहते हैं।इसमें होली के कोई गीत या होरी गा लेते हैं। इस नृत्य में विभिन्न प्रकार के स्वांग करते हैं, उनमें मुख्यतः साधु, शिकारी, सेठ–सेठानी, डाकिया–डाकन, दूल्हा–दुल्हन, सरदार, पठान, पादरी, बाजीगर, जोकर, शिव–पार्वती, पराक्रमी योद्धा, राम, कृष्ण, काली आदि प्रसिद्ध हैं।शेखावाटी क्षेत्र में फतेहपुर, रामगढ़, मण्डावा, नवलगढ़, उदयपुरवाटी आदी क्षैत्रों की गींदड़ लोकप्रिय है।

गैर नृत्य –गैर नृत्य –मेवाड़ क्षेत्र में होली के अवसर पर भील पुरुषों द्वारा किया जाने वाला एक लोकनृत्य है।गोल घेरे में इस नृत्य की संरचना होने के कारण यह "घेर" और कालांतर में "गैर" का जाने लगा। गैर नृत्य करने वालों को "गैरिया" कहते हैं। यह होली के दूसरे दिन से प्रारंभ होता है तथा 15 दिन तक चलता है। यह मेवाड़ व बाड़मेर क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जो पुरुषों द्वारा सामूहिक रूप से गोल घेरा बनाकर ढोल, बांकिया, थाली आदि वाद्ययंत्रों के साथ हाथों में डंडे लेकर आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं।इस नृत्य को देखने से ऐसा लगता है मानो तलवारों से युद्ध चल रहा है। इस नृत्य की सारी प्रक्रियाएं और पद संचलन तलवार युद्ध और सट्टेबाजी जैसी लगती है। नृत्य करते समय पुरूष एक विशेष प्रकार का वस्त्र पहनते हैं जिसे ओंगी कहा जाता हैं।मेवाड़ के गैरिए नृत्यकार सफेद अंगरखी, धोती व सिर पर केसरिया पगड़ी धारण करते हैं, जबकि बाड़मेर के गैरिए सफेद आँगी (लंबी फ्रॉक) और तलवार के लिए चमड़े का पट्टा धारण करते हैं। इसमें पुरुष एक साथ मिलकर वृताकार रूप में नृत्य करते–करते अलग–अलग प्रकार का मंडल बनाते हैं। मेवाड़ और बाड़मेर के गैर नृत्य की मूल रचना एक ही प्रकार हैं किंतु नृत्य की लय, चाल और मंडल में अंतर होता है। गैर के अन्य रूप हैं– आंगी–बांगी(लाखेटा गांव), गैर नृत्य(मरु प्रदेश), तलवारों की गैर नृत्य (मेवाड़–मेनार गांव)। यह मुख्यतः भील जाति की संस्कृ ति को प्रदर्शित करता है। बाड़मेर का कनाना गाँव इसका प्रमुख केन्द्र है।

घुड़ला नृत्य –मारवाड़ जोधपुर क्षेत्र में शीतलाष्टमी से लेकर गणगौर तक छिद्रित मटके में जलते हुए दीपक को रखकर गोलाकार पथ पर बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है। इस नृत्य में मंद–मंद चाल तथा सिर पर रखे घुड़ले को जिस नाजुकता से संभाला जाता है, वह दर्शनीय है।मटके में जलता हुआ दीपक रखा जाता हैं। यह नृत्य जोधपुर राजा सातल की याद में किया जाता हैं। कोमल कोठारी ने घुड़ला नृत्य के कलाकारों को अंतराष्ट्रीय मंच उपलब्ध करवाया।

घूमर नृत्य –घूमर नृत्य को राजस्थान के लोक–नृत्यों की आत्मा, नृत्यों का सिरमौर तथा सामन्ती नृत्य कहते हैं। यह मुलतः मध्य एशिया का हैं। इस नृत्य को गणगौर पर महिलाओं द्वारा किया जाता हैं। ढोल व नगाड़ा इसके मुख्य वाद्ययंत्र हैं। इसमें पुरूष नृत्य नहीं करते हैं लेकिन यह पुरूष प्रधान नृत्य हैं।आजकल मांगलिक अवसरों पर महिलाओं द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में बार–बार घूमने के साथ हाथों का लचकदार संचालन प्रभावकारी होता है। राजघरानों में होने वाले घूमर में

नजाकत–नफासत अधिक रही है, वही प्रभाव अन्य जातियों के घूमर में भी आया है। आजकल प्रत्येक सरकारी– गैर सरकारी कार्यक्रम के शुभारंभ का यह अंग बन गया है। यह राजस्थान का "राज्य नृत्य" बनकर उभरा है।

घूमरा नृत्य –भील महिलाओं द्वारा मांगलिक अवसरों पर ढोल व थाली की थाप पर अर्द्ध–व्रत घूम–घूम कर किया जाने वाला नृत्य है।यह बांसवाड़ा, उदयपुर डूंगरपुर के भील महिलाओं के द्वारा किया जाता है।

चंग नृत्य –शेखावाटी क्षेत्र में होली के समय पुरुषों द्वारा चंग के साथ किया जाने वाला सामूहिक नृत्य है। जो घेरे के मध्य में एकत्रित होकर होली के गीत गाते हैं।इसमें गाये जाने वाले गीतों का धमाल कहते हैं। इस नृत्य में हर पुरुष के पास चंग होता है और वह स्वयं चंग बजाते हुए वृत्ताकार नृत्य करते हैं।इस नृत्य में चंग के साथ–साथ बांसुरी, अलगोजे, मंजीरा भी बजाया जाता है।शेखावाटी क्षेत्र में फतेहपुर, रामगढ़, मण्डावा, नवलगढ़, उदयपुरवाटी आदी क्षेत्रों की धमाल लोकप्रिय हैं।

चकरी नृत्य –यह हाड़ौती अंचल का प्रसिद्ध नृत्य है। ढोलक, मंजीरा, नंगाडे की लय पर युवतियों के द्वारा किया जाता है। चकरी नृत्य कालबेलिया जनजाति द्वारा वृताकर मुद्रा में तेज गति से घूमते हुए किया जाने वाला लोकनृत्य है। गुलाबो इसकी प्रसिद्व अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नृत्यांगना है।

चरकूला नृत्य –राजस्थान के पूर्वी भाग में विशेष कर भरतपुर जिले में किया जाता है। यह मूल रूप से उत्तर प्रदेश का नृत्य है।

चरवा नृत्य –माली समाज की महिलाओं के द्वारा किसी के संतान होने पर कांसे के घड़े में दीपक जलाकर सिर पर रखकरचरवा नृत्य किया जाता है। कांसे के घड़े के कारण चरवा नृत्य कहलाता है।

चरी नृत्य –चरी नृत्य राजस्थान का एक लोकप्रिय लोक नृत्य है। इस नृत्य में राजस्थानी गुर्जर महिलाओं द्वारा अपने रोजमर्रा के जीवन में एक चरी/रानी या बर्तन में पानी एकत्र करने की कला का प्रदर्शन किया जाता है। महिलाएं अपने परिवारों के लिए पानी इकट्ठा करने के लिए मिलों दूरी की यात्रा करती हैं और इस चरी नृत्य द्वारा इसकी खुशी का इजहार किया जाता है। यह लोक नृत्य नर्तकियों द्वारा सामूहिक रूप में किया जाता है। चरी नृत्य में, महिलाएँ अपने सिर के ऊपर चरियाँ या बर्तन रखती हैं और फिर एक जलते हुए दीपक को उस बर्तन में रखा जाता है।

प्रसिद्ध चरी नृत्य किशनगढ़ के गुर्जर समुदाय का है और इस नृत्य में केवल महिलाओं द्वारा ही प्रदर्शन किया जाता है। ये महिलाएं अपने सिर पर पीतल के बर्तन रख कर नृत्य करती हैं और इसे पूरे नृत्य में संतुलित बनाए रखती हैं। इन बर्तनों को तेल में डूबा हुआ कपास के बीज के साथ दीपक प्रज्वलित किया जाता है। ये जगमगाते बर्तन अंधेरी रात में सुंदर प्रभाव दिखाते हैं। चरी नृत्य में, महिला नृत्य करते समय अपने सिर पर पीतल के बर्तन को संतुलित करती है। इसे राजस्थान का पारंपरिक अग्नि नृत्य भी माना जा सकता है।गुर्जर महिलाएं रंगीन राजस्थानी कपड़े पहनकर रंगारंग चरी नृत्य करती हैं। नर्तकियां नाक में बड़े छल्ले, सिर के ऊपर नारियल की चोटी पहनती हैं। सम्पन महिलाएँ सोने के गहने, हंसली, तिमनिया, मोगरी, पूँची, बंगड़ी नामक चूड़ी, गजरा, कवच, कड़ली, टँका, नाभि आदि गहने पहनती हैं। राजस्थानी लोक संगीत के साथ नृत्य किया जाता है। इसमें ढोल, ढोलक, बांकिया, हारमोनियम, नागदा और थाली जैसे संगीत उपकरणों का उपयोग किया जाता है जिससे इसमें और अधिक रोचकता आ जाती है।किशनगढ़ की "फलूक बाई" इस नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांगना है।

झांझी नृत्य –यह नृत्य मारवाड़ क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा किया जाता है। इस नृत्य के अंतर्गत छोटे मटको में छिद्र करके महिलाएं समूह में उन्हें धारण कर नृत्य करती है।

झूमर नृत्य –यह नृत्य गुर्जर पुरुषों का वीर रस प्रदान नृत्य है और झुमरा नामक वाद्ययंत्र की गति के साथ किया जाता है। इस में कभी एक स्त्री और एक पुरुष नृत्य करते हैं, जो धार्मिक मेले आदि के अवसर पर दर्शनीय है कभी पृथक–पृथक वृताकार बैठे गाते–बजाते स्त्री–पुरुषों के झुंड में से उठकर एक–एक स्त्री और एक–एक पुरुष नृत्य करते हैं। यह गुर्जर

जाति का नृत्य है। गुर्जर और अहीर जाति के परिवारों में यह नृत्य आज भी जीवित है।झूमर नृत्य हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों पर डांडियों की सहायता से किया जाने वाला नृत्य है।

झेला नृत्य –सहरिया आदिवासियों का यह फसली नृत्य है। यह नृत्य फसल पकने पर आषाढ़ माह में किया जाता है।

डंप नृत्य –यह बसंत पंचमी पर शेखावटी क्षेत्र ढप व मंजीरे बजाते हुए किया जाने वाला पुरुष नृत्य है।

डांग नृत्य –डांग नृत्य राजसमंद जिले के नाथद्वारा क्षेत्र में होली के अवसर पर किया जाने वाला लोकनृत्य है। इसे स्त्री पुरुष साथ–साथ करते हैं। पुरुषों द्वारा भगवान श्री कृष्ण की एवं स्त्रियों द्वारा राधा जी की नकल की जाती है तथा वैसे ही वस्त्र धारण किए जाते हैं। इस नृत्य के समय ढोल, मांदल, तथा थाली आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।डांग नृत्य विशेष कर वल्लभ सम्प्रदाय नाथद्वारा, राजसमंद के भक्तों द्वारा किया जाता है।

डांडिया नृत्य –मारवाड़ क्षेत्र में होली के बाद पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य हैं। गैर, गीदड़ और डांडिया तीनों ही नृत्य वृत्ताकार हैं। नृत्य के अंतर्गत लगभग 20, 25 पुरुषों की एक टोली दोनों हाथों में लंबी छड़ियाँ धारण करके वृत्ताकार नृत्य करती हैं। चौक के बीच में शहनाई और नगाड़े वाले तथा गवैये बैठते हैं। पुरुष वर्ग ""लोक–ख्याल"" विलंबित लय में गाते हैं। नर्तक बराबर की लय में डांडिया टकराते हुए व्रत में आगे बढ़ते जाते हैं। गायक विभिन्न धमाल गीत अथवा नृत्य उपयोगी होली गीत गाते रहते है। इन गीतों में अक्सर बड़ली के भैरुजी का गुणगान रहता है।नृतक आपस मे डांडिया टकराते हुए नृत्य करते है। इसमें शहनाई और नगाड़ा बजाया जाता है। यह नृत्य गुजरात से राजस्थान में आया तथा वर्तमान में मारवाड़ का प्रसिद्ध है। डांडिया नृत्य में विभिन्न प्रकार की वेशभूषा का समावेश रहता है – राजा, बजिया, साधु, शिवजी, राम चंद्र, कृष्ण, रानी, सिंधीन, सीता आदि। कुछ वर्ष पहले जो व्यक्ति राजा का श्रंगार रखता था, उसका वेश मारवाड़ के प्राचीन नरेशों के समान ही होता था।

ढोल नृत्य या ड्रम डांस –ढोल नृत्य या ड्रम डांस राजस्थान के जालौर क्षेत्र में थाकना शैली में किया जाने वालासांचलिया संप्रदाय के पुरुषों का एक पेशेवर नृत्य है। यह शादी के अवसर पर ढोली, सरगड़ा, माली आदि जातियों के पुरुषों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में, पुरुष पाँच बड़े ड्रम बजाते हैं जो उनके गले में बाँधे जाते हैं। ढोल का मुखिया इसको थाकना शैली में बजाना शुरू करता है। ज्यों ही "थाकना" समाप्त हो जाता है, अन्य नृत्यकारों में कोई अपने मुंह में तलवार लेकर, कोई अपने हाथों में डंडे लेकर, कोई भुजाओं में रुमाल लटकाता हुआ और शेष सामान्य लयबद्ध अंग संचालन में नृत्य शुरू करते हैं।कई नर्तक अपने हाथों में एक विशाल झांझ के साथ ढोलकियों के साथ जाते हैं। कुछ अन्य सदस्य प्रदर्शन में अतिरिक्त प्रभाव प्रदान करने के लिए अपने मुंह में नग्न तलवारें रखते हैं। नर्तक को एक तलवार दी जाती है, जिसे वह अपने मुंह में डाल लेता है और तीन अन्य नग्न तलवारें उसके हाथों से उछलती हुई दिखाई देती हैं। ढोल नृत्य राजस्थान का एक बहुत ही आकर्षक नृत्य है, जिसमें पुरुष संगीतकार बड़े ड्रम और पीतल की थालियां या थली बजाते हैं। महिलाएं और अन्य लोग समूहों में नृत्य कर सकते हैं।

जैसा कि नाम से पता चलता है, ड्रम नृत्य ढोल या ड्रम बजाकर किया जाता है। इस राजस्थानी लोक नृत्य में एक विशेषता यह है कि नर्तकअपने मुंह में एक नग्न तलवार रखता है तथा तीनों ओर तीन तलवारों उछालते हुए करबत दिखता है। इस उद्देश्य के लिए लकड़ी के बड़े ढोल या ड्रम को बजाया जाता है। पृष्ठभूमि संगीत के लिए झांझ का उपयोग किया जाता है। ढोल नृत्य के दौरान राजस्थानी लोक संगीत के साथ–साथ ड्रम, ढोल, नगाड़ा और ढोलक के साथ बजाया जाता है। ढोल और ड्रम एक ही चीज हैं। एक बड़े लकड़ी के ड्रम को जोर से ढोल या ड्रम की थाप पर बजाया जाता है और महिलाएं उस पर नृत्य करती हैं। पृष्ठभूमि संगीत के गति बढ़ने पर आकर्षक ढोल नृत्य रोमांचक हो जाता है। संगीते के साथ, नर्तक अपने गति और नृत्य की तीव्रता को बढ़ाते हैं। नर्तक नृत्य के दौरान पारंपरिक रंगीन राजस्थानी आकर्षक परिधान पहनते हैं जो

किढोल नृत्य की सुंदरता में चार चांद लगाते हैं।यह जालौर का प्रसिद्ध है। यह पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसका सहायक वाद्ययंत्र थाली है जिसे थाकना शैली में बजाया जाता है।राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास ने इस नृत्य के कलाकारों को मंच उपलब्ध करवाया।

तलवारों की गैर नृत्य –उदयपुर से 35 किमी दूर मेनार नाम गांव में यह प्रसिद्ध है। यह वहां ऊंकारेश्वर पर होता है। सभी के लिए चूडीदार पजामा, अंगरखी, साफा होना आवश्यक माना जाता है।

तेरहताली नृत्य –रामदेवी जी द्वारा स्थापित कामड़िया पंथ की महिलाओं द्वारा ये नृत्य किया जाता हैं। तेरहताली नृत्य एक प्रसिद्ध पेशेवर नृत्य है जो 13 मंजीरों की मदद से पाली, नागौर और जैसलमेर जिलों की कामड़ जाति की महिलाओं द्वारा बाबा रामदेव की पूजा में किया जाता है। जिसमें 9 मंजीरे दाहिने पैर में, दो हाथ की कोहनी के ऊपर और एक–एक प्रत्येक हाथ पर होता है। यह नृत्य पुरुषों के साथ मंजीरा, तानपुरा, चौतारा वाद्ययंत्रों की संगत में किया जाता है। नृत्य के समय महिलाएँ मंजीरा को अपने हाथों में बाँधती हैं और लय अथवा ताल बनाने के लिए मंजीरों पर प्रहार करके मधुर ध्वनि निकालती हैं। "लक्ष्मण दास कामड़" और "मांगीबाई" तेरहताली नृत्य के जाने माने नृत्यकार है।पाली का पादरला गाँव तेरहताली का मुख्य केन्द्र हैं। तंदूरा या चौतारा इसका मुख्य वाद्ययंत्र है।

थाली नृत्य –यह नृत्य भोपा जाति द्वारा रावण हत्था वाघ यंत्र के साथ किया जाता है।

द्विचक्री नृत्य –होली या विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर भील स्त्रियों व पुरुषों द्वारा दो अलग–अलग वृत बना कर किया जाने वाला सामूहिक नृत्य है।

धाकड़ नृत्य –यह नृत्य हाथों में हथियार लेकर किया जाता है। इसमें युद्ध की सभी कलाएं प्रदर्शित की जाती हैं।

नाहर नृत्य–भीलवाड़ा के मांडल कस्बे में होली के 13 दिन पश्चात रंग तेरस को नाहर नृत्य का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर अलग–अलग समाज के अर्थात् भील, मीणा, ढोली, सरगडा जाति के चार लोग रूई को अपने शरीर पर चिपका कर नाहर का वेश धारण करके नृत्य करते हैं। नाहर नृत्य की परंपरा 400 वर्षों से अधिक पुरानी है। यह परंपरा जब से चली आ रही है जब शाहजहां मेवाड़ से दिल्ली जाते समय मांडल तालाब की पाल पर रुके थे।

नेजा/नैजा नृत्य –होली के तीसरे दिन खेले जाने वाला रुचिप्रद खेल नृत्य हैं जो प्राय खेरवाड़ा और डूंगरपुर के भील व मीणा जनजातियों में प्रचलित है। जिसमें लकड़ी का एक बड़ा खंभा जमीन पर गाड़कर उसके सिर पर नारियल बांध दिया जाता है। स्त्रियां हाथों में छोटी छड़ियाँ व बलदार कोरड़े लेकर खम्भे को चारों ओर से घेर लेती हैं। पुरुष, वहां से थोड़ी दूर पर खड़े हुए रहते हैं तथा नारियल लेने के लिए खंभों पर चढ़ने का प्रयास करते हैं। स्त्रियां उनको छड़ियों व कौड़े से पीटकर भगाने का प्रयास करती है।नैजा नृत्य –

पणिहारी नृत्य –यह प्रसिद्ध गीत पणिहारी पर आधारित कालबेलिया नृत्य है।यहयुगल नृत्य हैं। इस समय पणिहारी गीत गाए जाते है।

पेजण नृत्य –यह नृत्य बागड़ क्षेत्र में दीपावली के अवसर पर किया जाता है।

बम नृत्य –यह भरतपुर व अलवर क्षेत्र में होली के अवसर पर केवल पुरुषों द्वारा बड़े नगाड़े (बम) की ताल पर किया जाने वाला नृत्य है। इसे दो आदमी बड़े डंडों की सहायता से बजाते हैं और नर्तक रंग–बिरंगे फुन्दों तथा पंखों से बंधी लकड़ी को हाथों में लिए उसे हवा में उछालते हुए नाचते हैं। वाद्य यंत्रों में नगाड़े के अलावा थाली, चिमटा, ढोलक, मंजीरा, और खड़तालो का प्रयोग किया जाता है। मुख्य वाद्ययंत्र नगाड़ा होता है।बम (नगाड़े)के साथ रसिया गाने से इसे "बम रसिया" कहते हैं। इस नृत्य को नई फसल आने की प्रसन्नता किया जाता है। बम नृत्य के दौरान गिलास के ऊपर थाली भी रखकर बजाई जाती है।

बागड़िया नृत्य –यह कालबेलिया स्त्रियों द्वारा भीख मांगते समय किया जाने वाला नृत्य है। इसका मुख्य वाद्य चंग होता है क्योंकि यह साथ में बजाया जाता है।

बालदिया नृत्य –यह राजस्थान की घुमंतू जाति बालदिया भाटों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

बिंदोरी नृत्य –यह झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह पर गैर नृत्य के समान पुरुषों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य है।

बिछुड़ो नृत्य –यह कालबेलियों महिलाओं में लोकप्रिय है। नृत्य के साथ बिछुड़ो गीत गाया जाता है।

भंवाई/भवई/भवाई नृत्य –भवई राजस्थान का एक पारंपरिक लोक नृत्य है। उदयपुर सभांग में गुजरात के सीमावर्ती इलाकों में भवाई जाति द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य जो अब व्यावसायिक रूप धारण कर चुका हैं। राजस्थान के पेशेवर लोक नृत्यों में "भवाई नृत्य" अपनी चमत्कारिकता के लिए बहुतप्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हैं।इसमें संगीत पर कम ध्यान दिया जाता हैं जबकि करतब अधिक दिखाए जाते हैं। इसमें नृतक सिर पर कई मटके रखकर नृत्य करता हैं।

इस नृत्य में विभिन्न शारीरिक करतब दिखाने पर बल दिया जाता है।यह नृत्य का एक बहुत ही कठिन रूप है और इसे केवल कुशल कलाकारों द्वारा ही किया जा सकता है। इस नृत्य की मुख्य विशेषताएं नृत्य अदायगी, शारीरिक क्रियाओं के अद्भुत चमत्कार तथा लय की विविधता हैं। भँवाई नृत्य में विभिन्न कलाओं को दर्शाया जाता है।इनके नृत्य और वाद्य वादन में शास्त्रीय कला की झलक मिलती हैं।

यह उदयपुर संभाग में अधिक प्रचलित है।यह मेवाड़ क्षेत्र की भवाई जाति की महिला नर्तकियों द्वारा सिर पर 8 से 9 घड़े रखकर सामूहिक रूप में किया जाने वाला नृत्य है। अच्छी तरह से कुशल नर्तकियां कई मिट्टी के बर्तन या पीतल के बर्तनों को संतुलित करती हैं और फिर एक गिलास के ऊपर और कभी–कभी नग्न तलवार पर पैरों के तलवों के साथ नृत्य करती हैं।त्योहारों, शादियों तथा अन्य कई अवसरों पर भवई नृत्य का आयोजन किया जाता है।यह मूलतः पुरुषों का नृत्य है लेकिन आजकल भँवाई नृत्य पुरुष व स्त्री दोनों के द्वारा किया जाता है।इस नृत्य में नृत्य करते हुए पगड़ियों को हवा में फैला कर कमल का फूल बनाना, सिर पर अनेक मटके रखकर तेज तलवार की धार पर नृत्य करना, कांच के टुकड़ों पर नृत्य, बोतल, गिलास, व थाली के किनारों पर पैर की अंगुलियों से नृत्य करना आदि इसके विविध रूप हैं।

भवई नृत्य का जन्मजाता नागोजी/बाघाजी जाट केकड़ी (अजमेर)को माना जाता है।ऐसी मान्यता है कि भवई नृत्य कलात्मक रूप से गुजरात राज्य में उत्पन्न हुआ था और बाद में स्थानीय आदिवासी पुरुषों और महिलाओं द्वारा इसे अपना लिया गया और इसे एक अलग राजस्थानी रूप दे दिया गया। यह पारंपरिक लोक नृत्य राजस्थान के जाट, भील, रैगर, मीना, कुम्हार और कालबेलिया समुदायों की महिलाओं की असाधारण गुणवत्ता और क्षमता से विकसित हुआ है, जो लंबे समय तक अपने सिर पर कई बर्तनों में पानी लाती थी।भवई नर्तकियों के लिए पृष्ठभूमि संगीत के रूप में एक मधुर राजस्थानी लोक गीत आमतौर पर पुरुष संगीतकारों द्वारा बजाया जाता है, जो भवाई नृत्य की सुंदरता को बढ़ा देता है। पृष्ठभूमि संगीत के लिए पखावत, ढोलक झांझर, सारंगी, हारमोनियम जैसे कई वाद्य बजाए जाते हैं। नर्तकियों को खूबसूरती से अलंकृत किया जाता है। वे पारंपरिक रूप से रंगीन राजस्थानी कपड़े पहनती हैं, जिससे नृत्य अधिक आकर्षक हो जाता है।इस नृत्य के प्रमुख कलाकार बाड़मेर के सांगीलाल सांगदिया थे।रूपसिंह, दयाराम प्रदीप पुष्कर तथा तारा शर्मा वर्तमान में प्रमुख नृत्यकार हैं।"रूप सिंह शेखावत" प्रसिद्ध भवाई नृत्यकार हैं,जिन्होंने देश–विदेश में इसे प्रसिद्धि दिलाई है। बोरी, लोडी, ढोकरी, शंकरिया, सूरदास, बीकाजी, और ढोला–मारू नाच के रूप में प्रसिद्ध हैं।

भैरव नृत्य–भैरव नृत्य –होली के तीसरे दिन ब्यावर में बादशाह बीरबल का मेला लगता है। मेले का मुख्य आकर्षण बीरबल होता है और नृत्य करता हुआ चलता है।यह नृत्य ब्यावर (अजमेर) में बादशाह की सवारी के समय बीरबल करता था।

मछली नृत्य –मछली नृत्य बाड़मेर में बंजारों की स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला अद्भुत नृत्य है। जिसकी शुरूआत हर्षोल्लास के साथ होती है किन्तु अन्त दुःख के साथ होता हैं।

माँदल नृत्य –यह नृत्य माँदल वाद्ययंत्र के साथ किया जाता है। माँदल वाद्ययंत्र के कारण ही इसका नाम माँदल नृत्य पड़ा है।

मावलिया नृत्य –नवरात्रि में कथौड़ी जनजाति के पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।यह नवरात्रि में 9 दिन तक किया जाता है।इसमें 10–12 पुरुष ढोलक, टापरा, बांसली, एवं बांसुरी की लय पर देवी देवताओं के गीत गाते हुए समूह में गोल–गोल घूमते हुए नृत्य करते हैं।

मोरियो नृत्य –विवाह के समय गणपति स्थापना के अवसर पर गरासिया जाति के पुरूषों द्वारा यह नृत्य किया जाता हैं।

युद्ध नृत्य –राजस्थान के दक्षिणांचल के सुदूर एवं दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र के आदिम भीलों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है। भीलों द्वारा पहाड़ी क्षेत्रों में हथियार के साथ तालबद्ध नृत्य है। यह नृत्य उदयपुर, पाली, सिरोही, डूंगरपुर क्षेत्र में अधिक प्रचलित है।

रण नृत्य –मेवाड़ में विशेष रूप से प्रचलित है। युवकों द्वारा तलवार आदि लेकर युद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए नृत्य किया जाता है।

रणबाजा नृत्य –यह मेव जाति का विशेष नृत्य है। महिलाओं व पुरुषों के द्वारा किया जाने वालायुगल नृत्य है।

रतवई नृत्य –यह अलवर जिले में मेव जाति की स्त्रियों द्वारा सिर पर इण्डोणी व खारी रखकर किया जाने वाला नृत्य हैं। पुरूष अलगोजा व दमामी वाद्य बजाते हैं।

राड़ नृत्य –होली पर बांगड अंचल में राड़ खेलने की परम्परा है। कहीं कंडो से, कहीं पत्थरों से, कहीं जलती हुई लकड़ी से खेला जाता है। भीलूडा, जेठाना गांव में पत्थरों की राड़ खेली जाती है।

लांगुरिया नृत्य –करौली के यदुवंशी शासकों की कुलदेवी के रूप में कैलादेवी के लख्खी मेले में गीत गाया व नृत्य किया जाता है।कैला देवी (करौली) के मेले में किया जाने वाला नृत्य "लांगुरिया" कहलाता है। "लांगुरिया" हनुमान जी का लोक स्वरूप है। करौली क्षेत्र की कैला मैया, हनुमान जी की मां अंजना का अवतार मानी जाती है। नवरात्रि के दिनों में करौली क्षेत्र में लांगुरिया नृत्य होता है। इस में स्त्री–पुरुष सामूहिक रुप से भाग लेते हैं। नृत्य के दौरान नफीरी तथा नौबत बजाई जाती है। इस के दौरान लांगुरिया को संबोधित करके हल्के–फुल्के हास्य व्यंग्य किए जाते हैं।

लुंबर नृत्य –यह होली के अवसर पर "जालौर" क्षेत्र में सामूहिक रुप से महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसमें ढोल, चंग वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

लुहर या लहुर नृत्य –शेखावाटी क्षेत्र में किया जाने वाला अश्लील नृत्य है। इसमें किसी नृत्यांगना द्वारा अश्लील नृत्य किया जाता है।

लूर नृत्य –गरासिया जनजाति की महिलाओं द्वारा विवाह के अवसर पर यह नृत्य किया जाता है। इसमें महिलाओं के दो पक्ष बन जाते हैं। वर पक्ष और वधू पक्ष जिसमें वर पक्ष की महिलाओं द्वारा वधू पक्ष की महिलाओं से लड़की की मांग की जाती हैं।

वालर नृत्य –यह एक युगल नृत्य है। यह राजस्थान का एकमात्र ऐसा नृत्य है जो बिना किसी वाद्ययंत्र के किया जाता है। नृत्य का प्रांरभ पुरूष के द्वारा हाथ में छाता व तलवार लेकर किया जाता है। बिना वाद्ययंत्र के धीमे गति से आधा वृत बनाकर कंधे पर हाथ रख कर किया जाता है। पुरूष हाथ में तलवार व छाता लेकर नृत्य करते हैं। नाचते समय महिला व पुरूषों के दो वृत बन जाते हैं। भारत सरकार ने वालर नृत्य पर डाक टिकट जारी किया है।

वेरीहाल नृत्य –खैरवाड़ा के पास भाण्दा गांव में रंग पंचमी को वेरीहाल नृत्य किया जाता है। वेरीहाल एक ढोल है।

शंकरिया नृत्य –यह कालबेलियों का सर्वाधिक आकर्षक प्रेमाख्यान आधारित युगल नृत्य है। इस नृत्य में अंग संचालन बड़ा ही सुंदर होता है।इस नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांगना गुलाबो सपेरा है।

सालेडा नृत्य –राजस्थान के विभिन्न प्रांतों में समृद्धि के रूप में किया जाने वाला नृत्य है।

सुगनी नृत्य –यह नृत्य भिगाना व गोइया जाति के युवक युवतियों के द्वारा किया जाता है। युवतियां आकर्षक वस्त्रों में ही नहीं सजती अपितु अपने तन पर और चेहरे पर जड़ी–बूटी का रस लेपती है और वातावरण सुगंधित होता है, इसलिए यह सुगनी नृत्य के नाम से जाना जाता है।

सूकर नृत्य–यह नृत्य मेवाड़ क्षेत्र में आदिवासियों द्वारा अपने लोक देवता सूकर की स्मृति में मुखौटा लगाकर किया जाने वाला प्रमुख नृत्य है।

हाथीमना नृत्य–यह विवाह के अवसर पर भील पुरूषों द्वारा घुटनों पर किया जाने वाला लोकनृत्य है।

हिंडोला नृत्य –हिंडोला नृत्य जैसलमेर में दीपावली के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य है।

होली नृत्य –होली के अवसर पर कथौड़ी जनजाति की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है। होली के अवसर पर 5 दिन तक 10–12 महिलाओं द्वारा समूह बनाकर एक दूसरे का हाथ पकड़कर गीत गाते हुए गोले में किया जाने वाला नृत्य हैं। इस में पुरुष ढोलक, धोरिया, पावरी, एवं बांसली पर संगत करते हैं। महिलाएं नृत्य के मध्य एक दूसरे के कंधे पर चढ़कर पिरामिड भी बनाती हैं।

निष्कर्ष–राजस्थान में सामाजिक व्यवस्था और लोक कलाओं का गहरा संबंध है। लोक जीवन से जुड़े समस्त पहलुओं जैसे सामाजिक रीति–रिवाज, प्रथाएं, मान्यताएं, जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार आदि सभी की उत्पत्ति समाज में ही होती है। समाज के समुचित अध्ययन के लिए इससे जुड़ी लोक कला के अन्तर्गत लोकनृत्यों की महत्ता सुविदित है। राजस्थानी समाज में लोकनृत्यों का सम्बंध लोकगीतों से भी जुड़ा हुआ है। परिवार, विवाह–व्यवस्था, सामाजिक रिश्तेदारी एवं समाज में हर सामाजिक कार्यक्रम लोकनृत्य जुड़े हुए है। चाहे कोई भी व्रत, त्योहार, अनुष्ठान संस्कार आदि हो समाज मेंलोकनृत्यों की सांस्कृतिक विशेषताएं उद्घाटित होती रहती है। अतः राजस्थानी लोकनृत्यों का सामाजिक दृष्टि से अध्ययन अतिआवश्यक है।

संदर्भ सूची –

1. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
2. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, साहित्य सदन, कानपुर।
3. लोक साहित्य के प्रतिमान, कुंदनलाल उप्रेती, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़।
4. लोक साहित्य और संस्कृति, दीनेश्वर प्रसाद, लोकभारती इलाहाबाद।

Soft skills: A significant ladder for Professional students

Berlina A. Lopes 1, Research Scholar, JJTU, Rajasthan
Email ID: berlinarods@gmail.com
Dr. Satkala 2, Guide, JJTU, Rajasthan

Abstract:- Professional students in the twenty-first century need 'soft skills,' which are extra or additional skills. To boost employability and compete successfully in this dynamic global context, effective communication and interpersonal skills are essential. Soft skills give students a solid conceptual and practical basis for forming, developing, and leading teams. It plays an essential part in the entire development of the student's personality, consequently improving his or her professional possibilities.
Leadership qualities, teamwork, conflict resolution skills, interpersonal skills, self-management skills, decision-making capacity, futuristic thinking, continuous learning capacity,empathy,persuasion,negotiation,presentationskills, personal effectiveness, diplomacy, goal orientation, flexibility, and good customer service are some of the 'soft skills' that are required for success.
Key Words: - Soft skills, engineers, communication, employment
Introduction:-A skill is the learned ability to perform an action with predictable results within a given time, energy, or both. A skill can be general or specific. General skills in the work domain include time management, teamwork and leadership, self-motivation, and others, while job-specificskills are used only for a specific job. To assess skill, certain environmental stimuli and situations are usually required.An art is a skill that represents a body of knowledge or a branch of learning, as in medicine orwar. While skills are part of the arts, many do not belong to the fine arts. A practice is the application of a learned skill. Some arts and skills are the basis for trades or crafts. The modern economy requires a wide range of skills. Everyone has natural talents. Skills are acquired through training and experience. Work place skills come in two varieties – Expertise and Weaknesses. Both skills are required for success.Technical skills are needed to do specific tasks like cooking, programming, or teaching well. They relate to a job. You may have acquired technical skills through work, school, or training. Practice, education, and training can improve skills. These skills are frequently listedin job descriptions to describe primary duties. Soft skills are needed to work well with others and make your organization more productive. Soft skills are so important that they often determine whether or not an employee is hired or promoted. School can teach some soft skills. But most soft skills are learned in everyday life and can be improved at any time.Technical skills are often easier to assess than soft skills. The objective measurement of machine or a product and levelness is easy to determine, but judging a person's communication skills is subjective.

Some Important Observations:-Engineering departments are increasingly recognizing the importance of teaching students efficient study techniques early in their university studies as well as essential professional skills prior to graduation. These on the other hand, are notoriously difficult to teach to bigaudiences using typical lecture methods. According to observations, pupils have a low rate of absorption and hence are unable to benefit from these talents both personally and professionally. (Pulko et al., 2003)

Since its independence, India, as a globalized and developing country, has made little

systematic progress in terms of education. The government is making head way in reaching out to people from all walks of life. The country's economic situation has improved, resultingin the upscaling of communication technology. The internet's arrival has greatly aided thepromotionof education across all verticals. (Oza, 2019).To boost employability and compete successfully in this dynamic global context, effective communication and inter personal skills are essential. Soft skills give students a solid conceptual and practical basis for forming, developing, and leading teams. It plays an essential part in the entire development of the student's personality, consequently improving his or her professional possibilities. Leadership quality, teamwork, conflict management skills, inter personal skills, self-management skills, decision-making capacity, futuristic thinking, continuous learning capacity, empathy, persuasion, negotiation, presentation skills, personal effectiveness, diplomacy, goal orientation, flexibility, and good customer service are some of the 'soft skills' that are required for success. (Balaji and colleagues,2009).The major responsibility of an engineering curriculum is to prepare engineering students withsolid technical capabilities. However, in today's competitive global market and changing work environment, engineering schools are pushed to come up with novel approaches to teach classes so that graduates are prepared to take on the difficulties that face twenty-first-century engineers. (Kumar at al, 2007).Three abilities that lead to enhanced personal effectiveness are personal management, personal leadership, and coaching. (Berglund and colleagues, 2014)

Soft Skills and Engineers:-Engineers frequently overlook soft skills in favor of technical expertise. In practically every profession and business, soft skills are essential. Today, some of the broader categories to explore under the heading of Soft Skills are:

• **Communication—**explaining difficult technical solutions to clients is becoming increasingly vital. Engineers, for example, are more interested in technical details than abstract theories or high-level research when clients are more interested in finding answers to their specific problems and comprehending the benefits to their organization. So, practice communicating highly technical information in a straight forward manner while keeping your client's perspective in mind.

• **Problem-Solving-**Typically, problem-solving entails considering the advantages and disadvantages of numerous possibilities and selecting the least hazardous way. Problem-solving abilities are frequently assessed during interviews since they demonstrate how applicants deal with difficulties. After all, project managers and other leaders value team members who aren't irritable about trivial concerns. Problem-solving abilities can aid in the smooth running of projects and the expansion of businesses.

• **Organization-** Organizational skills are sometimes more technical than soft skills. Good code, for example, is well-structured. Non-technical organizational abilities, on the other hand, are something you should work on. Being on time, managing work, and not taking ontoo much are all examples. One area where you may improve is avoiding the urge to become lost in your task.

• **Leadership—** As a soft skill, taking responsibility for one self and others is a solid description of leadership. To be a leader, you don't have to be a manager. When things arerough, keeping a sufficient distance from a task allows you to view the wider picture, set an example, and motivate others.

• **Collaboration-**You'll be doing a lot of engineering chores by yourself. Coding is an excellent example. Individuals, on the other hand, are unable to finish big engineering projects on their own. Instead, they necessitate collaboration and the establishment of teams.

Collaboration is a non-negotiable soft skill in engineering. Employers expect you to be as dedicated to the team and company goals as you are to your own.

• **Adaptability-**Due to quickly expanding technology, changing consumer demands, and therising usage of agile development methods, adaptability is a vital soft skill to cultivate. Employees that can swiftly adjust to new situations are valued by employers.

• Engineering innovation is about perceiving things from different angles. This important soft skill might assist you in coming up with unique ideas or project solutions. Creativity can assist in the solution of a problem or the management of an unforeseen scenario.

• Active listening, social awareness, and feedback management are examples of inter personal skills. While it is not always possible to have outstanding relationships with coworkers and others, strengthening your inter personal skills will benefit you, your coworkers, and your employer.

• **Go above and beyond for customers-** Finally, going above and beyond for customers fosterslong-term loyalty. After all, the success of most businesses is dependent on their clients. As aresult, businesses are more focused on their customers than ever before. By honing your customer service skills, you may assist the organization.

More than technical skills are required to be a successful engineer. The days of coding while shutting off the rest of the world are long gone. Engineers that can effectively connect with their team on a regular basis are now sought for by recruiting managers and recruiters, in addition to technical expertise. Why is it so crucial for engineers to have soft skills? What you do as a software engineer is always part of a broader system, no matter how big or tiny your organization is. According to David Kaminsky, senior engineering manager at Stub Hub, you must be able to communicate and work cross-functionally with product managers, designers, and others who are contributing to the design of the system you will help execute (and a former director of engineering at The Muse). Soft skills are about more than just making yourself and others happy. They can assist you in developing a better product and providing a better client experience.

Communication's Function:- Communication is essential in any career, but it is particularly important in engineering. Hiring managers look for individuals who can clearly articulate themselves. It's just as crucial to work with non-technical folks as it is to work with other engineers. Whether it's to understand project needs or explain to a stakeholder why something can't be done the waythey want it, you'll almost probably have to work with employees from other departments atsome time. Employers look for communication as the first soft skill in the early phases of the employment process. The soft skills outlined above will take a lifetime to master. Instead, concentrate on your flaws, set goals, create a plan, and keep track of your progress.

This translates to greater engineering victories.

Communication soft skills include:

- Active listening is a skill.
- Public speaking and presentation
- Writing skills
- Verbal and non verbal communication
- Negotiations
- Convincing
- Direction
- Collaboration
- Sympathy

How to Use It

Lillian Landrum, Muse's Director of Talent Acquisition, suggests starting small. She has hired engineers for ten years. It can be as simple as a quick chat with a colleague from another department. “Get to know people outside your team and their jobs. “Go to some business happy hours or join a committee,” she suggests. It can help you develop those skills to move to a different work station and observe what another engineer is doing.

In addition, engineers can look for opportunities to present at internal luncheons or meet ups. After that, solicit feedback from attendees or send a [follow-up] survey.”

“We regularly ask [our fellows] to present, write blog posts, and communicate with our employees and we provide feedback. The summer months do make a difference. By graduation, they are much better communicators.”

By stepping out of his comfort zone, Kaminsky improved his communication skills. Whetheryou're an apprentice or a senior engineer, regularly seeking out opportunities to express yourideas and communicate with your peers is the best way to keep your communication skills sharp.

Mindful curiosity:-They want to know you're a lifelong learner who wants to improve and keep up with industry trends. “Technology evolves quickly,” says Hartsock. “What you learned six months ago mayno longer be applicable [in your current role].” Hartsock also stresses the importance ofasking questions about current projects, tasks, and goals. Hartsock claims that the answers tothese questions lead to advances in engineering products and processes. “We want engineers to wonder why they do things the way they do. Why are we doing it? How should they be done?'That intellectual rigor is critical. 'Curiosity is linked to the following soft talents:

- Solving issues
- Ingenuity
- Critical thinking ability
- Invention
- Fixing

- Imagination
- Study

Soft skills are needed to take the feedback mechanism constructively. Best practices for this soft skill may vary depending on the situation and the person giving or receiving feedback.Whatever happens, remain professional and don't take anything personally. Some of the skills related to feedback receptivity include:

- Flexibility
- Cooperation
- Self-awareness
- Tenacity
- Team work
- Respect
- Liability
- Managing emotions
- Humility

Soft skills take practice:-Soft skill development can be difficult and time consuming, but you are not alone. Consider enlisting the help of unbiased observers. Landrum suggests finding a mentor, especially if you're new to the business. “You can ask questions weekly, monthly, or quarterly,” she says.“Especially for [younger] engineers, you want help when you need it.” A regular co-worker or employer may be able to point out areas where you need to improve. Also, if you have a professional connection who has mastered the soft skills you're working on, ask them for advice.

Soft skills in Engineering:-The ability to maintain positive inter personal relationships with peers, supervisors, and clients is an example of an engineering soft skill. Engineers must communicate and collaborate with other professionals as part of their jobs. Engineers with soft skills can collaborate better and work more efficiently. Here's how to improve your engineering soft skills. Employers seeking engineering experts seek a mix of soft skills. Listed below are **some common engineering soft skills**:

Verbal and non-verbal communication-Engineers need this soft skill! Effective communication requires the ability to convey information in a clear and understand able manner. This applies to meetings, presentations, training sessions, emails, memoranda, and strategy papers.

Stress and Tolerance- Engineering, especially for managers working on difficult projects, canbe stressful. Stress tolerance is a skill that can help you manage your team's stress. This skill allows you to identify and eliminate potential triggers. As part of stress management, schedule regular team down time and open communication.

Presenting in public- Engineers regularly present to coworkers, clients, top management, and other stakeholders. Presentation skills include convincingly speaking in front of an audience and breaking down complex information into smaller, more digestible chunks. They can also hold an audience's attention and persuade them in a certain direction.

Negotiation skills- Engineers need to be able to negotiate as well as persuade. A skilled negotiator can maximize value for all parties. In order to negotiate successfully, you must first build trust with the other parties. Working with contractors, vendors, and even internal departments will require negotiation skills.

Future Planning-Planning is ability to create and implement business strategy. Before deciding on the best outcome for the company, effective strategic planning requires the ability to weigh all possible outcomes. Engineers need this soft skill to effectively plan projects and allocate resources.

Time management- Project management and meeting deadlines require time management. Time management includes delegating, tracking productivity, and avoiding micro management. Setting realistic deadlines also helps you avoid taking on more than you can handle.

Innovate and Create-Engineers are born problem solvers. They use technology to createconsumer goods. So, engineers can greatly benefit from creativity as a soft skill. It requires a wet and the ability to see beyond the present. Remember that most of today's technologies were once just ideas in engineers' heads.

Team work and communication- Engineers rarely work alone. Effective invention requires team work. As a team, you must be able to communicate effectively, share information, and tolerate opposing viewpoints. It also means taking responsibility without blaming others and taking credit when things go well.

Research and analysis skills- A good engineer can conduct effective research. Based on evidence, they can assess their findings and make acceptable judgments. Research is an important engineering soft skill because it is often the first step in developing a new idea. Engineers must research existing work in the field and gather data from appropriate sources.

Capacity to plan- You can use organization to create a structure to achieve your goals. It lets you work on multiple projects at once. Engineers must be organized to create efficient programmers, manage large projects, and manage their time.

Adaptability-As technology advances, so do new engineering frameworks. Engineers must be adaptable to stay relevant.A self-improvement engineer. This skill will also prepare you to deal with clients whose needs change frequently, as well as new management styles.

Ethics-Unlike other professionals who have direct human contact, such as healthcare workers, engineers must consider ethics in their work. Engineering solutions must be safe touse, long-term sustainable, and beneficial to society. CAN HUMAN BE HAZARDOUS TO Will my design engender prejudice against certain groups? To make ethical design decisions,youneed to have ethics as a soft skill.

Dedication-Engineers need dedication to complete tasks.

It's dedication that allows you to put in the extra effort. It will keep you motivated and inspired to work every day.

Conclusion:-How to impart soft skills: In the domains of education and operations research, the Dreyfus model of skill acquisition is a model of how learners gain skills through formal instruction and practice. The model was proposed by Brothers Stuart and Hubert Dreyfus in an 18-page report for the United States Air Force Office of Scientific Researchin1980The model proposes that a student passes through five distinct stages, which were originally determinedas: novice, competence, proficiency, expertise, and mastery. This suits the skill acquisition the best.

The four binary qualities that make up the Dreyfus model are:

• Memorization (non-situational or situational)

• Appreciation (decomposed or holistic)

• Make a choice (analytical or intuitive)

• Consciousness(monitoringor absorbed)

References:

- Balaji, K. V. A., and P. Somashekar. "A Comparative Study of Soft Skills AmongEngineers." IUP Journal of Soft Skills 3 (2009).
- Berglund, Aseel, and Fredrik Heintz."Integrating soft skills into engineering education for increased student through put and more professional engineers."Pedagog is ka inspirations konferensen-Genom brottet (2014).
- Kumar, Sanjeev, and J. Kent Hsiao. "Engineers learn “soft skills the hard way”: Planting a seed of leadership in engineering classes." Leadership and management in engineering7.1 (2007): 18-23.
- Oza, Preeti. "Equity and Equality in Higher Education-India Calling…." International Journal of Inter religious and Intercultural Studies 2.2 (2019):18-24
- Oza, Preeti. "Inclusivity in Education: Case Study of Industry-Academia Efforts inSkillBased Education."
- Oza,Preeti."Neo-Liberal Ideologies in Higher Education." Higher v/s Hired Education 41 (2018).

दलित साहित्याचा सामाजिक दलित कादंबरीवर असलेला प्रभाव

भूषण प्रदीपकुमार देशमुख (संशोधक विद्यार्थी)
श्री. जगदीशप्रसाद जाबरमल टिबडेवाला विद्यापीठ ,झुंझुणू, राजस्थान, भारत
मार्गदर्शक -: डॉ. वंदना स. भोयर सहाय्यक प्राध्यापक
(मराठी विभाग , इंदिराबाई मेघे महिला महा. अमरावती)

प्रस्तावना-:'कादंबरी' या वाड्.मय प्रकारांच्या घटकांचाही विचार मांडला आहे.'कथानक' हा कांदबरीचा गाभा आहे. केंद्रवर्ती मध्य आहे. कथानक नसेल तर कादंबरी साकार होऊ शकत नाही. कथाबीजाभोवतीच घटना, व्यक्तिरेखा, वातावरण, निवेदन, भाषा हे सगळे घटक अवलंबून असतात. त्यामुळे कथानक हे महत्वाचे असते.

दलित कादंबरी संकल्पना व स्वरूप:-सद्यस्थितीमध्ये दलित साहित्याला आणि दलित लेखकाच्या निर्मीतीला एक वैशिष्ट्यपूर्ण स्वरूप प्राप्त झाले आहे. दलित लेखकांनी लिहिलेल्या साहित्यामध्ये, काव्य, आणि कथानक साहितय हे एकूण दलित साहित्याचे महत्वपूर्ण अंग म्हणावे लागेल. त्यामानाने दलित कादंबरी, नाटक, समीक्षा मोजक्या प्रमाणातच अभिव्यक्त झाले परंतु दलित कादंबरी, नाटक समीक्षा मोजक्या प्रमाणातच अभीव्यक्त झाले परंतु दलित जीवनाचे चित्रण केवळ दलित लेखकांनीच केले आहे. असे नाही. विसाव्या शतकाच्या प्रारंभापासून ते उत्तरार्धापर्यंत, दलितेतर लेखकांनीही अधूनमधून दलित जीवनावर लिखान केले आहे. प्रारंभीच्या काळात ते अल्पशा प्रमाणात आढळून येते. परंतु नंतर मात्र अधिकांशाने लिखाण झालेले आढळते.स्वातंत्र्योत्तर कालखंडामध्ये मराठी वाड्.मयामध्ये ठळक आणि वैशिष्ट्यपुर्ण बदल घडून आले. नवीन पिढी नव्याणे लिखाण करू लागली. कारण समाजप्रबोधनाचे पहिले पर्व संपूण दुसरे पर्व सुरू झाले होते. महात्मा फुले, लोकहितवादी यांनी केलेले सामजप्रबोधनाचे कार्य संपुष्टात येऊन, टिळक, गांधी - आंबेडकर युग सुरू झाले. पुढे देश स्वातंत्र्यही झाला. पण मराठी वाड्.मयामध्ये मात्र एक विशिष्ट साचा, अनुभव - अभिव्यक्तीची एक बंदिस्त चोकट तयार झालेली होती. विशिष्ट एका वर्गाची मक्तेदारी सुरू झाली होती. वाड्.मयातून विशेषत्वाने मध्यमवर्गीयांचे चित्रण हेात होते. शहरी - नागरी समस्यांनाच प्राधान्य दिले जात हेाते. फडके - खांडेकर प्रणीत साहित्यातील रंजनवाद, कालावाद, जीवनवाद हेच अधिकांशाने रूढ झाले होते. तसे पाहता ज्या दलित जीवनाचा साधा खराखुरा परिचय, पांढरपेशा वर्गाच्या माहितीतही नव्हता. नवी जाणिव धीटपणाने व हक्क भावनेने, अधिकर म्हणून शब्दबध्द होऊ लागली होती. ती लिखीत स्वरूपात वाड्.मयामध्ये अवतरत हेाती. साहजिकच मराठी साहित्यामध्ये अधिक समृध्दता निर्माण झाली.कंदबरी या वाङ्मयमय प्रकारात कथानक हा महत्वाचा घटक असतो. सुसंगत अथवा विसंगत असो,. परंतु कथानकाशिवाय कांदबरी पूर्ण होऊ शकत नाही. कथानकासाठी कादंबरीकाराला

कोणतेही बंधन नसते. म्हणूनच अनेकविध कथानके कांदबरीमध्ये आढळतात. त्यातील मुख्य बीज किंवा हेतू, उद्दिष्ट्ये एकच असले तरी कथानक आणि त्यातील घटना, प्रसंग वेगवेगळे असतात. एकमेकाद्वीतीय नसतात. दलित कादंबरीमध्ये हेच सूत्र आढळतेदलित साहित्याची ठळक वैशिष्ट्ये दलित कादंबरीत आढळतात.डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार, साम्यवादी विचारसरणी, दलित चळवळ दलित समाजाबद्दल असणारी बांधिलकी, विज्ञानाधिष्ठितता, परिवर्तन, विद्रोह, नकार संघर्ष, शिक्षणाचे महत्व या वैशिष्ट्यांनी मुक्त अशीच दलित कादंबरी आहे.तरीसुध्दा दलित कादंबरीकारांनी वरील वैशिष्ट्यांव्यतिरिक्त अशांकाही कादंबऱ्या लिहिल्या आहेत. कथानक आणि आशय लक्षात घेऊन, दलित कादंबरीचे वेगवेगळे विभाग पाहून, त्यांची वर्गवारी केली आहे. परंतु कोणतीही कादंबरी एकच दृष्टीकोण प्रकट करीत नाही. ती अनेक दृष्टिकोण अनेक पैलू व्यक्त करते. परंतु त्यामध्ये अधिकाधिकपणे ज्या दृष्टिकोणाला महत्व दिले आहे. तो दृष्टिकोण लक्षात घेऊन, अभ्यासकाने वर्गवारी केली आहे. पण त्या कादंबरीवर एकाच दृष्टिकोणाचे शिक्कमोर्तब करता येणार नाही. असे करणे संयुक्तीक ठरणार नाही. तसेच **1960** नंतर मराठी साहित्यात दलित साहितयाचा एक जोमदार प्रवाह निर्माण झाला. या साहित्याने आपला एक विगेळा ठसा उमटविला. मराठी साहित्यात अनेक नव्या गोष्टींची भर घातली हे सर्व परिचीत आहे. कविता, कथा, आत्मकथन इत्यादी वाड्.मयप्रकारांच्या संदर्भात हे जसे आणि जितके खरे आह. तसेच ते दलित कादंबरी बाबतीतही मानावे लागले. आशय आणि अभिव्यक्तीच्या संदर्भातील दलित कादंबरीचे वेगळैपण, निराळेपण चटकन लक्षात राहणारे आहे. कविता कथा, आत्मकथन इत्यादी वाड्.मयप्रकाराच्या दृष्टीने दलित कादंबरी हा साहित्यप्रकार क्षीण वाटतो. संख्यात्मकदृष्ट्या विचार करता हे पटते. परंतु गुणात्मक दृष्ट्या पाहता, वेगवेगळ्या स्तरांवरील दलितांचे जीवन चित्रण त्यांचे विवीध प्रश्न हाताळणाऱ्या आणि इतर विषयांवरील लिखान झालेल्या दीडशेहून अधिक कादंबÚया दलित लेखकांनी लिहिल्या आहेत. ही वस्तुस्थिती आहे. दलितेतर लेखकांनी लिहिलेल्या कादंबऱ्याह्याआहेतच.मराठी कादंबरीच्या बदलत्या आशय - विषय - अभिव्यक्तीच्या रूपांचा शोध घेत असतानाच दलित समाजातून पुढे आलेल्या संवेदनाक्षम मनाचा माणूस साहित्याकडे आपपर भावाने पाहू लागला. आतापर्यंतच्या बेगडी वातावरणामध्ये सिध्द झालेल्या कादंबरी वाड्.मयामध्ये त्याचे सत्यचित्र कुठेच नव्हते. त्यामुळे अधिकच अस्वस्थ झाला. आपले जीवन कादंबरीमय व्हायला हवे. याची तीव्र जाणीव त्यांना झाली. या जाणिवेतूनच दलित कादंबरी उदयाला आली.

स्वरूप:-दलित कादंबरीचे निराळेपण तिच्या आशयानुरूप भाषाभिव्यक्ती दलित कादंबरीमध्ये व्यक्त होताना दिसते. ती भाषा व आशय तेव्हा एकजीव झालेले असतात. अत्यंत प्रत्ययकारी बोलीभाषा प्रमणभाषा यांचा वापर करून, दलित जीवनाचे विविधांगाने दलित कांदबरी चित्रण करते. दलितांच्या उद्योग-व्यवसायांचे त्यांचे चित्रण, त्यांच्या फाटक्या संसाराचे चित्रण, त्यांच्या उघड्या-बोडक्या वस्तीचे चित्रण, धुराने कोंडलेल्या घरांचे चित्रण, ज्या घरांना भिंती, छप्परच नाही त्यांचे

चित्रण, सर्व बाजूंनी दुःखाने घेरलेल्या जीवनाचे चित्रण, दारिद्र्याचे चित्रण कळण्या-कोंड्याच्या जेवणाचे चित्रण, त्यांच्यावर होणाÚया अन्यायाचे चित्रण, त्यातून होणाऱ्या वेदना - दुःखाचे चित्रण अत्यंत सूक्ष्मपणे, प्रत्ययकारी जिवंत भाषेमध्ये केलेले चित्रण आलेले दिसते. उदा. अण्णाभाऊं साठे यांनी केलेल्या 'माकडीच्या माळा' चे चित्रण वाचकांच्या डोळांासमोर हुबेहुब उभे राहते भाषेच्या सामथ्र्याचा एक नमुना पहायला मिळतो. या कांदबरीच्या प्रत्येक घटना ह्या मुर्त स्वरूपात आपल्या डोळ्यांसमोर येवु लागतात. व ते पाहता आपण जणु त्या माळावरच आपण उभे आहोत असा भास निर्माण होतो.

सामाजिक दलित कादंबरी:-सामाजिकता दलित कादंबरीचे हे प्रमुख वैशिष्ट्य आढळते. मूलतःच दलित कादंबरीकार सामाजिक बांधिलकी मानणारे आहेत. त्यामुळे प्रामुख्याने सामाजिक बांधिलकीची दलित कादंबरी मोठ्या प्रमाणात असणे स्वाभाविकच आहे.परंपरागत चालत आलेली अस्पृश्यता, दैन्यावस्था, दारिद्रां, अज्ञान, अंधश्रध्दा, भूक या सगळ्याना आपल्या जीवनातून दूर सारण्याचा, सतत प्रयत्न केला जातो. यासाठी दलित समाजाला डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी दिलेली वैचारिकता हीच ज्ञानाचे अधिष्ठान होय. ज्ञानामुळे, शिक्षणाने सामाजपरिवर्तन करण्यासाठी आलेले आत्मभान, त्याच्यामध्ये निर्माण झालेला आत्मविश्वासा या कादंबऱ्यामधून प्रत्ययास येतो. दलित कादंबरीकार आपल्याबरोबर आपला समाजही जागृत करतो. समाजजागृतीबरोबर नवसमाज घडवून इच्छितो. त्याकरिता विद्रोह करतो. परंपरेला धक्का देतो. आंबेडकरांचे विचार खेड्यापाड्यांतील अडाणी, निरक्षर, दलित बांधवांपर्यंत पोहचवितो. अंधश्रध्दा दूर करून वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्थापित करतो. या बदलासाठी प्रस्थापित परंपरेशी, प्रस्थापित समाजाशी संघर्ष करतो. या संघर्षात अपयशी ठरतो. प्रसंगी त्याच्या प्राणावरही बेतले जाते. पण माघार घेतली जात नाही.दलित समाजाच्या भीषण अवस्थेचे, दारिद्र्याचे, अज्ञानाचे, गावकुसाबाहेर असणाऱ्या वस्तीचे, तिथल्या पिचलेल्या माणसांचे दुःख, माणुसकीला पारख्या झालेल्या, हाडामांसाच्या माणसांवर होणारे अन्याय; दलितांच्या वस्तीतली रोगराई, अन्नासाठी, पाण्यासाठी दाही दिशा भटकणारी ही माणसे, पराकोटीचा अपमान सहन करताता. ह्या अवलेहनेविरूध्द केलेला संघर्ष, प्रत्यक्षात अनुभवलेले दलित जीवन, प्रस्थापित वर्गासमोर मांडून, आपल्या स्वत्वासाठी; आपल्या हक्कासाठी जागृत झालेला दलित समाज, काही वैशिष्ट्यपूर्ण अशा कादंबऱ्यातून प्रत्ययास येतो.आपल्याबरोबर आपल्या दलित बांधवांना झडझडून जागे करून, एका नव्या मार्गाकडे जाण्यासाठी प्रेरणा देणे, आपल्यासमवेत दलित समाजातील अतिसामान्य लोकांना, विविध स्तरातील बंधनमुक्तीचा मार्ग समजावून देऊन माणसुकीचे ध्येय प्रस्थापित करणे; ही एक प्रकारची, त्या लेखकाने स्वीकारलेली सामाजिक बांधिलकीच होय. ती वेगवेगळ्या अनुभवप्रकारातून प्रकट झालेली प्रत्ययास येते. हे अनुभव विविध पातळ्यांवरील आहेत. विविध भौगोलिक भागातील आहेत. वैयक्तिक आणि सामाजिक स्तरांवरील अनुभवही व्यक्त झाले आहेत.

1) प्रतिज्ञाः तुकाराम अंबादास

पुरोहित 'प्रतिज्ञा' या कथेतून तुकाराम अंबादास पुरोहित यांनी, सक्रिय दलित चळवळीची ओळख करून दिली आहे. स्वातंत्र्यपूर्वकालखंडामध्ये सवर्णीय लोकांतही अस्पृश्योध्दाराची जाणीव होती; असे म्हणता येणार नाही. तर प्रत्यक्षात ती साकार करण्यासाठी लढे दिले जात होते. याचे कारण डॉ.बाबासाहेबांचे विचार होत. समानतेचा मांडलेला विचार, शिक्षित तरूणतरूणींना पटला होता. त्याकाळी हा एक वेगळा दृष्टिकोण होता. तो इतरेजनांना ठाऊक असावा एवढाच प्रपंच, या दीर्घ कथेमागील दिसतो. कालमानानुसार तुलना केल्यास, तुकाराम अंबादास पुरोहित यांनी मांडलेला विषय, तसा नावीन्यपूर्ण आहे. हे लक्षात येते. वाड्.मयप्रकाराचा घोळ न करता 'प्रतिज्ञा' चे स्वरूप, बंदिस्त लघुकादंबरीचेच आहे.स्वातंत्र्यपूर्व कालखंडामध्ये जातिभेद तीव्र स्वरूपात होता. हा एकोणीसशे वीस ते तीस या दरम्यानचा कालखंड आहे. गांधी आणि आंबेडकर यांचे सामाजिक कार्य वेग घेण्यापूर्वीचा हा काळ आहे. या काळात 'अस्पृश्य' हा शब्द उच्चारणेच कठीण होते. त्यासाठी धिटाई लागायची. नाहीतर अनेक संकटांना सामोरे जावे लागत असे. अशावेळी सवर्णीय आणि ब्राह्मण वर्गातील एका मुलीने, अस्पृश्यांच्या हक्कासाठी, त्यांच्या समानतेच्या हक्कासाठी लढा देणे, ही साधी गोष्ट नाही. प्रसंगी घरादारांवर, सगळ्ा सुखसोयींवर पाणी सोडून, दलितांसोबत राहून, त्यांच्या प्रश्नांसाठी संघर्ष करावा लागतो. एवढे सगळे कष्ट कोण उपसणार ? पण ज्या सवर्णीय तरूणांना आंबेडकरवादी विचार पटले आहेत तो नक्कीच अस्पृश्यांच्या हक्कासाठी लढा देईल. ज्याला 'माणुसकी' हा धर्म पटलेला आहे. त्याला कसलीही भीती वाटणार नाही.त्सा स्पृश्यास्पृश्य हा भेदभाव मानवनिर्मित आहे. हा भेदाभेद आपण नष्ट करू शकतो. दलितांच्या वाट्याला येणाÚया जीवनाचा, दारिद्र्यांचा, दुःख, अवहेलनेचा सूक्ष्मपणे अभ्यास केल्यास, त्यांना जाणून घेतल्यास; मानवी मनातील दुरावा कमी होऊ शकतो.त्या काळच्या पार्श्वभूमीवर हे कथानक मांडले आहे. एका दलित स्त्रीची व्यथा मांडून, तिच्या हक्कासाठी सवर्णीय तरूणतरूणी संघर्ष करून, प्रसंगी विजय मिळवतात, याचे चित्रण आले आहे. या कथेची नायिका कमल, योगायोगाने एका दलित स्त्रीचे मूल, पाण्यात गटांगळ्ा खात असताना वाचवते. पुढे त्यातूनच त्या दोघींचा परिचय होतो. दलित स्त्रीची व्यथा ऐकून कमल तिला आणि तिच्या बाळाला आपल्या घरी घेऊन येते. पण कमलचे वडील, तिलाच काय त्या दलित स्त्रीला आणि कमललादेखील, आपल्या घरी राहण्यास परवानगी देत नाही. त्याबरोबर कमल आपले घर सोडून एका दलित स्त्रीसोबत भाड्याने घर घेऊन राहते. त्यांचे जीवन जवळून पाहते. पुढे दलितांच्या हक्कासाठी उपोषण करण्यास तयार होते. या महान कार्यासाठी कमलला तिचा जोडीदार वसंतराव हे देखील मदत करतात. ज्या सुख्योयी सामान्य सवर्णीयांना उपलब्ध होतात, त्या सर्व सुखसोयी दलित बांधवांना उपलब्ध व्हाव्यात यासाठी त्यांनी उपोषण सुरू केल होते. अस्पृश्यांना मंदिरे, पाणवठे, दुकाने आणि इतर सर्व सोयी, सामान्यांसारख्याच उपलब्ध व्हाव्यात. जेणेकरून अस्पृष्यांचे जगणे थोडेफार सुकर होईल. त्यांच्या या लढ्याला, महात्मा गांधी, डाॅ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी तारा

पाठवून सदिच्छा आणि प्रेरणा देतात. त्यामुळे कमलला मागण्या सवर्ण समाजाला मान्य कराव्या लागतात.एवढे होत असतानाही, समाजातील सानातनी हिंदू लोक मात्र त्रास देत असतातच. दलित वस्तीमध्ये ते आग लावतात. आणखी अनेक संकटे येतात. हाा जीवघेण्या प्रकारांतून, कमल आणि वसंतराव यांना जावे लागते.सवर्णीय लोकांनी अस्पृश्यांच्या मागण्यांसाठी, हक्कांसाठी केलेल्या शांतताप्रिय अशा संग्रामाचे, त्या काळाीतील भाषेत कथन केले आहे. येथे लेखकाचा व्यापक दृष्टिकोण लक्षात येतो. कमल आणि वसंत यांच्या मागण्या, सनातनी, कर्मठ हिंदूंची मनोधारणा बदलण्याचा प्रयत्न केला आहे. 'माणुसकी' हा एकचधर्म या देशात आणि देशवासीयांत रूजला पाहिजे अशी जबरदस्त इच्छा आहे. म्हणूनच कमल आणि वसंतराव, आपला प्राण गेला तरी बेहेत्त, पण अस्पृश्यांच्या मागण्या पूर्ण करून घ्यायच्या हट्टास पेटले होते. हा एक मोठा आगळावेगळा बदल त्याकाळी होता.तुकाराम अंबादास पुरोहित यांनी त्याकाळी प्रचलित असणाÚया संस्कृतमिश्रित, पांडित्यपूर्ण भाषेचा वापर खुबीने केला आहे. त्याकाळचे वातावरणही खास उभे केले आहे. आलंकारिक, नाट्यमय भाषेचा वापर करून, वाचकाला एका वेगळाा वातावरणामध्ये ते सहज घेऊन जातात.खरे तर पुरोहितांनी कल्पकतेने त्याकाळी केलेले हे एक धाडसच आहे. सवर्णीय ब्राह्मण यांनी दलितांच्या मागण्यांसाठी लढावे, ही कल्पनाच अनोखी आहे. पण कमल आणि वसंतराव यांच्या माध्यमातून, पुरोहित यांनी हे धाडस केले आहे. यातून त्यांना असे सूचित करायचे आहे की, भविष्यकाल हा माणुसकीने भरलेला असेल. स्पृश्यास्पृश्य हा भेदभाव या पृथ्वीतलावर नसेल. प्रत्येकाच्या मनातील अस्पृश्यता नष्ट होईल.डाॅ. आंबेडकरांनी सूचित केलेल्या विचारांचा, हा पहिला मौलिक असा कलाविष्कार आहे. विचारांची झेप, गतिमान व्यक्तिरेखा, मार्मिक संवाद, भविष्यवेधी कल्पक कथानकनिर्मिती आणि समग्र लेखनाचा हाताळणी हाा सर्वदृष्टीने 'प्रतिज्ञा' लक्षणीय असे लेखन ठरते.

2) काजळी रात्र: ना. रा. शेंडे

ना. रा. शेंडे यांची 'काजळी रात्र' ही कादंबरी दलितोध्दार करण्यासाठी एक अज्ञात इसम धडपड करतो आहे; याचे अद्भुतरम्यतेने चित्रण करतात.खेडेगावात दलित समाजावर होणारे अन्याय, अत्याचार, दलितांचे दारिद्राी, अज्ञान, शिक्षण यासाठी पैशांची गरज असते. त्यांना आधाराची आवश्यकता असते. अज्ञान इसम आपल्या साथीदारांच्या मदतीने धनाढ्य, शेठ सावकार यांच्या घरी दरोडे घालून त्यांची संपत्ती लुटतो. लुटलेली संपत्ती गरजू दलितांना वाटून त्यांना अडचणीतून सोडविण्यासाठी मदत करतो.याच पध्दतीने त्याच्या पडत्या काळात दयाळबाबा, त्यांची मुलगी सुरू यांनी प्राण वाचविले होते. त्या उपकाराची परतफेड म्हणून पैशांची मदत करतो. परंतु त्याला आश्रय दिला म्हणून पोलीस दयाळबाबा आणि सरू यांचा छळ सुरू करतात. अज्ञात इसमाला कळते. दयाळबाबाला खूप मारतात. दरोगा सरूवर जबरदस्ती करत असताना, अज्ञात इसम त्याचा खून करून सरूला आणि स्वतःला पोलिसांच्या तावडीतून वाचवतो. प्रसंगी नदी आडवी करतो.

सरूला आर्कनीकडे ठेवून तिला शिक्षण देतो.दयाळबाबावर दरोग्याच्या खुनाचा आरोप ठेवून खटला सुरू होतो. कृष्णाचा मुलगा मोहन दयाळबाबाची केस कोर्टात लढवतो. परंतु कृष्णा, तुळश आणि दयाळबाबा या संगळांनाच, लोक वाळीत टाकतात. त्यांच्याशी कसलाही संबंध ठेवत नाही. त्यांना पाणीही मिळत नाही. अशा स्थितीमध्ये मोहनची आई तुळशी मृत पावते. या बिकट अवस्थेतून बाहेर पडण्यास अज्ञात इसम श्रीशेष महाराज मोहनला पत्र पाठवून स्फूर्ती देतात. पत्रातून प्रेरणा घेऊन मोहन दयाळबाबाची केस जिंकतो.वार्धक्यामुळे दयाळबाबा थकतात. त्यांच्या मृत्युसमयी सरू येते. दयाळबाबा सरूला पाहून सुखाने प्राण सोडतात. शेवटी श्रीशेष महाराज प्रत्यक्षात मोहन चित्रा आणि सरू आणि रघुनाथ यांना भेटतात. एका खेडेगावात दलितांचा उध्दार करून हा संघर्ष संपणार नाही. ही सतत चालणारी प्रक्रिया आहे. त्यासाठी ही तुफानी, 'काळजी रात्र' जाऊन नव्याने पहाट होईल. दलितांचा उध्दार करण्यासाठी पुन्हा नव्याने सुरूवात करायची आहे. असा शुभसंदेश श्रीशेषमहाराज मोहनला देतात.भंडारा जिल्हांत घडणारी ही कादंबरी अद्भतुरम्यतेचा आधार घेऊन दलितोध्दाराचे कार्य मोहन, सरू, चित्रा, रघुनाथ यांच्या मदतीने केले जाते. ब्राह्मणेतर एकाच व्यासपीठावर आणण्याचा स्तुत्य प्रयत्न, ना. रा. शेंडे यांनी त्याकाळी केला, हेही नसे थोडके.एकूण तेरा रात्रींमध्ये गुंफलेली ही कादंबरी गुन्हेगारी वातावरणाचा भास निर्माण करते. दलितोध्दार हा ना. रा. शेंडे यांचा मुख्य हेतू ठळकपणे जाणवतो. वास्तववादी जीवनदर्शनाची झलक, त्याला काल्पनिकतेची जोड, त्यातही समाजचित्रणाचा प्रयत्न, तो स्तर सतत उंचावत नेण्याची आंतरिकता आणि त्यासाठी केलेली पात्ररचना व वातावरणनिर्मिती, हे सगळेच प्रयोग; हांच कादंबरीच्या कथालेखनात करण्याच्या हव्यासामुळे, कथानक विस्कळीत झाले आहे. सुसूत्रता व एकसंधपणाचा त्यात अभाव जाणवतो. ते कृत्रिम वाटते. पात्रांची आत्यंतिक गर्दी झाल्याने कोण्याही एका पात्राला ठाशीवपणे आकार किंवा न्याय देता आला नाही.तीर्थक्षेत्राची अद्भुत-गूढ पाश्र्वभूमी ठळकपणे मांडल्याने राजकारण, समाजजीवन, बाहां घटिते आणि मानवी मने हांना दुय्यमपणा लाभला आहे.अनेकानेक उद्दिष्टे गृहीत धरून काि◌ानकांतर्गत व्यक्तींच्याद्वारा पूर्ण करण्याचा प्रयोग एकाच कादंबरीत केल्याने कलाकृती म्हणून ती अपयशी लेखनाचा नमुना वाटते.दलित साहितयाच्या विद्यमान वैचारिक व्यूहामध्ये पांरपारिक पध्दतीच्या आध्यात्मिकतेला मुळीच स्थान नाही. हे जरी असले तरी ना. रा. शेंडे यांच्या लेखनात, त्यांच्या तत्कालीन वृत्तीप्रवृत्तीची आणि व्यक्तित्वाची काही एक भूमिका आहे, हे स्वीकारावेच लागेल. आपल्या समतावादी व मानवतावादी दृष्टिकोणातून ते आपल्यापरीने मूल्यात्मकतेला स्पर्श करतात. त्यांच्या गृहीतकांशी ठाम राहतात.ना. रा. शेंडे आपल्या कादंब**Ú**यांतून अध्यात्मवादी एकरूप् राहतात. त्यांच्या कादंब**Ú**यांतून दलित किंवा बौध्द यांना सर्व दृष्टीने समानता मिळावी, बौध्द, ब्राह्मण हे एकाच व्यासपीठावर यावेत; अशी त्यांची खूप इच्छा होती. तसे त्यांनी 'काळजी रात्र' या कादंबरीतून, सुधारणावादी - समतावादी मूल्यांचा विचार मांडला आहे. पण तरीही अध्यात्मिकतेला अधिक महत्त्व दिले आहे. ना. रा. शेंडे यांचे स्वतःचेही मत व्यक्त केले आहे. ते म्हणतात,

"अस्पृश्यांवर होणाÚया अन्यायाचे एक भेसून चित्र माझ्या नजरेसमोर तरळू लागले. अस्पृश्यतेसाठी अत्यंत दाहक परिस्थितीची 'काळजी रात्र' निर्माण झाली. या तीव्र जाणिवेने मी फार अस्वस्थ झालेलो. माझ्या पुढे दोन पात्रे उभी राहिली. एम्. बी. बी. एस्. झालेली चित्रा सरंजामे, एका दुर्धर प्रसंगातून मी तिला संकटमुक्त केले होते. ती अध्यात्मवादी होती, व माझ्या अध्यात्मचादी बैठकीशी संबंधित होती. अस्पृश्यता नष्ट व्हावी व ब्राह्मण आणि महार एक व्हावे, असे तिला मनापासून वाटत होते. दुसरी बहुजनसमाजातील सरू पाटील तिच्या अब्रूवर घाला आला असताना मी तिचे रक्षण केले होते." शक्योशक्यतेचा विचार करण्यापेक्षा एक बदलणारी परिवर्तनवादी दृष्टी त्या काळातही ना. रा. शेंडे स्वीकारतात, हे त्यांचे वेगळेपण नोंदावेच लागेल.

संदर्भग्रंथ सूची

1)थोरात, सु. **(2012),**"दलित निरंतर विषमता आणि दारिद्र्य" सुगावा प्रकाशन मुबई, दु. आ.

2)वाघमारे, ज.**(2014),**"दलित साहित्याचे वैचारिक पार्श्वभूमी" स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद, प्र.आ.

3)रत्नाकर, ध. **(1997),**"दलित साहित्याच्या नामांतराचा वाद" सुगावा प्रकाशन, पुणे, प्र.आ.

4)रमेश,अ.**(2016),** "दलित स्त्री आणि मानवी हक्क" सुगावा प्रकाशन, पुणे, प्र. आ.

5)सिरसाठ, प्र. **(2016),** "दलित चळवळ आकलनाच्या दिशेने" हरिती प्रकाशन, पुणे, प्र. आ.

दलित साहित्यात – दलित चळवळीवर प्रकाश टाकणाऱ्या कादंबरीचे महत्व

भूषण प्रदीपकुमार देशमुख (संशोधक विद्यार्थी)
श्री. जगदीशप्रसाद जाबरमल टिबडेवाला विद्यापीठ ,झुंझुणू, राजस्थान, भारत
मार्गदर्शक -: डॉ. वंदना स. भोयर सहाय्यक प्राध्यापक
(मराठी विभाग , इंदिराबाई मेघे महिला महा. अमरावती)

प्रस्तावना-:1960 तेम 1970 पर्यंतच्या कालखंडात दलित चळवळ जोमात कार्यरत होती. चळवळीतला अंतिम घटक म्हणजे अत्यंत नगण्य माणसांसाठी मानापानाची पर्वा न करता स्वतःला झोकून देणारा, त्यांच्यातीलच एक कार्यकर्ता.चळवळीचे काही तत्कालीन तर करही दूरगामी पध्दतीने लाभ व फायदे सातत्याने चळवळीत असणाराला होत असतात.काहींनी चळवळीचेही एक पध्दतशीर कुरण बनवलेले असतेम.1970 नंतर दलित नेत्यांमध्ये मोठ्या प्रमाणात मतलबाची स्वार्थी लागण झज्ञली.'मी आणि फक्त मी, माझ्यासारखा माझ्यानंतर कुणी कधीच नको' अशी मानसिकता सिध्द झाली आणि रूढ होत बळावली.

1) कालिंदी: हिरभाऊ पगारे

भारत देशाला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर अल्पसंख्याकांच्या चळवळी सुरू झाल्या होत्या. देशाला स्वातंत्र्य मिळूनही, समाजात निश्चित स्वरूपाचे स्थान, अनेक धर्मांतील लोकांना नव्हते. ते आपापल्या ताकदीनुसार चळवळी आणि आंदोलने करीत होते. परंतु देशभरात मात्र, एक जमातीच्या चळवळीने सर्वांचेच लक्ष वेधले होते, ती म्हणजे दलित चळवळ होय. या चळवळीचे नेते आणि प्रणेते, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर होते. या क्रांतिकारक चळवळीचे प्रमुख केंद्र नाशिक होते. या केंद्रातून क्रांतीच्या ज्वाला पुणे, मुंबई आणि इतर ठिकाणी भडकत होत्या. पण या क्रांतीची सुरूवात, महाडच्या चवदार (चैदार) तळ्याच्या सत्याग्रहाने झाली. त्यामुळे दलित बांधवांमध्ये या लढ्यामध्ये सामील झाले हेाते. वर्षानुवर्षे चालत असलेला जातीयवाद तोडून टाकण्यासाठी, स्वतःच्या हक्काच्या प्राप्तीसाठी तेम आसुसले होते. कित्येक वर्षे सहन केलेल्या गुलामगिरीचे साखळदंउ, त्यांना तोडून टाकायचे होते. तसेच स्त्रियांही सहभागी झाल्या होत्या.नाशिक जिल्हाात सार्वजनिक पाणवठ्यावर प्रथम सत्याग्रह झाला, तो उमराळाला होय. त्याचे नेतृत्व दादासाहेब गायकवाड यांच्याकडे होते. त्यांनतर नाशिक जिल्हात क्रांतीचा डोंब उसळला होता. अनेक गावांमध्ये वहिरींवर सत्याग्रह करण्यात आला होता. त्यानंतर काळाराम मंदिरप्रवेशाचाही त्यात भर पडली होती.ळजारो वर्षे अन्यायाच्या दबावाखाली पिचत पडलेली दलित जनता, क्रांतीच्या ज्वालांनी पेटून उठली होती. मृत्यू, वय, घर, संसार कशाचीही तमा न बाळगता, या क्रांतीमध्ये ते सामील झाले होते. त्यामध्ये शाळा, कालेजमधील विद्यार्थी यात सहभागी झाले होते. खरे तर त्यांच्यापुढे भविष्याचे स्वप्न उभे होते. परंतु कशाचीही पत्रास न बाळगता, ते या

आंदोलनात सहभागी झाले होते. या लढ्यात सहभागी झालेल्या तरूणाची काल्पनिक कथा 'कालिंदी' या कादंबरीमध्ये आहे.सदाशिव हा एक खगोलशास्त्राचा विद्यार्थी होता. खगोलशास्त्राची पीएच्. डी. करीत होता. त्यालाही या क्रांतीने झपाटले होते. भविष्याची चिंता न करता, त्यानेही या चळवळीचे नेतृत्व केले होते. भाऊराव गायकवाड यांच्याकडे आंदोलनाचे नेतृत्व केले होते. परंतु त्यांना मार लागल्यामुळे लढ्याचे नेतृत्व सदाशिवाकडे आले होते. सदाशिव हा एकीकडे खगोलशास्त्राचा अभ्यास करीत असे, तर दुसरीकडे तो नाशिकच्या दलितांच्या चळवळीचे नेतृत्व करीत होता.त्याची सहकारी कालिंदी ही त्याच्या जीवनात येण्याचा प्रयत्न करते. कालिंदी पुनर्विवाहित तरूणी आहे. दोन लग्न झालेली असूनही, मराठा घराण्यातील मुलगी, सदाशिवसारख्या दलित तरूणाच्या प्रेमात पडते. परंतु मलिन झालेले आपले शरीर, ती त्याला देऊ इच्छित नाही. सदाशिव आणि तिच्या प्रेमाचा अंकुर म्हणजे मुलगा, तो मात्र ती सदाशिवला देते आणि प्राणत्याग करते. कालिंदी ही मराठा देशमुख घरातली मुलगी. अत्यंत श्रीमंत घरातली मुलगी. परंतु तिला स्पृश्यास्पृश्य भेदभाव, उच्चनीचता सहन होत नाही. ती चळवळीतील एक सक्रिय कार्यकर्ती होती. दलितांवर होणाऱ्या अन्याय, अत्याचाराची तीव्र जाणीव, तिला मनापासून पटलेली व झालेली होती. म्हणूनच दलित चळवळीमध्ये ती उत्साहाने सहभागी झाली होती.सदाशिव आणि कालिंदीसारख्या तरूण शिक्षित विद्यार्थ्यांची काल्पनिक कहाणी सांगून, त्याकाळी दलित चळवळीने भारावून गेलेल्या दलित तरूणांची, मानसिक अवस्था लक्षात येते. दलित चळवळीच्या लढ्याची तीव्रता, स्वरूपही लक्षात येते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी धर्मांतर करण्यापूर्वी, आपल्या हक्कांसाठी दलित बांधवांना कराव्या लागणाऱ्या लढ्याचे स्वरूपः हरिभाऊ पगारे यांच्या, 'कालिंदी' या कादंबरीमध्ये पाहावयास मिळते.हरिभाऊ पगारे बांधिलकी मानणारे लेखक असल्यामुळे त्यांच्या या कादंबरीचा नायक, आपल्या दलित बांधवांच्या उध्दारासाठी प्राणपणाने घडपडतो आहे. प्रसंगी जीवावर बेतणारे प्रसंगही झेलतो आहे. चळवळीच्या व्यापक प्रभावाचे दर्शन या कादंबरीतून घडते.परंतु हरिभाऊ पगारे यांनी, पुढे ही कांदबरी रोमँटिकच केली आहे. कादंबरीचा पूर्वार्ध चळवळीच्या रेट्याने भारलेला आहे. परंतु शेवटी तो केवळ मनोरंजनात्मक होत जातो. खांडेकरी वळवणाची व प्रभावाची ही कादंबरी होत जाते. कथानकात जरा ऐतिहासिक भाषा, काही म्हणी, संस्कृतप्रचुर शब्द तसेच गुळगुळीत शब्दांचा मोठ्या प्रमाणात ते वापर करतात. आलंकारिक भाषेचे उपयोजन करून कादंबरी केवळ मनोरंजनपर करण्याचा हव्यास धरतात. त्यामुळे कादंबरीतील कथानक दुय्यम महत्त्वाचे ठरत जाते. हरिभाऊ पगारे यांची ही पहिलीच कादंबरी एक वेगळी उमेदही देते आणि अपेक्षाभंगही करते.लेखकाच्या मनातील आकांक्षाही हा न जमलेल्या कादंबरीतून प्रकट होतात, हेच हा कादंबरीचे मर्यादित यश म्हणायला हरकत नाही.

2) बलिदानः ज. वि. पवार

ज. वि. पवार या लेखकाची 'बलिदान' ही कादंबरिका आहे. 'बलिदान' ही कादंबरिका असली तरी, त्यातून प्रतीत होणाया दोन पातळां कौतुकास्पद आहे. पहिली आणि वाखाणण्याजोगी पातळी म्हणजे तिची काव्यात्मता होय. दुसरी पातळी राजकीय पक्षामध्ये असणाÚया दुहीचे दाहक चित्रण. या दोन्ही पातळांा लेखकाला ताकदीने फुलविल्या आल्या असत्या. पण असे घडले नाही. कदाचित त्याची काही वेगळी कारणे असु शकतील. त्यामुळे लेखकाने ही कादंबरी, दोन गटांच्या कार्यकत्र्यांच्या मरणानंतर पुढे काय, ही स्वाभाविक उत्सुकता ताणून धरली नाही. म्हणून जो आशय मांडायचा होता, तो बंदिस्त आणि मोजक्या त्रुटित शब्दांतच. म्हणूनच कादंबरी ही छोटेखानी झाली. यावरूनच तिला कादंबरिका असे म्हणणे योग्य ठरेल.'बलिदान' कादंबरीतील आशय मोजक्या शब्दांत मांडला असला, तरी त्याची काव्यात्मता वैशिष्ट्यपूर्ण व लक्षवेधी आहे. मांडणीही वेगळां पध्दतीची आहे. यातील पात्रमुखी निवेदन प्रभावी आहे. एकूण चार प्रकरणांमध्ये मांडणी केली आहे. त्यातही तिसरे प्रकरण मोठे आहे. पहिले व दुसरे प्रकरण पृष्ठ एक ते पचवीस पानांचे आहे. तिसरे प्रकरण पृष्ठ क्रमांक सव्वीस ते बासष्ट पानापर्यंत आहे. चैथे प्रकरण अगदीच लहान म्हणजे दोनच पृष्ठे आहेत. या चारही प्रकरणांमध्ये तिसरे प्रकरण, छत्तीस पृष्ठांचे आहे. हे एकच प्रकरण महत्त्वाचे आणि बोलके ठरते. एकूण चैसष्ट पानांमध्ये, ही आशयमांडणी केली अहो.जगन्नाथ पेवेकर हा 'बलिदान' कादंबरीचा नायक आहे. हा नायक कादंबरीमध्ये कोठेही बोलत नाही. निवेदन करीत नाही. परंतु प्रत्येक पानावर जगनच्या चारित्र्यासंबंधी आणि कर्तृत्वासंबंधी नोंद मात्र आहे. या कादंबरीतील पात्रांच्या मुखातून नायक साकार होतो. कादंबरीचा कालावधी एक दिवसाचा आहे. या कालावधीमध्ये घटना फारशा घडत नाहीत. पण ज्या घटना घडतात, त्याची पाश्र्वभूमी मात्र भूतकालीन घटनांच्याद्वारे पात्रांच्या तोंडून, लेखक निवेदन करतो.वर वर पाहता कादंबरीचा प्रारंभ जत्रेच्या रूपाने सुरू होतो. पुढे ती जत्रा नसून प्रेतयात्रा आहे, हे लक्षात येते. प्रारंभच थोडा गूढ, गंभीर आणि शांततामय वातावरण निर्माण करणारा असा आहे. गांभीर्यपूर्ण वातावरणात; लेखकाने सगळां मानवी प्रवृत्तींचे दर्शन घडविले आहे. जगनचा मृत्यू हे एक कारण किंवा निमित्त आहे. जगनचा मृत्यू कसा झाला ? किंवा जगनाचाबळी का गेला ? याचा शोध घेण्याचा प्रयत्न लेखकाने केला आहे. परंतु चकाच्या मनातही ते गूढ उलकण्याची उत्सुकता निर्माण होते. जगनचे बलिदान घडले की घडवून आणले ? असा प्रश्नही, मनामध्ये उभा राहतो. पुढे मात्र या घटनेचा खुलासा होत जातो.जगन हा कादंबरीचा नायक आहे. जगनला लहानपणापासूनच विधायक कार्य करण्याची आवडच आहे. साध्या चाळीमध्येतो लहानाचा मोठा झाला. स्वतः खस्ता खाऊन दुसÚयाचे हित जपणारा असा हा नायक आहे. निराधाराला आधार देणारा आहे. दुसÚयाला अडचणीतून सोडविणारा आहे. दुसÚयावर कधीही रागावणारा नाही. दुसÚयाने चूक केली तरी, स्वतःच गुन्हा केल्याची कबुली देणारा आहे. रघ्याला हीन कामावर नेमणाÚया म्युनिसिपालटीतील

साहेबाची कानउघाडणी करणारा जगन, रघूकडे क्षमा मागून, गुन्हांची कबुली देतो. कारण साहेब चितो. त्यामुळे हातातोंडाशी आलेले नोकरी मिळत नाही. हे सगळै आपल्यामुळै घडले याची तीव्र जाणीव जगनला होते. जगन ताबडतोब माफी मागतो.जगन कट्टर विज्ञानाधिष्ठित आहण नवविचारवादी आहे. रूढी, परंपरा, हिंदू पध्दती यांचा त्याला मनस्वी राग आहे. समाजकार्याला वाहून घेणारा, सच्चा निःस्वार्थी असा हा सामाजिक कार्यकर्ता आहे. मनाने खुला, दिलदार आहे. कोणत्याही प्रकारचा स्वार्थभाव त्याच्याकडे नाही. एका सरळ मार्गाने जाणारा, मनापासून समाजकार्य करणारा असा जगन, लेखक ज. वि. पवार यांनी शब्दबध्द केला आहे.जगनचा मित्र बापू हा पदवीधर होतो. त्याच्या सत्काराला जगन प्रथम त्याला आस्थेने आणि उत्साहाने हार घालतो. तोच बापू कम्युनिझामकडे वळतो व आपण दुरूस्त पक्षाचे आहोत. हे समजून जगनवरच उलटा फिरतो. जगनच्या लोकप्रियतेमुळे बापूच्या मनामध्ये द्वेष निर्माण होतो. आपल्या मार्गातील काटा दूर व्हावा म्हणून, तो जगनचा नायनाट करू पाहतो. तसेच घउते. निवडणूक प्रचाराच्या सभेत, बापू जगनवर आरोप करतो. सभा उधळली जाते. सगळी माणसे सैरावैरा धावत सुटतात. त्यातच वार होतात. जगनचा खून होतो. जगन मृत्युमुखी पडल्यानंतर त्याची महती लोकांना पटू लागते.चैथ्या प्रकरणात विशिष्ट स्वभावच्या बापूचाही मृत्यू झालेला आहे.ज. वि. पवार यांनी कादंबरीचा आशय आणि कादंबरीची अभिव्यक्ती याचे संतुलन उत्कृष्ट राखले आहे. कादंबरीतील आशय जितका महत्त्वाचा आहण ताकदीचा आहे, तेवढीच अभिव्यक्तीची पकडही घट्ट आहे. म्हणून 'बलिदान' ही जरी कादंबरिका वाटली, तरी ती एक विस्तृत अवकाशामध्ये वर्तमानकालीन एक सत्य सांगून जाते. त्या सत्याची जातकुळी फारच मोठी आहे. म्हणून हा अर्थाने तिला कादंबरी म्हणावे लागेल. या कादंबरीला अ. शं. कसबे यांनी प्रस्तावना लिहिली आहे. त्यात जे म्हणतात. "माझ्या मते हेच कथानक जर सरळ सरळ, 'आपल्याच शब्दांत' सांगतिले गेले असते तर ही कादंबरिका मराठी साहित्यात खासच उजवी ठरली असती."कसबे यांचे म्हणणे, इथे पटत नाही. कारण आपल्याच शब्दांत जर लेखकाने हाच आशय मांडला असता; तर त्यातील गांभीर्य, गूढता आणि उत्सुकता कमी झाली असतीत्र आशयाची तीवग्रताही कमी झाली असती. लेखकाने जो आशमांडणीचा प्रयत्न केला आहे. तो एकरूपतेने व्यक्त होतो. त्यामुळे कादंबरी एका वेगळा पातळीवर जाते. आणि लेखकाचे स्वतः जे म्हटले आहे, की "काव्यात्मक कादंबरिका लिहिणे अन् सामथ्र्यवान राजकीय मनाचा दुभंगलेला आशावाद स्पष्ट करून, त्या जीवनाच्या झालेल्या चिरफळा जाणवून देणे" हे लेखकाचे म्हणणे पटते.वर्तमानकालीन सत्य लेखक आपल्यापुढे मांडतो.राजीकय पक्षामध्ये चालेली गटबाजी भयानक आहे. सत्य इथून केव्हाच पळाले आहे. अशातही प्रामाणिकपणे काम करणाúया, निःस्वार्थी समाजकार्यकत्र्यांची मुस्कटदाबीच होते. अनेकांचीजीवने, आयुष्ये त्यामुळे बरबाद झालीत. उध्दवस्त झालीत, स्वार्थी असलेलया, कितीतरी सामाजिक रोगांनी सडलेल्या व्यक्त् मात्र आज समाजात, उजळामाथ्याने वावरताना दिसतात. याच वातावरणात मात्र त्याग करून झटणारी व्यक्ती अगदी एखाद दुसरी आढळते. या परिस्थितीमुळे देशाची बिकट

अवस्था डोळांसमोर आणल्यास, दुःख होण्यापलीकडे काहीच करू शकत नाही. पण या देशातच त्याग करून सामाजिक कार्य करणाÚया, निःस्वार्थी माणसांचा नाहक बळी जातो. याचेच चित्रण लेखकोन, 'बलिदान' या कादंबरीमध्ये केले आहे.विशेष म्हणजे विद्रोहातील दुहेरी झगड्याची दुसरी बाजू याचाच अर्थ असा, की अंतर्गत उणेपणाची, अंतर्गत कलहाची बाजू मांडण्याचा प्रयत्नही लेखकाने केला. आहे. लेखकाची निरीक्षणशक्ती खूपच दांडगी आहे. त्रेसष्ट पानांच्या मजकुरामध्ये त्यांनी समाजाचे सूक्ष्म निरीक्षण केले आहे. नामकरणविधी पत्रिकेतील वक्त्यांची लांबी किंवा लांब यादी, सार्वजनिक कार्यक्रमात सन्मानाचा हार मिळावा म्हणून, आलेल्या व्यक्ती तिथेच झोपी गेल्या होत्या, गायनपार्टीतील दोन गटांचे लागलेले भांडण, गटबाजीस उत्तेजन देणे, देवभोळेपणा, कर्ज काढून जत्रा साजरी करणे, लग्नातील धतिंग प्रकार, दारू पिऊन भांडण करणे इत्यादी समाजातील अपप्रवृत्त्या, घाणेरड्या गोष्टींचा; एक धावता आढावाच घेतला आहे. वशिला, जात, आडनावे यामुळे दलितांचे जीवन उध्वस्त होऊ लागले आहे. या सगळां प्रकाराची चीड, लेखक आणि कादंबरीचा नायक, या दोघांनाही आहे. याची जाणीव प्रामुख्याने वाचकाला अंतर्मुख करते.खरे तर समाजकार्याच्या विधायक नावाखाली, खाजगी जीवनाचे लक्तरे व्यासपीठावर उघडी करून; बक्कळ पैसा मिळविणारे अनेक बापू, आज समाजात आढळतात. तत्वापेक्षा वैयक्तिक स्वार्थाने झपाटणारी कित्येक माणसे आहे. त्यामुळे निष्ठावान आणि नष्पाप, कर्तव्यतत्पर माणसांचा, व्यक्तींचा बळी जातो. त्याला जगनही कारणीभूत ठरलेला आहे. मन हेलावणारी आह.राजकीय तत्वप्रमणालींचा मागोवा आणि पाठपुरावा करता करता, लेखक समाजस्वास्थ्याचाही विचार करताना दिसतो. त्यामुळे त्यात असणारी तीव्रता अधिक जाणवते. परंतु कादंबरीचा नायक जगन आपल्यापुढे जो उलगडत जातो, त्यातून त्याची प्रतिमा कट्टर दलित चळवळीतला, एक धडाडीचा समाजिक कार्यकर्ता अशी उभी राहते. वैज्ञानिक निष्ठा बाळगणारा तडफदार नायक उभा राहतो. त्याच्या विचाराने आणि आचाराने समोरील व्यक्ती निश्चितच प्रभावी होईल. परंत त्याच्या धाडसाचा आणि तडफदारीचा विकास होण्याआधीच, त्याला खुडून टाकले गेले आहे. त्याच्या व्यक्तित्वाला पूर्णत्व देण्यात लेखक असफल ठरलेला दिसतो. म्हणून 'क्रांतिकार सामाजिक व राजकीय विचार हां झगड्यातील नायकाचे सामाजिक क्रांतकारकत्व उठू शकले नाही,' हे डॉ. शशिकांत लोखंडे यांचे म्हणणे संयुक्तिक ठरते. जगनच्या विचारातून परिवर्तन, नवविचारांचा सूर जाणवतो. पण तो क्रांतीच्या मार्गाकडे पोहचू शकत नाही.तरीही आशय आणि अभिव्यक्तीदृष्ट्या एक चांगली कलाकृती म्हणून 'बलिदान' या कादंबरीचा उल्लेख केल्यास, उचितच ठरेल. लेखक ज. वि. पवार एक राजकीय सत्य सांगतात. परंतु त्याला वाड्.मयीन स्पर्श करून वाचकापुढे सादर करण्याची पध्दतीही त्यांना चांगली जमली आहे.आकाराने लहान पण वाड्.मयीन गुणाने मोठी अशी ही कादंबरी आहे. तरीही ती उपेक्षित व अनुल्लेखनीय राहिली आहे. याचीच मीमांसा करताना डॉ. योगेंद्र मेश्राम यांनी म्हटले आहे,"ज.वि. पवार यांची 'बलिदान'ही कादंबरी एक उत्कृष्ट आत्मपरीक्षण म्हणून महत्त्वाची आहे. दलित किंवा दलित बौध्द समाजातील अंतर्गत संघर्षाचे

कलह-भांडणचे त्यांनी अंतर्मुख होऊन केलेले चित्रण प्रत्ययकारी आहे. ही कादंबरी चळवळीच्या संदर्भात वेधक असूनही समीक्षकांचे लक्ष तिच्यावर का खिळले नाही, हे कळत नाही. एवढें खरे की, कविपिंडाचा हा लेखक तिच्यात अधिक भावुक झालेला दिसतो. तेव्हा अलिप्तता, वेधक शैली किंवा आशयकलात्मक करण्याची हातोटी वगैरे "बलिदान' मध्ये समीक्षकांना आढळली नसावी. ती दुर्लक्षित होण्याचे कदाचित हे एक कारण ठरले असावे."

संदर्भग्रंथ सूची

1) थोरात, सु.(2012),"दलित निरंतर विषमता आणि दारिद्रा" सुगावा प्रकाशन मुबई, दु.आ.
2) वाघमारे, ज.(2014),"दलित साहित्याचे वैचारिक पाश्र्वभूमी" स्वरूप प्रकाशन, औंरगाबाद, प्र.आ.
3) रत्नाकर, ध.(1997), "दलित साहित्याच्या नामांतराचा वाद" सुगावा प्रकाशन, पुणे, प्र.आ.
4) रमेश, अ.(2016), "दलित स्त्री आणि मानवी हक्क" सुगावा प्रकाशन, पुणे, प्र. आ.
5) सिरसाठ, प्र.(2016), "दलित चळवळ आकलनाच्या दिशेने" हरिती प्रकाशन, पुणे, प्र. आ.

राजस्थान के संत और उनका साहित्य

डॉ - श्रीमती कुलदीप गोपाल शर्मा, प्रोफेसर हिंदी
श्री जे.जे.टी. विष्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान

सारांश :
राजस्थान में सगुण और निर्गुण भक्ति धाराएं निर्बाध रूप से संचालित एवं प्रसारित हुई। राजस्थान में इन दोनों भक्तिधाराओं में प्रचूर मात्रा में साहित्य रचना की गई। जो आज हिंदी साहित्य को गौरवान्वित कर रही है।

प्रस्तावना–परब्रह्म–परमात्मा स्वानुभूति का विषय है वह अनुभवी को भी अपने समान ही बना लेता है। संत और भक्त परमात्मा का अनुभव अपने आप में ही करते हैं। अतः अनुभवी कहलाते हैं। ब्रह्म–रूप कहलाते हैं।

'संत' शब्द की व्युत्पत्ति –'संत' शब्द संस्कृत 'सत्' के प्रथमा के बहुवचनान्त रूप से बना है, जिसका अर्थ – धार्मिक और सज्जन पुरूष होता है। हिंदी साहित्य में साधु पुरूषों के लिए 'संत' षब्द प्रयुक्त होता रहा है, जैसे– संत कबीर, संत तुलसीदास, संत सूरदास आदि। हिंदी साहित्य में 'संत' शब्द का प्रयोग साधु और परोपकारी पुरुष के अर्थ में बहुतायत से हुआ है।आजकल संत साहित्य का अर्थ निर्गुण भक्तों द्वारा रचा गया साहित्य हो गया है। जबकि यह कतई आवष्यक नहीं कि 'संत' उसे ही कहा जाए जो निर्गुण ब्रह्म का उपासक हो। 'संत' के अन्तर्गत तो लोकमंगल की भावना रखने वाले सभी सत्पुरूष आ जाते हैं किन्तु आधुनिक कतिपय साहित्यकारों ने निर्गुण उपासकों को ही 'संत' की संज्ञा दे दी और अब संत शब्द निर्गुण उपासकों के लिए चलन में आ गया है। जो साधक निर्गुण–निराकार परमात्मा की साधना करता है वह प्रायः 'सन्त' नाम से अभिहित होता है। इसके विपरीत जो सगुण–साकार परमात्मा की उपासना करते हैं वे 'भक्त' कहलाते हैं। यह अर्थ संकुचन इन दोनों शब्दों का कबसे हुआ, कहा नहीं जा सकता किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जब से विदेषी महानुभावों ने मध्यकालीन संत–महात्माओं का अनुषीलन करना आरम्भ किया तबसे उन्होंने यह कहने का दुःसाहस करना प्रारम्भ कर दिया कि भारत में भक्ति की अवधारणा प्राचीन नहीं है। यह ईसाइयों के साथ दक्षिण–भारत में आई जिसको आलवार और नायन्मार भक्तों ने गाढ़ता से अपनाकर अपने प्रबंधों में स्थान दिया। चूंकि ईसा का दर्षन भक्तिदर्षन है और ऐकेष्वरवाद पर टिका है जिसके प्रचारकैंपदज कहे जाते हैं। अतः भारतीय निर्गुण–निराकार के उपासक उत्तर भारतीय– भक्त, भक्त न होकर संत हैं और इन्हें संत ही कहना चाहिए। ईसाइयों द्वारा पढ़ाई गई विद्या का आलोक आज चारों ओर है जिसका आधुनिक विद्वान् बिना सोचे–समझे इन विदेषियों के विचारों का अन्धानुकरण करके निर्गुण–निराकार के भक्तों को भी संत लिखकर गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

वस्तुतः भारतीय साहित्य में ऐसी कोई विभाजक रेखा देखने को नहीं मिलती जिससे यह जाना जा सके कि भक्त अमुक को कहते हैं तथा संत अमुक को कहते हैं। भारतीय संस्कृत–वाड्मय में ही नहीं, जिन्हें सन्त कहा जाता है उन स्वयं के साहित्य में भी सर्वत्र सन्त और भक्त समान अर्थ में प्रयुक्त हुए मिलते हैं। हम अधिक दूर न जाकर कबीर, दादू, नानक, तुलसी, सूर, मीरां के साहित्य को लें। इन सभी में सन्त और भक्त इन दोनों शब्दों का समान अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। इतना ही नहीं, जब इन्होंने भक्त अथवा संतों के लक्षण बताये हैं तब भी दोनों को अभिन्न मानकर समान ही लक्षण बताये हैं। रामचरितमानस में अनेक स्थानों पर संतों की चर्चा है, भक्तों की चर्चा है। फिर भी मानसकार ने दोनों शब्दों के वाच्यार्थ एक ही माने हैं। रामचरितमानस में जिन लक्षणों को संतों के, भक्तों के, साधुओं के माने हैं, वे ही श्रीमद्भगवद्गीता में भक्तों के लक्षण माने गए हैं।

लोक उपकारी संत के लिए यह कतई आवश्यक नहीं कि वह सुषिक्षित, शास्त्र का ज्ञाता और भाषाविद् हो। उसका लोक हितकारी कार्य ही उसके संत होने का प्रमाण और मानदंड होता है। हिंदी साहित्य में जो निर्गुण संत साहित्यकार हुए हैं उनमें

ज्यादातर अल्पषिक्षित या अषिक्षित ही थे। शास्त्रीय ज्ञान की न्यूनता के कारण इन्होंने अपने अनुभव के आधार पर अपने साहित्य की रचना की। इन्होंने भाषा को महत्व न देकर विषय को ही अधिक महत्व दिया, जिससे इनकी भाषा अनगढ़ और पंचरंगी हो गई है। यदि इनके काव्य में भावों की प्रधानता को महत्व दिया जाए तो सच्ची और खरी अनुभूतियों की सहज व साधारण अभिव्यक्ति के कारण इनमें से कई रचनाएं उत्तम कोटि के काव्य में स्थान पाने का हक रखती हैं। ये परम्परा से पोषित प्रत्येक दान को स्वीकार नहीं करते थे। सर्वमानववाद इनका मुख्य दर्षन और चिन्तन रहा है। ये मानव मात्र में किसी प्रकार का भेद स्वीकार नहीं करते। इनका मानना है कि कोई भी व्यक्ति अपने कुल विषेष में जन्म लेने से ही कोई विषिष्टता प्राप्त नहीं कर लेता। इनके अनुसार अपने अभिमान को त्याग कर परोपकार करने तथा ईष्वर की भक्ति में लीन होने से ही किसी व्यक्ति में विषिष्टता का प्रादुर्भाव हो सकता है। इस प्रकार स्वतंत्र चिन्तन या दर्षन के क्षेत्र में इन सन्तों ने एक प्रकार की वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया।

राजस्थान हिन्दुस्तान का वह प्रान्त है जहाँ के कविगण आज भी हिंदी–साहित्य–रचनाकारों में अग्रणी माने जाते हैं। क्या गुणवत्ता और क्या परिमाण– दोनों ही दृष्टियों से राजस्थान में रचित और उपलब्ध हुआ हिंदी–साहित्य भारतीय हिंदी–साहित्य का आदि साहित्य माना जाता है। चाहे यहाँ के रचनाकारों ने राजस्थानी भाषा में लिखा हो या षट्भाषा में लिखा हो, उनकी रचनाओं को लिखने की लिपि सदैव नागरी लिपि ही रही है। साथ ही यहाँ के रचनाकार संस्कृत भाषा और उनके साहित्य से सदैव अनुप्राणित रहे हैं। अतः उनकी रचनाएं सदैव मार्गी रही हैं। हाँ, सन्तगण, जो आत्मानुभवी थे, जिनका न जन्म और न परिवेष ही सारस्वत था, ने अवश्यषमार्गी कविता का रास्ता नहीं पकड़ा। वे अपनी मस्ती में आत्मानुभवजन्य ज्ञान को अपने शब्दों में अभिव्यक्त करते रहे। जनता बड़ी आस्था से उनको सुनती रही, और उनके शब्दों को लिपिबद्ध करती रही, जीवन में जीती रही। फिर भी न स्वयं सन्तों ने ही और न उनके अनुयायियों ने ही उन शब्दों को काव्य अथवा कविता कहा। वे उसे 'वाणी' कहते रहे, उसे लिखते रहे। उनके अनुयायी उनके शब्दों को, वचनों को, कथनों को, व्याख्यानों को वाणी ही कहते रहे। जो वाणी गेय थी, आकार में बड़ी थी और जिनमें निष्चित आरोह–अवरोहात्मक लय थी, उनको उन्होंने 'सबद' कहा। जो आकार में अपेक्षाकृत छोटी एवं आरोह–अवरोह–लयात्मकता विहीन वाणी थी, उसे 'सबदी' कहा गया। नाथों की वाणियाँ इन दो रूपों में मिलती हैं। सन्त कबीर को 'सबद' शब्द तो रुचिकर लगा किन्तु 'सबदी' शब्द उनके मन को न छू सका। उन्होंने पदों को ता 'सबद' ही कहा किन्तु छोटे छनद को 'साखी' कहा। साखी कहने के पीछे उनका मन्तव्य बिल्कुल स्पष्ट था। उन्होंने वही कहा जिसे उन्होंने आँखों से देखा। चाहे वह दृष्य नामरूपतामक जगत व उसके व्यापारों से सम्बद्ध रहा हो या चाहे वह आत्मानुभूति से सम्बद्ध रहा हो। ऐसे प्रत्यक्ष साक्षात्कार को साक्षी–साखी कहना सर्वथा सही था, और सन्त कबीर ने यही किया। चूंकि सन्त कबीर इसी क्षेत्र में ही नहीं, अनेक क्षेत्रों में स्वतंत्रचेता थे, अतः आगामी संतों ने वैचारिक धरातल पर सभी संतो ंके विचारों में थोड़ा बहुत अन्तर मिलता है। सभी के विचार एक समान नहीं हैं। संभवतः इसी कारण सन्तों के अनेक पंथ अथवा सम्प्रदाय बन गए जिन्होंने अपने–अपने क्षेत्रों में हिंदी की अपूर्व एवं अवर्णनीय सेवाएँ की हैं। लक्ष्य करने की बात यह है कि जिस प्रकार सूर और तुलसी के बिना हिंदी साहित्य जन सामान्य से अलग–अलग सा हो जाता है, ऐसे ही संत कबीर की साखियों और पदो ंके बिना हिंदी साहित्य सूना–सूना सा लगने लगता है। गुणवत्ता की दृष्टि से ही नहीं, भाव व परिमाण की दृष्टि से देखें व आंकलित करें तो समस्त हिंदी साहित्य संत–साहित्य का आधा भी न निकल सकेगा।अतः हिंदी साहित्य की जितनी बड़ी सेवा इन आत्मानुभवी किन्तु शास्त्रबद्ध कविता–ज्ञान शून्य सन्तों ने की है, उतनी किसी ने भी नहीं की।

उद्देश्य–राजस्थान में जितनी संख्या में सन्त–सम्प्रदायों ने जन्म लिया उतनी संख्या में संभवतः अन्य प्रान्तों में नहीं लिया। इन सम्प्रदायों के मुख्य–मुख्य संत एवं भक्त साहित्यकारों का परिचय का दिग्दर्षन कराना ही इस आलेख का मुख्य उद्देष्य है।

राजस्थान के सम्प्रदाय–यद्यपि संतों का प्रभाव राजस्थान में कबीर, रैदास आदि के समय में ही पूर्णतः स्थापित हो गया था किन्तु उनके पंथों का उद्‌गमस्थल राजस्थान नहीं था। अतः उनका प्रभाव यहाँ उस सघनता से नही ंजम सका जितनी सघनता से यहाँ की धरती पर जन्में सन्तों द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदायों से जमा।

राजस्थान की धरा पर 1. विश्नाई सम्प्रदाय, 2. जसनाथी सम्प्रदाय, 3. दादू सम्प्रदाय, 4. निरंजनी सम्प्रदाय, 5. लालदासी सम्प्रदाय, 6. अलखिया सम्प्रदाय, 7. हरदासी सम्प्रदाय, 8. गूदड़ पंथ, 9. रामस्नेही सम्प्रदाय प्रधान पीठ–शाहपुरा, 10. रामस्नेही सम्प्रदाय प्रधान पीठ सींथल एवं खेड़ापा, 11. रामस्नेही सम्प्रदाय प्रधान पीठ खेड़ापा, 12. रामस्नेही सम्प्रदाय प्रधान पीठ रैण, 13. शुक–चरणदासी सम्प्रदाय, 14. पीपा पंथ, 15. सम्प्रदाय–निरपेक्ष संत।

दादू सम्प्रदाय–

1 दादूदयाल – इनका समय फाल्गुन शुक्ला अष्टमी वि.सं. 1601 से प्रारम्भ होकर ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी वि.सं. 1660 था। इनका जन्मस्थान अहमदाबाद तथा निधनस्थल नरायणा था। कबीर के पष्चात् निर्गुणी संतों में ये ही सर्वाधिक सषक्त और प्रभावी संत हुए हैं। दादू की रहनी, करनी और कथनी तीनों संत कबीर से सर्वाधिक प्रभावित रही। दादू की वाणी को लिखने का काम इनके षिष्य मोहनजी दफ्तरी ने किया, जिन्होंने साखी भाग को 37 अंगों में और पद भाग को 27 रागों मे विभाजित किया। वाणी में कुल 2527 साखियाँ और 444 पद हैं। संत रज्जब ने 37 अंगों की सामग्री को 401 उप–अंगों में विभाजित करके उसका नाम 'अंगबंधु' रखा।

2 संत रज्जब – दादू पंथ में यदि दादूदयाल के बाद संतमत का कोई दूसरा व्याख्याता ढूँढ़ा जाय तो उसका नाम रज्जब होगा। रज्जब आजीवन दादू दयाल की संनिधि में रहे। इनका जन्म पठान कुल में सांगानेर निवासी चाँदखाँ की पत्नी भूरी के गर्भ से चैत्र शुक्ला द्वितीया वि.सं. 1624 को हुआ। 16 वर्ष की उम्र में वे दादू के षिष्य बने और वि.सं. 1746 में जयपुर और टोंक के बीच टूँटोली नामक गाँव के गहन जंगल में ब्रह्मलीन हो गए। इन्होंने विषालवाणी का सृजन किया। इनका 'सरबंगी' ग्रंथ विद्वत्‌समाज में सर्वाधिक चर्चित व विवेचित रहा है। वस्तुतः यह ग्रंथ संत साहित्य को समझने के लिए कुंजी सदृष है।

3 बषनां – बषनां दादूदयाल के 52 प्रधान षिष्यों में परिगणित हैं। इनका जन्मस्थल, साधनास्थल और निर्वाणस्थल नरायणा ही था। इनकी जाति को लेकर मतभेद है। ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल ने इनको मुसलमान जाति का रत्न बताया है। नरायणा के त्रिपोलिया दरवाजे पर इनकी समाधि बनी हुई है जिस पर हरी चद्दर ढकी रहती है और जिसका सेवादार मुसलमान ही है। इन्होंने 40 अंगों में 225 साखी आदि और 19 रागों में 168 पदों का सृजन किया है।

4 आचार्य गरीबदास – दादू–षिष्य गरीबदास का जन्म साँभर में वि.सं. 1632 में माँ लरली के गर्भ से हुआ। बचपन में ही गरीबदास को संत दादू का सानिध्य मिला जिससे इनका रुझान शुरू से ही अध्यात्म की ओर हो गया। ये अखण्ड बाल ब्रह्मचारी थे। वि.सं. 1660 में से दादूदयाल की गद्दी पर बैठे तथा वि.सं. 1692 तक गद्दीनषीन रहे और वि.सं. 1693 में ब्रह्मलीन हुए। ये जिस वीणा पर गाते थे वह आज भी नरायणा में दर्षनीय है। इनकी अनुभव वाणी के रूप में 53 साखियाँ, 1 कवित्त, 22 चौबोला, 20 रागों में 55 पद व 141 छंदों का 'अणभै प्रबोध' नामक ग्रंथ मिलते हैं।

5 सुंदरदास बूसर – सुंदरदास का जन्म दौसा नामक नगर में बूसर गौत्री खंडेलवाल वैष्य परमानंद चौखा के घर वि.सं. 1653 में हुआ। ये वि.सं. 1663 में काषी विद्याध्ययन के लिए गए और वि.सं. 1682 में फतेहपुर शेखावाटी में आकर रहने लगे। वस्तुतः साहित्यिक दृष्टि से दादूपंथ को जितना उजागर सुंदरदास बूसर ने किया है उतना अन्य किसी ने नहीं किया। कारण, ये अपने समय के सर्वाधिक पठित संत, निर्गुण संत, कुषल वक्ता, हाजिर जवाब, मिलनसार, प्रत्युत्पन्नमति संत थे। यद्यपि दादूपंथ में जगजीवनराम जैसे धुरन्धर दिग्विजयी संत भी मौजूद थे किन्तु वे कविता को उस ऊँचाई पर न ले जा सके, जिस ऊँचाई तक सुंदरदास ले गए। इनके 42 ग्रंथ है जिनमें 'ज्ञान समुद्र' और 'सवैया ग्रंथ' बहुत प्रसिद्ध हैं।

6 माधवदास – दादूदयाल के 52 शिष्यों में से एक थे। ये सीकरी निवासी सनाढ्य ब्राह्मण थे। वि.सं. 1629 में इन्होंने दादूदयाल का षिष्यत्व ग्रहण किया था। राधवदास की भक्तमाल में इनके कई चमत्कारों का वर्णन मिलता है। इनका एक ग्रंथ 'संतगुण सागर' मिलता है जिसकी रचना इन्होंने वि.सं. 1660 में की थी।

7 भक्तमालकार राघवदास –मध्यकालीन नारायणदास की 'भक्तमाल' में केवल वैष्णव भक्तों का ही चरित्र दिया गया है। राघवदास ने निर्गुण भक्तों का चरित्र अपने ग्रंथ 'भक्तमाल' में किया है। इस ग्रंथ की रचना वि.सं. 1717 में की गई।

8 स्वरूपदास – ये रजबावत दादूपंथी संत थे। इनका जन्म वि.सं. 1858 में मारवाड़ के बड़ली गाँव में मिश्रीदान देथा चारण के घर हुआ था। इनका बचपन का नाम शंकरदान देथा था। ये राजस्थानी कवि सूर्यमल मिश्रण के गुरु थे।

9 मोहनदास दफ्तरी – इन्होंने दादूदयाल की 37 अंगों में साखियाँ और 27 रागों में पदों को लिखा था। इन्होंने अपनी वाणी में 24 अंगों में 192 साखी, 10 गुण सवैया, ग्रंथ ब्रह्मलीला में 43 दौहा–चौपाई लिखे।

10 पंडित जगजीवनदास – दादूदयाल के 52 शिष्यों में से एक थे। ये द्रविड़ ब्राह्मण थे। काशी में रहकर इन्होंने व इनके भतीजे ने संस्कृत ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया था। विद्या अध्ययन के बाद इन्होंने दिग्विजय करने की सोची और आमेर आ गए। वहाँ दादू से इनका लम्बा वार्तालाप हुआ। संत दादू ने 4 पदों के द्वारा इनको इनकी पंडिताई को लेकर ललकारा और उपदेश दिया। दादू से प्रभावित होकर दादू का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। इनका जन्म वि.सं. 1610 तथा दीक्षा समय वि.सं. 1645 के लगभग था। इन्होंने विशाल मात्रा में वाणी का सृजन किया। इनके साखी भाग में 54 अंग तथा 4411 साखियाँ हैं।

11 नारायणदास महन्त – ये नागौर में दादूद्वारा के नवें महन्त थे। इनका समय वि. सं. 1875 से 1955–56 लगभग था। इन्होंने दादूचरित्र ग्रंथ का निर्माण वि.सं.1939 में नागौर में किया।

12 प्रयागदास बियाणी – ये डीडवाना के गृहस्थ माहेश्वरी महाजन थे। फतेहपुर में अपना निवास बनाया। प्रसिद्ध निरंजनी हरीदासजी इन्हीं प्रयागदासजी के शिष्य थे जिन्होंने निरंजनी सम्प्रदाय चलाया। इन्होंने लघुकाय वाणी लिखी जिसमें 61 साखियां और 12 रागों में 23 पद हैं।

दादू पंथ में 300 से भी अधिक रचनाकार हुए हैं जिनमें से अभी तक लगभग 20 संतो की रचनाएं ही प्रकाषित हुई हैं। इनमें से कई रचनाकार तो इतने अच्छे स्तर के हैं कि उनकी रचनाओं का यदि प्रकाषन हो जाए तो हिंदी साहित्य भण्डार में अपूर्व वृद्धि हो सकेगी।

वस्तुतः दादूपंथी संतों ने न केवल साहित्य–रचना करके हिंदी की सेवा की है, वरन् अनेक नाथ पंथी, जैनी, वैष्णव, चारण एवं स्वतंत्र रचनाकारों की रचनाओ लिख–लिखकर सुरक्षित भी रखा है जिससे आज हिंदी साहित्य अमर है। कबीर वाणी, गोरखनाथ की वाणी, नाथ–सिद्धों की वाणी, रैदास की वाणी, नामदेव की वाणी, की वाणी, हरीदास की वाणी, धन्ना, पीपा, रामानंद, सधना, त्रिलोचन आदि की संतवाणियों के जितने भी प्रकाशन हैं, वे सब दादूपंथी सन्तों की पुस्तकों के आधार पर प्रकाषित हुए हैं। यदि दादूपंथियों ने इन्हें न लिखा होता तो आज हिंदी में इन संतों की रचनाओं का अता–पता ही न चलता। दादू पंथ के पूर्व जाम्भोजी राजस्थान में हो चुके थे, किन्तु इनको पूर्णतः निर्गुणी संत नहीं कहा जा सकता। इनके यहाँ विष्णु की प्रतिष्ठा है और हवन आदि करने का प्रचलन है जो निर्गुणी संतों की विचारधारा से मेल नहीं खाता है। जाम्भोजी का समय वि.सं. 1508 से 1593 तक माना जाता है। इस पंथ के प्रमुख रचनाकार – 1. तेजोजी चारण, 2. कान्हा चारण, 3. डेल्हजी, 4. पदमा तेली, 5. कील्हजी चारण, 6. अल्लुदासली कबिया, 7. बील्होजी, 8. केसोजी गोदारा, 9. सुरजनजी पूनियां, 10. परमानंदजी बणियाल, 11. मुकुनजी, 12. सेवादासजी गोदारा, 13. गोविंददासजी बागड़िया, 14. उदोजी अडिंग, 15. साहबरामजी राहड़, 16. हरजी बणियाल आदि हैं।

दादूपंथ के पष्चात् निरंजनी साधुओं ने राजस्थानी जनता को काफी समय तक आध्यात्मिक षिक्षाएं प्रदान कीं। राजस्थान के निरंजनी साधु ऐसा मानते हैं कि इस पंथ का प्रवर्तन हरीदासजी ने किया जिनका समय मंगलदासजी स्वामी के अनुसार वि.सं. 1512 से 1600 तक है किन्तु दादूपंथ की मान्यता के अनुसार हरीदासजी ने प्रयागदासजी बियाणी से वि.सं. 1656 में दादू पंथ में दीक्षा ली। कालांतर में इनको गुरु गोरखनाथ से उपदेष मिला जिससे इन्होंने दादूपंथ छोड़ दिया और ये स्वतंत्र पंथ प्रवर्तक बन गए। इनका देहावसान वि.सं. 1700 में डीडवाना में हुआ, जहाँ इनकी समाधि बनी हुई है। ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल के अनुसार हरीदास निरंजनी का समय वि.सं. 1612 से 1700 तक है। इस निरंजनी सम्प्रदाय में मुख्य रचनाकार 1. हरीदास निरंजनी, 2. तुलसीदास, शेरपुर निवासी, 3. जगजीवनदासजी, भादवा निवासी, 4. ध्यानदासजी, महार निवासी, 5. खेमदासजी, सिवाड़ निवासी, 6. नरीदास हरिदासोत, फतेहपुर निवासी, 7. दास पीपा, आमेर निवासी, 8. मोहनदास, देवपुर निवासी 9. कल्याणदासजी हरिदासोत, 10. सेवादासजी 6ठी पीढ़ी 11. प्रेमदासजी, 4थी पीढ़ी 12. भगवानदास अर्जुनदास नागा, 13. मनोहरदास, 14. प्यारेरामजी, 15. उदयरामजी, 16. मंगलदास स्वामी आदि हुए हैं।

राजस्थान में रामस्नेही सम्प्रदाय –

राजस्थान में रामस्नेही सम्प्रदाय के नाम से चार पंथ प्रचलित हैं।

1 रैण रामस्नेही सम्प्रदाय – इसका प्रवर्तन दरियाव साहब ने किया जिनका समय वि.सं. 1733 से 1815 तक का है। इनके 52 षिष्य और 9 षिष्याएं थीं। इनकी कुलवाणी 456 साखी और 33 पद मात्र हैं। इस सम्प्रदाय के 21 संतों की रचनाएं प्राप्त होती हैं।

2 षाहपुरा (भीलवाड़ा) रामस्नेही सम्प्रदाय – इसका प्रवर्तन स्वामी रामचरणजी ने किया जिनका समय वि.सं. 1776 से 1855 तक का है। इनके 225 विरक्त षिष्य और 1000 शीलव्रती गृहस्थ षिष्यों का उल्लेख मिलता है। इनकी अनुभव वाणी में 36397 अनुष्टुप श्लोकांक हैं। इस सम्प्रदाय के 65 संतों की रचनाएं प्राप्त होती हैं।

3 सींथल रामस्नेही सम्प्रदाय – इसका प्रवर्तन जैसलदासजी से माना जाता है।

4 खेड़ापा रामस्नेही सम्प्रदाय – इसका प्रवर्तन दयालुदासजी ने वि.सं. 1855 में किया था। इनका जन्म रामदासजी के घर वि. सं. 1816 में हुआ था जो कि बींकोकोर के शार्दूल मेघवाल के पुत्र थे। इनके पिता बडूरामदासजी सींथल रामस्नेही सम्प्रदाय के गृहस्थ महात्मा थे। दयालुदासजी वि.सं. 1885 में ब्रह्मलीन हो गए। इन्होंने 30000 अनुष्टुप श्लोकांक वाणी का सृजन किया। सींथल और खेड़ापा रामस्नेही सम्प्रदाय के 41 संतों की रचनाएं प्राप्त होती हैं।

5 जसनाथी सम्प्रदाय – इसका प्रवर्तन जसनाथजी ने किया था।

6 हरदासी सम्प्रदाय – इसका प्रवर्तन हरदास नामक वैरागी संत ने किया था।

7 मोहन पंथ – इसका प्रवर्तन मोहनदास निर्गुणी ने किया था।

8 चरणदासी सम्प्रदाय – चरणदास नामक संत उत्पन्न तो मेवात क्षेत्र में हुए किन्तु उनका कर्मक्षेत्र मुख्यतः दिल्ली रहा।

9 प्रणामी सम्प्रदाय – इसका उद्भव सिंध प्रदेष में हुआ लेकिन इसका मुख्यालय जयपुर में है।

10 लालदासी सम्प्रदाय – इसका उद्भव मेवात क्षेत्र में हुआ।

11 अलखिया सम्प्रदाय – इसका उद्भव जांगलू प्रदेष (बीकानेर) में हुआ।

इस प्रकार राजस्थान में अनेक पंथ, सम्प्रदाय, निर्गुण निराकारोपासक उत्पन्न हुए, फले–फूले और अब भी वे अपनी अपनी गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं। इन सम्प्रदायों के संतों ने विपुल साहित्य की रचनाकर जनमानस को लाभान्वित किया है।

राजस्थान में सगुण भक्ति धाराएं–इनके अलावा राजस्थान में सगुण भक्ति धाराएं भी मिलती है। जिसमें रामभक्ति और कृष्णभक्ति साहित्य भी प्रचूर मात्रा में लिखा गया। मीराबाई की सात्विक कृष्ण भक्ति ने सम्पूर्ण राजस्थान को प्रभावित किया

है। मीराबाई के गीत और भजन आज भी जनमानस की जुबान पर है। वहीं रामदेवजी तंवर, पाबूजी राठौड़, हड़बूजी सांखला, मेहाजी मांगलिया और गोगाजी चौहान जैसे सिद्ध पुरूष नाथों की भांति योगमार्गी नहीं थे, बल्कि दृढ़ हिन्दू वीर थे, जिन्होंने जनसाधारण के कष्टों को समझा और उनकी जीवनरक्षा एवं धर्मरक्षा के लिए समय आने पर अपने प्राणों की बलि भी दे दी। अतः समाज में उनके प्रति अटूट श्रद्धा जाग्रत हो गई और जगह–जगह उनके देवरे बन गए हैं।

इस प्रकार राजस्थान में सगुण और निर्गुण दोनों भक्ति धाराएं समान रूप से प्रसारित हुई और आज भी दोनों का प्रभाव समान रूप से दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ–

1. राजस्थान के संत और उनका साहित्य– ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल।
2. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया।
3. राजस्थान के संत कवियों के दर्षन एवं उनकी लोकधर्मिता –डॉ. रामप्रसाद दाधिच।
4. राजस्थान में धर्म, सम्प्रदाय व आस्थाएं– डॉ. पेमाराम।
5. राजस्थान की भक्ति परम्परा एवं संस्कृति –श्री दिनेषकुमार शुक्ल।
6. चारण साहित्य में भक्ति –डॉ. पुष्पलता शर्मा।

ROLE OF NEW EDUCATION POLICY FOR MAKING AATAMNIRBHAR BHARAT

पूजा रानी
पंजीकरण संख्या 28719048
रिसर्च स्कॉलर, इतिहास विभाग
श्री जे.जे.टी विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत

सार- नवीन शिक्षा नीति 2020 **के माध्यम से भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है।इसके लिए जहां पहले से चली आ रही शिक्षा नीतियों में कुछ नए कार्यक्रमों का समावेश किया गया है वहीं बदलते वर्तमान परिवेश में भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कुछ अवधारणा का समावेश किया गया।नवीन नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र को अपने संसाधनों के दोहन व उपभोग करने में आत्मनिर्भर बनाना है । आत्मनिर्भरता की यह अवधारणा परिवर्तित होते जा रहे विश्व संदर्भ से है। इसके लिए जहां नवीन तथ्यों एवं अवधारणा का विकास करना है वही पुरातन ज्ञान विज्ञान की उपेक्षा नहीं करना है अर्थात नवीन शिक्षा नीति पुरातन एवं नवीन ज्ञान का सामंजस्य हैजो राष्ट्र को जहां आत्मनिर्भर कर सके वही विकास की तरफ बिना किसी विरोध की ओर अग्रसर हो ।**

प्रमुख शब्द:- आत्मनिर्भर भारत, विश्व गुरु, बदलता विश्व परिवेश, पुरातन एवं नवीन ज्ञान शैक्षणिक ढांचे , मातृभाषा ।

नई शिक्षा नीति की मुख्य अवधारणा- परिवर्तन संसार का एक आधारभूत नियम है ।इस प्रक्रिया के अंतर्गत प्रकृति अपने आपको एक नए रूप में श्रृंगार करती है ताकि वह सुखद सुंदर बन सके ।यह परिवर्तन ही सत्यम शिवम सुंदरम कहलाता है । इस प्रक्रिया के अंतर्गत पुरातन का विनाश एवं नवीन का सर्जन होता है । परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया का आरंभ भारत की नवीन शिक्षा नीति से हो रहा है । यह नई शिक्षा नीति 2020 है जिससे ना केवल शिक्षा क्षेत्र अपितु यह भारत के आधारभूत ढांचे का विकास एवं सुधार करने से है । इस प्रक्रिया के अंतर्गत यह न केवल विकास के सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होगा बल्कि वह विश्व गुरु के सपनों को साकार करने में भी सक्षम होगा । नई शिक्षा नीति की मुख्य अवधारणा है कि वह अपनी महान सांस्कृतिक विरासत से संपन्न ,गांधीजी के दृष्टिकोण से अनु प्रमाणिक तथा डॉ आंबेडकर ने जिस राष्ट्र की संकल्पना की थी उससे वह प्रभावित है । प्रोफेसर निरंजन कुमार के अनुसार ."नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की एक बड़ी विशेषता है है कि वह सच्चे मायनों में राष्ट्रीय नीति है । दुनिया के इतिहास में शायद पहली बार हुआ है कि शिक्षा नीति बनाने के लिए देश की चारों दिशाओं से ढाई लाख ग्राम पंचायत व 676 जिलों की शिक्षकों ,शिक्षाविदों ,छात्रों से सुझाव और

मंथन कर नई जन आकांक्षाओं के अनुरूप यह नवीन शिक्षा नीति तैयार हुई है इस रूप में यह एक लोकतांत्रिक रीति से तैयार हुई शिक्षा नीति है "

शिक्षा का स्वरूप - शिक्षा का स्वरूप एक नदी की भांति होता है जो एक चलायमान है। ऐसा कहा गया है कि एक जगह रुका हुआ पानी बदबू देने लगता है उसी प्रकार शिक्षा नीति में समय-समय पर परिवर्तन करना आवश्यक हो जाता है । स्वतंत्रता उपरांत प्रथम शिक्षा नीति का आरंभ डॉक्टर राधाकृष्ण की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन 1948 में हुआ । तत्पश्चात बदलते समाज की आकांक्षा के अनुरूप 1964 -66 में कोठारी आयोग का गठन किया गया। 1986 में तत्कालीन सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति 1986 का प्रारूप तैयार किया गया । यह नीति लगभग 34 वर्ष तक लागू रही। लेकिन 1990 के बाद से विश्व मे तीव्र गामी परिवर्तन आरंभ हुए । यह परिवर्तन मुख्यतः तकनीक एवं संचार माध्यमों के रूप में सामने आए । बदलती विश्व व्यवस्था ने ज्ञान विज्ञान को तकनीक के माध्यम से संचालित और प्रसारित किया । कंप्यूटर में इंटरनेट के माध्यम से दुनिया अल्पकाल में सिकुड़ गई । इस परिवर्तित व्यवस्था में शिक्षा नीति में परिवर्तन अनिवार्य हो गया था । इससे पूर्व की शिक्षा नीति परिवर्तित होती जा रही व्यवस्था से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पा रही थी । इसी अंतर को समाप्त करने के लिए इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया । इस समिति की सिफारिशों के अनुरूप ही नई शिक्षा नीति 2020 अस्तित्व में आई ।

नई शिक्षा नीति की आधारभूत अवधारणा भारत का सर्वांगीण विकास है । विकास की अवधारणा देश के आत्मनिर्भर होने की संकल्पना पर आधारित है । नवीन शिक्षा नीति में परिवर्तन के मुख्य बिंदु निम्न है जो कि भारत को आत्मनिर्भर की ओर अग्रसर करेंगे । आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर के लिए सर्वप्रथम परिवर्तन *मानव संसाधन विकास मंत्रालय* का नाम बदलकर *शिक्षा मंत्रालय* किया गया है । इस बदलाव का आधार इस अवधारणा पर आधारित है कि इससे शिक्षा का सार्वभौमीकरण कर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जाएगा । नई शिक्षा नीति में जीडीपी का 6% शिक्षा पर व्यय करने की योजना है । फिलहाल यह 4.43 है लेकिन इस बढ़ोतरी से आवश्यक ही शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार होगा । नवीन शिक्षा नीति में व्यापक सुधार विद्यालय स्तर पर है 10 + 2 की जगह 5 + 3 + 3 + 4 का एक शैक्षणिक ढांचा नवीन व्यवस्था में खड़ा किया जाएगा । इस नवीन व्यवस्था में प्री प्राइमरी के 3 वर्ष एवं कक्षा 1- 2 की 2 वर्ष कुल 5 वर्षों की प्राइमरी शिक्षा का प्रावधान है । प्राइमरी कक्षा के लिए 3 वर्ष तथा मिडिल 6 से 8 के लिए 3 वर्ष की शिक्षा का प्रावधान है । इसकी अंतिम स्टेज 9 से 12 तक की कक्षा के लिए है । इतने बड़े परिवर्तन माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में भी देखने को मिला है । इससे पूर्व 10 + 2 के स्तर पर छात्रों के पास विषय चयन का विकल्प नहीं होता था । उन्हें अपनी स्ट्रीम के अनुसार ही विषय चयन करना पड़ता था जो कि अनिवार्य था । इस चयन

के परिणाम स्वरुप छात्रों के ऊपर मानसिक दबाव अधिक था । अब छात्रों के पाठ्यक्रम का आधार कला ,मानवीकी ,विज्ञान ,वाणिज्य ,खेल अथवा व्यवसायिक श्रेणीया नहीं होगी बल्कि वह अपनी मनवांछित विषयों के चयन के लिए स्वतंत्र है । अब वह गणित अथवा भौतिकी विषय के साथ-साथ संगीत अथवा मानविकी विषय का चयन करने के लिए स्वतंत्र है । यह पहले असंभव था । यह नवीन शिक्षा व्यवस्था निश्चित रूप से लाभदायक है क्योंकि इससे पूर्व मुख्य बल सीखने की अपेक्षा सिखाने पर आधारित था । अब नई व्यवस्था में वह अपनी उर्जा का सदुपयोग करने के लिए स्वतंत्र है । इसके अतिरिक्त इस नीति की सबसे बड़ी विशेषता त्रिभाषा फार्मूला है । इस प्रयोग के अंतर्गत कक्षा 5 तक छात्रों की अधिगम की भाषण मातृभाषा का प्रयोग है । ऐसा माना गया है कि बच्चा अपनी मातृभाषा से जल्द सीखता है । छात्रों को मातृभाषा से शिक्षा देने का एक आवश्यक लाभ यह होगा कि वह अपनी संस्कृति एवं जीवन मूल्यों से जुड़ा रहेगा । नई शिक्षा नीति स्किल इंडिया की अवधारणा पर आधारित है । इसका मुख्य उद्देश्य कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों को हाथ से काम करने की भावना का विकास करना है ताकि वह विभिन्न व्यवसायिक विषयों का अध्ययन कर सकें । इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा को ज्ञान के साथ-साथ रोजगार परक भी बनाया जाना जाएगा । विश्व में तकनीक में परिवर्तन तीव्र गति से हो रहा है । इसके लिए छात्रों को समझाएं विषयों का अध्ययन अनिवार्य है । इसके लिए विभिन्न विषयों का पाठ्यक्रम में समावेश किया जाएगा । छात्रों को इन विषयों यथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस , पर्यावरण शिक्षा , वैश्विक नागरिकता , मशीन लर्निंग , डाटा साइंस जैसे विभिन्न विषयों के अध्ययन से वह डिजिटल युग में विश्व का नेतृत्व करने में सक्षम हो सकेंगे । इसके अतिरिक्त सरकार का मुख्य लक्ष्य है छात्रों का शत-प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित करना है । इसके लिए सामाजिक व आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के छात्रों के लिए ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग कार्यक्रम की शुरुआत करेंगे । इसके लिए स्थानीय स्तर पर छात्रों के साथ संवाद स्थापित करके उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना है । नई शिक्षा नीति के अंतर्गत इंप्लीमेंटेशन एंड रिव्यू कमेटी का गठन किया जाएगा । इस कमेटी का मुख्य उद्देश्य इस नीति की सफलतापूर्वक जांच करना है । यदि शिक्षा नीति कार्य में किसी प्रकार की कोई कमी पाई जाती है तो राज्य व जिला स्तर के अधिकारियों को जवाब देना होगा ।

विश्वविद्यालय के छात्रों के अंतर्गत देशभक्ति की भावना का विकास करने के लिए एनसीसी को एक विषय के रूप में मंजूरी प्रदान की गई है । एनसीसी को विषय रूप में स्थापित करने से से यह अनिवार्यतः रोजगारपरक सुविधा प्राप्त कर सकेंगे परंपरागत शिक्षा प्रणाली में इंजीनियर छात्रों को प्रवेश के समय पीसीएम अथवा पीसीबी विषयों की अनिवार्य बाध्यता को समाप्त किया गया है इसलिए विज्ञान के छात्र इतिहास , साहित्य को विषय के रूप मे चयन को लेकर स्वतंत्र होंगे तथा कला वर्ग के छात्र एक विषय के रूप मे भौतिकी अथवा गणित विषय लेने के लिए

स्वतंत्र होंगे । नवीन शिक्षा नीति में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम b.ed को 4 साल का कर दिया गया है । 2030 तक शिक्षक की न्यूनतम अनिवार्य योग्यता 4 साल की b.ed होगी । जिसके तहत मानकों का पालन न कर पाने पर सख्त कार्यवाही का प्रावधान है । ई लर्निंग कार्यक्रम का विस्तार करने के लिए शिक्षा प्लेटफार्म तैयार किया जाएगा । जिससे पाठ्यक्रम से जुड़ी सामग्री अधिक मात्रा में लोगों तक पहुंचाई जा सके । इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को दीक्षा ऐप के माध्यम से संचालित किया जा रहा है । मूक बधिर छात्रों के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर पाठ्यक्रम सामग्री को एक समान व मानकीकृत तैयार करने के लिए इंडियन साइन लैंग्वेज की स्थापना का प्रावधान है । इसके अतिरिक्त भविष्य की आकांक्षाओं और वर्तमान की जरूरत के अनुसार छात्रों को तकनीकी आधार पर सहायता पहुंचाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सॉफ्टवेयर के प्रयोग की बात कही गई है ।

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020- नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के अंतर्गत पुरातन भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिए कार्य योजना का प्रावधान है । इसके लिए भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान की स्थापना है । इसके अतिरिक्त फारसी ,पाली व प्राकृत के लिए राष्ट्रीय संस्थान की स्थापना का प्रावधान है । उच्च शिक्षा में सुधार हेतु सकल नामांकन अनुपात को 26.3 प्रतिशत से बढ़ाकर 50% करने का लक्ष्य रखा गया है । स्नातक पाठ्यक्रम पाठ्यक्रमों में सुधार हेतु उन्हें उसी के अनुरूप डिग्री प्रदान की जाएगी तथा 1 वर्ष बाद सर्टिफिकेट, 2 वर्ष के बाद एडवांस डिप्लोमा , 3 वर्ष के बाद स्नातक व 4 वर्ष के बाद शोध के साथ स्नातक की डिग्री प्रदान की जाएगी । उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा अंको को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखने के लिए एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट की स्थापना का प्रावधान है । जिससे अलग-अलग संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हें डिग्री प्रदान की जा सके । नई शिक्षा नीति में एमफिल की डिग्री को समाप्त कर दिया गया है । नई शिक्षा नीति को यदि भविष्य के आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला कहा जाए तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा भी आत्मनिर्भर भारत के लिए शिक्षा को आवश्यक कुंजी माना गया है । शिक्षा के द्वारा आत्म निर्भरता की अवधारणा गांधीजी के संकल्पना का आधार है । आज जबकि करोना काल के इस वैश्विक संकट में आत्मनिर्भरता की अवधारणा का विस्तार किया है । नई शिक्षा नीति का आगमन इस संकट के समय में एक सार्थक पहल है । समग्रता की दृष्टि से देखा जाए तो विभिन्न प्रकार की कौशल, कला व विद्या , हस्तकला आदि का पाठ्यक्रम में समावेश स्थानीय व्यवसायिक ज्ञान के समावेशन पर बल देना है। जिसमें विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा उनके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास शामिल है । विद्यार्थियों का यह संपूर्ण विकास राष्ट्र की आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता पहला कदम है । इस नई शिक्षा नीति का मुख्य लक्ष्य है नौकरी की कतार में खड़ा होना नहीं बल्कि अपने पैरों पर खड़े होकर सक्षम होना मुख्य है । गांधी जी

ने 10 -11- 1946 की *हरिजन सेवक संघ* में स्वराज के संदर्भ में लिखा था . "'*गांव की पुनर्स्थापना का कार्य कामचलाऊ नहीं बल्कि स्थाई होना चाहिए उद्योग हुनर तंदुरुस्ती और शिक्षा इन चारों का समन्वय होना चाहिए और वह नई तालीम मैं भी किया गया है* उन्होंने कहा कि *मैं उद्योग व शिक्षा को अलग नहीं मानूंगा बल्कि उद्योग शिक्षा का जरिया है* गांधीजी की बुनियादी शिक्षा में वर्तमान में नई शिक्षा नीति 2020 की आवश्यक बीज तत्व है । इस नीति का सार मुख्यत छात्रों के अंतर्गत सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यवसायिक शिक्षा पर स्वास्थ्य शिक्षा पर आवश्यक बल दिया गया है । इस नीति का आधारभूत लक्ष्य है कि सन 2050 तक 50% छात्र व्यवसायिक शिक्षा में निपुण हो सके । आत्मनिर्भरता का अर्थ है स्वयं पर निर्भर होना । वर्तमान में हम तकनीक खान-पान , रहन-सहन व अन्य बातों के साथ-साथ अन्य देशों में क्षेत्रों का आंख मूंदकर अनुकरण कर रहे हैं । इस अंधानुकरण के कारण हमारे संसाधनों का शोषण व अपव्यय हो रहा है । वर्तमान शिक्षा नीति स्वदेशी एवं स्वालंबन की बात करती है । महात्मा गांधी ने स्वदेशी के संदर्भ में कहा था ," *स्वदेशी की भावना का अर्थ है हमारी वह भावना जो हमें दूर को छोड़कर अपनी समीपवर्ती प्रदेश उद्योग और सेवा करने को सिखाती है* " नई शिक्षा नीति का आधार स्थानीय भाषा ,तकनीक कला कौशल तथा कारीगरी को प्राथमिकता देना है । गांधीजी ने शिक्षा की तीन महत्वपूर्ण आयामों पर चर्चा चर्चा की *Hand ,Head and Heart* यह 3h का सिद्धांत कहलाता है । उनके इस सिद्धांत के अनुसार छात्र हाथ से कार्य करने में सक्षम हो , उनकी बौद्धिक क्षमता का विकास हो तथा व संवेदनशील बनें । नई शिक्षा नीति गांधीजी की अवधारणा पर प्रमुखता से बल देती है । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई शिक्षा नीति के संबोधन में छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि वे व्हाट टू लर्न की अपेक्षा हाउ टू लर्न पर बल दे । यद्यपि नई शिक्षा नीति अपनी आधारभूत परिवर्तनकारी विशेषताओं के साथ भारत को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करने में सक्षम है लेकिन नवीन शिक्षा नीति को लागू करने में अनेक चुनौतियां विद्यमान है । सर्वप्रथम शिक्षा का विषय समवर्ती सूची में विद्यमान है । इसलिए अधिकांश राज्य अपने नीतिगत अथवा दलीय हितों की संकीर्ण मानसिकता के कारण विरोध कर सकते हैं । इसका मुख्य विरोध इस नीति के क्रियान्वयन से है । जो कि अंततः राज्यों को करना है ।राष्ट्रीय स्तर पर एक नियामक संस्था का गठन राज्यों को विरोध करने का एक कारण देता है । द्वितीय नई शिक्षा नीति में विदेशी संस्थानों को अपने कैंपस खोलने देने की स्वतंत्रता देने से है । इससे निम्न वर्ग महंगी शिक्षा का व्यय वहन करने में असमर्थ है । इसलिए भी इस नई शिक्षा नीति का विरोध हो रहा है । नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा को प्राथमिकता दी जा रही है । भारत का संविधान 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान करता है । सन 2011 की जनगणना में केवल 24821 लोगों ने ही संस्कृत को अपनी मातृभाषा के रूप में चुना ।इतने कम लोगों के लिए पिछले 3 वर्षों में 643 करोड रुपए खर्च किए जबकि इसी अवधि में

तमिल ,तेलुगू .मलयालम,कन्नड़ भाषाओं के विकास के लिए 29 करोड़ रुपए खर्च किए खर्च किए ।

निष्कर्ष:

नई शिक्षा नीति संपूर्णता से लागू करने में आ रही कठिनाइयों के अंतर्गत भले इसको लागू करने में दो-तीन साल का समय लग सकता है । लेकिन आने वाले समय भारत की विश्व गुरु की संकल्पना व बेहतर सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली को प्राप्त करने के लिए नई शिक्षा नीति की मौलिक विशेषताओं को ग्रहण करना होगा ताकि बदलती वर्तमान परिस्थितियों में नई नीति कारगर हो सके । जहां प्रत्येक सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति की शिक्षा तक पहुंचे हो । शिक्षा प्राप्त व्यक्ति राष्ट्र विश्व में अपनी पहचान कायम कर सकता है एवं विकास की संभावना की खोज कर सकता है ।

संदर्भ-

1 www.hindi.news18.com
2 Makardhawaj tiwari(www.indiamix.in)
3 New education policy 2020, ministry of human resource devolpment, Govt of india ,Delhi
4 www.hi.m.wikipedia.org
5 www.drishitias.com
6 www.thehindu.com
7 www.narendermodi.in
8 Bharat.republicworld.com
9 www.thelalantop.com
10 www bbc.com

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर याचें शैक्षणिक विचार

शौधार्थी :– सतीश वागमरे

प्रस्तावना :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजे मध्ये आपले जीवन म्हणून ंमूल शिक्षण भव्य विद्यार्थीच्या, प्राध्यापक, महाविद्यालये, विवापीठे, शैक्षणिक संस्था किंवा संदर्भित करण्यासाठी द सर्वाधिक गंभीर च्या विचार मध्ये बाबासाहेब आंबेडकर यनराम, आज आहे द नैतिक शिकवणी च्या मानसाला घाडवीत मध्ये भारत. आणि तर आपण माहित आहे 'जेमनस घडिवते शेषन' हो ब्राम्हने, ''शिक्षण हेवघनी चेडू कीं अहेजो तेशन ले जवी गुरु गुर्लाश्वया रहानर नाही'' होईल आहे होते द त्याच मध्ये द त्याच मार्ग डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर होईल आहे होते द सर्वोत्तम च्या सर्व आंध्र सोबती, अनाला चराराची जोड मिमाली पाहेजे.

ज्ञान शिकवणे आणि एक आंचा सुरेख संगम हो. चा परिणाम अध्यापन हे त्याच प्रकारचे सरकार असते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यंत्र जीवात शिक्षा किंवा द तीन शेवटचा शाळा होईल आहे होते महत्वाचे सर्व देशात विचार कार्य, चावरी आणि तानाचेम शिकवत असत. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : प्रख्यात झाले असते. भारत विजनकरण कर प्राधिकरण सारखे झाले असते. पक्षपाती नसलेले अस्लेस्विच तर दूरच असत. द समाजवादी शुरत्शुया होईल आहे होते द पराभूत राहीलेला कायमचे आशा समाजातिल दुल्लित वागल्ला बाबासाहेबानी शिनाचेमेहा पटवुन दले. बाबासाहेबानी शिनाचेमाह तेलिहित, ' तर आपण अभाव शिक्षण, नंतर निंबू राहाहास जीवंतपाणी होईल असणे दुसरा व्यक्तीचे गुलाम बाबासाहेब बंध सोबती, विलालानी अट्टाह प्रवा आणि समजला.

उरारसाठी उत्तरेठा शिवनाकडेल प्रवास. उत्तरः शिक्षण घेउन, उत्ती तीथा नोक्या किंवा शरण करात. ते मिळवण्यासाठी कोनागही चावरी व्यतिरिक्त इतर घेट्टो अस्ताना शिकवणे करत आहे नावीन्य, पालनपोषण द मूलभूत तत्त्व च्या कराची, आहे द जबाबदारी च्या आजचे विद्यार्थीच्या. ब्रेक विद्यालयाने निर्थबुल्ने, सामाजिक कामगार, वून.

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या शिकवणीचा मोठा राजमार्ग आहे बदल मध्ये समाज काढा सामाजिक असमानता आणि सामाजिक लोकशाही आणि सामाजिक लोकशाही वाटे. च्या साठी द उद्देश च्या शिक्षण, न्यायाधिकरण आहे येणे करण्यासाठी समाजीकरण त्से ंजजं ंद संस्कृती शानाचा एक महत्वाचे पाया असेही बाबासाहेबाना वाटेटे.

तर आपण होईल आहे तुटलेली द समाजातला जात तटबंदी, आपण होईल आहे होते सक्षम करण्यासाठी बनवणे ं प्रचंड फरक मध्ये द प्रवाह च्या पाणी. अशा प्रकारे, ची ंहजप घाडवुन अनरसथी उंहें समजला शिनाची होईल आहे शेवटी गडगडाट शिक्षण हेपरवर्तन घडववसाठी खुप महाचेहर अहेसे बाबासाहेब होईल आहे होते धन्य

मानवी जीवनातिल शिनाचेमाह पटवुन देटाणा बाबासाहेब संगतांचे, 'शिक्षण ीं मानव आयुचा पाय अहे सामाजिक बदल आहे नाही गोंधळ.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजे, द लेले च्या द पूर्ण वाढ झालेला आशा आणि पाची कुटुंब बंध सोबती, '' (शिक्षण आहे ते जे लक्षात येते ं व्यक्ती), बाबासाहेब ''श्री. सर्व द वर्षे च्या जीवन आहेत विद्यार्थीच्या.'' बाबासाहेब वांद्रे किंवा विधानवन जनावतेकी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर होईल आहे होते ं उपासक च्या साठी द संपूर्ण च्या त्याचा जीवन द्वारे कामगिरी करत आहे नानाची उपासना के म्हणून.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर होईल आहे विश्वास ठेवला ताबीज मानसनेयाः रामुले बी बाबासाहेब,''माझेसावये अपकजीं दुपार जावेशी माझी होत'' तो करतो नाही काळजी किंवा विधानवन जनावतेकी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर होईल आहे होते उपासक च्या साठी द संपूर्ण च्या त्याचा जीवन द्वारे कामगिरी करत आहे राणाची उपासना.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर इ. एस. स्थापना च्या 'भरत भरत परोपकारी संघटना' मध्ये 1924 के ली. किंवा 8 जुलै 1945 रोजी रोजी बाबासाहेबानी 'पीपल्स एज्युकेशन सोसायटी' किंवा संथेची स्थापना केली. किंवा मुंबईला अंतर्गत सोसायटीला 20 जून 1946 रोझी ब्रॅनी सिथ कॉलेज, औरंगाबाद अद्याप मिलिंदची स्थापना कॉलेज किंवा कॉलेज आणि इतर शैक्षणिक संस्था मध्ये जून 1950. बससाहेबाना होईल आहे होते अपेक्षित शिकवण्यासाठी आधारित वर मूलभूत शिकवणी, शिक्षण बद्दल वर्ण विकास.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची शिक्षण भूमिकाः

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजेच विरोधी श्रींची वैचारिक ओढ, कराचेमचा निषेध. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजेच यंत्र शिन्नावर यांनी भरले. बाबासाहेबांना डॉ आंबेडकर याना मनवर तेथल समता, अंतर इदी गोळी शेफर मोठेसंदर झालेहोते मध्ये अमेरिका.

विलनेमनु मोथा होउ शकतो. किंवा गोळीची जाणिव बाबासाहेबान्ना. "जर आपला मुलानला ंतबी मुळी मंदा शिन्नसाठी धप्पडाम लबाड आप्रा समाजाची.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजे आयनाला वाला आले साध ाम कारण समजूण हींववद उन वहात आंध्राचेय अवरत चालुठे वझे. काही धडे देण्यासाठी कलाची गर्जना केली. कसे करायचे ते उपलब्ध तपासत आहे समजावे मातमसंदबीं उपाय जतेंतीमीवपस असेही नाना प्रतीक्षा करा मध्ये हे, आय होईल आहे होते फक्त मार्ग बाबासाहेब होईल आहे शिकवले द संघटनापण येलसाठी आणि द आयोजित हुं समाजाचेदुगुन.

डॉ. आंबेडकर म्हणजे श्री. आणि पुरूष म्हणजे सहशिष्णा होईल आहे येणे अंतर्गत द पहिला पुरुसार. आज ना अनेक लोक आले आहेत. व्हेजवेगा`मकंज कटरा गाजत दुखापत. किंवा डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर याना डेलट येटे च्या सावळेचेल.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार वर प्राथमिक शिक्षणः

डॉ. बाबासाहेबानी प्राथमिक शिक्षण समाजातिल जनसमन्ना मिरवय्यासाथी सरकार शिष्टाचार आणि सार्वजनिक ट्रान्सपिठावर विचार कसे करण्यासाठी मिळवा अधिक कव्हरेज पूर्ण द्वारे प्राथमिक शिक्षण प्राथमिक शिक्षण होईल आहे होते चांगले पेक्षा हेस्लेचेक्रावे, परंतु द शिक्षण होईल आहे होते पूर्णपणे वेगळे पासून असुनये.

असेल तर तेंदरा कडू ना राववे राणा शंट नाना होईल चेश. खरे प्राथमिक शिक्षण होईल आहे होते खर्च अधिक पेक्षा भगवदवसथी नावेकर बसवलाची येथे खर्च च्या द माहिती.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजे सामाजिक विषमता त्याऐवजी पेक्षा करास शिनाला महाल अहे मध्ये द समाज, असमान विषमता किंवा सामान्य लोक होईल आहे होते शुद्ध मानुस होईल नाही आहे होते तटबंदी किंवा होते द खर्च च्या द पूल सामान्य मानसाला यतुन बाहेर कारेकर्ता क्रानी श्रीनाची कास धरणे बाबासाहेबन्ना अनंत महाचेवटे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर याना वाटे करू शकता असणे द सर्वोत्तम विद्यार्थी च्या साठी सामाजिक कल्याण आणि सामाजिक विकास

कार्य :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार वर शिक्षण जानवाटेकी, आजचे जागरण, ' युगमल्लेशशीनाला आलेलेमाह, हेबाबासाहेबानी' आणि 'कर्तच' होईल आहे होते उघडा येतुनच बाबासाहेबांची शिक्षण विषय बाब आहे खरोखर दूर करत आहे राणाची उपासना.

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ. गायकवाड दतात्रय, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर याचें तत्वज्ञान, स्वदीप्रकाशन, औरंगाबाद।
2. हाडेकार डी वाय., चार्वाक, बुद्व आणि आबेंडकर, सुगाणा प्रकाशन पुणे।
3. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराचीं भाषणें, खंड 1,5 संपा मा.फ. गाजरें।